प्रयाग और उसका परिप्रदेश : सांस्कृतिक भूगोल में एक प्रतीकात्मक अध्ययन

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की डी० फिल्० उपाधि हेतु
प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

निर्देशिका

डॉ० (श्रीमती) कुमकुम राय

एम ए, डी फिल

प्रोफेसर भूगोल विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

प्रस्तुतकर्ता

रमेश चन्द्र ओझा

भूगोल विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

भूगोल विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

2002

साभार

मै भूगोल विदो मे अग्रणी परमादरणीया शोध निर्देशिका डा0 (श्रीमती) कुमकुम राय, प्रोफेसर, भूगोल विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, के प्रति श्रद्धावनत् हू, जिनके कुशल निर्देशन मे प्रस्तुत शोध प्रबन्ध पूर्ण हो सका है। आपने अपने व्यस्ततम क्षणो मे भी लिखित सामग्री के अन्वीक्षण एव विविध सुरूचिपूर्ण प्रकियाओ द्वारा अतिदुरूह कार्य को भी अतीव सरस बनाने का प्रयत्न किया। आपकी उदारता, निरन्तर प्रेरणा एव आत्मीयता के फलस्वरूप ही मै अपने लक्ष्य तक पहुच सका। आज प्रोफेसर राय के प्रति अपना आभार व्यक्त कर पाने के लिये मुझे शब्दकोष रिक्त सा प्रतीत हो रहा है।

शोध प्रबन्ध के शीघ्र पूर्ण करने मे महान भूगोल विद् परम सम्माननीय डा0 आर0सी0 तिवारी, प्रोफेसर, भूगोल विभाग की सतत् प्रेरणा एव अमूल्य सुझाव की भी अहम भूमिका रही है। उनके प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट किये बिना मुझे अपना शोध प्रबन्ध पूर्ण नही प्रतीत होता। मै उनका सदा कृतज्ञ रहूगा। मै भूगोल जगत् के गौरव डा0 सविन्द्र सिह जी, प्रोफेसर व अध्यक्ष, भूगोल विभाग का अत्यन्त आभारी हू, जिन्होने इस विषय पर शोधकार्य करने का अवसर प्रदान किया। मैं भ्रातृ तुल्य डा0 सुधाकर त्रिपाठी, प्रवक्ता–भूगोल विभाग का विशेष आभारी हू जिन्होने मेरे भीतर जब भी निराशा के भाव उत्पन्न हुये तो उन्होने धैर्य का सहारा देकर मुझे मार्ग से विचलित नही होने दिया। मै विभाग के अन्य श्रद्धेय गुरूजनो का भी विशेष आभारी हूँ जिन्होने समय–समय पर अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया। मै अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य डा0 सदानन्द मिश्र का विशेष आभारी हू जिन्होने शोध कार्य पूर्ण करने मे समय सुविधा प्रदान करने की कृपा की।

इस शोध के पूर्ण होने पर आज मैं अपनी परम पूजनीया माता स्वर्गीया श्रीमती कान्ती ओझा जिनकी प्रबल इच्छा के फलस्वरूप ही मैने यह शोध कार्य प्रारम्भ किया एव जिनके आशीर्वाद से ही आज मेरा यह शोध कार्य पूर्ण हो सका, को स्मरण किये बिना नही रह सकता। मुझे इस बात का सर्वदा कष्ट रहेगा कि उनके जीवन काल मे मै अपना यह शोध कार्य पूरा नही कर सका। मैं परम श्रद्धेय अपने पिता श्री रघुनाथ ओझा से0नि0 प्राचार्य व अध्यक्ष, स्नातकोत्तर भूगोल विभाग, म0मो0मा0पी0जी0 कालेज, भाटपार रानी, देवरिया का हृदय से कोटिश अभारी हूँ जिन्होने शोध कार्य पूर्ण करने में आर्थिक व मानसिक

सहयोग एव सतत् प्रेरणा प्रदान किया है। मै अपने परिवार के अन्य सदस्यो प0 श्रीनाथ ओझा, आदरणीय बडे भाई अरबिन्द कुमार ओझा एव अनुज ब्रजेश कुमार ओझा का आभारी हूँ जिनके आशीर्वाद एव सहयोग से शोध कार्य पूर्ण हो सका। मै अपने श्वसुर श्री वी0एन0 मिश्र, से0नि0 पुलिस उपाधीक्षक एव बहनोई श्री पी0एन0 पाण्डेय, गार्ड रेलवे इलाहाबाद का भी आभारी हू।

मै लेखन सामग्री के कम्प्यूटर टाइपिग हेतु गुप्ता बिजनेस सेन्टर, लखनऊ के पकज कुमार जी एव मानचित्र निर्माण हेतु मु0 अनवर नईम सिद्दीकी का भूयश आभारी हू।

अन्त मे मै शोध कार्य मे सहभागी अपनी धर्म पत्नी श्रीमती वन्दना ओझा के प्रति हार्दिक स्नेह एव उन सभी लोगो के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिनके लेखो एव पुस्तको से मै प्रत्यक्ष एव परोक्ष रूप से लाभान्वित हुआ हू।

रमेश चन्द्र ओझा

रमेश चन्द्र ओझा

चैत्र राम नवमी, विक्रम सवत् 2059

21 अप्रैल 2002

अनुकमणिका

		पृष्ठ सख्या
साभार		1, 11
मानचित्रो की सूची		VIII, IX
अध्याय–1		1-15
1	**प्रस्तावना**	
1 2	सस्कृति के निर्धारक तत्व	
1 2	भूगोल एक सास्कृतिक पारिस्थितिकी	
1 3	सास्कृतिक नाभिक/उद्गम क्षेत्र	
1 4	प्रयाग एक प्राचीन हिन्दू/भारतीय सस्कृति के प्रतीक के रूप मे	
1 5	वर्तमान अध्ययन की वस्तुनिष्ठता	
1 6	अध्ययन विधि	
1 6 1	आकडा सग्रहण	
1 6 2	आकडो का एकत्रीकरण एव विश्लेषण	
1 6 3	प्रमुख सकल्पनाए	
अध्याय–2	**प्रयाग की भौगोलिक पृष्ठभूमि**	16-21
2 1	स्थानिक कारक (स्थिति एव विस्तार)	
2 2	उच्चावचन	
2 3	जल प्रवाह	
2 4	मिट्टी सम्बन्धी कारक	
2 5	वनस्पति एव प्राणि समूह	
2 6	जलवायु सम्बन्धी कारक	
2 7	जनाकिकीय विशेषाताए	
2 7 1	जनसख्या वृद्धि	
2 7 2	घनत्व एव वितरण	
2 7 3	लिग सरचना	

2 74 धार्मिक तथा जातिगत सरचना

2 75 भाषायी विशेषताए

अध्याय–3 प्रयाग एक धार्मिक एव सास्कृतिक केन्द्र 62-110

3 1 प्रयाग की ऐतिहासिकता

3 1(1) प्रयाग एक यज्ञ एव तपस्थली

3 1(11) प्रयाग एक तीर्थराज

3 1(111) प्रयाग प्राचीन हिन्दू सस्कृति का केन्द्र (अक्षयवट, वेणीमाधव)

3 2 प्रयाग एक धार्मिक तीर्थयात्रा का केन्द्र

3 2(1) कुम्भ मेला की उत्पत्ति (सौर्यिक विधान)

3 2(11) कुम्भ मेला का ऐतिहासिक उद्‌भव

3 2(111) तीर्थयात्रा के स्थान

3 3 माघ मेला या कुम्भ मेला का आयोजन

3 3(1) कुम्भ नगर का स्थानिक प्रतिरूप

3 3(11) स्थिति–विस्तार

3 3(111) तीर्थ यात्रियो की सख्या

3 3(1v) नगर के लिये यातायाता व्यवस्था

3 3(v) कुम्भ नगर की आन्तरिक सरचना एव व्यवस्थाये

3 4 राष्ट्रीय एव सास्कृतिक एकता मे प्रयाग की भूमिका

3 5 प्रयाग का धार्मिक एव सास्कृतिक परिप्रदेश

3 6 सास्कृतिक परिप्रदेश मे स्थित सास्कृतिक केन्द्र

अध्याय–4 प्रयाग एक शैक्षिक केन्द्र 111-138

4 1 प्राचीन शिक्षा का स्थान

4 2 बौद्ध कालीन शिक्षा

4 3 हिन्दू काल मे शिक्षा

4 4 मध्य काल मे शिक्षा

4 5 आधुनिक काल मे शिक्षा

4.6 प्रयाग का शैक्षिक प्ररिप्रदेश

अध्याय–5 **प्रयाग एक प्रशासनिक एव राजनीतिक केन्द्र** 139-169

5 1 प्रारभिक प्रशासन का केन्द्र

5 2 बौद्ध कालीन प्रशासनिक स्थिति

5 3 मध्यकालीन या मुगलकालीन प्रशासन

5 4 ब्रिटिश कालीन प्रशासन

5 5 स्वतत्रता सग्राम मे प्रयाग की भूमिका

5 51(1) समाचार पत्रो की भूमिका

5 51(11) क्रान्तिकारी आन्दोलन की भूमिका

5 51(111) राष्ट्रभाषा आन्दोलन की भूमिका

5 52 चन्द्रशेखर आजाद का क्रान्तिकारी सघर्ष

5 53 भारत छोडो आन्दोलन

5 54 स्वतत्र भारत मे प्रयाग का राजनीतिक योगदान(तीन प्रधानमत्री)

5 6 प्रयाग का वर्तमान प्रशासनिक स्तर

अध्याय–6 **प्रयाग एक परिवहन एव सचार का केन्द्र** 170-201

6 1 प्राचीन परिवहन तन्त्र

6 1(1) सडक

6 1(11) नौ परिवहन या नदी परिवहन

6 2 ब्रिटिश काल मे परिवहन का विकास

6 2(1) ग्राड ट्रक रोड और अन्य सडके

6 2(11) रेलवे लाइन

6 3 स्वतन्त्र्योत्तर/वर्तमान काल मे परिवहन का विकास

6 3(1) नई सडको का विकास

6 3(11) रेलवे का विकास

6 3(11) वायु परिवहन

6 4 परिवहन तन्त्र की स्थानिक प्रणाली

6 4(1) रेल सडक अभिगम्यता

6 4(11) परिवहन प्रवाह

6 4(iii) रेल सडक सयोजकता

6 4(iv) परिवहन प्रवाह

6 5 परिवहन प्रदेश

6 6 सचार तन्त्र

6 6(i) डाकघर

6 6(ii) तारघर

6 6(iii) दूरभाष सेवाए

6 6(iv) आकाशवाणी

6 6(v) दूरदर्शन व चलचित्र

अध्याय–7 प्रयाग एक नगरीय केन्द्र 202-243

7 1 प्रयाग नगर की उत्पत्ति एव विकास

7 1(i) नगर की प्राचीन उत्पत्ति

7 1(ii) मध्य कालीन विकास

7 1(iii) अर्वाचीन विकास

7 1(iv) प्रतिष्ठान पुर (झूसी)

7 2 इलाहाबाद के नगरीय भू आकार का वर्तमान विकास

7 2 1 वर्तमान भूमि उपयोग का स्वरूप

7 3 नगर वृद्धि के अपकेन्द्र व अभिकेन्द्र बल

7 4 इलाहाबाद नगर की भौगोलिक या नगरीय पेटिया

7 5 इलाहाबाद नगर का प्रभाव प्रदेश

अध्याय–8 प्रयाग और उसके परिप्रदेश के लिए सास्कृतिक नियोजन 244-282

8 1 सास्कृतिक नियोजन की सकल्पना

8 2 धार्मिक तीर्थयात्रा केन्द्र के रूप मे नियोजन

8 2(i) हिन्दू तीर्थयात्रा

8 2(ii) श्रृग्वेरपुर

8 3 पर्यटन केन्द्र के रूप मे नियोजन

8 3(i) बौद्ध तीर्थस्थल (कौशाम्बी)

8 3(11) मुस्लिम सास्कृतिक केन्द्र (खुशरोबाग)

8 4 अवस्थापनात्मक सुविधाओ का नियोजन

8 4(1) परिवहन तन्त्र(आन्तरिक / वाह्य)

8 4(11) धर्मशाला / होटल / तीर्थयात्री आवास

8 4(111) विद्युत

8 4(1v) पेयजल

8 5 सामाजिक सुविधाओ के लिए नियोजन

8 5(1) शिक्षा

8 5(11) स्वास्थ्य एव सफाई

8 6 नगर आकार के लिए नियोजन

8 6(1) मनोरजन एव खुले स्थल

8 6(11) नदी जल प्रदूषण तथा पर्यावरण

8 6(111) हरित मेखला

8 6(1v) सास्कृतिक विरासत का सरक्षण

सदर्भ ग्रथ सूची

परिशिष्ट– क

परिशिष्ट– ख

List of Figures

Fig. No.	Title	Page No.
1	Location Map	17
2 1	Relief Map	20
2 2	Drainage Map	23
2 3	Flood Map	25
2 4	Climatic Map	33
2 5	Population Growth Map	41
2 6	Decadal Growth of Population Map	45
2 7	Density of Population Map	48
3 1	Morphological Structure of Kumbh Nagar Map	86
3 2	Pilgrims Map of Prayag	95
3 3	Kalpvasis Map of Prayag	98
3 4	Prayag Parikrama Map	101
3 5	Cultural and Religious Environs of Prayag	104
4 1	Distrubution of Educational Institutions Map	122
4 2	Educational Environs Map	135
5 1	Akbar Regime-Allahabad Map	142
5 2	Present Administrative Map	166
6 1	Transport and Communication Map	174
6 2A	Accessibility By Roads Map	184
6.2B	Accessibility By Railways Map	184
6.3	Bus Traffic Flow and Service Area Map	186
6.4A	Road Connectivity Map	189

6 4B	Rail Connectivity Map	189
7 1	Land Use Pattern Map	214
7 2	Roads Map of Prayag (Allahabad)	220
7 3	Geographical Zones Map	226
7 4	Vegetable Supply Zone Map	235
7 5	Milk Supply Zone Map	238
7 6	Environs of Allahabad Map	240
8 1	Revise Plan of Allahabad Map	262

अध्याय—1

प्रस्तावनाः—

गगायमुनयोश्चैव सगमलोकविश्रुत ।
स एव कामिक तीर्थं तत्र स्नानेन भक्तित ।।
यस्य यस्य च य कामस्तस्य भवेदिभ स ।

भविष्य पुराण

तीर्थराज तु ये यान्ति ये स्मरन्ति सदा भुवि।
ते सर्वापापानिर्मुक्ता पदगच्छन्तयनामयम्।।

ब्रह्मपुराण

प्रयाग आर्य सस्कृति का केन्द्र स्थल एव प्राचीन हिन्दू तीर्थ केन्द्र है। इसका कण—कण पवित्र एव तीर्थवत् है। प्रयाग का सास्कृतिक परिवेश पवित्र तीर्थस्थलो एव मोक्षदायिनी गगा—यमुना एव अदृष्य सरस्वती के सगम से युक्त है। प्रयाग की विशिष्ट सास्कृतिक पहचान यहा की धार्मिक तीर्थयात्रा, भाषा, अतिथि सत्कार, शिष्टाचार एव मानवीय मूल्यो का विकास है। भारतवर्ष मे तीर्थराज प्रयाग को पवित्रतम एव श्रेष्ठतम तीर्थ भूमि बताया गया है (मत्स्यपुराण 108/15—16)। सास्कृतिक तत्वो के सतत् विकास का अध्ययन सास्कृतिक भूगोल का मुख्य विषयवस्तु है। अत प्रयाग के विभिन्न सास्कृतिक तत्वो का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मे सास्कृतिक भूगोल के अन्तर्गत अध्ययन किया गया है।

सस्कृति शब्द के लिए अग्रेजी भाषा मे 'कल्चर' शब्द का प्रयोग मिलता है, जिसका अर्थ आचरण या व्यवहार है। मानव समुदाय के परम्परागत विचार, मान्यताए, जीवन मूल्य एवं ज्ञान के सम्यक् स्वरूप को सस्कृति कहते है। सास्कृतिक भूगोल मे मनुष्य के सास्कृतिक कियाकलापो पर प्राकृतिक वातावरण के प्रभावो का विश्लेषण किया जाता है। मानव जीवन का प्रत्येक पहलू प्राकृतिक वातावरण से प्रभावित ही नही बल्कि नियन्त्रित भी होता है और मनुष्य मे उसी प्रकार के आचरण, व्यवहार, रहन—सहन के ढग, कला, प्रविधि आदि का विकास होता है जैसा कि वहा के प्रकृति प्रदत्त ससाधन द्वारा उसे सुलभ होता है। इस प्रकार सस्कृति तथा सास्कृतिक भूगोल दोनो का पारस्परिक घनिष्ठ

सम्बन्ध है(Rubenstein and Boon 1990)। विभिन्न विद्वानो ने सास्कृतिक भूगोल को पारिभाषित करने का प्रयास किया है जिनमे प्रमुख निम्न है –

सास्कृतिक भूगोल का सम्बन्ध मूल रूप से मानव प्राविधिकी तथा सास्कृतिक व्यवहारो की पद्धति से है क्योकि विश्व मे प्राचीन काल से आधुनिक समय तक विभिन्न क्षेत्रो के मानव समाज द्वारा इनका विकास किया जाता है (Spencer, J E and Thomas, W L 1978)। सास्कृतिक भूगोल का कार्यक्रम भूगोल के सामान्य उद्देश्यो से सम्बन्धित है जो पृथ्वी तल की क्षेत्रीय विभिन्नताओ का अध्ययन करता है (Sauer, C O 1927)। सास्कृतिक भूगोल मे विभिन्न सास्कृतिक समूहो मे स्थानिक विभिन्नताओ का अध्ययन किया जाता है (Jordon, T G and Rowntree, L 1976)। विशिष्ट भौगोलिक भू–दृश्यो के विकास मे मानव समाज के व्यवहारो एव विचारो का योगदान होता है, जिसका अध्ययन ही सास्कृतिक भूगोल है (Wagner, P L and Mikesell, M W 1962)।

प्रस्तुत अध्याय मे सर्वप्रथम सस्कृति के निर्धारक तत्वो, भूगोल एक सास्कृतिक पारिस्थितिकी के रूप मे, सास्कृतिक नाभिक/उद्‌गम क्षेत्र, प्रयाग एक प्राचीन हिन्दू सस्कृति के प्रतीक के रूप मे, वर्तमान अध्ययन की वस्तुनिष्ठता एव अध्ययन विधि तथा प्रमुख सकल्पनाओ पर प्रकाश डाला गया है।

1 1 सस्कृति के निर्धारक तत्व –

सस्कृति शब्द की व्युत्पत्ति सस्कृत भाषा से हुई है जिसका आशय परिष्कृत या परिमार्जित करना होता है। "सस्कृति वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने शारीरिक तथा मानसिक और अन्तिम रूप मे बौद्धिक अस्तित्व बनाये रखने मे सफल होता है। मनुष्य केवल जैविक प्राणी ही नही अपितु एक सामाजिक प्राणी भी है और इन दोनो ही रूपो मे उसकी अनेक शारीरिक व मानसिक आवश्यकताए होती है। इन आवश्यकताओ की पूर्ति किये बिना सामाजिक प्राणी के रूप मे मानव का अस्तित्व नही रह सकता है। इन्ही आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए मानव, सस्कृति का निर्माता बनता है और उसके द्वारा अपने शारीरिक तथा मानसिक या बौद्धिक अस्तित्व को बनाये रखता है" (Malinovaski, B 1931)।

सस्कृति शब्द का सम्बन्ध सस्कार से भी जोडा जाता है जिसका सस्कार किया जाता है उसमे गुणो का आधान अथवा उसके दोषो को दूर करने के लिये जो कर्म किया जाता है उसे सस्कार कहते हैं '(शकराचार्य ब्रह्मसूत्र भाष्य, एव सिन्हा हरेन्द्र प्रताप 1953, से

उद्घृत)। सस्कृति का उद्देश्य प्रकृति की गोद मे पलने वाले मानव को विभिन्न सस्कारो, विचारो तथा क्रिया कलापो से समाजोपयोगी योग्यता या प्रतिभा से परिपूर्ण करना है। सस्कृति जन्य परिशुद्धता मानव को दो स्तरो से अनुप्राणित करती है– वैचारिक तथा कायिक। इसकी सहज अभिव्यक्ति वैयक्तिक तथा सामाजिक कृतज्ञता तथा सहभागिता के रूप मे होती है। इस प्रकार सस्कृति का सामान्य अर्थ सुधारना, सस्कार करना, परिशुद्ध करना, सुन्दर बनाना अथवा यथा सम्भव पूर्णता प्रदान करना है। (दूबे, एच0एन0 1999)।

सस्कृति मानव जीवन यापन की पद्धति है। यह मानव द्वारा निर्मित ऐसा नवीन पर्यावरण है जिसका विकास मानव समूह के विचारो, सस्थाओ, भाषा, उपकरण, प्रक्रिया रूप तथा अन्त करण की भावना द्वारा होता है। मानव के आचरण एव व्यवहार तथा नैतिक पर्यावरण के गतिशील अन्तर्सम्बन्धो के परिणाम स्वरूप कालान्तर मे सस्कृति का सृजन होता है। सस्कृति मानव समुदाय की समानताओ तथा विषमताओ के क्रमिक अध्ययन की कुजी है (Kroeber, A L and Kluckhohn, C 1952)। सस्कृति का मूल केन्द्र मानव समुदाय है जिसमे समानता परिलक्षित होती है। मानव समुदाय मे सकेतो की सहायता से विचारो के परस्पर आदान–प्रदान का परिणाम ही सस्कृति है। मानव समुदाय की जीवन पद्धति की कालिक प्रतिच्छाया सस्कृति होती है। इस प्रकार एक विशिष्ट सस्कृति की प्रक्रियाओ मे मानव समुदाय का साथ–साथ रहना, सामयिक घटनाओ पर चिन्तन करना, धार्मिक प्रचलनो मे सक्रिय योगदान देना तथा पूर्व के इतिहास को दोहराना, सम्मिलित किया जाता है।

मानव समुदाय की प्राणि–शास्त्रीय, पर्यावरणीय तथा ऐतिहासिक आवश्यकताओ से सस्कृति के स्वरूप का निर्धारण होता है। मानव समुदाय के वातावरण के प्रति बदलता दृष्टिकोण तथा शारीरिक मानसिक आवश्यकताओ के विकास के फलस्वरूप कालान्तर मे सस्कृति के स्वरूप मे परिवर्तन होता रहता है। मानव समुदाय की नवीन आवश्यकताओ के अनुसार सस्कृति का स्वरूप स्वय विकसित होता रहता है।

सस्कृति की सरचना सरल होती है तथा मनुष्य की सम्पूर्ण जीवन पद्धति को सस्कृति के रूप मे जाना जा सकता है। इसमे अविकसित मानव समुदाय के क्रिया कलाप तथा आदिवासी मानव समुदाय के जीवनयापन के ढग सम्मिलित होते है। सस्कृति के मूल तत्वो मे भोजन सामग्री, वस्त्र, आभूषण, भाषा एव बोली, प्रजातीय विशेषताए सामाजिक सम्बन्ध,

धार्मिक विश्वास, मानव निवास्य प्रतिरूप, आर्थिक क्रियाकलाप, मनोरजन के साधन, परम्पराए एव रीति–रिवाज, मानव आचार व्यवहार, कला एव साहित्य सम्मिलित किये जाते है (दीक्षित, डा0 श्रीकान्त एव त्रिपाठी डा० राम देव 2001)।

1 2 भूगोल एक सास्कृतिक पारिस्थितिकी –

पारिस्थितिकी शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग जर्मन वैज्ञानिक हैकेल ने 1869 मे किया था। डार्विन के विकासवादी सिद्धान्त मे विभिन्न प्रकार के तत्वो के परस्पर सघटन और प्राकृतिक वातावरण से उनके समायोजन की सकल्पना का पक्ष हैकेल की बहुचर्चित एव प्रभावपूर्ण पुस्तक 'न्यू साइस आफ इकालोजी' का मूल प्रेरणा स्रोत था (दीक्षित, रमेश दत्त 2000 पृ0 253)। इस सकल्पना के प्रचार के साथ ही सामाजिक विज्ञानो मे मानव परिस्थितिकी शब्द का प्रयोग किया जाने लगा। एच0एच0 बैरोज ने एसोसियेशन आफ अमेरिकन ज्याग्रफर्स के 1922 के वार्षिक अधिवेशन मे अपने अध्यक्षीय भाषण मे मानव भूगोल को मानव पारिस्थितिकी के रूप मे विकसित करने पर जोर दिया। मानव भूगोल को भिन्न–भिन्न क्षेत्रीय इकाइयो के मानव पारिस्थितिकी पर केन्द्रित अध्ययन के रूप मे विकसित किया जाना चाहिये (दीक्षित, रमेश दत्त 2000 पृष्ठ 254)। वर्तमान समय मे सास्कृतिक भूगोल के अन्तर्गत सास्कृतिक पारिस्थितिकी एव पारिस्थितिकी प्रणाली सिद्धान्त का अध्ययन किया जा रहा है। सास्कृतिक भूगोल मे सास्कृतिक पारिस्थितिकी का तात्पर्य विभिन्न जीवधारियो का भौतिक पर्यावरण से सम्बन्ध होता है। रावेन्ट्री के अनुसार सास्कृतिक पारिस्थितिकी के अन्तर्गत सास्कृतिक तथा प्राकृतिक पर्यावरण के कार्यकारण के सम्बन्धो का विश्लेषण किया जाता है। सास्कृतिक भूगोल मे पारिस्थितिकी विज्ञान मे मानव समुदाय तथा प्राकृतिक पर्यावरण के अन्तर्सम्बन्धो, मानव के क्रियात्मक रूप एव प्राकृतिक पर्यावरण मे क्रियात्मक रूप के प्रभाव आदि के अध्ययन को सम्मिलित किया गया है।

सास्कृतिक पारिस्थितिकी मे प्राकृतिक पर्यावरण के अन्तर्गत मानव की उन अन्योन्य क्रियाओ का अध्ययन सम्मिलित है, जिसके द्वारा सामाजिक सस्थाओ, मानव आचरण तथा पर्यावरण मे अनेक परिवर्तन घटित होते है। सास्कृतिक पारिस्थितिकी मे मानव की उन प्रक्रियाओ का अध्ययन किया जाता है जिसके द्वारा कोई समाज अपने पर्यावरण से अनुकूलन कर पाता है। इस प्रकार सास्कृतिक पारिस्थितिकी मे ज्ञात क्रियाओ से सम्बन्धित भू–दृश्य की अवस्थाओ, भू दृश्य विकास मे सलग्न मानव क्रियाओ, सास्कृतिक

एव सामाजिक तत्वो से सम्बन्धित भूमि उपयोग, जीवनयापन की दशाओ तथा मानव कल्याण से सम्बन्धित स्थितियो का अध्ययन किया जाता है (प्रसाद, गायत्री 1986 पृष्ठ 20)।

1 3 सास्कृतिक नाभिक/उद्गम क्षेत्र.–

मनुष्य की उत्पत्ति अभिनूतन काल मे 20 लाख वर्ष पूर्व हुई (Spencer, J E and Thomas, W L 1978, Page 29)। प्रारम्भ मे मनुष्य पूर्णत प्रकृति पर आश्रित था। मनुष्य मे जैसे–जैसे बौद्धिक विकास हुआ तथा प्राकृतिक तत्वो एव जगली पशुओ से सुरक्षा की भावना आयी मनुष्य एक स्थान पर एकत्रित होकर जीवन व्यतीत करना प्रारम्भ किया। मनुष्य को किसी स्थान पर रहने के लिए सबसे प्रमुख आवश्यकता जल की सुविधा जनक प्राप्ति थी, अत मानव के सास्कृतिक नाभिक या उद्गम के क्षेत्र नदी घाटियो मे नदियो के समीप बने।

इन क्षेत्रो मे उपजाऊ नदी घाटिया, समतल धरातल के साथ पेय और सिचित जल, जल–यातायात, सुरक्षा और मत्स्याखेट आदि की सुविधाये प्राप्त थी। यहा बसने वाले मानव समूह ने पशुओ की सहायता से कृषि कार्य को आगे बढाया और आवश्यकता से अधिक अन्न उपजाने मे सफलता प्राप्त की, जिसके अनुरक्षण व व्यापार के लिए नये ढग के उपकरणो व अधिवासो को विकसित करना पडा। उक्त क्षेत्र की महत्ता बढ जाने से समीपवर्ती क्षेत्रो के लोग भी आकृष्ट हुए, जिससे जनसख्या मे वृद्धि होती गई। जीवन की सुविधाये सरल व सुगम होने से मनुष्य अनेक दिशाओ मे अपने क्रिया–कलापो को विकसित करने मे सफल हो सका। इस परिस्थिति मे मानव सस्कृति को विकसित होने का अवसर प्राप्त हुआ, जिसके फलस्वरूप कुछ क्षेत्रो मे मानव सस्कृति के हृदयस्थलो या क्रोड (Cultural Hearth) का अभ्युदय हुआ जिसके परिणामस्वरूप स्थायी सास्कृतिक परम्पराओ का विकास हुआ तथा मानव के रहन–सहन के स्तर को वास्तविक परिभाषा मिली। इन हृदयस्थल क्षेत्रो के क्रोड से बाहर की ओर दूसरे क्षेत्रो मे सभ्य समाज के लोगो के रहने के तौर तीरके, नियम, तकनीक व परम्पराओ का मानव समूहो मे प्रसार हुआ। विश्व के चार प्रमुख नदी घाटियो मे वृहद् स्तर के हृदयस्थल या क्रोड विकसित हुए तथा नई दुनिया (उत्तरी, दक्षिणी अमेरिका) मे दो लघु स्तर के सास्कृतिक हृदयस्थलो का विकास हुआ। इनमे दजला, फरात की घाटी मे मेसोपोटामिया हृदयस्थल, हृागहो घाटी मे हृागहो

हृदयस्थल, सिन्धु घाटी मे सैन्धव हृदयस्थल, नील घाटी मे नील हृदयस्थल तथा नई दुनिया मे मध्य अमेरिका (दक्षिणी मैक्सिको, युकाटन और ग्वाटेमाला) हृदयस्थल एव एण्डियन हृदयस्थल स्थित है (Spencer, J E and Thomes W L 1978, Page 167, 174)।

सिन्धु घाटी सभ्यता विश्व की प्राचीनतम् सभ्यताओ मे से एक है। सिन्धु सस्कृति के क्रोड मे कला, गृह निर्माण कुशलता, तकनीक और नगरो तथा गावो की नियोजित सरचना प्राचीन समय मे विकसित अवस्था मे थी। सिन्धु घाटी सस्कृति का प्रभाव पूर्व और दक्षिण के क्षेत्रो मे अत्यधिक था। कालान्तर मे इसका स्थान वैदिक सस्कृति ने ले लिया और सम्पूर्ण गगा घाटी क्षेत्र मे इस सभ्यता का प्रसार होने लगा। इसी क्रम मे गगा घाटी मे आर्य सस्कृति एव सभ्यता का विकास हुआ जिसके क्रोड मे आर्य सस्कृति का केन्द्र प्रयाग नगर बसा हुआ है। वैदिक युग मे प्रजापति ब्रह्नाजी ने गगा–यमुना एव सरस्वती के त्रिवेणी स्थल पर प्रथम यज्ञ किया। सिन्धु सभ्यता के पराभव के साथ गगा घाटी मे स्थानान्तरित समाज द्वारा रामायण और महाभारत कालीन सभ्यताओ का विकास किया गया। भारतीय सस्कृति के आदि ग्रन्थो रामायण, महाभारत तथा पुराणो मे प्रयाग के महत्व का विशेष वर्णन किया गया है। आर्यसस्कृति का काल निर्धारण करने के लिए अनेक विद्वानो बाल गगाधर तिलक, हामैन, जैकब, मैक्समूलर, मैक्डानेल, विल्सन, बेबर आदि ने प्रयत्न किया है, परन्तु मतो मे एक्यता नही पायी जाती है। इन लोगो ने आर्य सस्कृति का काल पच्चीस हजार, आठ हजार, छ हजार और अन्तत तीन हजार वर्ष पूर्व तक माना है (सिन्हा, हरेन्द्र प्रताप 1953 पृ0 159)।

सिन्धु सभ्यता अनुसन्धान समिति के परिचालक सर जान मार्शल ने सिन्धु सस्कृति को 6 हजार वर्ष पूर्व की सस्कृति बताया है। इस प्रकार इस सभ्यता के प्रभाव क्षेत्र मे स्थित भारत की प्राचीन सप्तपुरियो–अयोध्या, मथुरा, गया, काची, काशी, अवन्तिका, पुरी और द्वारावती का विकास हुआ होगा। इन सप्तपुरियो मे शिरोमणि तीर्थराज प्रयाग का इतिहास बहुत प्राचीन है। इसके अतिरिक्त स्नान के समय किये जाने वाले 'सकल्प' और भारत की कोटि–कोटि नर–नारियो की आस्था, श्रद्धा, भक्ति, और मान्यताओ से सिद्ध है कि प्रयाग की सभ्यता और सस्कृति बहुत प्राचीन है। साहित्य का आदि स्रोत बाल्मीकि रामायण इसी प्रदेश के गगा और टोस के सगम पर करूण श्लोक के रूप मे उद्‌गारित हुआ था। अन्त मे कहा जा सकता है कि प्रयाग आदि काल से ही सम्पूर्ण भारत के धार्मिक एव सास्कृतिक

प्रेरणा का हृदय स्थल रहा है।

14 प्रयाग एक प्राचीन हिन्दू/भारतीय सस्कृति के प्रतीक के रूप मेः—

प्रागैतिहासिक काल से आज तक प्रयाग धर्मों और सम्प्रदायो, सभ्यताओ और सस्कृतियो, नियमो और व्यवस्थाओ का जन्मदाता, प्रश्रयदाता तथा मार्गदर्शक रहा है। वैदिक, महाकाव्य कालीन, पौराणिक, बौद्ध, जैन, सन्तमार्गी, सूफी आन्दोलन यहा के वातावरण मे मिश्रित तथा आत्मसात होकर फलते—फूलते रहे। प्रयाग प्राचीन समय से तीर्थ केन्द्र के रूप मे विकसित रहा है। ये तीर्थ केन्द्र अध्यात्म एव ज्ञान के केन्द्र रहे है। प्राचीन समय मे जब विश्वविद्यालय या विद्यालय नही थे तो इन तीर्थ केन्द्रो का उपयोग मानव को अध्यात्म, मानवीय मूल्यो एव ज्ञान प्रदान करने के लिए किया जाता था। इन केन्द्रो पर गुरूकुल व्यवस्था होती थी। भारतीय सस्कृति के जो चार आश्रम ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, सन्यास और वानप्रस्थ है उनकी दीक्षा इन केन्द्रो पर दी जाती थी। प्रयाग मे महर्षि भारद्वाज वर्तमान आनन्द भवन के सामने गगा तट पर रहते थे। यहा एक विश्वविद्यालय था जिसमे दस हजार विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते थे। भारद्वाज ऋषि इस विद्यालय के कुलपति थे। रामायण मे वर्णन मिलता है कि भगवान राम ने इस आश्रम मे भारद्वाज मुनि से आगे के अरण्य क्षेत्र के मार्ग एव शिक्षा लेने के पश्चात् वन—गमन प्रारम्भ किया। भारद्वाज ऋषि ने यही बैठकर 'सर्वतन्त्र सग्रह' नामक एक वृहद पुस्तक लिखी थी। इसमे उस समय के आविष्कृत सम्पूर्ण वैज्ञानिक कलाओ का वर्णन है। इस ग्रन्थ मे भारद्वाज ऋषि ने 'मरूत—सखा' या 'पुष्पक' विमान के निर्माण सम्बन्धी तथ्यो का उल्लेख किया (सिन्हा हरेन्द्र प्रताप 1953, पृष्ठ 162)।

इससे स्पष्ट है कि प्रयाग केवल धार्मिक केन्द्र ही नही था बल्कि यह एक वैज्ञानिक शोध केन्द्र था जो मानव के नैतिक एव सद्वैचारिक मूल्यो के साथ—साथ व्यावहारिक ज्ञान एव वैज्ञानिक शोध, चिन्तन का विकास कर सके। इन केन्द्रो पर मनुष्य के चरित्र का सम्पूर्ण परिष्कार करके शुद्धिकरण की किया की जाती थी।

प्रयाग ज्ञान के केन्द्र के साथ—साथ विविध धार्मिक कियाओ का केन्द्र भी है, जो भारतीय सस्कृति का एक महत्वपूर्ण अग है। धार्मिक कियाओ मे सस्कार एक महत्वपूर्ण प्रकिया है। सस्कार सोलह होते हैं। प्रयाग की सस्कृति मे इन षोडष सस्कारो की प्रधानता है। ये सस्कार सुकौशल पूर्ण उपायो द्वारा ऐसे बाधे गये है कि यदि विधिपूर्वक अनुष्ठान हो तो ये ही सस्कार मनुष्य को मानवीय मूल्यो से युक्त एव मोक्ष को प्रदान करने वाले होते

है। प्रयाग समस्त तीर्थों के पुण्य फलो का प्रदाता और धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, इस चतुर्वर्ग की प्राप्ति का साधन बताया गया है। यह प्रयागराज देवलोक और पितृलोक है। इसके दर्शन करने तथा शरीर पर उसकी मृत्तिका स्पर्श करने मात्र से ही मनुष्य पाप मुक्त हो जाता है। प्रयाग मे शरीर त्याग करने से मनुष्य को मुक्ति प्राप्त होती है, किन्तु जो व्यक्ति उसका स्मरण करते हुए शरीर त्याग करता है उसको सीधे ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है।

प्रयाग मे मुण्डन सस्कार का विशेष महत्व है। पुराणो मे वर्णित है कि प्रयाग मे किया गया मुण्डन गया के पिण्डदान, कुरूक्षेत्र के दान और काशी के देह त्याग से अधिक महत्व रखता है। काशी खण्ड मे बताया गया है कि यहा के मुण्डन सस्कार करने से सभी फल एक साथ प्राप्त हो जाते है। इसके साथ ही पिण्डदान एव वेणीदान का भी विशेष महत्व है। भारत की सास्कृतिक धरोहर पवित्र गगा एव सगम स्थल स्नान के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। 'तीर्थ चिन्तामणि' मे उद्धृत ऋृग्वेद (खिल 10/24) के एक मन्त्र मे कहा गया है कि जिस स्थान पर गगा और यमुना ये दो नदिया मिलती है, उस स्थल पर स्नान करने से स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है। जो जन उस स्थान पर शरीर विर्सजन करते है, वे भी अमर हो जाते है (टडन, हरिमोहन दास 2001, पृष्ठ 10 से 22)।

यज्ञ एव हवन हिन्दू सस्कृति का एक महत्वपूर्ण कर्म है। प्रयाग का शाब्दिक अर्थ विशेष प्रकार के यज्ञ किये जाने से है। जिस प्रकार पितरो की मुक्ति गया मे श्राद्ध करने से होती है, ऋषि मुनियो के सम्मेलन का विशेष स्थान नैमिषारण्य है, कर्मकाण्ड के लिये काशी का महात्म्य है, और गुरू धर्म के लिये पुष्करराज है, ठीक उसी प्रकार विशेष प्रकार के यज्ञ करने का एक मात्र स्थान प्रयाग है। यही कारण है कि सर्वप्रथम प्रजापति ब्रह्मा ने यहा यज्ञ किया, इसके बाद शिव, इन्द्रादि देवताओ और ऋषियो ने यहा यज्ञ किया। प्रयाग मे स्थित अखाडे हिन्दू धर्म की रक्षा मे महत्वपूर्ण योगदान किये हैं(सिन्हा, हरेन्द्र प्रताप 1953, पृष्ठ 27)।

प्रयाग के हिन्दू/भारतीय सस्कृति का धरोहर या प्रतीक होने के अन्य प्रमुख कारणो मे प्रयाग का सास्कृतिक आगार होना, हिन्दू सस्कृति के सचार एव प्रसार का केन्द्र होना, उच्चकोटि का तीर्थस्थल होना जहा पर सामान्य उद्देश्यो से भी लोगो का निरन्तर आना एव विभिन्न सास्कृतिक क्षेत्रो मे एकता स्थापित करना आदि है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भारतीय सस्कृति की अन्य विशिष्टताये जैसे धार्मिकता और

आध्यात्मिकता, सहिष्णुता, चिरस्थायिता, सार्वभौमिकता, ग्रहणशीलता, समन्वयवादिता आदि प्रयाग मे पायी जाती है। अत कहा जा सकता है कि प्रयाग भारतीय सस्कृति एव हिन्दू सस्कृति एव हिन्दू सस्कृति का प्रतीक केन्द्र है।

1.5 वर्तमान अध्ययन की वस्तुनिष्ठता –

अध्ययन क्षेत्र प्रयाग प्राचीन समय से ही ऋषि, मनीषियो, विद्वानो एव शोधकर्ताओ का अध्ययन विषय रहा है। प्राचीन साहित्य एव धर्मग्रन्थो यथा–वेद, पुराण, महाभारत, रामायण एव ऐतिहासिक ग्रन्थो मे प्रयाग का विशेष वर्णन प्राप्त होता है। वर्तमान समय मे न केवल भारतीय विद्वानो ने बल्कि विदेशी विद्वानो ने भी प्रयाग का अध्ययन किया है। इनमे श्रीवास्तव, शालीग्राम (1937), पाण्डेय, बी0एन (1955), सिन्हा, हरेन्द्र प्रताप (1953), सिह प्रो0 उजागिर एव द्विवेदी प्रो0 आर0एल0 (1961), कैपलान अनीता लीहैरिसन (1982), दूबे, डी0पी0 (1990), मिश्रा मीनू (1993) का नाम सर्वप्रमुख है। इन सभी साहित्य एव शोध ग्रन्थो मे प्रयाग या इलाहाबाद नगर के किसी एक पक्ष का अध्ययन किया गया है। शोधार्थी ने प्रयाग के सम्पूर्ण सास्कृतिक पक्षो के विविध आयामो का अध्ययन किया है एव प्रयाग के समाकलित स्वरूप को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। प्रयाग का अध्ययन इस रूप मे किया गया है कि प्रयाग और उसका परिप्रदेश सास्कृतिक एव मानवीय मूल्यो का निरन्तर विकास करता रहे। प्रयाग का समन्वित सास्कृतिक अध्ययन सास्कृतिक भूगोल के अन्तर्गत किया गया है।

तीर्थ स्थल, ज्ञान, मानवीय मूल्यो एव आध्यात्मिकता के केन्द्र रहे है। इसके साथ ही तीर्थयात्रा मानव समाज की एक प्राचीन और निरन्तर धार्मिक क्रिया है। भारत के अनेक भागो मे फैले हुए तीर्थ केन्द्र करोडो तीर्थ यात्रियो को दूर–दूर से आकर्षित करते रहते है। इस धार्मिक प्रक्रिया के दौरान लोगो का सचार देश के एक कोने से दूसरे कोने तक निरन्तर होता रहता है जिसके फलस्वरूप अनेक आर्थिक, सामाजिक, सास्कृतिक एव आध्यात्मिक प्रक्रियाए स्वत होती रहती है। भारत के तीर्थों मे अनेक तीर्थ ऐसे है, जिनका न कि भारत मे बल्कि विश्व मे प्रथम स्थान है, प्रयाग उनमे से एक है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे प्रयाग और उसके परिप्रदेश के सास्कृतिक विकास के विभिन्न आयामो का परीक्षण तथा विश्लेषण को ही प्राथमिकता दी गयी है। इसके साथ ही विभिन्न सास्कृतिक तत्वो का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मे मूल्याकन किया गया है। सम्पूर्ण विषय वस्तु

को आठ अध्यायो मे विभिाजित किया गया है –

1 शोध प्रबन्ध के प्रथम अध्याय मे प्रस्तावना, सस्कृति एव् सस्कृति के निर्धारक तत्वो एव भूगोल की सास्कृतिक पारिस्थितिकी के रूप मे वर्णन के साथ–साथ सास्कृतिक उद्गम क्षेत्र, विधितन्त्र की परिचर्चा की गयी है।

2 शोधार्थी द्वारा द्वितीय अध्याय मे प्रयाग के अनुकूल भौगोलिक परिवेश के तत्वो के साथ–साथ मानवीय तत्वो का विश्लेषण किया गया है।

3 शोध प्रबन्ध के तृतीय अध्याय मे प्रयाग के धार्मिक एव सास्कृतिक स्वरूप के विविध आयामो की चर्चा की गयी है तथा एक प्रमुख तीर्थ केन्द्र के रूप मे विकसित होने का विश्लेषण किया गया है।

4 चतुर्थ अध्याय मे सर्वप्रथम प्रयाग का शैक्षणिक केन्द्र के रूप मे वर्णन किया गया है तथा अन्त मे प्रयाग के शैक्षणिक परिप्रदेश का निर्धारण किया गया है।

5 शोध ग्रथ के पचम अध्याय मे प्रयाग का प्रशासनिक एव राजनीतिक केन्द्र के रूप मे वर्णन के पश्चात् स्वतत्रता सग्राम मे प्रयाग की भूमिका का विश्लेषण किया गया है।

6 शोधार्थी द्वारा षष्टम् अध्याय मे प्रयाग मे परिवहन एव सचार के साधनो के विकास का मूल्याकन किया गया है, तथा परिवहन प्रवाह एव बस सेवा के आधार पर परिवहन प्रदेश का निर्धारण किया गया है।

7 शोध प्रबन्ध के सप्तम् अध्याय मे प्रयाग के नगरीय स्वरूप का वर्णन किया गया है तथा विविध सेवाओ के आधार पर नगर के प्रभाव प्रदेश का विश्लेषण किया गया है।

8 अष्टम् अर्थात् अन्तिम अध्याय मे प्रयाग और उसके परिप्रदेश के लिए सास्कृतिक तत्वो का नियोजन किया गया है तथा प्रयाग के सास्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण बनाये रखने सम्बन्धी प्रस्ताव दिये गये है।

इस प्रकार अध्ययन की सम्पूर्ण वस्तुनिष्ठता को प्रयाग और उसके परिप्रदेश के समन्वित सास्कृतिक विकास को दृष्टिगत करते हुए निर्धारित किया गया है।

1.6 <u>अध्ययन विधि :–</u>

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे आगमनात्मक एव निगमनात्मक दोनो उपागमो का सहारा

लिया गया है। प्रथम मे जहा आकडो का एकत्रीकरण करना, पारिभाषित करना, वर्गीकरण करना, तथ्यो का क्रम करना, सामान्यीकरण करना तथा नियम एव सिद्धानत को निर्धारित करना शामिल है वही दूसरी विधि मे आकडो का एकत्रीकरण, सकल्पनाओ का निर्माण, पारिभाषित करना, वर्गीकृत करना तथा मापन करना एव पूर्व की सकल्पनाओ का परीक्षण करने के बाद नियम एव सिद्धान्त का निर्माण सम्मिलित है।

1 61 <u>आकडा सग्रहण :–</u>

प्रस्तुत अध्याय मे आकडे प्रमुखत तीन स्रोतो से सग्रहीत किये गये है–

(क) लिखित अभिलेख

(ख) मानचित्र

(ग) व्यक्तिगत सर्वेक्षण तथा प्रश्नावली

(क) लिखित अभिलेख .–

प्रस्तुत अध्ययन मे जनपद गजेटियर इलाहाबाद 2000, जिला जनगणना हस्त पुस्तिका जनपद इलाहाबाद (1951, 1961, 1971, 1981, 1991 और राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र इलाहाबाद से प्राप्त 2001 की प्राथमिक जनगणना रिपोर्ट) तथा जनगणना महानिदेशालय लखनऊ से प्रकाशित आकडे एव प्रेस विज्ञप्ति, साख्यिकीय पत्रिका, सामाजार्थिक समीक्षा जनपद इलाहाबाद, भौगोलिक ग्रन्थो, शोध प्रबन्धो एव शोध पत्रो, प्राचीन ग्रन्थो मे वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत एव सस्कृत के अन्य साहित्य तथा प्रयाग से सम्बन्धित अन्य पुस्तको से मार्ग दर्शन प्राप्त किये गये है। इसके साथ ही इलाहाबाद नगर निगम, इलाहाबद विकास प्राधिकरण व कुम्भ मेला कार्यालय से भी प्रकाशित आकडो का उपयोग द्वितीयक स्रोत के रूप मे किया गया है।

(ख) मानचित्र :–

शोध कार्य मे विभिन्न प्रकार के मानचित्रो का सहयोग लिया गया है, जिनमे जनपदीय गजेटियर मानचित्र, साख्यिकीय पत्रिका मानचित्र, नगरीय सेवाओ से सम्बन्धित मानचित्र, ऐतिहासिक ग्रन्थो से प्राप्त मानचित्र, जनपद इलाहाबाद द्वारा प्रदत्त मानचित्र एव सशोधित नगर महायोजना 2001 से प्राप्त मानचित्र उल्लेखनीय हैं।

(ग) <u>व्यक्तिगत सर्वेक्षण तथा प्रश्नावली –</u>

प्राथमिक स्रोत मे तीर्थ यात्रियो के सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार को सम्मिलित किया जाता है। इसमे कुम्भ मेले के समय प्रश्नावली बनाकर आकडो का सग्रह किया गया है तथा प्रतिदिन आने वाले यात्रियो का सर्वेक्षण भी किया गया है। दूसरे मे देश के दूर–दूर भागो से यात्री आते हैं जबकि प्रथम प्रकार के यात्री (महाकुम्भ को छोडकर) समीपवर्ती क्षेत्रो से ही आते है। इस सर्वेक्षण के द्वारा यात्रियो के सामाजिक–आर्थिक–राजनैतिक स्थिति का आकलन किया गया है।

1 62 <u>आकडो का एकत्रीकरण एव विश्लेषण –</u>

आकडो के विश्लेषण मे साख्यिकीय विधियो व मानचित्रीय विधियो का सहारा लिया गया है। साख्यिकीय विधियो मे माध्य, प्रामाणिक विचलन, माध्य दूरी, माध्य केन्द्र एव प्रामाणिक दूरी विधि का प्रयोग किया गया है। इसके अन्तर्गत जनसख्या की दशकीय वृद्धि को दण्ड आरेख विधि द्वारा, प्रयाग ओर उसके आस–पास स्थित सास्कृतिक केन्द्रो के मध्य दूरी का प्रामाणिक विचलन द्वारा निर्धारण किया गया है। आकडो के मानचित्रीय विश्लेषण हेतु सममान रेखा विधि, छाया विधि, यातायात प्रवाह मानचित्र एव समानुपातिक वृत्त विधि का प्रयोग किया गया है। परिवहन के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए रेल–सडक अभिगम्यता एव रेल–सडक सयोजकता मानचित्र का प्रयोग किया गया है। नगरीय सेवाओ के प्रभाव क्षेत्र को विभिन्न आनुपातिक रेखाओ द्वारा दिखाया गया है।

1.63 <u>सकल्पनाए :–</u>

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे निम्नलिखित सकल्पनाओ का परीक्षण किया गया है–

1 प्रयाग के सास्कृतिक केन्द्र के रूप मे विकास के लिए अनुकूल भौगोलिक स्थिति का परीक्षण करना।

2 प्रयाग के धार्मिक एव सास्कृतिक स्वरूप के विविधि आयामो के साथ–साथ इसके प्रभाव क्षेत्र का परीक्षण एव विश्लेषण करना।

3 कुम्भ पर्व एव कुम्भ नगर के सामाजिक समरसता एव राष्ट्रीय एकता मे सहयोग की पुष्टि करना।

4 प्रयाग का आध्यात्मिक एव ज्ञान के केन्द्र के रूप मे परीक्षण करना।

5 प्रयाग एक प्रशासनिक केन्द्र के साथ–साथ राजनीतिक कियाकलापो का गढ रहा है तथा प्राचीन समय से ही राजनीति के क्षेत्र मे नेतृत्व प्रदान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

6 प्रयाग की अनुकूल भौगोलिक स्थिति विभिन्न परिवहन एव सचार माध्यमो के स्नायुतत्र के केन्द्र मे स्थित है।

7 प्रयाग के परिमण्डल मे समाविष्ट समस्त क्षेत्र सामाजिक, आर्थिक एव नगरीय सेवाओ से कार्यात्मक रूप मे इस केन्द्र से सम्बद्ध है।

8 प्रयाग के समन्वित सास्कृतिक विकास के लिए नियोजन सम्बन्धी परीक्षण किया गया है।

9 प्रयाग के सास्कृतिक विरासत का सरक्षण एव उसे अक्षुण्ण बनाये रखने का प्रयास किया गया है।

References

Jorden, T G and Rowntree L (1976) — The Human Masaic A Thematic Introduction to Cultural Geography, San Francisco

Kroeber, A L & Kluckhohn, C (1952) — 'Cultural A Critical Review of Concepts and Definitions' Vol -47,No 1

Malinovaski, B (1931) — Encyclopaedia of the social sciences, Vol 4, Page 621-641

Rubenstein and Boon (1990) — The cultural landscape, An introduction to Human Geography, prentice Hall of India, New Delhi 1990, Page - 21

Sauer, C O (1927) — Recent Developments in Cultural Georaphy in E C Hays (ed) Recent Deveopments in social sciences, Philadelphia

Spencer, J E and Thomas, W L (1978) — Introducing Cultural Geography IInd edition, John Wiley and Sons, New - York, Page 29, 167, 174

Wagner, P L and Mikesell, M W (1962) — Readings in Cultural Geography chicago

दूबे, एच0एन0 (1999) — भारतीय सस्कृति एव कला, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृष्ठ–15

दीक्षित, श्रीकान्त एव त्रिपाठी रामदेव (2001) — सास्कृतिक भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर पृष्ठ–11

दीक्षित, रमेश दत्त (2000)	भौगोलिक चितन का विकास एक ऐतिहासिक समीक्षा, प्रेटिस हाल आफ इडिया, प्राइवेट लिमिटेड, नयी दिल्ली, पृष्ठ–253,254
मत्स्य पुराण	108/15–16 अध्याय–108, शलोक सख्या–15,16 तथा सर्वेषु लोकेषु प्रयाग पूजयेत बुध । पूज्यते तीर्थराजस्तु सत्यमेव युधिष्ठिर ।।
प्रसाद, गायत्री (1986)	सास्कृतिक भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद पृष्ठ स0–20
सिन्हा, हरेन्द्र प्रताप (1953)	'भारत को प्रयाग की देन' स्टैन्डर्ड प्रेस, इलाहाबाद, पृष्ठ–159, 162
टडन, हरिमोहन दास (2001)	'प्रयागराज' साहित्य भवन प्रा0 लि0, इलाहाबाद पृष्ठ–10, 22

अध्याय–2

प्रयाग की भौगोलिक पृष्ठभूमि

2 1 स्थिति व विस्तार·

प्रयाग (इलाहाबाद) 25^0 26^1 उत्तरी आक्षाश व 81^0 50^1 पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। इसका नगर पालिका क्षेत्र 25^0 24^1 45^{11} उत्तरी से 25^0 30^1 10^{11} उत्तरी आक्षाश तथा 81^0 45^1 पूर्वी से 81^0 53^1 8^{11} पूर्वी देशान्तर के मध्य फैला हुआ है। छावनी सहित इस नगर के उत्तर व पूर्व मे गगा नदी तथा दक्षिण मे यमुना नदी है। इसकी पश्चिमी सीमा जो 1–11–56 को अस्तित्व मे आई वह कुछ जटिल है। इसका अधिकाश भाग नई छावनी की पश्चिमी सीमा, उत्तरी रेलवे लाइन और ससुर खदेरी नदी द्वारा सीमाकित है। पश्चिम मे नगर पालिका की सीमा वर्तमान समय मे मुन्डेरागाव तक फैली हुई है। नगर पालिका व छावनी सहित यह नगर 1 11 56 मे 58 01 वर्ग कि0मी0 क्षेत्र पर विस्तृत था लेकिन वर्तमान समय मे (सन 2001) इस नगर का विस्तार लगभग 83-·17 वर्ग कि0मी0 से अधिक क्षेत्र पर हो गया है। इसके अतिरिक्त छावनी क्षेत्र 18 3 वर्ग कि0 मी0 क्षेत्रफल पर स्थित है (द्विवेदी, आर0एल0 1961, सेन्शस आफ इण्डिया 2001 प्रेस विज्ञप्ति से)।

इलाहाबाद गगा और यमुना नदियो के दुशाख सगम के अन्तर्गत आने वाली भूमि और गगा के विसर्प चाप मे वृहद प्रायद्वीप पर विस्तृत है। इस तरह जहा गगा यमुना दोआब का अन्त होता है उसके अन्तिम बिन्दु पर यह नगर अवस्थित है। इस प्रकार इस नगर के क्रोड को पूर्व मे जल से सुरक्षा और जलापूर्ति की सुविधा थी (सिह आर0एल0 1955)। उत्तर की ओर इस नगर का फैलाव होने के पूर्व यह यमुना नदी तट के उच्च ककड कटक पर फैला था। यहा के भू–प्रदेश की भौतिक प्रकृति का प्रभाव इसके नगरीय विकास पर निरन्तर पडा है। यहा के नगरीय निवास्य पर स्थल की विविधता का अधिक प्रभाव पडा है तथा नगरीय दृश्य के विस्तार पर ऋृणात्मक प्रभाव डाला है। वृहद् गगा व यमुना नदियो के समीप होने के कारण यहा की भूमि असमतल है तथा उच्च भूमि और कछार इसके अर्न्तगत आते है। भीषण बाढ के समय इस नगर का कुछ भाग बाढ से प्रभावित हो जाता है। प्रयाग रेलवे स्टेशन से किला तक गगा के किनारे बानी व बेनी बाध बनाये जाने से यहा के स्थल का

LOCATION MAP
IN INDIA
0 400
km
U.P.
IN UTTAR PRADESH
80 0 80
km
Lucknow
STUDY AREA
ALLAHABAD DISTRICT
N
DISTRICT PRATAPGARH
FROM LUCKNOW
SORAON
PHULPUR
TO JAUNPUR
TO VARANASI
Ganga R
FROM KANPUR
DISTRICT KAUSHAMBI
PRAYAG
(ALLAHABAD)
HANDIA
NH-2
TO VARANASI
DISTRICT BHADOHI
Yamuna R
Ganga R
Jasra
BARA
KARCHHANA
SIRSA
SH 44
FROM BANDA
FROM MANIKPUR
SHANKERGARH
Tons R
MEJA
MIRZAPUR
DISTRICT BANDA
FROM REWA
Koraon
Belan R
MADHYA PRADESH
DISTRICT MIRZAPUR
District Boundary
Tahsil ,,
District Headqarter.. ..
Tahsil ,, .. .
Roads . . .. .
Railway ....
Rivers. ..
10 0 10
km

Fig.1 1

मूल्य अत्यधिक बढ गया है। इस प्रकार पूरब मे नगर के विस्तार के लिये मोतीलाल नेहरू सडक और दारागज के बीच आने वाले गगा कछार का अधिकाश भाग उपलब्ध हो गया।

इलाहाबाद (मानचित्र स0–1) ऊपरी गगा घाटी के पूर्वी भाग मे अवस्थित है। दक्षिण मे कुछ ही दूरी पर विन्ध्यन पहाडिया है जो जनपद के दक्षिणी भागो तक फैली हुई है जिसकी पुष्टि शकरगढ की समीपवर्ती पत्थर की खदानो की उपस्थिति से हो जाती है। गगा व यमुना नदियो के सगम पर अवस्थित होने के कारण इस नगर को प्रारम्भ से ही थल और जल मार्गों की सुविधा उपलब्ध रही है। पूरब से थल मार्ग नगर से होकर द्वाब तक पहुचते है। यह रेलमार्ग द्वारा कलकत्ता से 920 कि0मी0, मुम्बई से 1352 कि0मी0, दिल्ली से 624 कि0मी0, कानपुर से 195 कि0मी0, वाराणसी से 121 60 कि0मी0, लखनऊ से 200 कि0मी0 और जबलपुर से 382 कि0मी की दूरी पर स्थित है। कई रेल मार्गों के अतिरिक्त यह नगर उत्तम सडक मार्गों द्वारा कई नगरो से जुडा हुआ है। ऐतिहासिक ग्रैड ट्रक सडक इस नगर के हृदय स्थल से होकर गुजरती है। नौगम्य गगा व यमुना नदियो के सगम पर अवस्थित होने के कारण इस नगर को जल परिवहन की भी सुविधा है। फलत प्रारम्भ मे इस नगर का विकास आवागमन के मार्गों के केन्द्र के रूप मे प्रारम्भ हुआ। यदि यह कहा जाये कि इस नगर की नीव प्रारम्भ मे आन्तरिक वाणिज्य व सुरक्षा की दृष्टि से डाली गई तो इसमे कोई आश्यर्च की बात नही है। अधिकाशत इस नगर का बाद वाला विकास उपजाऊ गगा घाटी मे मात्र अवस्थित होने का परिणाम है क्योकि इस स्थल मे जो कुछ कमियां हैं उनकी पूर्ति गगा नदी की उपजाऊ मिट्टी से हो जाती है। हेबर महोदय ने कहा है "दो बडी नदियो के सगम स्थल वाले त्रिभुज पर शुष्क व उपजाऊ मिट्टी के क्षेत्र मे बडे नगर के लिये जो अनुकूल स्थिति भारत प्रदान करता है उस दृष्टि से इलाहाबाद की अवस्थिति सभवत अत्यधिक अनुकूल है "(काटजन, के एन 1945)। विदेशी पर्यटको की दृष्टि से भी इस नगर की अवस्थिति उत्कृष्ट है। डब्लू0एच0 रसेल ने टिप्पणी की है कि "भारत मे इलाहाबाद एक सुन्दरतम नगर हो जायेगा यदि ऐसा करने के लिये धन सुलभ हो जाय। जहा तक इसकी स्थिति का संबन्ध है इस नगर को अन्तरस्थलीय राजधानी बनने की सारी शर्तें विद्यमान हैं (मित्तल, सी0पी0 1945)। एक भारतीय पर्यटक का कहना है कि समस्त भारत में किले की स्थिति सर्वोत्तम है (घोष, एन0एन 1945)। यद्यपि इलाहाबाद की स्थिति के सबंध में कथित उक्त कथन अतिशयोक्ति पूर्ण है फिर भी निःसन्देह अत्युत्तम है।

वर्तमान समय मे इलाहाबाद विभिन्न धर्मो एव सस्कृतियो का केन्द्र होने के साथ–साथ महत्वपूर्ण शिक्षा का केन्द्र भी बन गया है। वर्तमान मे प्रयाग नगर का विस्तार पूर्व मे गगा पार झूसी तक उत्तर मे फाफामऊ तथा दक्षिण मे यमुना पार नैनी तक हो गया है।

2 2 उच्चावच

प्रारम्भिक दशाये

वर्तमान नगर द्वारा आच्छादित क्षेत्र की प्रारभिक उच्चावच दशाओ को अभिव्यक्त करना असभव है क्योकि मौलिक भौतिक भू–दृश्य बहुत ही परिवर्तित हो गया है। पुराने मानचित्र व अभिलेख भी उपलब्ध नही है। ऐसी सभावना है कि भौतिक भू–दृश्य के अधिकाश तत्व बहुत ही प्रारभिक काल सभवत ईश्वी सन् के प्रारम्भ मे ही स्थापित हो गये थे जब गगा यमुना नदियो ने अपना वर्तमान मार्ग निर्धारित किया और सगम स्थल अस्तित्व मे आया। 16वी शताब्दी के अन्तर्गत गगा के किनारे स्थूलकाय बाधो के बनाये जाने से नगर क्षेत्र का भौतिक भू–दृश्य बहुत ही परिवर्तित हो गया। फलत गगा पूरब की ओर आगे खिसक गई जिससे वर्तमान मे शुष्क मौसम मे अपने पुराने बैक से कुछ दूरी पर हो गई है और वृहद कछार भूमि की रचना हुई है जिसमे रबी की फसल अच्छी होती है।

1862 मे निर्मित मानचित्र से नगर क्षेत्र के प्रारम्भिक भौतिक लक्षणो का अनुमान (मानचित्र स0 2 1) लग जाता है जो तत्कालीन उच्चावच और जलप्रवाह प्रणाली के लक्षणो को स्पष्ट प्रदर्शित करता है। मानचित्र को देखने से प्रथम दृष्टया स्पष्ट हो जाता है कि नगर क्षेत्र गलीदार कटानो द्वारा अत्यधिक कटा–पिटा था। गगा नदी के विसर्प चाप मे तथा दक्षिणी पूर्वी खण्ड मे इस प्रकार के गलीदार कटान आज भी देखने को मिलते है। सम्पूर्ण क्षेत्र का जल इन्ही गलीदार कटानो के द्वारा नदियो मे पहुचता था जिनमे से कुछ तो पर्याप्त बडे विस्तार वाले थे। इनमे से एक न्यू कटरा और ममफोर्डगज के बीच बहता है। इसी प्रकार का दूसरा ससुर–खदेरी नाला है जो गगा चाप के पूर्वी आधे भाग मे स्थित है (द्विवेदी आर0एल0 1961)।

वर्तमान उच्चावचः

नगर के भौतिक भू–दृश्य पर मुख्य रूप से गगा व यमुना नदियो का प्रभाव दिखाई

PRAYAG (ALLAHABAD)
RELIEF
N
Contour Intervals 2 metre
GANGA RIVER
BM 95.4
BM 95
BM 96
• 95
BM 94
BM 97
BM 97
BM 94
96
94
92
90
88
86
84
82
80
78
95
• 92
• 84.7
84.7
87.1
YAMUNA RIVER
1
0
1
2
km
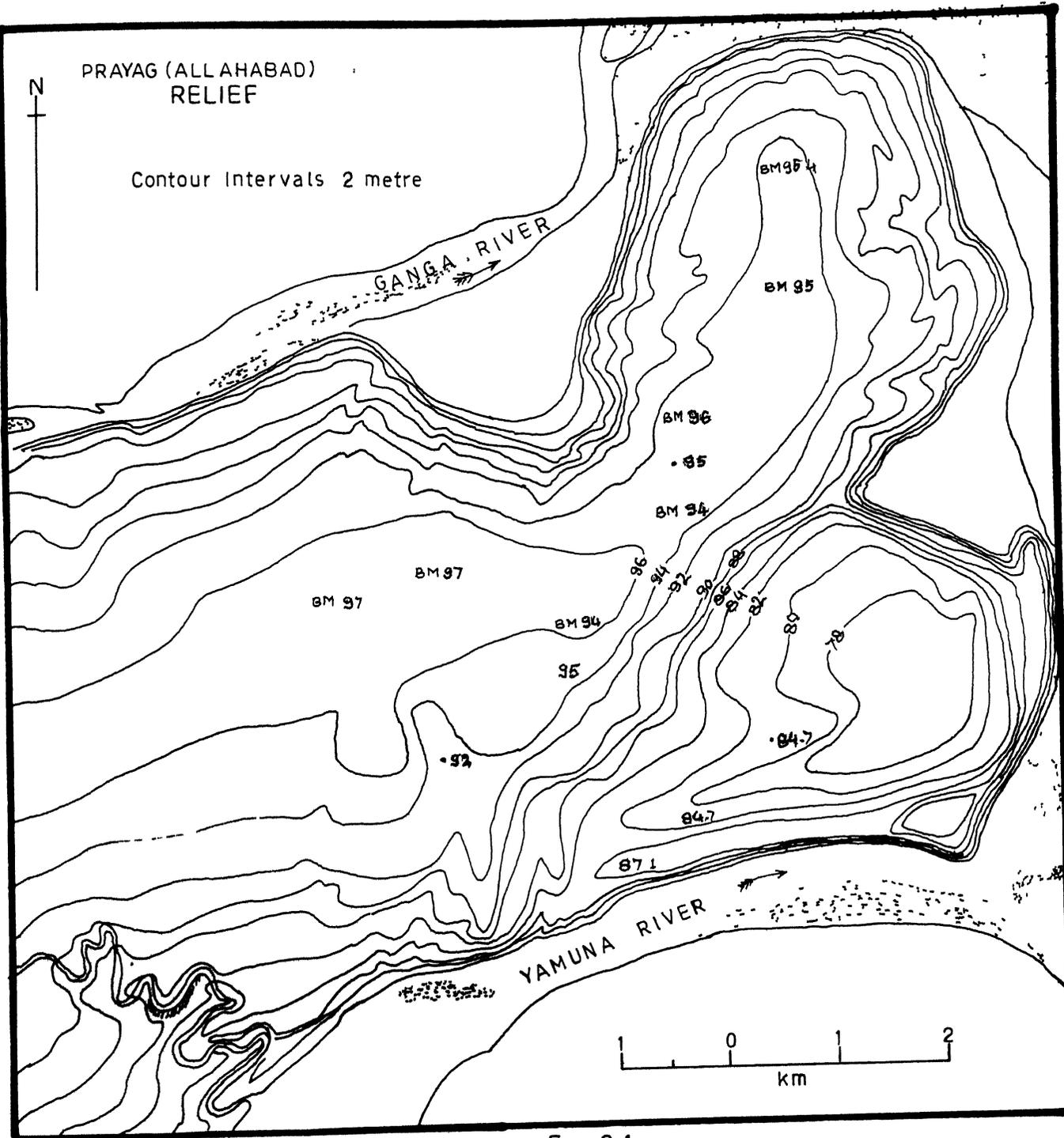
Fig 2.1

देता है। इसलिए इन नदियो का समीपी भाग पूर्णतया जलोद् निक्षेपो से बना है और इन नदियो का प्रभाव यहा के भूगर्भ व उच्चावच पर स्पष्टत परिलक्षित होता है। नगर क्षेत्र मे गगा जलोढको के दो विभाजन वागर और खादर दिखाई देते है। प्राचीन जलोढ निक्षेप सामान्य रूप से बाढ तल के ऊपर कुछ ऊँची वेदिकाओ का निर्माण करते है। इन प्राचीन जलोढ निक्षेपो मे अशुद्ध कैलशियम कारबोनेट के ककड और पिण्ड पाये जाते है जिन्हे ककड कहते हैं (किशनन, एम0एस0 1949)। खादर निक्षेप नदी के समीप पाये जाते है और वर्षाकाल मे बाढ आने पर पानी मे डूब जाते है। इस प्रकार वागर वाले भाग ऊँचे स्थल दूसरे शब्दो मे लघु पठार हैं जो इतने अधिक ऊँचे है कि वे बाढ के आने पर नही डूबते है (वाडिया, डी0एन0 1953)। इस प्रकार कहा जा सकता है कि सिविल लाइन व नगर का अधिकाश भाग ऊँचाई पर स्थित है। खादर भूमि मे बाढ आती रहती है लेकिन इस भूमि पर मुख्य रूप से कृषि की जाती है। उपनगरीय गाव वागर और खादर भूमि को विभाजित करने वाली रेखा पर अवस्थित है।

गगा—यमुना नदियो के सगम स्थल पर नगर के पूर्वी भागो मे वृहद कछार क्षेत्र पाया जाता है जो उच्च बानी व बेनी बाधो द्वारा सुरक्षित है। सामान्यतया भूमि की ऊँचाई 75 मीटर से कम है लेकिन यमुना नदी के किनारे उच्च ककड, कटक, किला और दारागज उसके अपवाद है जिनकी ऊँचाई समुद्री जल तल से 87 मीटर से अधिक है। उत्तर व पश्चिम मे स्थित सिविल लाइन, कटरा, कर्नलगज और दोनो कैन्टोनमेट क्षेत्रो की ऊँचाई समुद्र तल से 90 मीटर से भी अधिक है। 90 मीटर की समोच्च रेखा निम्न भूमि और उँच्च भूमि को अलग करती है। इस समोच्च रेखा के (मानचित्र स0 2 1) पश्चिम मे नगर का सबसे ऊँचा भाग पाया जाता है। सरोजिनी नायडू और नुरूल्लाह सडके इसी समोच्च रेखा पर पाई जाती हैं। सरोजनी नायडू सडक के किनारे कई स्थानो पर ऊँचाई 95 मीटर है। ग्रैंड ट्रंक और नुरूल्लाह सडको के सगम स्थल की ऊँचाई 95 40 मीटर है जो नगर मे सबसे ऊँचा भाग है।

उच्च भूमि क्षेत्र के नीचे कछार क्षेत्र है जो अति विशिष्ट क्षेत्र है। बेली और राजापुर गावो के नीचे उत्तर में एक विस्तृत तलछटीय खाडी है। पूरब मे गगा के मार्ग के कारण उत्तर मे अराजी बारूद खाना गाव और दक्षिण मे दारागज के किनारे की उच्च भूमि के बीच की विस्तृत खादर भूमि छूट जाती है। यमुना नदी की ओर उच्च भूमि और निम्न भूमि के बीच एक विभाजक रेखा है जहा यह नदी तीव्र कगार के ठीक नीचे लगभग 12 से 18 मीटर

की ऊँचाई पर बहती है। यमुना के तट तक दाहिने की ओर नगर पाया जाता है लेकिन पश्चिम मे इसका अपवाद है जहा ससुर खदेरी नदी और यमुना के समीप वृहद गलीदार भू-प्रदेश पाया जाता है जहा अनेको नाला दोनो नदियो मे जाकर गिरते है। इस भू-प्रदेश का अधिकाश भाग हल्के बालू मिट्टी का बना है तथा जिसकी उप परत ककड निर्मित है और जो कई स्थानो पर तीव्र सतह जल प्रवाह के लिये खुली है (देखे मानचित्र स० 2 1)।

2 3 जल प्रवाह तन्त्र

इलाहाबाद के जल प्रवाह तन्त्र का प्रथम व सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि यह गगा व यमुना नदियो पर अवस्थित है और इन्ही नदियो द्वारा तीन तरफ से घिरा हुआ है। फलत इस नगर को प्राकृतिक जल प्रवाह तत्र सुलभ है। यहा (मानचित्र 2 2) का जल विभाजक पश्चिमी भाग मे कानपुर और मेयो सडक मार्ग के किनारे है। इस प्रकार यह कटरा और कर्नलगज के बीच से होता हुआ विश्वविद्यालय के मुख्य कैम्पस को पार करता है। उत्तर मे जल विभाजक नवीन फाफामऊ सडक मार्ग का अनुसरण करता है।

इस नगर का प्राकृतिक जल अपवाह अनेको नालो द्वारा प्रभावित है जो प्रारम्भ मे वृहद् आकार वाले थे लेकिन वर्तमान मे वे सकुचित हो गये है प्रथम दृष्टया (मानचित्र 2 2) से यह स्पष्ट होता है कि नगर क्षेत्र के अधिकाश भाग का जल गगा मे जाता है। नगर के दक्षिणी पश्चिमी भाग का जल निकास चौखण्डी, करैशपुर, छाछर, सदियापुर डैरा और ससुर खदेरी नालो द्वारा यमुना मे होता है। इस प्रकार जल विभाजक के उत्तर और पश्चिम वाले क्षेत्र का जल कई तीव्र गामी जल मार्गों द्वारा गगा मे जाता है। ममफोर्ड गज और प्राचीन तथा नवीन कटरा क्षेत्रो का जल लाजपत राय सडक मार्ग के समानान्तर बहने वाले वृहद् नाले से होकर गगा मे गिरता है। गगा विसर्प के पूर्वी आधे भाग मे आनेवाला उपनगरीय क्षेत्र का जल वृहद् गलीदार कटान से होकर चादपुर-सलोरी के निकट गगा मे जाता है। एलेनगज और करनपुर का जल निकास प्रयाग स्टेशन नाली द्वारा गगा मे होता है जो धरहरिया के निकट नदी मे मिल जाता है।

सिविल लाइन, कर्नलगज, जार्जटाऊन टैगोर टाऊन और नये स्थान जो पठार जैसा समतल है और जो बक्शी व बेनी बाधो द्वारा सरक्षित है, का जल मोरी नाला द्वारा गगा मे जाता है। इन क्षेत्रो का सम्पूर्ण तीव्र जल मुख्य तीन नालियो द्वारा मोरी नाला मे जाता है। इनमें से एक नाली थार्नहिल और किला सडक मार्ग के समानान्तर है, दूसरी नाली कनिग

PRAYAG (ALLAHABAD)
DRAINAGE
N
Sand
Tank
Water Parting
Old Bank
Nala
GANGA RIVER
Mumfordganj Nala
Sohbatia Bagh Tank
Phul Talab
Talab Nawai Rai
Mori Nala
FORT
Daira Nala
Chachar Nala
YAMUNA RIVER
SASURKHADERI N
1 0 1 2
km
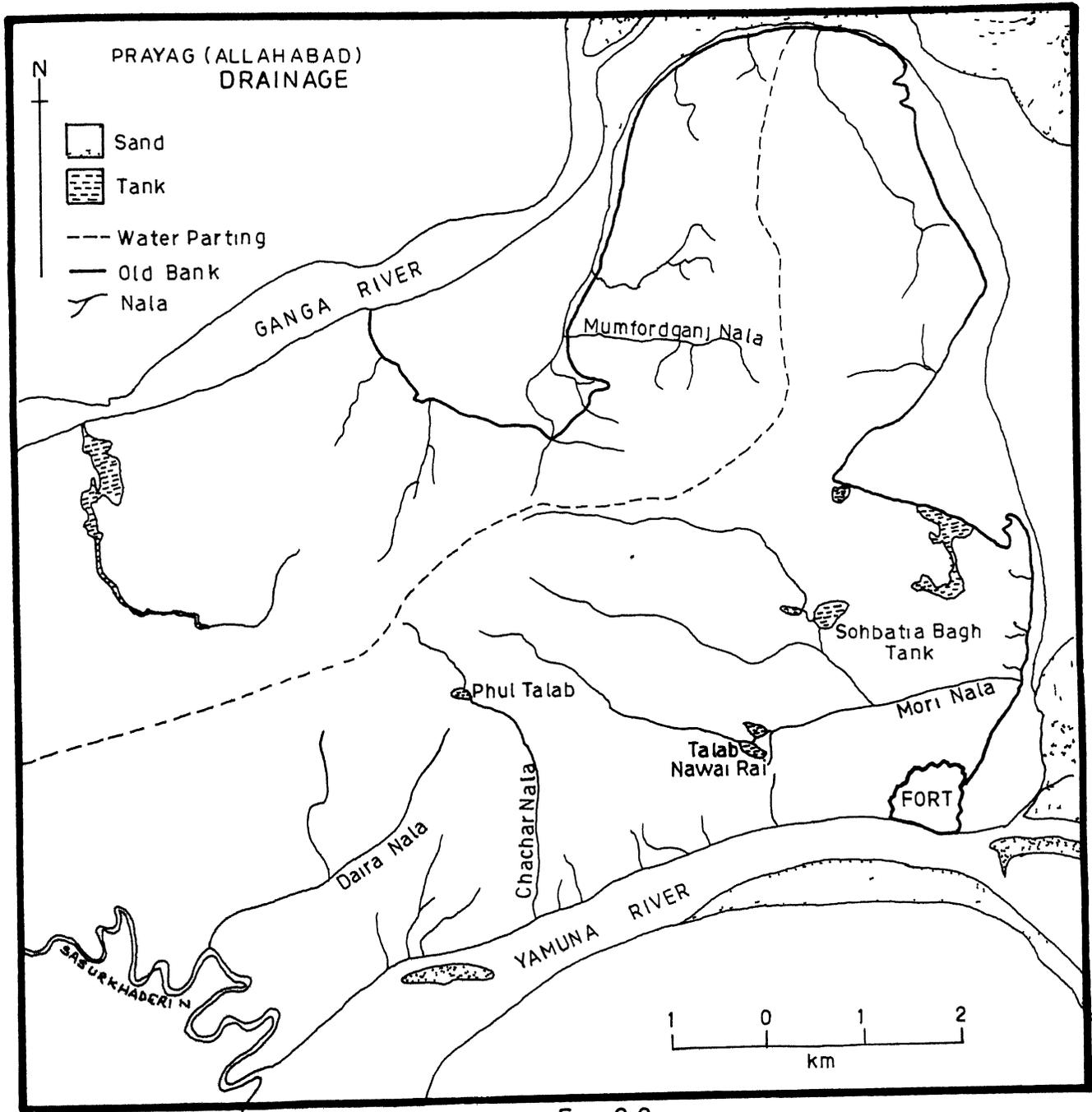
Fig 2.2

सडक मार्ग के सहारे तथा तृतीय नाली रेलवे कालोनी से प्रारम्भ होकर शाहराराबाग, दक्षिणी मलाका, रामबाग, बाइकाबाग और नवल राय का तालाब होती हुई बहती है। यद्यपि नगर के अधिकाश भाग का जल निकास बहुत उत्तम है लेकिन सगम चाप के बीच बसे हुए निचले क्षेत्रो का जल निकास बहुत ही दोषपूर्ण है। दक्षिण पूर्वी क्षेत्र की सतह गगा के निम्न बाढ जल तल से नीचे है। लेकिन सामान्यतया इस क्षेत्र मे जल निकास की समस्या नही है। लेकिन जब गगा मे बाढ रहती है और तीव्र वर्षा होती है तो उस समय जल जमाव की गभीर समस्या इस क्षेत्र मे उत्पन्न हो जाती है। बाढ का जल जब मोरी नाला मे घुस आता है तब नदी मे वर्षा का जल गिरना रूक जाता है जिसे पम्प द्वारा निकालना आवश्यक हो जाता है। (द्विवेदी आर0 एल 1961)। वर्तमान समय मे इलाहाबाद मे 57 नाले गगा और यमुना मे गिरते है। इनमे 13 नाले काफी बडे है। यहा गगा मे 35 नालो का 109 एम०एल०डी० पानी और 11 नालो का 101 एम०एल०डी० पानी यमुना मे प्रतिदिन मिल रहा है।

बाढ:

इलाहाबाद मे सबसे भयकर बाढ 1875 मे आई थी। उस समय गगा का जल स्तर 86 40, मीटर ऊपर उठ गया था जो खतरे के बिन्दु से 3 मीटर अधिक था। फलत बक्शी बाध मे टूट–फूट हो गई थी और दारागज तथा लूथर सडक मार्ग के बीच का सम्पूर्ण निचला भाग बाढ से जलप्लावित हो गया था जबकि यमुना नदी का बाढ का जल अहियापुर और अतरसुइया के बीच वाले निचले भागो मे फैल गया था (जिला–गजेटियर इलाहाबाद 1911)।

यहा की दूसरी महत्वपूर्ण बाढ 1948 मे आई थी। 7 सितम्बर 1948 को बाढ का जलस्तर गगा के 1875 के बाढ बिन्दु तक पहुच गया।ठीक इसी दिन यमुना की बाढ का जलस्तर 86 10 मीटर तक पहुच गया। (माचचित्र स0 2 3) द्वारा यहा के बाढ का अध्ययन करने से पता चलता है कि गगा नदी के पुराने बैक के समीप अवस्थित उपनगरीय गावो के बाढ के लिए मुख्य रूप से गगा नदी जिम्मेदार है जबकि मुख्य नगर के सघन आबादी वाले मुहल्ले जैसे साथचउरा, अहियापुर, काटघर, मुट्ठीगज, कीटगज, गौघाट, तालाब नवलराय, बाईका बाग, रामबाग, तुलाराम बाग, अलोपी बाग के कुछ हिस्सो, फोर्ट कैन्टोनमेन्ट

PRAYAG (ALLAHABAD)
AREAS AFFECTED BY PEAK FLOOD
N
Flood Water
Accumulated Rainwater
GANGA RIVER
YAMUNA RIVER
Teliyarganj
Govindpur
Old Cantonment
Salori
Nayapurwa
Muirabad
Beli
Rajapur
Shadiyabad
Mumfordganj
Ashok Nagar
Katra
Allahpur
GEORGE TOWN
Daraganj
New Cantonment
CIVIL LINES
Alopi Bagh
Subedarganj
Lukarganj
Rajruppur
Malviya Nagar
Muttiganj
Atala
Karele
Nihalpur
Cantonment
Fort
Mirapur
1 0 1 2
km

Fig 2.3

का सम्पूर्ण परेड मैदान और दारागज के निचले भागो मे बाढ का कारण यमुना नदी है। इलाहाबाद के म्योर सेन्ट्रल कालेज के बुर्ज से सम्पूर्ण क्षेत्र समुद्री द्वीप जैसा दिखाई देने लगा था। यहा की तृतीय महत्वपूर्ण बाढ 1978 मे आयी थी जब गगा का जलस्तर 88 03 हो गया था जो खतरे के बिन्दु से 4 मीटर अधिक था। इलाहाबाद मे स्थित फाफामऊ केन्द्र से प्राप्त सूचना के आधार पर गगा का जलस्तर 1994 मे 85 63 मीटर, 1995 मे 93 74 मीटर, 1996 मे 83 38 मीटर, 1997 मे 83 07 मीटर, 1998 मे 84 61 मीटर, 1999 मे 81 86 मीटर, 2000 मे 83 86 मीटर एव 2001 मे 81 97 मीटर है। इलाहाबाद मे गगा एव यमुना नदी का खतरा बिन्दु जलस्तर 84 73 मीटर है। वर्ष 2000 अगस्त मे नगर मे आये बाढ का कारण जल निकास के नालो का कचरे से भर जाना एव स्थानीय दैनिक वर्षा का अत्यधिक होना था।

नगर के दक्षिणी पूर्वी भाग वर्षा जल के एकत्र होने से पानी से डूब जाते है (मानचित्र स० 2 3)। किसी तरह उन क्षेत्रो का भूमि उद्धरण 'हालैड के पोल्डर्स' की भाति गगा के किनारे बाध बनाकर किया गया है। मोरी गेट नाला जो मात्र जल निकास का रास्ता है, की ऊँचाई स्थलीय सतह से 79 50 मीटर है जबकि टैगोर टाउन और वैरहना का भूमितल 82 50 मीटर ऊँचा है। जब कभी गगा का जल 82 50 मीटर से ऊपर उठता है तो ये क्षेत्र जलाप्लावित हो जाते है यद्यपि की गगा का बाढ जल तल खतरे के बिन्दु से नीचे ही रहता है। 1948 की गगा की बाढ एक चेतावनी थी। नगर महापालिका की सस्तुति के आधार पर एक बाध जल कपाट के साथ छाछर नाला के आर–पार बनाया गया है और दूसरा जल द्वार मोरी पर 1953 मे तैयार किया गया। मोरी द्वार और छाछर नाला पर पम्प स्टेशन बनाये गये हैं जो आपात काल मे जल कपाट के बन्द किये जाने पर एकत्रित वर्षा जल को नदियो मे उडेलते हैं। इस निचले क्षेत्र के लोग प्रतिवर्ष जलप्लावन के कारण कष्ट उठाते है। कभी–कभी स्थानीय अत्यधिक वर्षा के कारण जैसे 1953, 1955, 1956, 1978, अगस्त 2000 इत्यादि मे स्थिति बहुत चिन्ताजनक हो गई थी। इस अपवाह समस्या के हल के लिए टैगोर टाऊन, अल्लापुर तथा मम्फोर्ड गज आदि क्षेत्रो मे पम्पिग केन्द्र बनाये गये है जो एकत्रित जल को बाध के पार नदी मे गिराते हैं (द्विवेदी आर0एल0 1961 एव केन्द्रीय जल आयोग से प्राप्त सूचना के आधार पर)।

इलाहाबाद नगर बाढ के प्रथम चरण मे अनुमानित लागत 34 6 लाख की योजना का

कार्य प्रगति मे है, भवन का निर्माण करके 39 क्युसिक क्षमता के 3 विद्युत पम्प स्थापित किये जाने के कार्य प्रगति मे है। चार 20 क्युसिक क्षमता के डीजल पम्प स्थापित किये गये है। इस प्रकार बाध पर 123 क्युसिक क्षमता के पम्प लगाने का कार्य पूर्ण किया जा चुका है

नगर मे स्थित शेष नालो पर पम्पिग स्टेशन लगाने हेतु 311 लाख रूपये की एक योजना बनाई जा चुकी है जिसे पृथक–पृथक नालो मे बाटा गया। मोरी गेट पर 340 क्युसिक, राजापुर पर 100 क्युसिक, ममफोर्डगज पर 140 क्युसिक, यमुना बाध गेट नम्बर 13 पर 10 क्युसिक, यमुना बाध गेट न0 1 पर 40 क्युसिक तथा चामर नाला पर 100 क्युसिक क्षमता के पम्प निर्माण कार्य पूर्ण किया जा चुका है (सामाजिक आर्थिक समीक्षा इलाहाबाद 1992–1993)।

2 4 मिट्टी सम्बन्धी कारक

भू–विज्ञान की दृष्टि से इस जिले मे मिर्जापुर को छोड कर उत्तर प्रदेश के अन्य जिलो की अपेक्षा अधिक विविधता पाई जाती है। गगा पार का सपूर्ण क्षेत्र, दोआब का अधिकाश भाग, तहसील मेजा का उत्तर पूर्वी भाग गगा की कछारी मिट्टी से बना है जिसका निक्षेप अभिनूतन काल (प्लीस्टो सीन पीरियड) से प्रारम्भ हुआ था जो आज भी जारी है। विन्ध्य पर्वत का कछारी मलबा (जलोढ अपरदन) दोआब के दक्षिणी भाग मे, विशेषत मझनपुर क्षेत्र (जो वर्तमान मे कौशाम्बी जनपद मे है) मे पाया जाता है जहा विन्ध्य पर्वत की चट्टानी श्रृखला यमुना के उत्तर तक फैली हुई है। यमुनापार भू–भाग मे इस पर्वत का कछारी मलबा गगा की बालू और गाद मे मिल जाता है। इस प्रकार की मिली–जुली मिट्टी परगना अरैल के पश्चिमी भाग मे और परगना बारा के पूर्वी भाग मे स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। गगा की जलोढ मिट्टी मे बालू, गाद और चिकनी मिट्टी के नदीय निक्षेप के परिवर्तित रूप पाये जाते हैं। कछारी मिट्टी की समस्त मोटाई दक्षिण से उत्तर की ओर बढती जाती है और कई सौ मीटर तक हो जाया करती है। विन्ध्य पर्वत माला की ऊपरी परत मे हल्के लाल रग वाले कैमूर बलुआ पत्थर की बडी–बडी चट्टाने पायी जाती हैं। यह पत्थर सूक्ष्म गठन वाले और नरम होते हैं, इन पर सरलता से काम किया जा सकता है और यह भवन निर्माण या वास्तुकला सबन्धी कार्य के किए उपयुक्त होते हैं (जिला गजेटियर इलाहाबाद 1986)।

दोआब तथा गगा पार के भू–भागो की मिट्टी की अनेक विशेषताये है। इनमे से बलुआ मिट्टी नदियो के किनारे पायी जाती है और अन्य जिलो के भूड के तदनुरूप है। मटियार अथवा चिकनी मिट्टी (जो स्थानीय रूप से चाचर के नाम से पुकारी जाती है) निचली जमीन मे पायी जाती है तथा भारी किस्म की होती है और केवल चावल की खेती के लिये उपयुक्त होती है और इस मिट्टी मे कृषि तभी की जा सकती है जब वह पूर्ण रूप से गीली हो। इसके अलावा यहा पर दोमट अथवा मटियार मिट्टी है, जो कि बालू और चिकनी मिट्टी का मिश्रण होती है और सामान्यतया उपजाऊ और काली होती है। इस सबके अतिरिक्त यहा पर बलुई मटियार मिट्टी भी पाई जाती है, जो कम उपजाऊ होती है। और उसे स्थानीय रूप से सिगोन कहा जाता है। यमुना पार के भू–भाग मे ये सभी मिट्टिया सामान्यत कछारी भू–भाग मे ही पायी जाती हैं। परन्तु कुछ अन्य प्रकार की मिट्टिया भी है जो मझनपुर तहसील मे यमुना के उत्तरी किनारे पर पायी जाती हैं। उनमे से मार नामक मिट्टी मुख्य है, जिसे साधारण तौर पर काली कपासी मिट्टी कहा जाता है। यह काली और भुर–भुरी होती है जिसमे नमी को अधिक मात्रा मे सोख लेने की क्षमता होती है परन्तु सूख जाने पर इस मिट्टी मे बडी–बडी दरारे पड जाती हैं जिससे उसकी सिचाई करना लगभग असभव हो जाता है। इस प्रकार की मिट्टी कई किस्म की होती है और तहसील मेजा की ऊची जमीन मे प्राय बहुत ही निम्न कोटि की मिट्टी पायी जाती है। पहाडियो की पथरीली मिट्टी को भीटा कहा जाता है, जो चाचर की भाति अल्प उपयोगी होती है और पहाडियो की तलहटी मे पायी जाती है। भूमि की भौगोलिक रचना और बस्तियों से खेतो की निकटता या दूरी मिट्टी के वर्गीकरण का आधार बनती है। जिले में दो मुख्य स्थलाकृतिक प्रभाग है, प्रथम कछार (अथवा निचली भूमि) और दूसरा उपरहार (अथवा ऊची भूमि)। कछार की मिट्टी, यमुना और टोस की तलहटी की तराई के समान है और गगा के कछार के सदृश है यद्यपि उससे कम उपजाऊ है। आबादी के निकट स्थित खेतो को गोइड अथवा कछियाना कहते है (ऐसे खेतो की मिट्टी को भी स्थानीय रूप से इन्ही नामो से पुकारा जाता है)। काछियाना मिट्टी कस्बो के निकट होती है। इस प्रकार की मिट्टी मे साधारणतया सब्जिया और फल उगाये जाते है। बस्तियो से दूर स्थित खेतों और उनकी मिट्टी को हार के नाम से जाना जाता है (ज़िला गजेटियर 1986)।

2 5 वनस्पिति और प्राणि समूह

पुनर्गठित जनपद इलाहाबाद मे वन विभाग के अन्तर्गत 19525 हेक्टेयर क्षेत्र स्थित है जो कि जनपद के कुल क्षेत्रफल का मात्र 3 69 प्रतिशत है। वन का अधिकाश क्षेत्र यमुना पार इलाके मे है। तहसील मेजा मे 75 5 प्रतिशत, बारा मे 23 6 प्रतिशत एव अन्य तहसीलो मे 1 9 प्रतिशत क्षेत्र जनपद मे स्थित कुल वन क्षेत्र का है (सामाजिक आर्थिक समीक्षा 2001)

इलाहाबाद नगर क्षेत्र मे सामाजिक वानिकि एव व्यक्तिगत सस्थाओ द्वारा वृक्षारोपण कर हरित मेखला का विकास किया गया है। नगर मे सडको के किनारे ईंट की बनी थालो मे तथा लोहे की जाली मे वृक्षारोपण किया गया है। यहा वृक्षारोपण मलिन बस्तियो तथा गगा यमुना नदी के किनारे एव शिक्षण सस्थानो, छात्रावासो आदि मे किया गया है। वर्ष 2000–2001 मे नगर मे 700 ईंट के थालो मे वृक्षारोपण किया गया। नगर के वृक्षो मे कदम, सागौन, केशियाग्लूका, अमलतास, बरगद, गूलर, आम, पीपल, पाकड, बदाम आदि के वृक्षो की प्रधानता है। ग्रामीण क्षेत्र के जगलो मे पाये जाने वाले वृक्षो की प्रमुख प्रजातिया ढाक, ककौर, आँवला, अर्जुन, कहवा, झरबेरी, काजू, महुआ, सेमल, सलई, खैर, हर्रे, चिरोजी, बहेडा और बबूल है। तहसील करछना के दक्षिणी भू–भाग के अत्यधिक भाग पर बबूल और गदार के वृक्ष पाये जाते है। गदार वृक्षो का उपयोग छप्पर छाने और झाडू बनाने के लिये किया जाता है और इसकी जड खसखस के नाम से विख्यात है। तहसील मेजा और बारा की पथरीली भूमि मे बेर, तेन्दू और जामुन, आम, महुआ, सलई और कही–कही बास के समूह भी मिलते है, घने जगलो मे घास और झाडिया पैदा होती है। हल्दी, छागो और सागौन केवल तहसील मेजा मे पाये जाते है। मेजा मे दूब, बायब और नुकीली घास भी पायी जाती है (जिला गजेटियर 1986)।

विगत दशको मे जंगलो के नष्ट करने और बिना सोचे समझे जगली पशुओ का शिकार किये जाने के कारण जनपद मे जानवरो की सख्या अत्यधिक घट गयी है। जनपद के अन्य भागो की अपेक्षा यमुना पार के क्षेत्र मे जगली जानवरो की सख्या और जातिया अधिक है। यमुनापार के दक्षिणी भाग मे रीछ और बारा तथा मेजा तहसील के दक्षिणी भाग मे यमुना के खाई–खड्डो वाले क्षेत्र मे कभी–कभी चीता दिखाई पड जाता है। बारा मे भालू और चिकारा, जो भारतीय हिरन अथवा कुरग के नाम से भी जाना जाता है, पाया जाता है।

यमुना पार के भू–भाग की तहसीलो मे लकडबग्घे (हाइना), भारतीय काले साम्भर के बहुत से झुन्ड तथा जगली सूअर पाये जाते है, जो फसलो को अत्यधिक हानि पहुचाते हे। जगली सूअर गगा और दोआब के बाढग्रस्त मैदानो मे पाये जाते है। लोमडी, खरगोश और साही जैसे जन्तु पूरे जिले म पाये जाते है।

पक्षियो की प्रजातियो मे साधारणतया गगा मैदान मे पाये जाने वाले पक्षी इस जनपद मे भी पाये जाते हैं। सामान्यतया शिकार किये जाने वाले पक्षियो मे मोर, भूरा, तीतर, जगली बटेर, सारग बटेर, भट्ट तीतर, मुर्ग आदि पक्षी है। यमुनापार के पहाडी और घास वाले भाग मे तृण मयूर और बडे आकार के भारतीय सारस हुकना पक्षी पाये जाते है।

रेगने वाले जन्तुओ मे साप साधारणतया पूरे जिले मे पाये जाते है। इनमे से नाग, करैत और घोणस नामक साप सर्वाधिक जहरीले है। गगा, यमुना और टोस नदियो मे घडियाल और मगर के साथ–साथ झीलो व तालाबो मे मछलियो की कई प्रजातिया पायी जाती हैं (जिला गजेटियर 1986)।

2.6 <u>जलवायु सम्बन्धी कारक:</u>

इलाहाबाद मानसूनी जलवायु के अन्तर्गत आता है जिसमे जलवायु के सभी तत्वो मे मौसमी विभिन्नताये पाई जाती है। इस जलवायु को सामान्यतया शीत, ग्रीष्म और वर्षा कालो मे विभाजित किया जाता है। लेकिन उत्तरी भारत की भाति इलाहाबाद को दो मौसमो मे विभाजित किया जाता है जिनकी अवधि असमान होती है तथा एक दूसरे के विपरीत मौसमी दशाये पायी जाती है। इनमे प्रथम शुष्क मानसून का मौसम है जिसका समय मध्य अक्टूबर से मध्य जून के मध्य पडता है तथा यह स्थानीय महाद्वीपीय उत्पति वाली स्थलीय हवा होती है। इनमे से द्वितीय आर्द्र मानसून है जिसकी अवधि चार माह होती है तथा यह सुदूरस्थ समुद्री उत्पत्ति वाली आर्द्र हवा होती है। भारतीय मौसम विभाग के अनुसार उक्त दोनो मौसमो को निम्नलिखित उप विभागो मे विभाजित किया जाता है–

1 शुष्क काल (स्थलीय मानसून)

(क) शीत काल (नवम्बर से फरवरी)

(ख) ग्रीष्म काल (मार्च से मध्य जून)

2. वर्षा काल (समुद्री मानसून)

(क) सामान्य वर्षा काल (मध्य जून से मध्य सितम्बर)

(ख) मानसून के प्रत्यावर्तन का काल (मध्य सितम्बर से मध्य अक्टूबर)

इलाहाबाद के सदर्भ मे उक्त चारो ऋतुओ की विशेषताये निम्नलिखित है—

शीत काल

इलाहाबाद मे अक्टूबर सक्रमण कालीन माह है जिसमे मौसम आर्द्र से लेकर शुष्क तक होता है। नवम्बर व दिसम्बर माह मे तापमान गिर जाता है लेकिन जनवरी मे तापमान न्यूनतम होता है। औसत मासिक तापमान 15 5^0 सेन्टीग्रेड और 21 1^0 सेन्टीग्रेड के मध्य भिन्न–भिन्न रहता है। अधिकतम मासिक औसत तापमान 26 6^0 सेन्टीग्रेड और न्यूनतम मासिक औसत तापमान 4 4^0 सेन्टीग्रेड रहता है। उत्तरी पश्चिमी हिमालय पर भारी हिमपात होने पर इलाहाबाद शीतलहर की चपेट मे आ जाता है और तापमान 2 2^0 सेन्टीग्रेड तक हो जाता है। साधारण तापमान, दैनिक तापान्तर 1 1^0 सेन्टीग्रेड, स्वच्छ आकाश, 70 प्रतिशत से अधिक आर्द्रता इस ऋतु की मुख्य विशेषताये है। हवाये क्षीण से लेकर साधारण तीव्रता वाली होती है जिनकी दिशा उत्तरी पश्चिमी उच्च वायुदाब के कारण पश्चिमी या उत्तरी पश्चिमी और बगाल की खाडी के न्यून वायुदाब के कारण दक्षिणी पूर्वी होती है। इस ऋतु मे विशेषकर नवम्बर व दिसम्बर मे 32 कि0मी0 प्रति घण्टे की गति से चलने वाली शक्तिशाली झोकेदार हवाये नही चलती है।

पश्चिमी वायु विक्षोभो के कारण स्वच्छ चमकीला मौसम कभी–कभी मेहाच्छादित हो जाता है। ये वायु विक्षोभ पश्चिमी पाकिस्तान या परसियन पठार पर उत्पन्न होते है (इलीयट, जे0 1904)। दूसरा मत यह है कि ये वायु विक्षोम भूमध्य सागर या कभी–कभी अटलांटिक महासागर में उत्पन्न होते हैं (सिह, आर0एल0 1955)। डा0 दूबे का मत है कि लगभग 90 प्रतिशत शीत चक्रवात भूमध्य सागर से इरान होकर यहा पहुचते है जबकि शेष 10 प्रतिशत शीत चक्रवात उत्तर भारत या अरब सागर मे उत्पन्न होते है (दूबे, आर0एन0 1957)। इन शीतल चक्रवातो से सम्पूर्ण उत्तरी भारत मे मेघाच्छादन तथा वर्षा होती है। इलाहाबाद मे जनवरी सबसे आर्द्र माह होता है तथा लगभग 1 90 सेन्टीमीटर औसत वर्षा होती है।

<u>ग्रीष्म काल</u>

इलाहाबाद मे मार्च से इस काल का आगमन होता है। इस काल मे इतनी अधिक गरमी पडती है कि इलाहाबाद अतिगरम भट्ठी मे बदल जाता है जिसे छोटा जहन्नुम या लघु नरक कहते है। तापमान लगातार तीव्र गति से बढता जाता है और मई मे अधिकतम तापमान हो जाता है। औसत मासिक तापमान मार्च मे लगभग 24 4^0 सेन्टीग्रेड और मई मे 34 16^0 सेन्टीग्रेड रहता है। इस काल मे औसत मासिक तापमान 37 7^0 सेन्टीग्रेड से अधिक रहता है लेकिन कभी–कभी यह तापमान 48 7^0 सेन्टीग्रेड तक भी देखा गया है (उत्तर प्रदेश जिला गजेटियर 1980)। इस काल मे हवा की दिशा लगभग शीतकाल वाली ही होती है। तीव्र झोकेदार अति उष्ण और शुष्क पश्चिमी हवाये चलती है जिन्हे 'लू' कहा जाता है। इनका वेग अपराह्न मे अधिक होता है लेकिन सामान्यतया इनका वेग 56–60 कि०मी० प्रति घण्टे से कम ही होता है (इलीयट, जे0 1904)। शीत लहरो की भाति यहा कभी–कभी उष्ण लहरे भी चलती है। 03 मई 1956 को यहा तापमान 46 6^0 सेन्टीग्रेड तक पहुच गया था। 1992–93 मे उच्चतम तापमान 46 4 सेन्टीग्रेड रहा है। अत्यधिक गर्मी व तेज धूप के कारण लोगो का घर से निकलना कठिन हो जाता है तथा सारे क्रियाकलाप रूक जाते है (सामाजिक आर्थिक समीक्षा 1992–93 इलाहाबाद)। स्वास्थ्य व कार्य की दृष्टि से यह काल अनुकूल नही होता है। मार्च और अप्रैल मे मच्छरो की सख्या अत्यधिक बढ जाती है। लेकिन गर्मी के बढने के साथ–साथ मच्छर मरने लगते है और उनका नाश हो जाता है।

धूल भरी आधियां और तडित झझावात् इस काल मे निरन्तर आते रहते है। उनकी गति 80 कि0मी0 प्रति घण्टे से अधिक होती है। 08 मई 1943 को आये धूल भरी तडित झझावात की गति 112 कि0मी0 प्रति घण्टे तक पहुच गई थी जबकि 21 मार्च, 1950 को आये तडित झझावात की गति 160 कि0मी0 प्रति घण्टे अनुभव की गई (सिन्हा, के0 एल0 1952)।

इस काल मे आकाश स्वच्छ और मेघ रहित होता है। हवा शुष्क होती है तथा सापेक्षिक आर्द्रता अप्रैल और मई मे 40 प्रतिशत से कम होती है। इस काल मे वर्षा की मात्रा नगण्य होती है। 1991 से 2001 के बीच मार्च, अप्रैल व मई मे औसत वर्षा क्रमश 99 से०मी०, 127 से0मी0 और 2 54 से०मी० हुई थी। असहय गर्मी के रूप मे इस काल का अन्त होता है। (मानचित्र स0 2.4)

A
CLIMOGRAPH
SCORCHING
MUGGY
KEEN
RAW
RELATIVE HUMIDITY
B
CLIMATOGRAPH
(After Munns and Hartshorne)
Warm
Hot
C
HYTHERGRAPH
Rainfall in cm
D
WATER SURPLUS GRAPH
(After S Erine)
(in cms)
Surplus
Deficiency
Rainfall
Evapotrans-piration
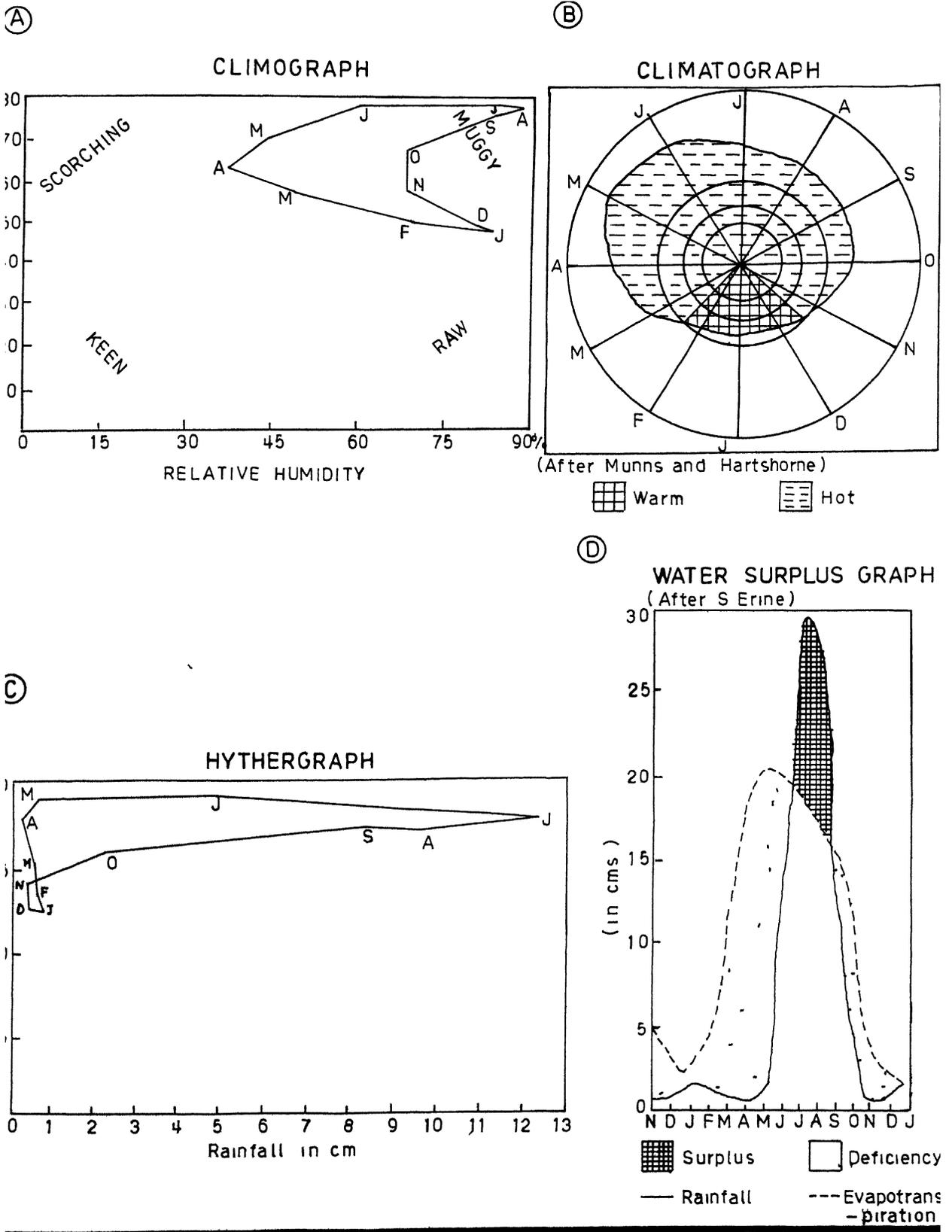
Fig 2 4

वर्षा काल

आधी तूफान वाले मौसम के कुछ दिनो बाद जून के अन्त मे ग्रीष्म कालीन मानसून का आगमन होता है जिसे मानसून का फूट पडना कहते है। वर्षा के कारण हवा मे शीतलता आने के कारण जुलाई मे तापमान गिर जाता है। जुलाई मे औसत मासिक तापमान 30° सेन्टीग्रेड हो जाता है। जुलाई मे वायुदाब 987 8 मिलीबार, औसत अधिकतम दैनिक तापमान 34 5° सेन्टीग्रेड, औसत न्यूनतम दैनिक तापमान 26 5° सेन्टीग्रेड, दैनिक तापान्तर –11 1° सेन्टीग्रेड, सापेक्षिक आर्द्रता 82 प्रतिशत, मेघाच्छादन 8 1 प्रतिशत, वर्षा के दिनो की औसत सख्या 15 2 दिन तथा सम्पूर्ण वर्षा की मात्रा 33 02 से०मी० है।

इस काल मे इलाहाबाद न्यून वायुदाब के मानसून द्रोणी मे स्थित होता है जिसका अक्ष गगा मैदान के दक्षिणी सीमा पर होता है और जो गया, इलाहाबाद, कानपुर, मैनपुरी और दिल्ली द्वारा सीमाकित होता है (इलीयट जे0 1890 से 1904)। यह द्रोणी बगाल की खाडी की हवाओ और अरब सागर की हवाओ के बीच बिलगाव का कार्य करती है जिससे इलाहाबाद मे वायु प्रवाह मे विभिन्नता पाई जाती है। जब द्रोणी की स्थिति बदल जाती है तो वायु प्रवाह भी बदल जाता है। इस प्रकार कभी हवाये पूरब से या कभी पश्चिम से चलती हैं। द्रोणी की स्थिति से इस काल की वर्षा भी प्रभावित होती है (सिन्हा, के0 एल0 1952)।

चक्रवातीय तूफानो से भी इलाहाबाद मे कुछ वर्षा हो जाती है। ये तूफान बगाल की खाडी के शीर्ष भाग मे उत्पन्न होते हैं और न्यून वायुदाब द्रोणी के सहारे स्थल पर चलते है। कुल वार्षिक वर्षा का 76 प्रतिशत जुलाई, अगस्त व सितम्बर के महीनो मे बरसता है। इन तीनो माहो की औसत वर्षा 101 60 से०मी० है। अगस्त सबसे आर्द्र माह होता है जबकि जुलाई मे सर्वाधिक वर्षा होती है। लेकिन विगत वर्षो से अगस्त मे सबसे अधिक वर्षा होती है। वर्षा बहुत ही अनियमित होती है। जैसे जुलाई 1925 मे 78 76 से०मी० वर्षा हुई थी जबकि 1918 मे केवल 2 5 से०मी० हुई थी। 19 व 20 अगस्त 1953 की रात्रियो मे 81 4 से०मी० वर्षा हुई थी जो उसी वर्ष की जुलाई की वर्षा से ढाई गुना अधिक है। ये उदाहरण मानसून की अनियमितता के सूचक है (वार्षिक प्रशासनिक रिपोर्ट, इलाहाबाद 1953–54)। 1998 मे इलाहाबाद की वार्षिक औसत वर्षा 95 40 से०मी० थी। इस प्रकार 2000 एव 2001 मे वार्षिक औसत वर्षा 93.50 एव 96 36 से0मी0 थी (साख्यिकीय डायरी 2001)। इलाहाबाद की जलवायवीय विशेषताओं का विस्तृत विवरण सारणी सख्या 2 1 से प्राप्त होता है।

सारणी स० 2.1

जनपद इलाहाबाद जलवायवीय विशेषताए

माह	तापमान अधि0	न्यूनतम	वर्षा	सा0आर्द्रता(प्रतिशत में)		हवा की गति
				8 30पूर्वान्ह्	5 30अपराह्न	(प्रति घ0 कि0मी0)
जनवरी	23 7	8 6	17 0	80	51	4 2
फरवरी	26 3	10 7	21 3	67	35	5 0
मार्च	33 2	16 3	9 7	44	21	6 0
अप्रैल	39 1	21 6	5 3	32	18	6 6
मई	46 4	26 8	7 1	36	20	7 6
जून	39 4	28 4	80 3	55	39	8 7
जुलाई	33 4	26 6	307 6	79	72	7 7
अगस्त	31 9	25 9	293 1	84	78	6 9
सितम्बर	33 0	24 8	182 6	80	71	6 0
अक्टूबर	32 4	19 6	40 4	68	49	3 7
नवम्बर	28 6	12 6	8 6	67	42	2 7
दिसम्बर	24 3	8 6	7 1	76	47	3 2
वार्षिक	32 3	19 2	980 1	4	45	5 7

स्रोत– मौसम विज्ञान केन्द्र, वमरौली (वर्ष 2000) से प्राप्त सूचना के आधार पर।

मानसून के प्रत्यावर्तन का काल:

यह कम अवधि का होता है तथा सक्रमण काल वाला होता है। इसमे मौसम मेघाच्छादन से बदल कर सुन्दर और सुहावना हो जाता है जो मानसूनी वर्षा के समय पूर्व या विलम्ब से रूकने पर निर्भर करता है। इलाहाबाद मे सितम्बर के अतिम द्विसप्ताह (Fortnight) मे आर्द्र मानसून की हवाये सामान्यतया समाप्त होने लगती हैं। उष्ण मानसून के धीरे–धीरे प्रत्यावर्तन के साथ–साथ मेघाच्छादित आकाश स्वच्छ होने लगता है। फलत कुछ सप्ताह के लिए तापमान बढने लगता है। लोग पखो का प्रयोग करने लगते है और चमकीला सूर्य असह्य होता जाता है। ऐसा विश्वास है कि इस काल मे इलाहाबाद मच्छरो के आतक से मुक्त हो जाता है।

इस काल मे शान्त या हल्की हवा, मेघ रहित आकाश तथा सुहावना तापमान वाला मौसम होता है। इस काल मे मौसम बिल्कुल शुष्क नही होता है। कभी–कभी बगाल की खाडी मे उत्पन्न होने वाले चक्रवातो के कारण इलाहाबाद व पडोसी क्षेत्रो मे अक्टूबर के प्रारम्भ मे बादल छा जाते है और औसत वर्षा 5 08 से०मी० से अधिक हो जाती है। पजाब मे जैसे ही उच्च वायुदाब क्षेत्र विकसित होने लगता है, पश्चिमी या उत्तरी पश्चिमी हवाये गगा घाटी मे चलने लगती है। इस अवधि के बढने के साथ–साथ रातो की लम्बाई बढने लगती है, आकाश स्वच्छ होने लगता है तथा तापमान तीव्रता से गिरने लगता है और अतत नवम्बर मे प्रति चक्रवातीय मौसम हो जाता है (ब्लैन फोर्ड, एच–एफ 1889)।

मौसम सम्बन्धी विशेष दशाये

मानसून का कुछ दबाव (विशेषतया ऋतु के प्रारम्भिक भाग मे) जो बगाल की खाडी से प्रारम्भ होता है और पूरे देश मे गतिमान होकर इस जिले को भी प्रभावित करता है, जिसके फलस्वरूप जिले मे व्यापक और भारी वर्षा होती है, ग्रीष्म ऋतु मे कभी–कभी प्रचड वायु के साथ बिजली और गडगडाहट युक्त तूफान (बहुधा धूलभरी आधी के बाद) आ जाता है और ये तूफान मानसून के महीनो मे भी आते है। शीत ऋतु मे कभी–कभी प्रात काल मे कुहरा पडता है और बादलो की कडक के साथ तूफान एव धूल भरी आधी आती है। कभी–कभी पछुवा हवा के उपद्रव के कारण प्रचड वायु के साथ ओला भी गिर जाता है।

प्रतिमास इलाहाबाद मे घटित होने वाली मौसम सबधी विशेष दशाओ के आवर्तन की सख्या का ब्यौरा सारणी स० 2 2 मे दिया गया है।

सारणी–2.2

निम्नलिखित से प्रभावित दिनो की औसत सख्या

मास	विधुत गर्जन	ओला	धूल भरी आधी	प्रचड वायु	कोहरा
1	2	3	4	5	6
जनवरी	2 0	0 0	0 0	0 5	1 7
फरवरी	3 0	0 5	0 3	0 5	0 9
मार्च	2 0	0 1	0 2	0 7	0 3
अप्रैल	2 0	0 0	0 7	1 0	0 0
मई	3 0	0 1	2 0	0 7	0 0
जून	8 0	0 0	1 5	3 0	0 0
जुलाई	11 0	0 0	0 3	0 6	0 0
अगस्त	7 0	0 0	0 0	1 6	0 0
सितम्बर	8.0	0.0	0 0	1 1	0 1
अक्टूबर	0 6	0 0	0.1	0 1	0 1
नवम्बर	0 0	0 0	0 0	0 0	0 0
दिसम्बर	0 7	0 1	0 0	0 0	0 6
वार्षिक	47 3	0 8	5.1	9 8	4 7

स्रोत– जिला गजेटियर इलाहाबाद (1986)

निष्कर्ष :

जलवायु सबधी उक्त विवरण से इलाहाबाद की जलवायु और मौसम का स्पष्ट ज्ञान हो जाता है। यहा की जलवायु और मौसम के मूल मे मानसून, समुद्र से लगभग 800 किमी0 की दूरी पर मध्य गगा घाटी का पश्चिमी सीमा के पास आन्तरिक स्थिति का होना तथा कर्क रेखा के समीप होना और दक्षिण मे विन्ध्याचल पहाडियो का होना इत्यादि है। जलवायु

तत्वो मे वर्षा मे अधिक परिवर्तनशीलता मिलती है (Tiends in Rain fall 1950)। वार्षिक और मौसमी वर्षा की मात्रा मे पर्याप्त अन्तर पाया जाता है। यहा वर्षा की वार्षिक मात्रा 106 686 से०मी० है, जिसका 85% भाग केवल वर्षा काल मे होती है। यहा मासिक अधिकतम वर्षा जुलाई या अगस्त मे तथा न्यूनतम मासिक वर्षा अप्रैल मे होती है। यहा वर्ष मे लगभग 9 माहो मे वर्षा की कभी रहती है जो इलाहाबाद की उप आर्द्र जलवायु के होने का परिचायक है।

इलाहाबाद मे आर्द्रता अगस्त मे सर्वाधिक और अप्रैल मे न्यूनतम होती है। यहा पूर्व या पश्चिम से हवाये मुख्य रूप से चलती हैं। मई मे सर्वाधिक और जनवरी मे न्यूनतम तापमान होता है जबकि औसत न्यूनतम तापमान जून मे सर्वाधिक और पुन जनवरी मे न्यूनतम होता है। वार्षिक तापान्तर लगभग 55 से०मी० होता है। इसका कारण यह है कि जनवरी का तापमान बहुत नीचे तक नही गिरता है तथा दिसम्बर, जनवरी और फरवरी मे समग्र रूप मे उष्ण मौसम अनुभव किया जाता है।

इलाहाबाद मे शीत व उष्ण काल मे राते अपेक्षाकृत गरम होती हैं जबकि जाडे मे दिन अपेक्षाकृत अधिक गरम और ग्रीष्म मे अपेक्षाकृत शीतल होते हैं। वर्षा मे उत्थान या गिरावट की विशेष प्रवृत्ति नही दिखाई देती है (आर्थिक और साख्यिकी विभाग के बुलेटिन न0—17 2000) लेकिन उन तथ्यो के पीछे कारण क्या है, उसका पता अभी तक नही चल पाया है।

2.7 जनांकिकीय विशेषताए :

जनसख्या और नगर नियोजन मे घनिष्ट सबध होता है क्योकि किसी भी नगर का नियोजन जनसख्या को ध्यान मे रखकर ही किया जाता है। यह भी सत्य है कि किसी नगर क्षेत्र में जनसख्या का सकेन्द्रण भी एक अति गहन समस्या है जिसका सामना प्रशासक, नगर नियोजक और सामाजिक कार्यकर्ता समान रूप से करते है। यह भी सत्य है कि जनसख्या की सख्या, लिग, आयु और व्यावसायिक सरचना के मूल्याकन के बिना नगर की आवश्यकताओ का आकलन करना असभव है।

2.71 19 वी शताब्दी मे जनसख्या की वृद्धि

यद्यपि प्रयाग नगर का प्रारभ प्राचीन ऐतिहासिक काल मे हुआ था लेकिन आधुनिक नगर के विकास का इतिहास 16 वी सदी से माना जाता है। इस प्रकार प्रारभिक जनगणना

अभिलेख उपलब्ध नही है। 1803 ई0 मे नगर की जनसख्या लगभग 20 हजार थी (हैमील्टन, डब्ल्यू 1890)। सर्वप्रथम 1847 मे जनपद की जनसख्या की गणना के लिए प्रयास किया गया लेकिन नगर की जनसख्या की गणना अलग से नही की गई। लेकिन 1853 की जनगणना के अनुसार नगर की अनुमानित जनसख्या 72 हजार थी (जिला गजेटियर 1855) जो 1865 मे बढकर 105926 हो गई। विभिन्न जनगणनाओ के जनसख्या आकडो से निष्कर्ष निकलता है कि 19वी सदी की शेष अवधि मे भी जनसख्या वृद्धि की प्रवृत्ति बनी रही और 1891 मे इलाहाबाद की जनसख्या 1865 के जन आकाडो की तुलना मे लगभग 65 प्रतिशत अधिक थी। 19वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे जनसख्या वृद्धि का कारण यह था कि इस अवधि मे यहा सम्पन्नता थी तथा दैवी आपदा का आगमन नही हुआ (श्रीवास्तव, जे0पी0 1925)। इस अवधि मे यह नगर गगा घाटी के अन्य नगरो से रेल व सडक मार्गो द्वारा जुड गया था तथा जल परिवहन के कारण औद्योगिक और वाणिज्यिक सामानो की ढुलाई सुगम हो गई थी। प्रान्तीय सरकार के स्थान की भी स्थापना हुई जिससे नगर की जनसख्या वृद्धि को और अधिक प्रोत्साहन मिला।

<u>1891 से 1921 की अवधि मे जनसख्या मे गिरावट की प्रवृत्ति:</u>

1901 की जनगणना मे नगर की जनसख्या मे गिरावट की प्रवृत्ति पाई गई और यह गिरावट की प्रवृत्ति 1921 तक जारी रही। नगर की जनसख्या 1891 मे 175246 से घटकर 1921 मे 157220 हो गई। जनसख्या मे यह गिरावट लगभग 10% रही। जनसख्या की गिरावट के लिये उत्तरदायी कारणो मे 1901 से 1920 के मध्य महामारियो यथा प्लेग और हैजा तथा सक्रामक रोगो जैसे–बुखार, इन्फ्लुएन्जा और चेचक का बार–बार आना था। 1901 से 1906 के छ वर्षो मे प्लेग का लगातार प्रकोप बना रहा जिससे अनेको लोग काल कवलित हो गये (श्रीवास्तव, जे0पी0 1925)। 1911 से 1919 के बीच पुन प्लेग और हैजा दोनो रोगो का अत्यधिक प्रकोप रहा। वर्ष 1918 एक विशेष प्रकार के इन्फ्लुएन्जा के कारण अपवाद स्वरूप बहुत ही अस्वास्थ्यकर रहा (श्रीवास्तव, जे0पी0 1925)।

1911 और 1921 की जनगणनाओ मे नगर की जनसख्या मे जिस गिरावट को दर्शाया गया है वह उस अश मे नही था। उदाहरणार्थ 1911 की जनगणना के समय प्लेग का अत्यधिक प्रकोप था जिससे नगरवासी अपने घरो को छोडकर नगर के बाहरी सुरक्षित

स्थानो को चले गये (सेन्सस आफ इण्डिया 1911)। जनसख्या की गिरावट मे एक कारण तत्कालीन ब्रिटिश सरकार के खिलाफ असहयोग आन्दोलन का छिड जाना था। फलत अनेको घरो और सम्पूर्ण मुहल्लो तक जनगणक पहुच नही पाये (श्रीवास्तव, जे0पी0 1925)। उक्त तथ्यो से स्पष्ट है कि 1891 से 1921 के मध्य महामारियो और दोषपूर्ण जनगणना के कारण नगर मे जनसख्या मे ह्रास की प्रवृत्ति रही। यह भी उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश के अन्य नगरो मे भी जनसख्या मे गिरावट की प्रवृत्ति रही (विस्तृत—मानचित्र सं॰ 2 5)।

1921 से 1951 की अवधि मे जनसख्या वृद्धि की प्रवृत्ति ·

20 वी शताब्दी के तृतीय दशाब्द के प्रारभ होने के साथ ही जनसख्या मे ह्रास की प्रवृत्ति का अत होने लगा। 1921 से 1950 की अवधि मे इलाहाबाद की जनसख्या मे निरन्तर वृद्धि होती गई। 1921 की जनसख्या की तुलना मे 1950 की जनसख्या मे 111% की वृद्धि पजीकृत की गई (मानचित्र स० 2 5)।

सारणी—2.3

इलाहाबाद मे जनसख्या वृद्धि का प्रतिशत

वर्ष	कुल जनसख्या	कुल जन वृद्धि	जन वृद्धि (%)
1931	183914	26694	17 0
1941	260630	76716	41 7
1951	332295	71665	27 5
1921-1950	--	175075	111 0

उपरोक्त सारिणी से निष्कर्ष निकलता है कि प्रारम्भ मे जनसख्या वृद्धि मन्द थी, बाद मे तीव्र जनवृद्धि हुई और पुन जनसख्या वृद्धि कम होने लगी। लेकिन 1951 की जनगणना से स्पष्ट होता है कि 1921 की तुलना मे जनसख्या दो गुना से भी कुछ अधिक हो गई। नियमत 1921 से 1950 के मध्य उत्तर प्रदेश के नगरो की जनसख्या प्राकृतिक वृद्धि और आप्रवासन के कारण बढी। 1931 की जनगणना के अनुसार इलाहाबाद की जनसख्या
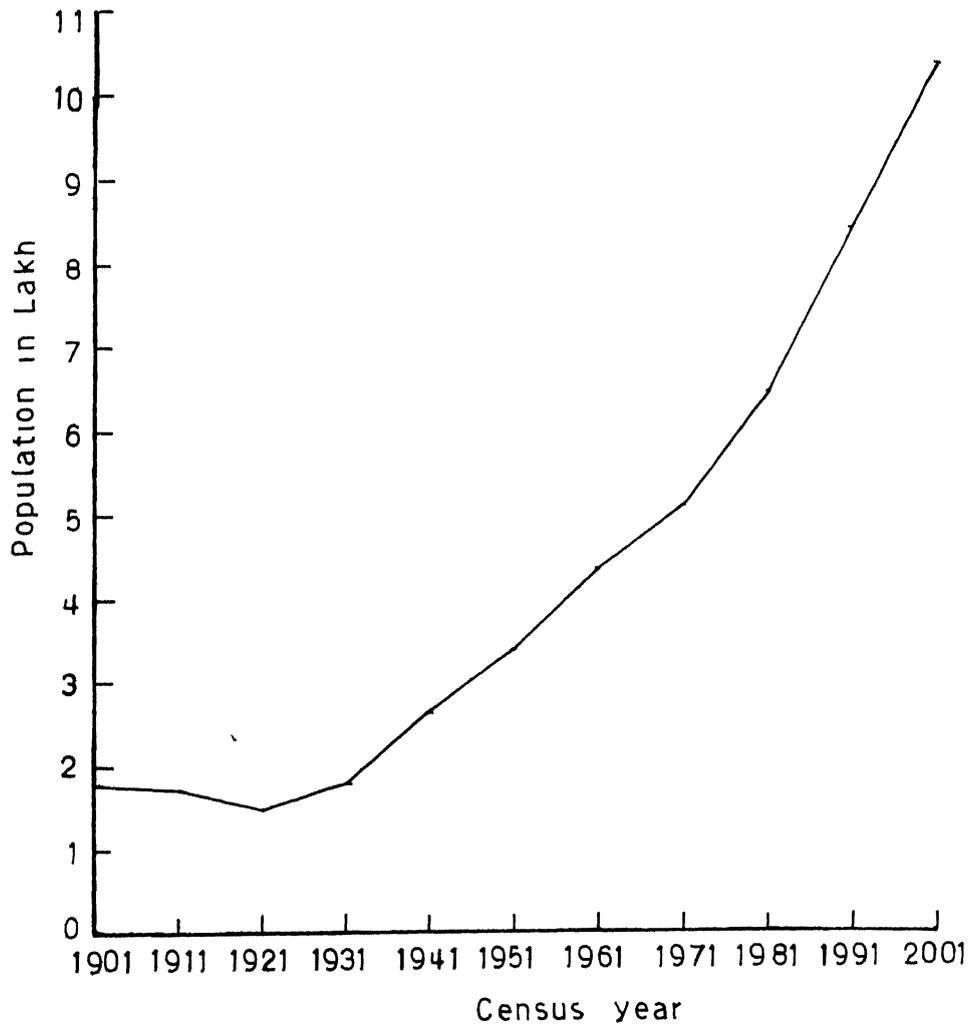
Sources Census of India-1991 Fig 2.5

(कैन्टोनमेन्ट को छोडकर) प्राकृतिक वृद्धि के कारण 11620 बढी (सेन्सस आफ इण्डिया–1931) जबकि आप्रवासन के कारण 16670 बढी। इससे स्पष्ट होता है कि इलाहाबाद मे जनस्वास्थ्य मे 1921 से 1931 के मध्य पर्याप्त सुधार हुआ। दूसरी तरफ नगर मे औद्योगिक और वाणिज्यिक क्रियाकलापो मे वृद्धि तथा कृषि दशाओ मे ह्रास के कारण दशाब्द के अन्तिम तीन वर्षो मे ग्रामीण जनसख्या का इलाहाबाद नगर की ओर आप्रवासन हुआ।

1951 से 2001 की अवधि मे अत्यधिक जनसख्या वृद्धि .

इलाहाबाद की जनसख्या मे अत्यधिक वृद्धि की प्रवृत्ति 1951 के दशक के बाद से प्रारम्भ होती है। स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात् नागरिक सुविधाओ का विकास जैसे–जैसे होने लगा जनसख्या मे वृद्धि तीव्रगति से होने लगी। 1951 से 2001 की अवधि मे इलाहाबाद की जनसख्या मे निरन्तर वृद्धि होती गई। 1951 की जनसख्या की तुलना मे 2001 की जनसख्या मे लगभग 216% वृद्धि पजीकृत की गई (मानचित्र स० 2 6)।

सारणी–2.6

इलाहाबाद मे जनसख्या वृद्धि का प्रतिशत

वर्ष	कुल जनसख्या	कुल वृद्धि	जनवृद्धि (%)
1951	332295	71665	27 5
1961	430730	98435	29 62
1971	513036	82306	19 11
1981	650070	137034	26 71
1991	844546	194476	29 92
2001	1024529	179983	21 31

स्रोत– सेन्शन आफ इण्डिया 1991 तथा जनगणना निदेशालय, लखनऊ की प्रेस विज्ञप्ति से।

उक्त सारणी से स्पष्ट है कि इलाहाबाद 2001 मे मिलियन नगर (दस लाखी) बन गया है। इलाहाबाद महानगर पालिका एव कैन्ट क्षेत्र दोनो को मिलाकर जनसख्या–1049579 हो गई है जिसमे कैन्ट क्षेत्र की जनसख्या–25050 है और नगर महापालिका क्षेत्र की जनसख्या 1024529 है।

1951 से 2001 के मध्य जनसख्या वृद्धि अत्यन्त तीव्र गति से हुई है। 1951 तक की जनसख्या की तुलना मे 2001 की जनसख्या मे तीन गुने से अधिक वृद्धि हुई है। इनमे सबसे अधिक जनवृद्धि का प्रतिशत 1961 एवं 1991 मे जो क्रमश 29 62 एव 29 92 है। 1951-61 मे 98435, 1961-71 मे 82306, 1971-81 मे 137034, 1981-91 मे 194476 तथा 1991-2001 मे 205033 की जनवृद्धि हुई है (आरेख सख्या–2 6)। विगत पचास वर्षों मे स्वतत्रता के पश्चात् इलाहाबाद की नगरीय जनसख्या मे 717284 व्यक्ति बढ गए है। इस अतिशय वृद्धि के अनेक कारण है– स्वास्थ्य सुविधाओ का स्वतत्रता के पश्चात् अत्यधिक विकास होना जिससे औसत आयु 32 वर्ष से बढकर 58 6 वर्ष होना, जन्मदर का बढना परन्तु मृत्यु दर मे अत्यधिक कमी आना है। 1881-91 मे मृत्यु दर जहा 41 प्रति हजार थी वही 1951-61 के दशक मे घटकर 23 प्रति हजार हो गई है और 1981-91 मे यह केवल 10 8 प्रति हजार रह गई। इस प्रकार मृत्यु दर मे कमी होने से जन्म दर और मृत्युदर के बीच अन्तर बढ गया है, जिससे जनसख्या मे अत्यधिक वृद्धि हुई। दूसरा कारण महामारियो मे जैसे–मलेरिया, प्लेग इन्फ्लुएन्जा, हैजा आदि पर नियन्त्रण हो गया है जिससे मृत्यु दर मे कमी आयी है। तीसरा कारण पीने के पानी मे सुधार के साथ–साथ नगर मे अवस्थापनात्मक सुविधाओ का तीव्र विकास, उद्योग धन्धो का विकास, ग्रामीण जनसख्या का नगरो की ओर पलायन, नगरो के आकार मे वृद्धि आदि है।

जनसख्या की दृष्टि से इलाहाबाद जनपद का प्रदेश मे प्रथम स्थान है जबकि नगरीय जनसंख्या की दृष्टि से इसका प्रदेश मे पाचवा स्थान है।

ALLAHABAD
DECADAL GROWTH OF POPULATION
(1951-2001)
Population in Lakh
0
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
+21 31
+29 92
+26 71
+19.11
+29.62
2001
1991
1981
1971
1961
1951
Census Year
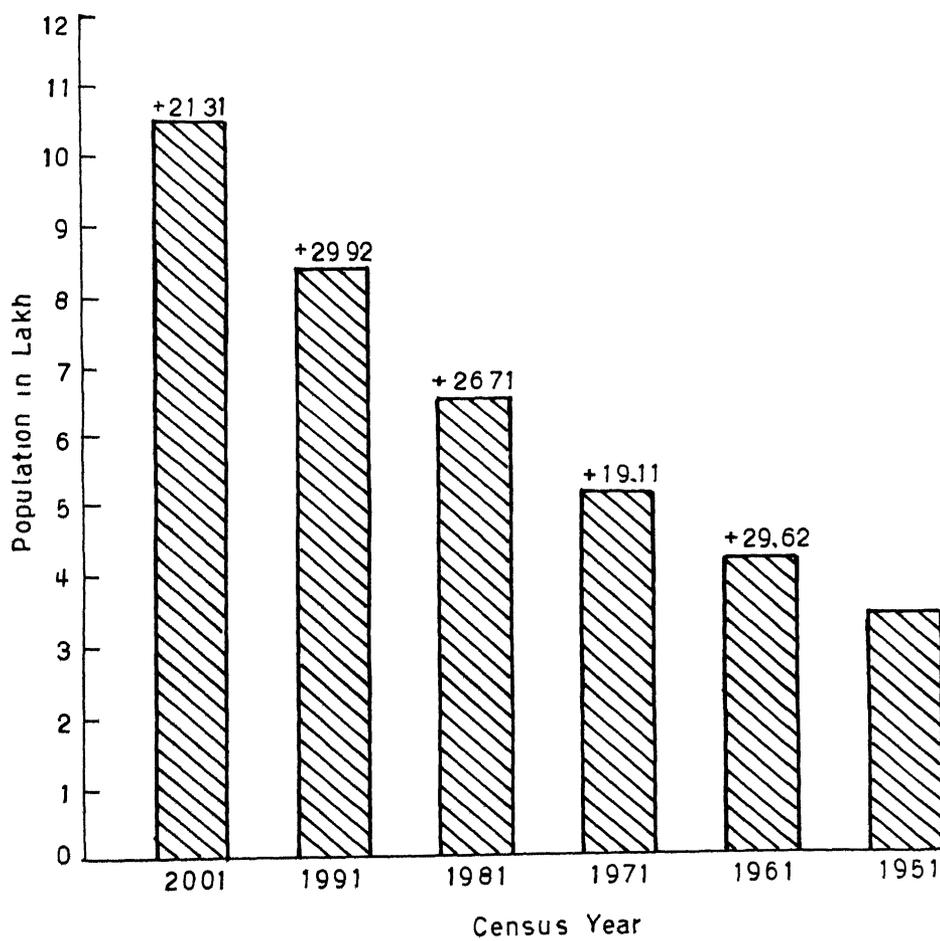
Fig. 26

2.72 जनसख्या घनत्व एव वितरण .–

सारणी स० 2.5

वर्ष	1971	1981	1991
इलाहाबाद	6242	7910	6784
कानपुर	4265	5482	6622
आगरा	7232	9089	6180
लखनऊ	6376	6904	4816
वाराणसी	5525	7675	9483

स्रोत– सेन्शस आफ इण्डिया 1991 (Part II A)

जनसख्या धन्त्व नगर मे व्यक्तियो के सकेन्द्रण का सूचक है। 1951 तक इलाहाबाद नगर का जनसख्या घनत्व कवाल नगरो मे सबसे कम था। उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि 1971 मे नगर का घनत्व 6242 व्यक्ति प्रतिवर्ग कि0मी0 हो गया तथा प्रदेश के कवाल नगरो मे इसकी स्थिति तीसरे स्थान पर हो गयी। 1981 मे नगरीय घनत्व 7910 व्यक्ति/प्रतिवर्ग कि0मी0 था जो अन्य वर्षों की अपेक्षा सबसे अधिक था। 1991 मे यह पुन घटकर 6784 व्यक्ति/प्रतिवर्ग कि0मी हो गया। इसका प्रमुख कारण 1991 एव इसके पश्चात नगरीय क्षेत्र के क्षैतिज विस्तार का अत्यधिक होना है। 1991 के जनसख्या घनत्व से स्पष्ट है कि कवाल नगरो मे इसकी स्थिति दूसरे नम्बर पर हो गयी है जबकि वाराणसी का जनसख्या घनत्व सबसे अधिक है। वर्तमान मे इलाहाबाद और वाराणसी के जनसख्या घनत्व के तीव्रगति से बढने का मुख्य कारण नगरीय क्षेत्र के विस्तार का अन्य कवाल नगरो की तुलना मे न्यूनवृद्धि होना है। इलाहाबाद नगर के क्षैतिज विस्तार के लिए गगा और यमुना नदी मुख्य बाधक है। 1991 के बाद झूसी, फाफामऊ, व नैनी के नगरीय क्षेत्र मे जुडने से इलाहाबाद नगर का भी नदी के पार विस्तार बढ रहा है। लखनऊ और कानपुर की जनसख्या अत्यधिक होने के बावजूद वहा जनसख्या घनत्व कम है इसका कारण नगर का अत्यधिक क्षैतिज विस्तार है (सेन्शस आफ इण्डिया 1991 Part II A)।

इलाहाबाद नगर के जनसख्या के सघन बसाव के क्षेत्रो का विश्लेषण करने पर पता

चलता है कि नगर के केन्द्रिय भाग का घनत्व अत्यधिक है। इनमे सिविल लाइन, चौक, मोहात्सिमगज, मुट्ठीगज तथा कीटगज, मुहल्ले सर्वाधिक सघन हैं। इसके साथ ही पुराना कटरा, दारागज भी सघन आवासीय जनसख्या घनत्व वाले क्षेत्र हैं। इलाहाबाद नगर के जनसख्या घनत्व के वितरण का विश्लेषण महायोजना 2001 द्वारा निर्धारित आवासीय जनसख्या घनत्व के आधार पर किया गया है। महायोजना मे आवासीय जनसख्या घनत्व का स्वरूप तीन रूपो मे दिया गया है– प्रथम– निम्न घनत्व 400 व्यक्ति/हेक्टेयर, द्वितीय– मध्यम घनत्व 400–600 व्यक्ति/हेक्टेयर, तृतीय– उच्च घनत्व 600 व्यक्ति से अधिक/हेक्टेयर। नगर का औसत आवासीय घनत्व 157 व्यक्ति प्रति हेक्टेयर है (मानचित्र स० 2 7)

न्यून घनत्व मुख्य नगर मे 625 91 हेक्टेयर क्षेत्र पर विस्तृत है जबकि मध्यम घनत्व मुख्य नगर मे 3169 08 हेक्टेयर क्षेत्र पर, नैनी मे 1204 10 हेक्टेयर क्षेत्र पर, झूसी मे 909 24 हेक्टेयर क्षेत्र पर तथा फाफामऊ मे 1200 91 हेक्टेयर क्षेत्र पर विस्तृत है। उच्च जनसख्या घनत्व केवल मुख्य नगर मे 513 0 हेक्टेयर क्षेत्र पर स्थित है। मानचित्र स० 2 7 से स्पष्ट है कि नगर मे उच्च घनत्व के क्षेत्र नगर के आन्तरिक, केन्द्रीय भाग है और उपान्त की ओर जाने पर जनसख्या घनत्व घटता जाता है। यह भी अकित करने योग्य है कि जनसख्या का सामान्य वितरण प्रतिरूप पश्चिम के नगरो की भाति नही है जिसमे नगर के केन्द्र मे समीपी क्षेत्र की तुलना मे अपेक्षाकृत कम जन घनत्व पाया जाता है (डिकिन्सन आर0 ई0 1956)। इसका कारण यह हो सकता है कि इलाहाबाद मे भी अन्य स्थानो की भाति सामान्य कारण द्वारा व्यवसायी क्षेत्र और आवासीय मकानो की अलग–अलग नही किया जा सकता है। व्यवसायी वर्ग अपनी दुकान व गोदाम के पास ही रहने के लिए बाध्य होते हैं क्यो कि उपान्त क्षेत्र मे तीव्र व कुशल आवागमन के साधनो का अभाव होता है, अच्छे आवासीय मकान नही मिलते तथा पर्याप्त सुरक्षा व अवस्थापनात्मक सुविधा नही मिलती है। यद्यपि नगर मे जनसख्या घनत्व का केन्द्र से उपान्त का कोई निश्चित, निर्धारित स्वरूप नही है बल्कि कुछ पुराने मुहल्ले जैसे पुराना कटरा, दारागज, कीडगज, मुट्ठीगज, चौक, सिविल लाइन क्षेत्र, बहादुरगज आदि अधिक सघन हैं।

इलाहाबाद नगर की जनसख्या घनत्व के वितरण का आवासीय जनघनत्व के आधार पर विश्लेषण करने का मुख्य कारण नगर के विभिन्न वार्डों के क्षेत्रफल की मात्रा का

PRAYAG (Allahabad)
DENSITY OF POPULATION
N
PHAPHAMAU
Ganga River
ALLAHABAD
JHUSI
Yamuna River
NAINI
Density Per Hect
> 600 High
400 – 600 Medium
< 400 Low
Flood Affected Area
2 0 2
km
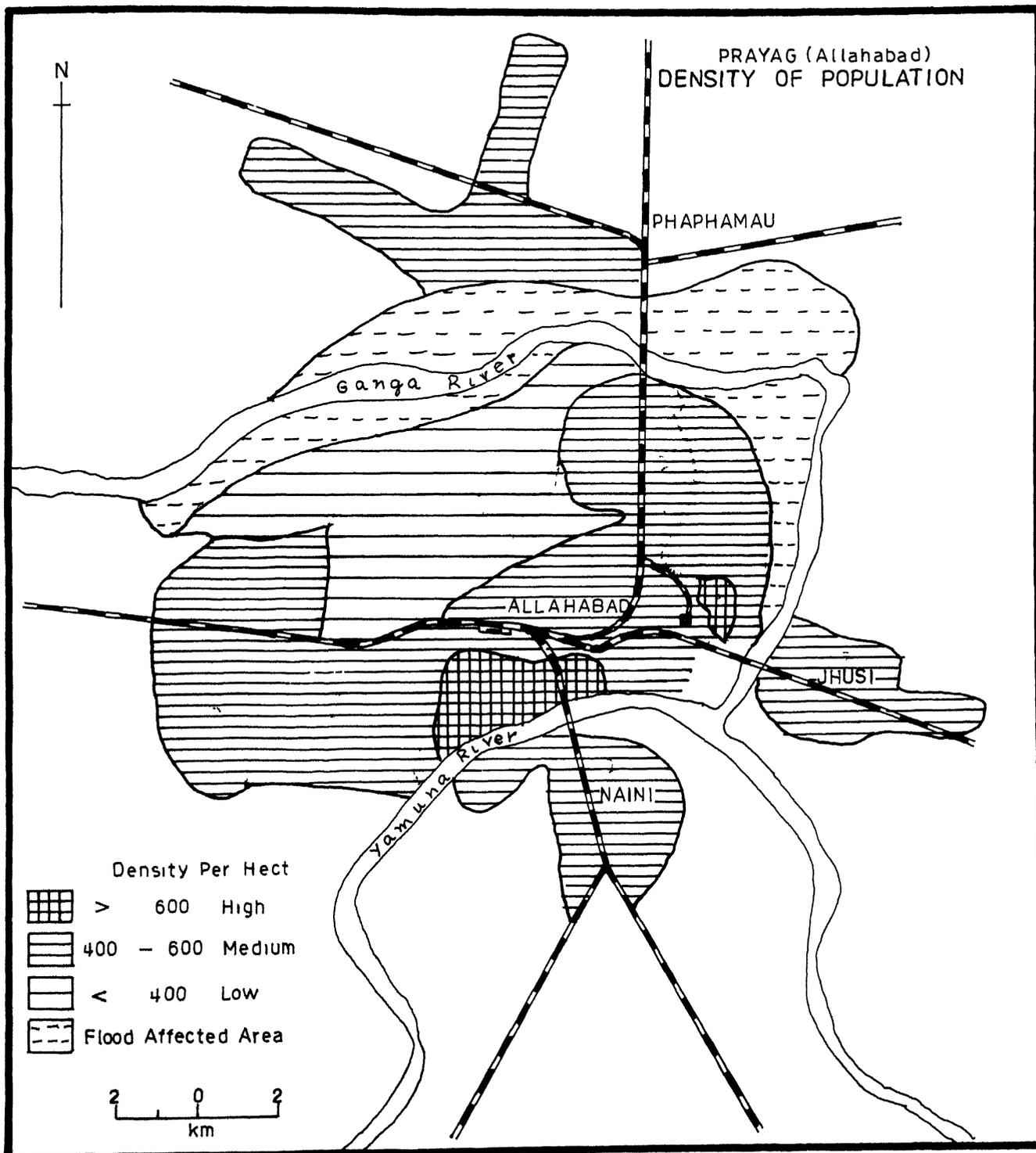
Fig 2.7

निर्धारित नही होना है बल्कि विभिन्न वार्डों मे केवल मुहल्लो का बटवारा किया गया है। यदि केवल जनसख्या के आधार पर देखा जाय तो 1991 मे चक निरातुल वार्ड की 33094 जनसख्या है तथा 29000 की सख्या से ऊपर वाले वार्ड सुलमसराय, पुरामनोहरदास, अलोपी बाग आदि वार्ड हैं। वर्तमान मे 2001 इलाहाबाद नगर मे 70 वार्ड हो गये है।

आवास विकास प्राधिकरण द्वारा नगर के उपान्त क्षेत्रो मे आवासीय सुविधा का अत्यधिक विकास करने से नगर के उपान्त क्षेत्रो मे भी जनसख्या घनत्व तीव्रगति से बढना प्रारम्भ हो गया है। जैसे– गोविन्दपुर, झूसी, व नैनी क्षेत्रो मे जनसख्य घनत्व अब बढ रहा है।

2 73 जनसख्या की लिग सरचना

किसी नगर की जनसख्या सरचना के अध्ययन मे लिग सरचना का अध्ययन विशेष महत्वपूर्ण होता है क्योकि लिग सामाजिक आर्थिक समस्यायो के लिए उत्तरदायी होता है। विश्व मे भारत के नगर पुरूष प्रधान होने के लिए प्रसिद्ध है (डेविड के0 1951)। इलाहाबाद नगर इसका अपवाद नही है।

सारणी स० 26

इलाहाबाद का लिग अनुपात

जनगणना वर्ष	प्रति हजार पुरूषो पर स्त्रियो की सख्या	वृद्धि या कमी
1901	875	–
1911	785	– 90
1921	753	– 32
1931	776	+ 13
1941	778	+ 2
1951	795	+ 17
1961	778	– 17
1972	784	+ 6
1981	815	+ 31
1991	812	– 3
2001	803	– 9

ऊपर की सारिणी (सेन्सस आफ इण्डिया 1991) के अवलोकन से पता चलता है कि 1901 मे प्रतिहजार पुरूषो पर स्त्रियो की सख्या 875 थी जो अन्य वर्षो की तुलना मे सर्वाधिक थी यह सख्या 2001 मे 803 हो गयी है । 1911 और 1921 मे प्रतिहजार पुरूषो पर स्त्रियो की सख्या घटकर क्रमश 785 और 753 हो गई और इस प्रकार 122 की कमी आई। 1901 – 1920 की अवधि मे स्त्रियो की सख्या मे कमी आने का कारण यह था कि प्लेग और इन्फ्लुएन्जा का अत्यधिक प्रकोप होने के कारण स्त्रियो की मृत्यु अधिक सख्या मे हुई (श्रीवास्तव जे0पी0 1925)।

1921 – 51 के मध्य लिग अनुपात 753 से 795 हो गया जो 1901 के बाद सबसे ऊचा अक है । पुरुष प्रधान लिग अनुपात मे पतन का कारण स्त्रियो की मृत्यु दर मे गिरावट का आना था । स्त्रियो की मृत्यु दर मे कमी का कारण शिशु के जन्म लेने के समय मृत्यु

मे गिरावट, विवाह की आयु मे वृद्धि, शिक्षा सुविधाओ और मातृ अस्पतालो का होना था (ए बी पत्रिका फरवरी 1956)। लेकिन जब 1951 के लिग अनुपात की तुलना 1901 के आस पास के वर्षों के लिग अनुपात से की जाती है तो स्पष्ट हो जाता है कि प्रति हजार पुरूषो पर स्त्रियो की सख्या मे गिरावट आई है । कई कारक मिलकर नगरीय लिग अनुपात को प्रभावित करते हैं । लेकिन इनमे व्यावसायिक सरचना सबसे महत्वपूर्ण कारक है क्यो कि रोजगार की खोज मे गावो से नगरो की ओर पुरूषो का स्थानान्तरण होता है जो अपनी पत्नियो और बच्चों को गाव पर ही कृषि की देख रेख करने के लिए या कम मजदूरी मिलने के कारण या आवास सम्बन्धी असुविधा के कारण छोड देते है जिससे नगरो मे स्त्रियो की तुलना मे पुरूषो की सख्या अधिक हो जाती है । इस नगर मे वृहद सैनिक छावनिया भी है जिनमे पुरूष सैनिक ही स्त्रियो की अपेक्षा अधिक सख्या मे रहते है जिससे लिग अनुपात पुरूषो के पक्ष मे चला जाता है (सेन्सस आफ इण्डिया 1951)।

1981 से 2001 के मध्य स्त्रियो की सख्या मे गिरावट का मुख्य कारण लडके के प्रति अधिक झुकाव और वर्तमान अल्ट्रासाउड विधि द्वारा यौन परीक्षणोपरान्त कन्या भ्रूण हत्या है। यह प्रवृत्ति नगरो मे अधिक पाई जा रही है (सामाजिक आर्थिक समीक्षा 2000–2001)।

2 74 जनसख्या की धार्मिक सगठन एव जाति सरचना :

धर्म एक महान शक्ति है जो इससे जुडे रहने वाले लोगो के सामाजिक धार्मिक जीवन को वृहत् रूप मे निर्धारित करता है। इलाहाबाद नगर मे रहने वाले विविध समुदायो ने अपना अलग–अलग सास्कृतिक भू–दृश्यो का निर्माण किया है। नगर मे रहने वाले विभिन्न धार्मिक समूहो ने अपने अपने तरह के सम्प्रदायो का निर्माण किया है। इसलिए नगर सीमा के भीतर जनसख्या की धार्मिक सरचना और उसके वितरण प्रतिरूप का अध्ययन आवश्यक हो जाता है।

सारणी स० 2.7

इलाहाबाद महानगर की धार्मिक सरचना

समुदाय का नाम	सम्पूर्ण जनसंख्या का प्रतिशत				कुल सख्या			
	1921	1941	1951	1991	1921	1941	1951	1991
हिन्दू	68 8	66 6	75 0	86 79	99955	463988	249062	763586
मुस्लिम	28 0	31 4	23 5	12 94	40855	77316	78114	247679
(ईसाई) क्रिश्चियन	3 2	0 9	1 5	15	4732	2123	4932	6818

स्रोत— साख्यिकीय पत्रिका (1996) इलाहाबाद एव 1921, 41, 51 के आकडे द्विवेदी, आर०एल० (1961)

ऊपर की सारिणी से स्पष्ट है कि सम्पूर्ण जनसख्या मे हिन्दू, मुस्लिम व ईसाई धर्मावलम्बियो का मुख्य हिस्सा है। 1921 मे सम्पूर्ण जनसख्या मे हिन्दुओ की सख्या 68 8 प्रतिशत, मुस्लिमो की 28 प्रतिशत तथा ईसाइयो की सख्या 3 2 प्रतिशत थी। लेकिन 20 वर्षों के अन्तराल पर 1941 मे मुस्लिम जनसख्या मे 89 प्रतिशत की अप्रत्याशित वृद्धि हो गयी जबकि हिन्दू जनसख्या मे केवल 64 प्रतिशत वृद्धि पजीकृत की गई। हिन्दू और मुस्लिमो की जनसख्या वृद्धि दर मे विभिन्नता होने के कारण 1941 मे दोनो का हिस्सा प्रभावित हुआ। 1921 मे हिन्दुओ की सख्या कुल जनसख्या का दो तिहाई से अधिक थी जो 1941 मे कुल जनसख्या का दो–तिहाई हो गई, जबकि 1941 मे मुस्लिम जनसख्या मे 3 4 प्रतिशत की वृद्धि हुई और उनकी सख्या कुल जनसख्या का एक तिहाई से थोडा कम थी। मुस्लिम जनसख्या वृद्धि का कारण उनकी सामाजिक दशाओ के फलस्वरूप प्राकृतिक वृद्धि का होना था तथा तत्कालीन सरकार ने उन्हे जनसख्या वृद्धि के लिए विशेष प्रश्रय दिया (सिह, आर0एल0 1955)।

1951 की जनगणना की तुलना 1991 की जनगणना से करने पर पता चलता है कि हिन्दुओ की सख्या मे तीव्र गति से वृद्धि हुई, एव इस समय हिन्दुओ का प्रतिशत बढकर 86 79 प्रतिशत हो गया है। इसके साथ ही सख्यात्मक दृष्टि से मुस्लिमो की सख्या भी

1951 की अपेक्षा 1991 मे तीन गुनी अधिक हो गई है। 1991 मे हिन्दुओ की भी सख्या 1951 की अपेक्षा तीन गुने से अधिक बढी है परन्तु मात्रात्मक रूप मे हिन्दुओ की सख्या अधिक हो जाने से इनका प्रतिशत कुल जनसख्या मे अधिक हो गया है। चूकि ईसाई पहले से ही अत्यधिक शिक्षित थे अत उनकी सख्या तो बढी है लेकिन कुल जनसख्या मे उनकी सख्या कम होने से उनका प्रतिशत घट गया है। इस प्रकार 1991 जनगणना के अनुसार धार्मिक दृष्टि से हिन्दू सबसे बडा समूह बनकर उभरा। इसके बाद मुसलमानो का स्थान आता है जो कुल जनसख्या के 1/4 से कुछ कम है। धार्मिक सरचना की सारणी से स्पष्ट होता है कि हिन्दुओ की सख्या 1941 मे 67 प्रतिशत से बढकर 1951 मे 75 प्रतिशत तक पहुच गई जबकि इस अवधि मे मुसलमानो की सख्या मे 8 प्रतिशत की गिरावट पाई गई। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि 1941 से 1950 की अवधि मे हिन्दू व मुस्लिम जनसख्या मे बहुत अभ्युत्थान हुआ। हिन्दुओ और मुसलमानो के हिस्से मे विचलन का कारण हिन्दुओ मे अधिक वृद्धि का होना ही नही था बल्कि मुसलमानो की सख्या मे गिरावट का होना भी था। इस व्युत्क्रम का सबन्ध भारत का 1947 मे विभाजन से हो सकता है जिसके कारण मुसलमान अधिक सख्या मे नवनिर्मित देश पाकिस्तान मे स्थानान्तरित हो गये (द्विवेदी आर0एल0 1961)।

सारणी स० 28

नगर मे धर्मानुसार जनसख्या 1991

प्रमुख धार्मिक सम्प्रदाय	संख्या	कुल जनसख्या मे प्रतिशत
हिन्दू	763586	86 79
मुस्लिम	247679	12 94
इसाई	6818	15
सिक्ख	3109	07
बौद्ध	138	01
जैन	795	03
अन्य	96	—
धर्म नहीं बताया	144	01
कुल	**1022365**	**100 00**

स्रोत– साख्यिकीय पत्रिका (1996) पृष्ठ– 35

इलाहाबाद महानगर मे किस समुदाय का कुल जनसख्या मे कितना हिस्सा है, की तुलना मे उनका भौगोलिक वितरण कैसा है यह अधिक महत्वपूर्ण है, क्योकि इससे नगर का सास्कृतिक भू–दृश्य बहुत अधिक सशोधित हो गया है। अधिसख्यक होने के कारण हिन्दू धर्मावलम्बी नगर के अधिकाश भाग पर फैले हुए है। अधिसख्यक हिन्दुओ की तुलना मे अल्पसख्यक मुसलमानो की सख्या का वितरण अधिक रोचक है। यद्यपि मुसलमानो की सख्या का 12 94 प्रतिशत है, लेकिन वे सम्पूर्ण नगर मे वितरित नही है। दूसरी तरफ वे कुछ ही इलाको मे संकेन्द्रित है। यद्यपि प्रत्येक क्षेत्र मे मुसलमानो की सख्या कम है फिर भी कुछ क्षेत्रो मे उनकी सख्या अधिक है जो कुल मुस्लिम जनसख्या का लगभग 56 प्रतिशत है। लेकिन इसमे लुकरगज, गरीबन टोला, सराय खुल्दाबाद, मिनहाजपुर, नक्खास कोहना और जान्सटनगज मे तथा रानीमण्डी व अतरसुइया मे जहा हिन्दुओ की सख्या अधिक है, जनसख्या वितरण प्रतिरूप की प्रकृति स्पष्ट नही हो पाती है। उक्त दोनो क्षेत्रो के विभिन्न मुहल्लो की धार्मिक सरचना के विचार से इन दोनो मे मुस्लिम जनसख्या का वृहद संकेन्द्रण मिलता है। इन क्षेत्रो मे शाहगज, तजियाकला, सब्जी मण्डी, सरायगढी, हमाम, डण्डीपुर, नूरअलीगज, नालबन्द टोला और गढी निकटस्थ मुहल्ले है जिनमे मुसलमानो की 70 प्रतिशत सख्या निवास करती है (सेन्सस आफ इण्डिया– 1991)।

इसी प्रकार मुहल्ला अताला, कोल्हन टोला, वैढन टोला, कोफ्तगरन टोला, बक्शी बाजार, दियारा साह अजमल, दियारा शाह, गुलाम अली, सुल्तानपुर भावा, अहमदगज, याकूतगज और काजीगज की जनसख्या मुस्लिम है जो कुल का 88 प्रतिशत है।

इस प्रकार यह बिल्कुल स्पष्ट है कि नगर मे मुसलमानो मे उसी सामाजिक धार्मिक समूह मे एक साथ रहने की प्रवृत्ति है। यद्यपि क्रिश्चियनो के सकेन्द्रण क्षेत्रो को दिखाने वाले आकडे सुलभ नही है फिर भी 1991 की जनगणना के अनुसार मावापुर, और गौघाट मे उनकी सख्या क्रमश 30 4 और 34 6 थी। सिविल लाइन के साथ ममफोर्डगज के पश्चिम म्योराबाद एक क्रिश्चियन कालोनी है। चैथम लाइन मे रानीगज एक दूसरा क्रिश्चियन बहुल क्षेत्र है। सामान्यतया क्रिश्चियन जनसख्या सार्वजनिक सस्थाओ और चर्च के इर्द–गिर्द पाई जाती है।

नगर के प्रमुख समुदाय:

हिन्दू

1991 की जनगणना के अनुसार जनपद मे हिन्दू समुदाय की सम्पूर्ण सख्या 4271348 है इनमे नगर मे रहने वालो की सख्या 617894 है (सेन्सस आफ इण्डिया 1991 भाग– II A)। इस नगर मे भी हिन्दू समाज का स्वरूप चार वर्णों वाली परम्परागत व्यवस्था पर आधारित है। ये चार प्रमुख वर्ण है– ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। प्रत्येक वर्ण अनेक उपजातियो मे विभाजित है। कुछ अन्य वर्ग जैसे कायस्थ और खत्री भी है जो स्वतत्र जातियो का स्तर रखते हैं और ये भी उपजातियो मे विभाजित है। नगर के ब्राह्मण अधिकाशत सरयूपरीण उपजाति के है। यहा कान्यकुब्ज, भूमिहार तथा प्रागवाल भी हैं। प्रागवाल अधिकाशतया प्रयाग (जिस शब्द से इस समुदाय के नाम की व्युत्पत्ति हुई है) के पडे या तीर्थ पुरोहित है। इनमे से प्रत्येक वर्ग मे केवल सजातीय विवाह होता है। जिले के क्षत्रिय जो नगर मे है विभिन्न राजपूत वशो से सम्बन्धित है। इनमे से बघेल, बिसेन, चौहान, सोमवशी, गहडवाल, राठौर, तोमर, सेगर और चदेल राजपूत अधिक महत्वपूर्ण है। इनमे से कुछ अवध के प्रसिद्ध बैस वश से सम्बन्धित है तथा कुछ अन्य जो वनवासी के नाम से जाने जाते है निम्न स्तरीय राजपूत माने जाते है।

वैश्य सामान्यत व्यवसायी और व्यापारी होते है और नगर के सभी भागो मे पाये जाते हैं। इस जाति की प्रमुख उपजातिया केसरवानी, अग्रवाल, रस्तोगी, माहेश्वरी, कसौधन और अग्रहरी आदि है।

यहा के कायस्थ श्रीवास्तव उपजाति के है। ये बौद्धिक व्यवसायो जैसे कि अध्यापन, चिकित्सा और वकालत मे लगे हुए हैं तथा बहुत से लोग सरकारी तथा गैरसरकारी सेवा मे लगे हुए हैं।

राज्य के अन्य भागो की तरह इस नगर मे भी शुद्रो मे अनुसूचित जाति तथा अन्य पिछडे वर्गों के लोग आते हैं तथा अधिकाशत सामाजिक, आर्थिक तथा शैक्षिक दृष्टि से भी पिछडे हुए हैं। अनुसूचित जातियो मे चमार जाति के लोग सबसे अधिक हैं जो मजदूरी कार्य मे लगे हुए हैं। अन्य अनुसूचित जातियो तथा पिछडे वर्गों मे केवट, तेली, लोहार, नाई, धोबी, खटिक, दर्जी, पासी, कुम्हार, कहार और अहिर जाति के लोग है। नगर मे भगी साधारणतया सफाई सबन्धी कार्यों मे लगे हुए है।

<u>मुसलमान</u>

1991 मे जनपद मे मुस्लिमो की सम्पूर्ण सख्या 636680 है इसमे नगर मे रहने वालो की सख्या 179229 है। 1991 की जनगणना के अनुसार जिले की सम्पूर्ण मुसलमानो की सख्या का 31 6 प्रतिशत नगर क्षेत्र मे रहते है। ये मुख्यत शिया और सुन्नी नामक दो सम्प्रदायो मे विभाजित हैं जिनमे से अधिकाशत मुसलमान सुन्नी हैं। इस जिले के मुसलमान शुरू मे इस देश मे बाहर से आये शेख, सैय्यद, पठान या मुगलो के वशज है और बहुत से उन मुसलमानो के वशज है जिन्होने अपना धर्म परिवर्तन करके इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था। यहा शेखो की अन्य उपजातिया सिद्दीकी, कुरैशी, उस्मानी, फारूकी, असारी तथा अब्बासी आदि पायी जाती है।

यहा पठानो की सख्या भी अधिक है जो लोदी और गोरी कुल के है। सैय्यद मुख्यतया जैदी, जाफरी, हुसेनी, रिजवी, आब्दी और बाकरी उप जातियो से सम्बन्धित हैं। नगर मे मुसलमानो की अन्य जातियो के नाम साधारणतया उनकी जीविका से सम्बन्धित हैं जैसे कि भिश्ती (पानी देने वाला), कस्साव (कसाई), भटियारा (सराय चलाने वाला), दर्जी (कपडे सीने वाला), मनिहार (काच की चूडिया बनाने और बेचने वाला), कुजडा (सब्जी बेचने वाला) आदि है।

<u>ईसाई</u>– 1951 मे ईसाईयो की सख्या 5739 थी जो 1961 मे बढकर 6261 हो गयी। यहा के ज्यादातर ईसाई रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टेन्ट सम्प्रदाय के है। 1991 मे इनकी जनसख्या बढकर 7268 हो गयी है।

<u>सिख</u>– 1951 में इनकी सख्या 3190 थी जो 1961 मे बढकर 3770 हो गयी है। इनमे 400 सिख ग्रामीण क्षेत्र मे रहते है तथा शेष नगर मे। 1991 मे नगर मे इनकी सख्या 3626 हो गयी है।

<u>बौद्ध</u>– 1961 मे 119 बौद्ध थे जिनमे से 75 व्यक्ति ग्रामीण क्षेत्र मे रहते थे। 1991 मे जनपद मे इनकी सख्या 566 एव नगर मे 91 है।

<u>जैन</u>– 1961 की जनगणना के समय जैनियो की सख्या 883 थी। वे अधिकतर वैश्य वर्ण के और विशेषकर अग्रवाल जाति के होते है तथा ये जैनी या सारावगी के नाम से जाने जाते हैं। (उत्तर प्रदेश जिला गजेटियर, इलाहाबाद 1986 पृष्ठ– 46-47)।

1991 मे जनपद मे जैन समुदाय की सख्या 1342 एव नगर मे 589 है। अन्य लोगो की जनपद मे सख्या 483 एव नगर मे 139 है।

<u>अन्य–</u> अन्य मे दोनो तरह की सख्या सम्मिलित है जिनमे कुछ लोगो ने धर्म बताया नही और कुछ की सख्या बहुत कम है।

2 75 <u>भाषा की विशेषता</u>

इस जिले के 98 प्रतिशत निवासियो की मातृ भाषा हिन्दी है और यहा के लोगो की बोली अवधी है, जो जिले के दक्षिण और दक्षिण–पश्चिम मे बघेली और पूर्व मे भोजपुरी मिश्रित हो गई है। जिले मे बोली जाने वाली हिन्दी की विभिन्न बोलिया एक दूसरे से मिश्रित है और वे किसी प्रकार की भौगोलिक सीमाओ से आबद्ध नही है। 1961 की जनगणना के अनुसार जिले मे बोली जाने वाली भाषाए तथा बोलिया तथा प्रत्येक भाषा एव बोली बोलने वाले व्यक्तियो की सख्या नीचे दी गयी है –

सारणी स० 2.9

भाषा	व्यक्ति	भाषा	व्यक्ति
हिन्दी	21,80,736	अरबी	324
उर्दू	2,26,327	सिन्धी	207
बगाली	12,862	कन्नड	25
पजाबी	10,937	उडिया	124
अग्रेजी	1,488	कश्मीरी	60
गुजराती	1,110	असमिया	41
तमिल	1,102	नेपाली	22
मराठी	1,090	मद्रासी	9
सस्कृत	926	वर्मी	1
मलयालम	530	**योग–**	**24,38,376**
तेलगू	355		

स्रोत– उत्तर प्रदेश जिला गजेटियर (1986) इलाहाबाद।

जिले के मध्य मे बोली जाने वाली बोली बहुत ही विलक्षण है और 'मैने कहा था' का हिन्दी रूप 'हम कहे रहे' मे बदल जाता है, 'तुमने कहा था' 'तुम कहे रहा' मे बदल जाता है और 'उसने कहा था' 'ऊ कहे रहेन मे बदल जाता है, अप्रतिष्ठा बोधक अर्थ मे वाक्य के अन्त मे 'रहेस' शब्द का प्रयोग किया जाता है। गगा के उत्तरी क्षेत्र मे प्रतापगढ की सीमा पर और दोआब के पश्चिम (परगना कडा और करारी) की बोली मे कुछ सीमा तक पश्चिमी हिन्दी से सादृश्य पाया जाता है।

यमुना के दक्षिण क्षेत्र मे, जिसमे गगा तथा यमुना के सगम के आगे गगा का दक्षिणी क्षेत्र भी सम्मिलित है, प्रयुक्त होने वाली बोली, जिले के केन्द्रीय भागो मे बोली जाने वाली बोली से किचित भिन्न है। परगना बारा और खैरागढ तथा जिले के दक्षिण पूर्व मे यह बघेली मिश्रित हो जातीी है। मिर्जापुर जिले के समीावर्ती भागो मे यह बोली भोजपुरी से अत्यधिक प्रभावित हो गयी है। हिन्दी के 'है' के लिये 'बा' का प्रयोग, अन्य पुरूष भविष्यत् के अन्त मे 'ए' का प्रयोग, दीर्घ 'ई' के स्थान पर ह्स्व 'इ' के प्रयोग की ओर स्पष्ट झुकाव (जैसे 'दिहिस' के स्थान पर 'देहिस') इस बोली की कुछ उल्लेखनीय विशेषताए है।

प्रामाणिक हिन्दी और स्थानीय बोली मे ध्वनि सबन्धी एक अन्तर यह भी है कि कतिपय शब्दो के अन्त मे लघु स्वरो का प्रयोग किया जाता है। 'कई', 'कउ' हो जाता है। शब्द रचना की दृष्टि से अवधी मे कतिपय अकारान्त शब्दो का रूप बदल जाता है (घोडा अथवा 'घुडवा' हो जाता है) लडके शब्द लडकन अथवा लडकवन मे बदल जाता है। हिन्दी शब्द के कारक के बाद आने वाली विभक्ति 'ने' को छोड दिया जाता है और राम ने कहा वाक्या राम कहेन हो जाता है। 'को' का 'का' हो जाता है 'राम को बुलाओ' वाक्य 'राम का बुलावा' हो जाता है 'का' शब्द 'कर' बन जाता है। 'उनका घर' 'उनकर घर' हो जाता है। इस जिले मे मुख्यत देवनागरी, फारसी, रोमन, बगला और गुयमुखी लिपियो का प्रयोग किया जाता है (जिला गजेटियर 1986 इलाहाबाद)।

References

Annual Administration Report, Municipal Board, Allahabad,(1953-54)

A B Patrika (Feb - 1956) "Sex Ratio in Allahabad City" (Issued by the Socio , Economic Survey of Allahabad, Department of Economics, University of Allhabad)

Blanford, H F (1889) "Climates and Weather of India" London, Page - 143

Census of India (1911) Vol, XV, Part I, U P Allhabad, Page - 30

Census of India (1931) U P Vol, X VII Part I, Report Page - 141 (1931) Page - 127

Census of India (1951) District Population Statistics Allahabad, District Page - 6, 7

Census of India (1991) Table - A IV

Census of India (1991) Part - II A

Dwivedi, R L (1961) Allahabad, "A Study in Urban Geogrophy" Page No - 16, 23, 27, 29, 86

District Gazetteer (1955) Allahabad - Page - 81

District Gazetter (1986) Allahabad - Page 7, 10, 11, 62, 46-47

Dubey, R N (1957) "Economic Geography of India Republic" Kitab Mahal Alld., Page - 16

Dickinson, R E (1956) City Region and Regionalism, London Page - 127

Krishnan, M S (1949) "Geology of India and Burma" Second Edition Madras Page - 519

David, K, (1951) "The Population of India and Pakistan" Princeton, New Jersey, Page - 131, 132

Elliot, J (1904) "Discussion of the Anemographic Observations recorded at Alld , from Sept 1980 to Aug 1904" Memoirs of the Indian Meteorological Department, Vol- X V III, Part III, Page - 288, 290, 278

Ghosh, N N (1945) "Sanctity of Present Bhardwaj Ashram", The A B Patrika, Sept -2 1945

Hamilton, W (1989) "East India Gazetteer" Page - 34

Katjan, K N (1945) "Where was Bhradwaj Ashram" The A B Patrika Aug - 19, 1945

Krishnan, M S (1949) "Geology of India and Burma" Second Edition, Madras Page - 519

Mittal, C P (1945) "Why Bhardwaj Ashram Sifted" The A B Patrika Sept -2, 1945

Singh, R.L (1955) "Banaras - "A Study in urban geography" Page - 32, 25, 63

Sinha, K L (1952) "Strong winds at Allhabad and their Fore warnings" Indian Journal of Meteorology and Geophysics, Vol - 3, No - 2 Dehhi, 1952, Page - 106

Srivastav, J.P. (1925) "Report of the Civic Survey Allahabad, Improvement Trust, Allahabad, Page - 10, 11, 11, 13, 16, 20

"Trends ın Raınfall and Temperature ın U P " (1950) Bulletın No 17, The Department of Economıcs and statıstıcs, U P Alld , Page - 3

Wadıa, D N (1953) "Geology of Indıa" Macmıllan and Co Ltd, London Page - 391

सामाजार्थिक समीक्षा (1992-93) जनपद इलाहाबाद पेज- 10, 4, 5

सामाजिक आर्थिक समीक्षा (2000-2001)जनपद इलाहाबाद पेज सं0 - 21

साख्यिकी पत्रिका (1996) पेज सं0- 35

उ0प्र0 जिला गजेटियर इलाहाबाद (1986) भाषा विभाग, उ0प्र0 सरकार द्वारा प्रकाशित, लखनऊ पेज- 44

सांख्यिकीय डायरी (2000) अर्थ एवं संख्या प्रभाग राज्य नियोजन संस्थान उ0प्र0 लखनऊ पेज- 89

<u>अध्याय – 3</u>

प्रयाग एक धार्मिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र :

भारतवर्ष तीर्थों का देश है, इसका कण–कण पवित्र एव तीर्थवत् है। प्रयाग भारत का एक अतिप्राचीन धार्मिक एव सास्कृतिक केन्द्र रहा है। भारतवर्ष मे तीर्थराज प्रयाग को पवित्रतम एव श्रेष्ठतम तीर्थ भूमि बताया गया है (मत्स्य पुराण 108/15,16)। प्रयाग सभी तीर्थों मे अग्रणी है तथा सब तीर्थों का प्रिय तीर्थ है। समस्त जीवो की इच्छाओ का पूतिकर्त्ता है तथा धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष का प्रदाता है (स्कन्द पुराण 4/6/21)। प्रयाग के एक महान धार्मिक केन्द्र के रूप मे विकसित होने के कई कारण है–प्रथमत भगवान ब्रह्मा द्वारा प्रकृष्ट यज्ञ किये जाने से पुण्यदायी एव पवित्र स्थली का होना, द्वितीय गगा–यमुना एव अदृश्य सरस्वती का पवित्र सगम जो विश्व मे कही भी प्राप्य नही है, तृतीय शक्तिपीठो एव असख्य तीर्थों का प्रयाग मे ही स्थित होना है। साथ ही प्रयाग मे माघ मास मे सूर्य के मकर राशि मे प्रवेश करने पर स्नानकर्म हेतु सम्पूर्ण विश्व के लोगो का समागम, एक मास तक चलने वाले विशाल माघ मेले का आयोजन, वर्ष भर देश विदेश के लोगो का अपने विभिन्न पवित्र कर्मों के सम्पादन के लिए यहा पहुचना है यथा–मुण्डन, विविध प्रकार के दान–वेणीदान, स्वर्णदान, शैय्यादान, पिण्डदान आदि, श्राद्धकर्म, अस्थिविर्सजन, माधव दर्शन, विभिन्न शक्तिपीठो के दर्शन, पचकोशी एव चौदह कोशी परिक्रमा के माध्यम से सभी देवताओ की पूजा इत्यादि कर्मों हेतु यहा कोटि कोटि लोगो का आगमन होता रहता है। प्रयाग विश्व के प्राचीन सस्कृतियो मे सर्वप्रमुख आर्यसस्कृति का केन्द्र स्थान एव धार्मिक तथा सास्कृतिक प्रेरणा का केन्द्र रहा है।

3.1 <u>प्रयाग की ऐतिहासिकता :</u>

प्रयाग गगा, यमुना एव अदृश्य सरस्वती के सगम पर स्थित है इसे तीर्थराज कहा जाता है। यह तीनो लोको (स्वर्ग, मृत्यु, पाताल लोक) एव तीनो कालो (भूत, वर्तमान, भविष्य) मे सबसे पवित्र स्थान माना जाता है। प्रयाग की महत्ता का उल्लेख वैदिक काल से लेकर

वर्तमान काल तक विद्यमान है। भारत के तीन विशाल तीर्थ स्थलो (काशी, गया एव प्रयाग) मे प्रयाग एक महान तीर्थ माना जाता है।

गगा यमुना दोआब आर्यावर्त का हृदय स्थल है। यही पर आर्य और देशज सस्कृति का विलयन हुआ और समयोपरान्त यह क्षेत्र एक राजनीतिक केन्द्र के रूप मे विकसित हुआ। यहा पर मौर्य, गुप्त, दिल्ली सल्तनत और मुगलो का साम्राज्य रहा। प्रयाग मध्य देश की पूर्वी सीमा बनाता है (मनु स्मृति, श्रीवास्तव शलिग्राम 1937)। मध्य देश के पूर्वी छोर पर प्रयाग की स्थिति इसके स्थानिक महत्व को दर्शाते हुए मनुष्य के भौतिक एव आध्यात्मिक मिलन बिन्दु की ओर इगित करता है। भारतीय मिथक शास्त्र मे पूर्व दिशा का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है इसलिए आज भी भारत मे भवन के दरवाजे पूर्व की ओर रक्खे जाते है और सम्पूर्ण धार्मिक क्रियाए पूर्व की ओर अभिमुख होकर ही की जाती है। चूँकि मध्यदेश भारतीय सस्कृति का केन्द्र रहा है इसलिए प्राचीन काल से ही इस स्थान का महत्व है क्योकि ऐसा माना जाता है कि यहा पर ब्रह्माण्डीय शक्तियो की अनेक किरणे इस स्थान पर निरन्तर प्रह्वमान होती रहती है। इन्ही सब कारणो से प्रयाग को स्वर्ग और मृत्युलोक के मिलन बिन्दु के रूप मे माना जाता है (दूबे डी पी 1990)।

लौकिक साहित्य के आदि ग्रन्थ वाल्मीकि रामायण मे श्री रामचन्द्र जी वनवास के समय आयोध्या से चलकर श्रृग्वेरपुर मे गगा को पार कर वत्सप्रदेश मे प्रवेश किये तदुपरान्त भरद्वाज मुनि के आश्रम मे निवास कर चित्रकूट की ओर प्रस्थान किये (वाल्मीकि रामायण, अयोध्याकाण्ड सर्ग–52)। रामायणमे वर्णित तथ्यो से यह पता चलता है कि प्रयाग एक तपस्थली थी जिसके चारो तरफ सघन वन थे।

पुरातन काल मे पितामह ब्रह्मा जी ने गगा, यमुना एव सरस्वती के सगम पर यज्ञ किया था अत यजन् भूमि होने के कारण इसे प्रयाग नाम दिया गया। महाभारत मे ही प्रयाग के साथ–साथ प्रतिष्ठानपुर (झूसी) वासुकि और दशाश्वमेघ (दारागज) का वर्णन मिलता है (महाभारत वनपर्व 87/18–19)। कुछ लोगो का मानना है कि मनु की पत्नी 'इला' से

इलाहाबाद नाम आया है परन्तु इस मत को स्वीकारने के लिए कोई ऐतिहासिक आधार नहीं है।

पुराणों में प्रयाग का बहुत विस्तृत वर्णन मिलता है जिसमें प्रयाग मण्डल (मत्स्य पुराण 106, 109) प्रयाग क्षेत्र का परिमाण (कुर्मपुराण), ब्रह्मा का क्षेत्र (कुर्मपुराण), प्रयाग का क्षेत्र पांच योजन और छः कोश (पद्मपुराण) इत्यादि की विस्तृत जानकारी दी गयी है। गंगा एवं यमुना के मध्य में स्थित पृथ्वी की जंघा को प्रयाग कहते हैं जो तीनों लोकों में प्रसिद्ध है (मत्स्यपुराण)। प्रयाग को प्रजापति का क्षेत्र कहा गया है (कुर्मपुराण)। इसी प्रकार प्रयाग को प्रजापति की वेदी भी कहा गया है (मत्स्यपुराण)। पुराणों में प्रयाग के अन्तर्गत विद्यमान अनेक तीर्थ स्थलों का भी विस्तार से वर्णन मिलता है जिसमें त्रिकंटकेश्वर, शुलकटंक, सोमेश्वर आदि लिंग, वेनी माधव है (वाराहपुराण)। प्रयाग के तट भोगवती पुरी है (मत्स्यपुराण)। अक्षयवट का वर्णन कई पुराणों में मिलता है। प्रयाग में माघ के महीने में 60 हजार तीर्थ एकत्र होते है, का वर्णन पुराणों में है (मत्स्यपुराण)। साथ ही ऐसा बताया गया है कि यह पृथ्वी मंडल के सब तीर्थों में उत्तम और तीर्थराज है (वाराह पुराण)। इसके अतिरिक्त प्रयाग के स्नान और उसके विविध तीर्थ स्थानों के महात्म्य का वर्णन अनेक पुराणों में विस्तृत रूप से वर्णित है।

महाकवि कालिदास ने भी अपने महाकाव्य में गंगा–यमुना के सगंम के दृश्य का वर्णन किया है (रघुवंश महाकाव्य)। गोस्वामी तुलसी दास ने भी अपने ग्रन्थ कवितावली में प्रयाग एवं संगंम का वर्णन किया है (श्रीवास्तव शालिग्राम 1937, पृष्ठ 18 से 20)।

450 ई0 पू0 महात्मा गौतम बुद्ध ने प्रयाग में आकर स्वधर्म का प्रचार किया था। सन् ईसवी से 319 वर्ष पूर्व चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन काल में प्रयाग मगध राज्य के अधीन था। मेगस्थनीज ने अपने ग्रन्थ में दो स्थानों पर प्रयाग का वर्णन किया है। 273 ई0 पू0 मौर्यवंश के महान शासक द्वारा शिला पर अंकित राजाज्ञा जो कीर्ति स्तंभ के रूप में खड़ा किया था, वर्तमान में प्रयाग के किले में है।

सन् 400 ई0 के पश्चात् चीनी यात्री फाह्यान ने अपने ग्रन्थ मे 'प्रयाग' का उल्लेख किया है (बील, बुद्धिस्टिक रेकार्ड्स)। 606 ई0 मे हर्षवर्धन के शासन काल मे प्रयाग कन्नौज राज्य के अन्तर्गत हुआ। 810 ई0 से प्रयाग परिहार राजपूतो के अधीन कन्नौज राज्य मे 1027 तक इस वश के अन्तिम शासक त्रिलोचनपाल के समय तक था। 1090 ई0 से मुगलशासको के आगमन तक चन्द्रदेव गहरवार के अधीन रहा (श्रीवास्तव, शालिग्राम 1937 पृष्ठ 22 से 25)।

प्रयाग सर्वप्रथम मुगलराज्य के अन्तर्गत 1194 मे शहाबुद्दीन गोरी के समय मे आया। 1539 मे हुमायू चुनार से अरैल आया और आवश्यक सामग्री लेकर कडा की तरफ चला गया। 1567 ई0 मे अकबर प्रयाग मे आकर दो दिन ठहरा था और पुन काशी चला गया। अकबर के दरबारी इतिहास लेखक अब्दुल कादिर बदायूनी ने लिखा है कि अकबर 982 हिजरी (1574 ई0) मे 'इलाहाबास' किया एव इलाहाबाद नगर की नीव रक्खी। प्रसिद्ध इतिहासकार अबुलफजल ने प्रयाग का उल्लेख करते हुए लिखा है कि बादशाह ने इसका नाम इलाहाबाद रक्खा एव पत्थर का एक किला बनवाया। इस समय तक जिन मुगल बादशाहो के प्रयाग के ढले हुए सिक्के मिले है वे अकबर, जहॉगीर, शाहजहॉ, औरगजेब, फर्रुखसियर, मुहम्मदशाह, अहमदशाह और शाहआलम के समय के है। 1605 ई0 मे अकबर के मरणोपरान्त जहागीर राज्य के सिहासन पर बैठा। प्रयाग की मुगलकालीन इमारते यथा—खुल्दाबाद की सराय और खुसरोबाग,शहराराबाग उसी के समय की है 1628 ई0 मे शाहजहा के शासनकाल मे प्रयाग का नाम 'इलाहाबास' से पूर्णत बदल कर इलाहाबाद हो गया। औरगजेब के शासनकाल मे दिसम्बर 1665 मे फ्रासिस यात्री टैवर्नियर 'प्रयाग' भारत भ्रमण के दौरान आया उसने प्रयाग का वर्णन किया है (टैवर्नियर 1676 पृष्ठ—93)। 1782 ई0 मे अग्रेज यात्री जार्ज फारेस्टर ने लिखा है कि औरगजेब के राज्य काल मे सरकार इलाहाबाद मे 11 महाल और 5512 गाव थे। 1739 मे नागपुर के राघोजी भोसला ने प्रयाग पर चढाई की एव दारागज के समीप नागबासुकि मन्दिर और पक्काघाट को बनवाया। 1759 मे शुजाउद्दौला के अधीन प्रयाग का किला एव सुबा आ गया जो 1764 मे बक्सर की प्रसिद्ध

लडाई मे अग्रेजो से हारने पर अग्रेजो के अधीन हो गया। 14 नवम्बर सन् 1801 ई0 को सआदत अली खा ने लखनऊ मे अग्रेजो के साथ एक सधि द्वारा प्रयाग का जिला और इलाको को सदैव के लिए ईस्ट इडिया कपनी को दे दिया। उसी समय से प्रयाग मे मुगलकाल का अन्त हो गया (श्रीवास्तव शालिग्राम 1937 पृष्ठ 48–52)।

ब्रिटिश काल मे 1824 ई0 मे नगर का विस्तृत वर्णन करते हुए विशप हेबर ने उल्लेख किया है कि यहा की अधिकाश बस्ती यमुना के किनारे पर है (विशप हेबर 1824)। सन् 1826 मे मि0 स्किनर ने यहा के माघ मेले का वर्णन किया है (स्किनर 1833)। मिस्टर डब्ल्यू एस0 केन ने प्रयाग की स्थिति, उपजाऊ भूमि, सडको, वनवृक्षो व भवनो के महत्व का वर्णन किया है (Caine, W S 1891)। 1857 की लडाई मे प्रयाग का महत्वपूर्ण स्थान था। प्रयाग मे यह क्रान्ति उपद्रव के रूप मे कोई सवा सौ वर्ष मे समाप्त हुई। इसी के साथ देश मे ईस्ट इडिया कंपनी के राज्याधिकार का भी अत हो गया। 1858 ई0 मे प्रान्तिक सरकार की राजधानी आगरा से प्रयाग मे स्थापित हुई। उसी समय गवर्नमेट प्रेस भी वहा से आया। सन् 1818 मे प्रयाग मे सर्वप्रथम इडियन नेशनल काग्रेस का अधिवेशन हुआ। इसके पश्चात 1892 मे दूसरी बार बैठक मिस्टर उमेशचन्द्र बनर्जी के सभापतित्व मे हुई। सन् 1910 मे प्रयाग मे तीसरी बार काग्रेस का अधिवेशन किले के उत्तर मैदान मे एक पाडाल मे हुआ था जिसके अध्यक्ष विलियम वेडरवर्न थे (श्रीवास्तव शालिग्राम 1937 पृष्ठ 60–61)।

3.1 (i) प्रयाग : एक यज्ञ एव तपस्थली :

हिन्दुओ के सर्वाधिक पवित्र तीर्थस्थल प्रयाग की ख्याति प्राचीन समय से ही यज्ञ एव तपोभूमि के रूप मे रही है। प्रयाग जैसा की नाम से ही स्पष्ट है –प्र (प्रकृष्ट) + याग (यज्ञ) अर्थात् वह पवित्र स्थान जहा विशिष्ट यज्ञ किए गये हो। गगा–यमुना–सरस्वती के लोक विश्रुत सगम पर पुरातन काल में जीवो के स्वामी पितामह ब्रह्माजी ने यज्ञ किया था। अत यजन–भूमि होने के कारण विष्णु–महेश आदि देवताओ ने इसे प्रयाग नाम दिया (महाभारत वनपर्व 87/18–19)। 'प्र' एव 'याग' से युक्त इस प्रयाग स्थली को समस्त यज्ञो के लिए

उत्तम निरूपित किया गया है। इसके साथ ही वर्णित किया गया है कि उत्कृष्ट यज्ञ–यागादि और दान दक्षिणादि से परिपोषित (सम्पन्न) देखकर विष्णु एव शकर आदि देवताओ ने इसका 'प्रयाग' नामकरण किया (स्कन्दपुराण)। प्रयाग पृथ्वी पर प्रजापति ब्रह्मा के पाचो मध्यमावेदी मे एक था। गया, पुष्कर, कुरूक्षेत्र एव विरजा अन्य चार मध्यमावेदी है (वामनपुराण 23/19-20)। सृष्टि के उत्पत्ति करने से पूर्व प्रजापति ब्रह्मा ने सृष्टि रचना हेतु शक्ति उपार्जन के लिए यहा पर अनेको यज्ञ किया था (पद्म पुराण 6/128)। एक अन्य कथा के अनुसार शखासुर से वेद को प्राप्त करने के बाद ऋषियो द्वारा वेदो को विष्णु को दिया गया तथा मत्स्यावतार के रूप मे विष्णु तथा प्रजापति ने वेदो के सिद्धान्त के सत्यापन/परीक्षण हेतु प्रथम बार यहा यज्ञ किया गया था (स्कन्द पुराण 2/13 (4) 38-48)। यज्ञ की विशिष्टता का कारण है कि जिस देवता, ऋषि अथवा व्यक्ति विशेष ने यहा जिस स्थान विशेष पर यज्ञ किया, वे सब स्थान यहाँ आज भी पच कोशी मडल मे उन्ही के नाम से तीर्थ स्थान के रूप मे विद्यमान है। ऐतिहासिक तथ्यो से पता चलता है कि प्रयाग के दशाश्वमेघ घाट का ऐतिहासिक सबध भारशिव भवनाग से है। यह नरेश दश अश्वमेघ यज्ञ करके भागीरथी गगा के जल से अभिषिक्त हुआ था। पचकोशी के कम्बलाश्वत, बहुमूलक तथा कालियह्रदय आदि स्थानो से यही सिद्ध होता है कि ये सब स्थान भिन्न–भिन्न समय के राजाओ द्वारा किये हुये यज्ञो के स्मारक स्वरूप तीर्थ हैं। गुप्तकालीन राजाओ द्वारा यहा कई स्थानो पर यज्ञ किये गये थे। समुद्रगुप्त द्वारा जीर्णोद्वार किया हुआ समुद्र कूप आज भी पुरानी झूँसी मे है। प्रयाग के समीप श्रृग्वेरपुर मे श्रृगी ऋषि द्वारा महाराज दशरथ के लिए पुत्रेष्ठि यज्ञ किया गया जिससे उनको चार पुत्र हुए थे (सिन्हा हरेन्द्र प्रताप 1953 पृष्ठ–37)। तपस्थली के रूप मे प्रयाग की ख्याति वैदिक युग से ही यथावत् बनी हुई है। वेदकालीन कुछ आर्यजन यहा आकर बस गए थे और यह वैदिक सस्कृति और तपोभूमि के रूप मे विकसति होता गया। गगा और यमुना के सगम के निकट अनेक आश्रमो की स्थापना हुई जहा वैदिक ब्राह्मण निवास करते थे और अपने धार्मिक कृत्यो, अनुष्ठानो का सम्पादन और तपश्चर्या करते थे। इनमे ऋषि भरद्वाज सर्वप्रमुख और सर्वाधिक यशस्वी थे। प्रयाग न केवल हिन्दू सन्तों की तपोभूमि है बल्कि

मुस्लिम सन्तो की भी तपस्थली है (जिलागजेटियर 1986, इलाहाबाद–पृष्ठ 163)।

3.1 (ii) प्रयाग तीर्थराज के रूप मे .

प्रयाग अपनी पवित्रता व पुण्यता के लिये नदियो के सगम से ऋणी है जो वैदिक काल के बाद आर्य सस्कृति के केन्द्र के रूप मे विकसित हुआ। प्रयाग वस्तुत एक पुरातन एव महानतम् तीर्थ है साथ ही यह सास्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक दृष्टियो से भी महत्वपूर्ण नगर है। इसको 'तीर्थराज' भी कहते है। परम पावन तीर्थ भूमि भारत वर्ष के प्रमुख तीर्थों मे भी श्रेष्ठतम तीर्थ प्रयाग को माना गया है। इसके पूर्व तीर्थ–राज यह विशेषण ही उसके महानतम् होने का स्पष्ट सकेत है। वेदो मे, महाभारत, रामायण एव पुराणो तथा अन्य धर्मशास्त्राो मे प्रयाग की महिमा भरी पडी है। पुराणो मे तो यहा तक रूपकीय उल्लेख है कि प्रयाग ही समस्त तीर्थों का अधिपति है, सप्तपुरिया इनकी (प्रयाग राज की) रानिया है। प्रयाग तीर्थराज है। अत प्रयाग के तीर्थ राजत्व की पुष्टि ही उसके प्रवलतम् महात्म्य की सिद्धि होगी।

वेदो मे तीर्थराज प्रयाग

वेद विश्ववाड्मय के श्रेष्ठतम् एव प्राचीनतम् सद्ग्रन्थ हैं। यदि वेदो मे किसी को महान कह दिया गया तो दूसरे प्रमाण की आवश्यकता नही होती। वेदो मे प्रयागविषयक वर्णन निम्न है–

(1) ऋग्वेद मे गगा, यमुना के पवित्र सगम मे स्नान करने के माहात्म्य का कथन मिलता है। यह सगम केवल प्रयाग मे ही है अस्तु तीर्थराज प्रयाग के सेवन की ही बात कही गयी है – "जो लोग श्वेत व श्याम दो नदियो के सगम स्थल पर स्नान करते है वे स्वर्ग को प्राप्त होते है, जो धीर लोग वहा अपना शरीर त्याग करते है वे मोक्ष को प्राप्त करते है।"

सितासिते सरिते यत्र सङ्गते तत्राप्लुतायो दिवमुत्पतन्ति।

ये वै तन्व विसृजन्ति धीरास्ते जनासो अमृतत्व भजन्ते।। (ऋग्वेद 10/15)

(2) ऋग्वेद मे ही एक स्थान पर सोमेश्वर से तीर्थराज प्रयाग मे ही आकर मुक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गयी है। इस प्रकार तीर्थराज प्रयाग वस्तुत वेद सम्मत भी तीर्थराज है।

शाब्दिक व्युत्पत्यर्थ के आधार पर तीर्थराज

तीर्थराज प्रयाग का शाब्दिक अर्थ तो स्पष्ट ही है 'जो तीर्थों के राजा वह प्रयाग' परन्तु प्रयाग का व्युत्पत्यर्थ निम्न है–

(1) 'प्रयाग' याग शब्द मे 'प्र' उपसर्ग लगाने से बनता है। अत प्रयाग का अर्थ हुआ 'यागेम्य प्रकृष्ट' अर्थात यज्ञो मे बढ कर जो है या 'प्रकृष्टो यागो यत्र' अर्थात् जहा उत्कृष्ट यज्ञ है।

(2) स्कन्द पुराण के अनुसार भी प्रयाग को 'प्र' एव याग से युक्त कहा गया है– इसीलिए कहा जाता है कि यह सभी यज्ञो से उत्तम है। हरि, आदि देवो ने इसे प्रयाग नाम दिया है यथा– "प्रकृष्ट सर्वयागेभ्य प्रयागमिति गीयते। दृष्ट्वा प्रकृष्ट यागेभ्य पुष्टेभ्यो दक्षिणादिभिः। प्रयागमिति तन्नाम कृत हरि हरा दिभि" (स्कन्द पुराण)।

(3) महाभारत वनपर्व (87/19) के अनुसार "यहा पूर्वकाल मे पितामह ब्रह्मा ने यज्ञ किया था, उसके उस पृकृष्ट याग से ही इस स्थान का नाम प्रयाग हो गया" अस्तु, यज्ञ की प्रकृष्टता के अर्थ मे ही 'यज्' धातु से प्रयाग बना ऐसा प्रयाग सभी तीर्थो का राजा तीर्थराज है।

वाल्मीकि रामाण मे तीर्थराज प्रयाग :

वाल्मीकि रामायण 'आदिकाव्य' माना जाता है। इसके अन्तर्गत भी प्रयाग का महत्वपूर्ण प्रसग आता है–

वनवास के समय भगवान रामलक्ष्मण एव सीता सहित सबसे पहले प्रयाग मे ही आकर मुनिवर भरद्वाज से मिलते हैं। मुनि भरद्वाज जी का आश्रम प्रयाग मे सगम के समीप ही था। इसका रामायण मे वर्णन इस प्रकार है – "इस प्रकार बातचीत करते हुए वे दोनो धनुर्धर

वीर श्री राम और लक्ष्मण सूर्यास्त होते–होते गगा यमुना के सगम के समीप मुनिवर भरद्वाज के आश्रम पर जा पहुँचे " (वा०रा०अयो० 54/8)।

आज भी इस पावन आश्रम का दर्शनीय स्थल के रूप मे यथापूर्व अस्तित्व है। मुनिवर भरद्वाज भगवान राम से सगम की पवित्रता ज्ञापित करते हुये कहते है– "गगा और यमुना इन दोनो महानदियो के सगम के पास का यह स्थान बडा पवित्र और एकान्त है यहा की प्राकृतिक छटा भी मनोहर है। अत तुम यही सुख पूर्वक निवास करो "(वा0 रा0 अयो0 54/22)।

महाभारत मे तीर्थराज प्रयाग :

प्राचीन एव प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रन्थ महाभारत वेद व्यास द्वारा ही रचित ग्रन्थ है।इसको पाचवा वेद भी कहा जाता है। इसके अन्तर्गत प्रयाग का वर्णन अनेक स्थलो पर हुआ है–

(1) महाभारत के वन पर्व मे उल्लेख है कि विश्व विख्यात गगा यमुना के सगम स्थल पर सभी जीवधारियो के अधिपति ब्रह्मा ने प्राचीन काल मे यज्ञ किया था (महा0वन0 87/18–19)।

पुराणो मे तीर्थराज प्रयाग :

भारतीय वाङ्मय मे पुराणो का विशेष महत्व है। भारतीय सभ्यता एव सस्कृति को समान्य जनता मे प्रचारित करने का श्रेय पुराणो को ही है। यह हिन्दू धर्म के मान्य आधार ग्रन्थ हैं। पुराणो मे प्रयाग जैसे तीर्थराज का प्रचुर वर्णन प्राप्त है जिसका सक्षिप्त वर्णन निम्न है–

पद्म पुराण

'तीर्थराज प्रयाग की जय हो' पद्म पुराण (उ0 ख0 23/27–35) मे तीर्थराज प्रयाग की महिमा मे एक स्तोत्र है जिसमे प्रत्येक श्लोक की अन्तिम पक्ति " स तीर्थ राजो जयति प्रयाग" है इसका एक श्लोक निम्न रूप मे वर्णित है–

ब्राह्मी न पुत्री त्रिपथास्त्रिवेणी, समागमेनाक्षत् योगमात्रान्।

यत्राप्लुतान ब्रह्म पद नयन्ति, सतीर्थ राजो जयति प्रयाग ।। (पद्म पुराण 6/23/34)।

अर्थात् "सरस्वती, यमुना और गगा का जहा सगम है जहा स्नान करने वाले ब्रह्म पद को प्राप्त होते है उस तीर्थराज प्रयाग की जय हो"

पद्म पुराण मे सर्वोत्तम तीर्थ ही कहा गया है –

गृहाणा च यथा सूर्यो नक्षत्राणा यथा शशी। तीर्थानामुत्तम तीर्थ प्रयागाख्यमनुत्तमम्।।

अर्थात "जैसे समस्त ग्रहो मे सूर्य तथा तारागणो मे चन्द्रमा है उसी प्रकार समस्त तीर्थों मे प्रयाग सर्वोत्तम है।"

मत्स्य पुराण

इस पुराण मे प्रयाग को तीर्थराज के समान पूजित बताया गया है–

तथा सर्वेषु लोकेषु प्रयाग पूजयेद् बुध।

पूज्यते तीर्थ राजस्तु सत्यमेव युधिष्ठिर ।। (म0 109/95)

कूर्म पुराण

कूर्म पुराण मे कहा गया है कि यह (तीर्थराज प्रयाग) प्रजापति का क्षेत्र तीनो लोको मे विख्यात है। यहा स्नान करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है और जो यहा मृत्यु का वरण करते है उनका पुनर्जन्म नही होता अर्थात् वे मोक्ष पद को प्राप्त कर लेते हैं।

पुराणो मे प्रयाग के उपर्युक्त वर्णन के अतिरिक्त पद्मपुराण आदि खण्ड अध्याय 39–49, स्कन्ध पुराण काशी खण्ड अध्याय 6, अग्नि पुराण अध्याय 111, गरूण पुराण अ0 65, कूर्म पुराण अध्याय 37 तथा अन्य लगभग सभी पुराणो मे तीर्थ राज प्रयाग की प्रशस्ति गायी गयी है।

रामचरित मानस मे तीर्थराज प्रयाग

सन्त शिरोमणि गोस्वामी तुलसी दास कृत 'राम चरित मानस' इस काल खण्ड का

सर्वाधिक लोक प्रिय एव जनमानस की महती श्रद्धा, भक्ति एव धर्म तथा अध्यात्म का आधार ग्रन्थ है। मानस मे तीर्थ राज प्रयाग का अतिमनोरम एव तात्विक वर्णन इस प्रकार है–

"उस तीर्थ राज प्रयाग का सत्य मन्त्री है, श्रद्धा प्रिय स्त्री है और वेणी माधव जैसे हितकारी मित्र हैं। चार पदार्थों धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष से उसका खजाना भरा हुआ है और उसका सुन्दर राज्य स्थल (देश) वह पुण्यमय प्रान्त है। उसका क्षेत्र दुगर्म, दृढ और सुन्दर गढ (किला) के समान है, जिसको स्वप्न मे भी पाप रूपी शत्रु नही पा सकते।

प्रयाग नगर नही, तीर्थ है। यह तीर्थ ही नही तीर्थों का राजा है। "तस्मात्सर्वेषुतीर्थेषु तीर्थराजयते नम"। इस तीर्थ–राज प्रयाग का स्मरण सभी तीर्थों की यात्रा मे किया जा सकता है। प्रयाग मे अन्य तीर्थों के स्मरण की आवश्यकता नही है (श्री प्रयाग महात्म्य श ताध्यायी, अध्याय ३२)।

3.1 (iii) प्रयाग प्राचीन हिन्दू सस्कृति का केन्द्र

हिन्दुओ के सर्वाधिक पवित्र तीर्थस्थल प्रयाग तथा उसके पार्श्वक्षेत्र की ख्याति वैदिक युग से ही यथावत् बनी हुई है। वेदकालीन कुछ आर्यजन यहा आकर बस गए थे और यह वैदिक सस्कृति और ज्ञान के गढ के रूप मे विकसित होता गया। गगा और यमुना के सगम के निकट अनेक आश्रमो की स्थापना हुई जहा वैदिक ब्राह्मण निवास करते थे और अपने धार्मिक कृत्यो, अनुष्ठानो का सम्पादन और तपश्चर्या करते थे। इनमे भरद्वाज ऋषि सर्वप्रमुख थे जो उन परम्परागत सप्तऋषियो मे से एक थे, जिन्हे ऋग्वेद के सकलन का श्रेय दिया जाता है (मुकर्जी, आर0 के0 1947)। प्रयाग मे देश, काल आदि का कोई प्रतिबन्ध नही है। सभी दिक् एव सभी काल यहा के लिए कल्याणमय होते हैं। प्रयाग मे गगा यमुना एव अदृश्य सरस्वती का सगम होता है। अदृश्य सरस्वती से तात्पर्य है सरस्वती की परिवर्तित स्थिति जो पश्चिम से पूर्व की ओर स्थानान्तरित होती रही है जिससे यह पता चलता है कि आर्यन सस्कृति जो सरस्वती (बुद्धि) से सम्बन्धित है का प्रसार सिन्ध पजाब से गगा मैदान तक हो गया है (Caplan A L H 1982, Page - 65)।

प्रयाग का धार्मिक दृष्टि से अत्यन्त विशिष्ट स्थान है। यहा हिन्दुओ के सम्पूर्ण प्रकार की धार्मिक क्रियाए एव अनुष्ठान तथा सस्कार सम्पन्न होते है। प्रयाग के महात्म्य का वर्णन सभी धर्मग्रन्थो मे विस्तृत रूप से किया गया है। प्रयाग के हिन्दू सस्कृति का वर्णन सभी ध ार्मग्रन्थो मे विस्तृत रूप से किया गया है। प्रयाग के हिन्दू सस्कृति के केन्द्र होने की प्रमाणिकता इसी बात से सिद्ध हो जाती है कि बिना किसी निमन्त्रण के प्रतिवर्ष कुम्भ के अवसर पर करोडो तीर्थयात्री श्रद्धा एव आस्था के साथ त्रिवेणी सगम पर स्नान करते है। हिन्दू तीर्थ केन्द्रो मे सर्वाधिक पुण्यफल प्रदान करने के कारण प्रयाग को तीर्थराज कहलाने का गौरव प्राप्त है। प्रयाग के हिन्दू सास्कृतिक केन्द्रो मे अक्षयवट, वेणीमाधव, सगम के पास लेटे हुए बडे हनुमान जी, मनकामेश्वर, लालता देवी आदि का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है।

"अक्षयवट" :

तीर्थ की दृष्टि से प्रयाग मे सगम स्नान तथा अक्षयवट दर्शन का सर्वाधिक महात्म्य है। 'अक्षय' का शाब्दिक अर्थ होता है जिसका कभी क्षय (वाश) न हो और वट का शाब्दिक अर्थ होता है बड का पेड (बरगद)। इस प्रकार अक्षयवट का पूर्ण अर्थ होता है, कभी न नाश होने वाला बरगद का पेड। प्रयाग मे स्थित अक्षयवट इसी श्रेणी मे आता है। प्रयाग भगवान विष्णु का क्षेत्र है और यहा स्थित अक्षयवट मे भगवान विष्णु सदा निवास करते हैं। (पद्म पुराण अध्याय 72 श्लोक न 16)।

श्री पद्मपुराण मे प्रयाग महात्म्य के अन्तर्गत कई स्थानो पर अक्षयवट पर भगवान विष्णु की उपस्थिति का वर्णन किया गया है। इस पुराण (अध्याय– 72 पद स0 23 एव 35) मे वर्णन किया गया है कि "मैं अपने सभी रूपो को एकाकार करके ब्रह्माण्ड को पेट मे रखकर बाल रूप धारण करके अक्षयवट पर सोता हूँ।"

सर्वरूपाणि सहृत्य बालरूप धरस्तत ।

ब्रह्माण्ड मुदरे कृत्वा शये तोक्षयपादपे।। (पद्मपुराण अध्याय 72 पद स0 – 23)

उक्त तथ्यो से स्पष्ट है कि अक्षयवट के दर्शन मात्र से ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का दर्शन

और तीनो लोको स्वर्गलोक, नरक और पाताल लोक के आवागमन से मुक्ति मिल जाती है अर्थात् जो प्राणी इस विष्णुरूपी अक्षयवट का दर्शन करता है उसे वेद, शास्त्र, पुराण, तीर्थयात्रा व्रत, दान आदि अनेक पुण्यो के बराबर फल मिलता है और वह सम्पूर्ण क्रियाओ से मुक्त हो जाता है। यह अनेक सिद्धियो को प्रदान करने वाला वृक्ष है, जिसके स्मरण करने से ही सभी पाप समाप्त हो जाते हैं। इसकी प्राचीनता का आभास इसी से हो जाता है कि पुराणो मे भी इसका उल्लेख किया गया है। पुराणो के अनुसार देवताओ का प्रिय अक्षयवट गगा यमुना के मध्य मे जहाँ तक छ तटो का दर्शन होता है, वह अक्षयवट का क्षेत्र है, और यह क्षेत्र प्रयागराज हैं। यहाँ अक्षयवट तीनो देवताओ-सृष्टिकर्ता ब्रह्मा, सृष्टिपालक विष्णु और सृष्टि सहारक शिव के स्वरूप मे विराजमान है। इसकी जडे सातो पाताल तक फैली है और यह अक्षयवट प्रलय और कल्पान्तर के समय और बाद मे भी अक्षय बना रहता है ऐसी विनाशकारी परिस्थितियो मे भी इस वृक्ष को कुछ नही होता क्यो कि इसके मूल मे स्वय माधव तथा देवी महालक्ष्मी, भगवती पार्वती, देवाधिपति शिव और सहस्त्रो देवतागण इसमे निवास करते हैं। यह वृक्ष सदैव एकदशा मे रहता है (मिश्र प्रशान्त 1998)।

अक्षयवट की महिमा का उल्लेख वाल्मीकि जी ने रामायण मे किया है तथा इस अक्षयवट को श्याम वट कहा है (रामायण, अयोध्या काण्ड)। तुलसीदास कृत रामचरित मानस मे भी अक्षयवट की महत्ता अनेक स्थानो पर बताई गयी है। वनगमन के समय चलते–चलते रामचन्द्र जी सीताजी को थका हुआ देखकर इसी वट वृक्ष के नीचे थोडा विश्राम करते है (अयोध्याकाण्ड पद स0 190)।

अक्षयवट की महत्ता ने केवल भारतवर्ष के तीर्थयात्रियो को ही नही बल्कि विदेशो के तीर्थयात्रियो को भी प्रभावित किया है। चीनी यात्री–ह्वेनसाग जो 644 ई0 मे सम्राट हर्षवर्धन के समय भारत आया था उसने तत्कालीन अक्षयवट का वर्णन करते हुए उसे 'अन्डाइग फिग ट्री' कहा। इसकी महिमा का वर्णन करते हुए लिखा है कि जो व्यक्ति यहाँ आत्मघात द्वारा अपने प्राण त्याग कर देते हैं वे सदैव के लिए स्वर्ग चले जाते हैं। कुमारिल भट्ट के

अक्षयवट के नीचे प्राण त्यागने से ह्वेनसाग के कथन की प्रमाणिकता सिद्ध होती है। कुमारिल भट्ट ने गुरुद्रोह से मुक्ति पाने के लिए प्रयाग मे अक्षयवट के नीचे आत्मदाह किया था।

अक्षयवट के प्रति तीर्थयात्रियो की आस्था पुराणो से लेकर सम्प्रति तक अक्षय बना हुआ है। अक्षयवट और प्रयाग एक दूसरे के सम्पूरक है। तीर्थराज के रूप मे जो स्थान प्रयाग को प्राप्त हैं उसी प्रकार अक्षयवट को सभी वृक्षो मे श्रेष्ठ माना गया है।

वर्तमान समय मे यह अक्षयवट अकबर द्वारा निर्मित किले मे स्थित पातालपुरी मन्दिर मे एक क्षीणकाय वृक्ष के रूप मे है। यह 644 ई0 के समय के श्यामवट की भाति विशालकाय और अनेको शाखाओ वाला नही रह गया है, परन्तु अपनी धार्मिक आस्था एव महिमा के कारण आज भी भक्तगणो के श्रद्धा का केन्द्र और पूज्य है।

वेणी माधव : एक प्रधान श्रद्धा स्थल :

प्रयाग भगवान विष्णु का निवास क्षेत्र है। भगवान विष्णु के द्वादश स्वरूप का दर्शन प्रयाग मे विभिन्न नामो से भिन्न–भिन्न स्थानो पर होता है, उनमे वेणी माधव मन्दिर एक प्रधान श्रद्धा स्थल है। यह मन्दिर दारागज मे निरालामार्ग पर जो नागवासुकी को जाती है, पर स्थित है। प्रयाग मे वेणी–माधव जी सगम के अधिष्ठाता कहे जाते है। समस्त मनोकामनाओ की पूर्ति करने की शक्ति के कारण वैष्णवो मे उनकी मान्यता प्रयाग मे सर्वोपरि मानी जाती है। प्रयाग महात्म्य शताध्यायी के अध्याय 73 से 75 तक इनका विशेष यश वर्णित है। 'श्री भगवान वेणी माधव व्रत–कथा' मे एक गजकर्ण नामक असुर की कथा दी गयी है जिसके अत्याचार के कारण तीनो धाराए सूखने लगी थी। नारद जी की सहायता से माधव ने उसका सुदर्शन चक्र से वध करके इस क्षेत्र का उद्धार किया। इसमे एक स्त्री के द्वारा त्रिवेणी मे डूब कर आत्महत्या का प्रसग भी मिलता है जिसे वेणी माधव की कृपा से एक सन्यासी ने बचा लिया। शिव की महत्ता को अगीकार करते हुए, विष्णु का जो रूप प्रयाग मे प्राप्त होता है वह तीर्थयात्रियो एव पुरोहितो द्वारा वेणीमाधव या त्रिवेणी माधव कहलाता है।

कल्पवास भी इन्ही की कृपा से होता है। एक मान्यता यह भी है कि वेणीमाधव का मदिर पहले सगम के पास ही था पर जब किला बना तो उसे हटाकर मूर्तियो को दारागज मे स्थापित कर दिया गया। तुलसी दास जी ने रामाचरितमानस मे वर्णन करते हुए लिखा है कि त्रिवेणी स्नान के बाद वेणीमाधव की पूजा की जाती थी तब अक्षयवट का स्पर्श करने का विधान था। ''पूजहि माधव पट जलजाता। परसि अक्षवट हरसहि गाता।।''

प्रयाग के द्वादश माधव–शख माधव–झूँसी, चक्रमाधव–अरैल, गदामाधव–नैनी, पद्ममाधव–वीकर देवरिया, अनन्तमाधव–अक्षयवट के पास किला मे, विन्दु माधव–सरैल, द्रौपदी घाट, मनोहर माधव–द्रवेश्वर नाथ मदिर मे, असिमाधव नागवासुकि पास, सकट हरमाधव–झूँसी, आदि वेणी माधव–त्रिवेणी पर जल रूप मे, आदि माधव–अरैल मे, वेणीमाधव–दारागज मे स्थित हैं। सम्पूर्ण भारत के तीर्थयात्रियो के लिए वेणीमाधव मन्दिर एक महत्वपूर्ण श्रद्धा के केन्द्र के रूप मे स्थित है।

32 प्रयाग एक धार्मिक तीर्थयात्रा का केन्द्र

प्रयाग वैदिक काल से ही भारतवर्ष का एक प्रमुख धार्मिक केन्द्र रहा है। अत प्रयाग पुण्यफल की प्राप्ति के लिए प्राचीन समय से ही धार्मिक तीर्थयात्रा का केन्द्र बिन्दु रहा है। तीर्थयात्रा हिन्दुओ की एक प्राचीन और निरन्तर धार्मिक क्रिया है। भारत के अनेक भागो मे फैले हुए तीर्थ केन्द्र करोडो तीर्थयात्रियो को दूर–दूर से आकर्षित करते रहते हैं। इस धार्मिक प्रक्रिया के दौरान लोगो का सचार देश के एक कोने से दूसरे कोने निरन्तर होता रहता है जिसके फलस्वरूप अनेक आर्थिक सामाजिक सास्कृतिक एव आध्यात्मिक प्रक्रियाए स्वत होती रहती हैं। भारत के तीर्थों मे अनेक तीर्थ ऐसे है, जिनका न कि भारत मे बल्कि विश्व मे प्रथम स्थान है, प्रयाग उनमे से एक है।

प्रयाग गगा, यमुना एव अदृश्य सरस्वती के सगम बिन्दु पर गगा मैदान के ह्रदय स्थल मे विद्यमान है। यह एक ऐसा महत्वपूर्ण तीर्थ केन्द्र है जहाँ पर देश के हर भाग से नित्यप्रति यात्री आते रहते है। माघ महीने मे यहाँ पर एक बडा मेला लगता है जहाँ पर लोग बडी

सख्या मे सगम मे स्नान करने हेतु आते है। यहॉ पर आने वालो मे भारत के विभिन्न भागो के लोग होते है। प्रत्येक बारहवे वर्ष एक कुम्भ मेला लगता है। प्रयाग की महत्ता का वर्णन वैदिक काल से लेकर रामायण, महाभारत, पुराण, बौद्ध एव जैन साहित्य मे वर्णित है। प्रयाग को ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का केन्द्र माना जाता है। इस बात मे कितनी सत्यता है यह विवादास्पद है किन्तु हमारे देश पर प्रयाग के सास्कृतिक राजनीतिक, सामाजिक प्रभाव का कोई विवाद नही है इसी कारण प्रयाग को भारत का एक सास्कृतिक हृदय स्थल कहते है। धार्मिक तीर्थयात्रा एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे सामाजिक–सास्कृतिक समिश्र ऐक्य एव इहलौकिक तथा पारलौकिक सुखो की प्राप्ति होती रही है तथा ये भविष्य मे भी मानव मूल्यो के उत्थान मे सहायक सिद्ध होगे। प्रयाग तीर्थ केन्द्र पर दो प्रकार के तीर्थयात्री आते है। इनमे प्रथम वे तीर्थयात्री है जो एक समय विशेष पर जैसे माघ मे लगने वाले कुम्भ मेले मे आकर विभिन्न पर्वों पर स्नान, दान एव धार्मिक क्रियाओ को करते हैं तथा दूसरे वे तीर्थयात्री है जो वर्ष भर यहॉ आते रहते है। इन तीर्थ यात्रियो मे आस–पास के क्षेत्रो से आने वाले तीर्थयात्री और देश के दूर क्षेत्रो, प्रदेशो से आने वाले तीर्थयात्री हैं। वर्ष भर आने वाले तीर्थयात्रियो की जो विभिन्न प्रातो से आते हैं उनकी भिन्न–भिन्न धार्मिक रीतियॉ एव क्रियाए होती है। इनमे मध्य प्रदेश क्षेत्र से आने वाले तीर्थयात्री मुख्यत अस्थि–विसर्जन एव मुण्डन सस्कार के लिए आते है। इसी प्रकार दक्षिण भारत केरल, तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश के तीर्थ यात्री वेणी–दान, श्राद्ध एव शुद्धि कर्म के लिए यहॉ आते है। प्रयाग का दारागज मे देश के प्रत्येक कोने से आने वाले तीर्थयात्रियो के पण्डे स्थित हैं। इन पण्डो धर्म पुजारियो के पास एक बृहद् धर्मशाला एव आवास है जो विविध सेवाओ से युक्त है। प्रत्येक क्षेत्र के आने वाले तीर्थ–यात्रियो के लिए अलग–अलग पण्डे है जो उस क्षेत्र की भाषा बोलते है उनके रहन–सहन, तौर–तरीको व धार्मिक क्रियाओ से पूर्ण परिचित होते है। प्रत्येक पण्डे के पास अपने–अपने क्षेत्र के आने वाले तीर्थयात्रियो के नाम का बहीखाता है। प्रयाग मे अपने देश से आने वाले तीर्थयात्रियो के पण्डो के साथ ही कुछ ऐसे भी पण्डे है जो अग्रेजी भाषा की जानकारी रखते हैं और विदेशियो को विभिन्न धार्मिक स्थलो का भ्रमण कराने के साथ ही

अनके धार्मिक क्रियाकलापो को भी सम्पादित कराते है। शोधार्थी को स्वय दारागज क्षेत्र मे रहने का अवसर 1995–97 तक रहा है। अत नित्य प्रति ऐसे तीर्थयात्रियो का साक्षात्कार प्राप्त होता रहता था जो दक्षिण भारत से आये हुए रहते थे। इनमे से कुछ तीर्थयात्री अग्रेजी भाषा जानने वाले एव अधिसख्य अपनी ही भाषा तमिल, तेलगू , कन्नड जानने वाले होते है। ऐसे मे पण्डो से आने वाले तीर्थयात्रियो के धार्मिक क्रियाओ एव रहन–सहन तथा तौर तरीको का पता चलता है।

3.2 (i) कुम्भ मेला की उत्पत्ति (सौर्यिक विधान) .

कुम्भ भारतीय सस्कृति का पुरातन महापर्व है। धार्मिक विश्वास है कि मकर राशि पर सूर्य के सचार के समय समस्त तीर्थ एव सभी देवता प्रयाग के त्रिवेणी सगम पर समाहित होते है (नारद पुराण, 2/63/7)। अर्थवेद मे कुम्भ उस समय को कहते है, जो आकाश मे ग्रहराशि आदि के योग से होता है। प्रयाग के माघ मेला या कुम्भ मेला की उत्पत्ति से सम्बन्धित सौर्यिक विधान का उल्लेख वेदो एव पुराणो मे कई स्थानो पर प्राप्त होता है। अथर्ववेद मे उल्लेख है कि जब मकर राशि मे सूर्य का प्रवेश होता है और वृष राशि मे वृहस्पति का प्रवेश होता है तब प्रयाग मे दुर्लभ कुभ का योग होता है –"मकरे च दिवानाथे वृषगे च वृहस्थतौ। कुभयोगो भवेतत्व प्रयागेहयाति दुर्लभ।" (अथर्ववेद, 19/53/3))

कुम्भ पर्व प्रतिवर्ष माघ मास मे होता है, जब सूर्य एव चन्द्रमा मकरराशिस्थ होते है। परन्तु 12 वर्ष मे बृहस्पति के क्रान्तिवृत्तीय परिक्रमण के पश्चात् 13 वे वर्ष मे पुन मेष राशि मे आने पर तथा चन्द्र एव सूर्य के मकर राशि मे होने पर प्रयाग मे कुम्भ महापर्व का योग माना जाता है।

मेष राशिगते जीवे मकरे चन्द्रभास्करौ।

अमावस्यो तदा योग कुम्भाख्यस्तीर्थ नायके।। (K.M , 17, K.N , 8) ।

भारतवर्ष मे कुम्भ पर्व का योग प्रयाग के अतिरिक्त गगा नदी पर हरिद्वार मे, गोदावरी नदी पर नासिक मे और शिप्रा नदी पर उज्जैन मे बनता है। इन स्थानो पर विभिन्न सौर्यिक,

एव ग्रहीय योगो को सारणी सख्या 3 1 मे दिया गया है, जिनसे कुम्भ पर्व, अर्धकुम्भ पर्व एव कुम्भ महापर्व का योग बनता है।

Table - 3.1

Kumbha Mela

Year	Place	Hindu Month (Roman)	Position of Cosmic forces	Name of the Parva
0	Hardwar	Caitra (March-April)	Jupiter x Aquarius, Sun x Aries	Kumbha
3	Prayag	Magh (January-February)	Jupiter x Aries or Taurus, Sun & Moon x Capricornus	Kumbha
6	Nasik	Bhadrapada (August-September)	Jupiter x Leo, Sun x Leo or Sun x Moon & Jupiter x Cancer	Kumbha Kumbha
	Hardwar	Caitra	Jupiter x Leo, Sun x Aries	Ardha Kumbha
9	Ujjain	Vaisakha (April-May)	Jupiter x Leo, Sun x Aries or Jupiter & Sun & Moon & Libra	Kumbha Kumbha
	Prayag	Magha (January-February)	Jupiter x Scorpio, Sun x Capricornus	Ardha Kumbha
12	Hardwar	Caitra (March-April)	Jupiter x Aquarius Sun x Aries	Kumbha

(Source RAI SUBAS 1993, Page - 51)

3.2 (ii) कुम्भ मेला का ऐतिहासक उद्भव :

प्रयाग मे कुभ का इतिहास कब से शुरू होता है, इसकी गणना कर पाना अत्यन्त कठिन है, परन्तु यह निश्चित है कि सित और असित यानी गगा और यमुना नदियो के पावन सगम के साथ ही यहॉ स्नान करने का पर्व शुरू हो गया था जो कालान्तर मे श्रद्धा और

विश्वास के साथ एक विशाल मेले का स्वरूप लेता गया। कुम्भ मेले के ऐतिहासिक उद्भव का विश्लेषण दो आधारो पर किया गया है। प्रथम पौराणिक एव हिन्दू धर्म ग्रन्थो मे वर्णित तथ्यो के आधार पर, द्वितीय विदेशी यात्रियो एव इतिहासकारो द्वारा वर्णित तथ्यो पर आधारित।

स्कन्दपुराण, गरुण पुराण मे कुभ पर्व का उल्लेख मिलता है। इसके अनुसार देवताओ और दैत्यो के बीच जब समुद्र मथन हुआ तो चौदह रत्न निकले। इनमे लक्ष्मी, कौस्तुभमणि, कल्पवृक्ष, बारूणी, धनवतरि, चन्द्रमा, कामधेनु, ऐरावत, रभादिक अप्सराये, उच्चैश्रवा अश्व, कालकूट विष, शारगधर, पाचशख और अमृत। अमृत सबसे अन्तिम रत्न था। वह अमृत एक कुभ यानी घडे मे था, जिसे देवताओ के इशारे पर चतुराई से जयत ने चुरा लिया। किन्तु असुरो के गुरू शुक्राचार्य ने वह अमृत कुम्भ देख लिया। उसे पाने के लिए आकाश मे देवासुर सग्राम आरभ हो गया। उसी सघर्ष के दौरान कुम्भ से अमृत की कुछ बूँदे छलक कर चार स्थानो प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक मे गिरी, और उन्ही स्थानो पर कुभ पर्व होने लगा। वह अमृत जिन–जिन तिथियो और काल मे उक्त स्थानो पर छलका, उन्ही तिथियो और काल मे कुभ का पुण्य काल माना जाता है। अवधारणा यह है कि जिन पवित्र नदियो के तट पर अमृत बूँदे गिरी उनमे उसी समय स्नान करने से अमृत का पुण्य मिलता है (स्कदपुराण IV (1)/50 55–125), (गरुण पुराण प्रथम 240–26–28)।

कुभ मेले का दार्शनिक पक्ष कथानक पक्ष से ज्यादा महत्वपूर्ण है। मनुष्य मे जब शाश्वत जिजीविषा की अवधारणा ने जन्म लिया तभी "मृत्योर्मा अमृतगमय" का बीज मन्त्र से प्रस्फुटित हुआ। यानी मनुष्य मृत्यु की ओर नही अमरत्व की ओर चले और अमरता की प्राप्ति के लिए ही अमृत की तलाश शुरू हुई। अमृत से प्राणिमात्र को अदम्य जिजीविषा के सम्मान का भाव बोध होता है। अदम्य जिजीविषा का सम्मान तभी रह सकता है जब समुद्र रूपी वैचारिक मथन से ज्ञान रूपी अमृत कुभ निकले। प्रयाग मे सगम तट पर लगने वाला कुभ मेला सतो, मनीषियो और विद्वज्जनो के परस्पर विचार मथन का स्थल होता है। यहाँ एकत्र होने वाला विशाल जनसमुदाय गगा और यमुना के साथ–साथ सतो की वाणी रूपी अदृश्य

सरस्वती के त्रिवेणी सगम मे गोते लगाकर अपने को धन्य समझता है। दार्शनिक भाषा मे कुभ पर्व का अमृत बिन्दु यही है, जिसे चखने के लिए लाखो करोडो लोग यहॉ आते है। अमृत तो वह उपलब्धि अथवा कालजयी कृति या आविष्कार है जिससे किसी मनुष्य का नाम अमर हो जाता है। एक प्रकार से ज्ञान मथन की चरम उपलब्धि है। इसीलिए यह समुद्र मथन मे सबसे बाद मे निकला था और वह भी भरा हुआ अमृत कुभ यानी ज्ञान की पूर्णता का प्रतीक था वह।

इतिहास मे इस बडे मेले कुभ पर्व का सबसे पहले उल्लेख चीनी यात्री ह्वेवनसाग के यात्रा विवरण से प्राप्त होता है। यह यात्री महाराज हर्ष के शासन काल मे सन् 644 मे भारत आया था। इसके अभिलेखो से ज्ञात होता है कि हर्षवर्धन ने मेले को व्यवस्थित रूप दिया और वे हर बारहवे वर्ष पर लगने वाले कुभ तथा हर छठे वर्ष पर लगने वाले अर्ध कुभ के अवसर पर अपना सर्वस्व दान कर देते थे। उस समय पाच लाख से अधि¯कलोग मेले मे आते थे तथा यह डेढ माह तक चलता था (वील–लाइफ आफ ह्वेनसाग एव सिन्हा हरेन्द्र प्रताप 1953 पृष्ठ 187)। कालान्तर मे आदि शकराचार्य ने सनातन धर्म की स्थापना के लिए कुभ की परम्परा आगे बढायी। आदि शकराचार्य ने प्रयाग के पास स्थित प्रतिष्ठानपुर (झूसी) की सीमा से शुरू होने वाले इन्द्रवन मे सतो का सम्मेलन आयोजित करके सनातन धर्म की रक्षा के लिए शास्त्रो के साथ शस्त्रो के भी अभ्यास का सकल्प दिलाया। उन्होने ही दशनामी अखाडो की स्थापना करायी। ये अखाडे आज भी सनातन धर्म की रक्षा के लिए कृत सकल्प है। अखाडो से जुडे लाखो सन्यासी एव नागा साधु यहॉ सगम तट पर एक मास तक निवास करते है (26 नवम्बर 2000 दैनिक जागरण साप्ताहिक अक, लखनऊ प्रकाशन)।

3.2 (iii) <u>प्रयागः प्रमुख तीर्थयात्रा के स्थल</u> :

अनेक ऋषि–मुनियो, योगियो तथा ज्ञानियो ने आदिकाल से भक्ति–योग, कर्मयोग एव ज्ञानयोग की शिक्षा को प्रयाग की स्थली से प्रसारित किया है। वस्तुत सम्पूर्ण प्रयाग का स्वरूप धार्मिक अलौकिकता से ओत–प्रोत है। यह असख्य तीर्थों का केन्द्र है। प्रयाग के

प्रमुख धार्मिक तीर्थ केन्द्र निम्न है–

(1) भरद्वाज आश्रम :–

प्रयाग के कर्नलगज मुहल्ले मे आनन्द भवन के निकट यह आश्रम है। यह प्राचीन विद्याध्ययन का केन्द्र था। सुदूर प्रान्तो से अध्ययनार्थ यहा विद्यार्थी आते थे। इस आश्रम की स्थापना मुनि भरद्वाज ने की थी। इसमे भरद्वाजेश्वर शिवलिग है। आज भी यह तीर्थ यात्रियो के आकर्षण का केन्द्र है।

(2) नाग वासुकि मन्दिर –

यह गगा के किनारे दारागज मे स्थित है। नागपचमी के अवसर पर यहा विशाल मेला लगता है। मन्दिर मे नागवासुकि के दर्शन एव उन पर दूध चढाने की प्रथा आज भी प्रचलित है। मन्दिर मे नागवासुकि की भव्य मूर्ति है। शेषजी का स्थान नागवासुकि और शिवकोटि के मध्य गगा तट पर है, जिसे बलदेव मदिर कहते है।

(3) वधवा के लेटे हनुमान जी –

गगा–यमुना के मध्य किला के सामने लेटे हुए हनुमान जी का प्राचीन मन्दिर है। यह श्रद्धा एव आस्था का प्रमुख केन्द्र है। सगम स्नान के लिये आये हुये यात्रियो की यहा भीड लगी रहती है। सायकाल प्रतिदिन उनका श्रृगार होता है और नगर के भक्त लोग, विशेषकर शनिवार एव मगलवार को अत्यधिक सख्या मे दर्शन, पूजन करने आते है।

(4) पातालपुरी मन्दिर :–

बधवा के हनुमान जी के मन्दिर के पास किला के अन्तर्गत आगन के पूर्वी द्वार की ओर भूमिस्तर के नीचे पातालपुरी मन्दिर है। नीचे कक्ष मे अनेक खम्भे लगे हुए हैं। कक्ष मे और दीवारो पर विभिन्न देवताओ की 40 मूर्तियॉ है। इस मन्दिर का जीणोद्धार 1735 ई0 मे वाजीराव पेशवा ने करवाया था।

(5) दशाश्वमेघ मन्दिर :—

गगा जी के किनारे दारागज मे दशाश्वमेघ घाट पर यह अत्यन्त प्राचीन एव विशाल मन्दिर है। मन्दिर के मुख्य गर्भगृह मे दो काले पत्थर के लिग है। एक लिग दशाश्वमेघ महादेव का और दूसरा ब्रह्मेश्वर महादेव का है दोनो के मध्य एक त्रिशूल गडा हुआ है। मत्स्य पुराण के अनुसार इस स्थान पर ब्रह्मा ने दश अश्वमेघ यज्ञ किये थे।

(6) मनकामेश्वर मन्दिर :—

प्रयाग की परिक्रमा मे अक्षयवट के दर्शन के पश्चात् मनकामेश्वर महादेव का दर्शन तीर्थयात्रियो द्वारा किया जाता है। यह मन्दिर किले के पश्चिम यमुना नदी के किनारे मिटो पार्क के पास स्थित है। मन्दिर मे शिवजी की काले पत्थर का लिग है।

(7) अलोपी देवी मन्दिर —

दारागज के पश्चिम अलोपी बाग मुहल्ले मे अलोपशकरी देवी का मन्दिर है। तन्त्रचूडामणि के अनुसार 51 शक्ति पीठो मे अलोपी देवी भी है। कहा जाता है कि सती के हाथ की एक अगुली यहा गिरी थी। नवरात्रियो पर यहा बडा मेला लगता है।

(8) शिवकुटी मन्दिर :—

नगर के उत्तरी छोर पर गगा के किनारे शिवकुटी का प्राचीन मन्दिर है। कहा जाता है कि वन गमन के समय श्री राम ने यहा शिवलिग की पूजा की थी। शिवलिग के अतिरिक्त यहा माता पार्वती की एक सिद्धमूर्ति खडी अवस्था मे है जो समस्त कामनाओ की पूर्ति करने वाली है।

(9) ललिता देवी मन्दिर —

प्रयाग मे स्थित ललिता देवी की गणना शक्ति पीठो मे होती है। तांत्रिको के 64 पीठो मे एक प्रयाग भी है, जिसकी अधिष्ठातृ ललिता देवी है।इनका मन्दिर नगर मे दक्षिण यमुना तट की ओर मीरापुर मे है। इस मन्दिर मे पाण्डवो ने भी पूजा की थी।

(10) कल्याणी देवी मन्दिर :–

ललिता देवी के मन्दिर के निकट ही कल्याणी देवी का मन्दिर है। 108 शक्ति पीठो मे कल्याणी देवी का भी नाम है। पुरातत्वविदो के अनुसार कल्याणी देवी की मूर्ति 2500 वर्ष पुरानी है।

(11) प्रतिष्ठानपुर .–

यह गगापार प्राचीन स्थान है। इसको झूसी कहा जाता है। यहा हसकूप तथा हसतीर्थ प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त यहा समुद्रकूप प्राचीन स्थल है।

उपरोक्त स्थलो के अतिरिक्त सरस्वती घाट, वरुआ घाट, रामघाट, सगम, श्यमशान घाट, द्रौपदी घाट, गऊ घाट, ककरहाघाट, आदि प्रयाग के प्रमुख तीर्थ यात्रा के स्थल है। आनन्द भवन को प्रयाग मे तीर्थ केन्द्र के रूप मे मान्यता प्राप्त है क्यो कि यहा आने वाला प्रत्येक तीर्थयात्री आनन्द भवन अवश्य जाता है।

3.3 माघ मेला या कुम्भ मेला का आयोजन

मेले व उत्सव अति प्राचीन काल से ही सम्पूर्ण भारत के सामूहिक जीवन के महत्वपूर्ण अग रहे है। ये जनमानस के पूजा व आनन्द के लिए सास्कृतिक घटनाओ के रूप मे पवित्र अवसरो पर लगते हैं। भारत मे इनकी अनगिनत सख्याये है, इनमे कुभ पर्व सर्वाधिक प्रभावकारी स्नानपर्व हैं इसे कुभ मेला या माघ मेला कहा जाता है। प्रयाग मे गगा,यमुना एव अदृश्य सरस्वती के पवित्र सगम तट पर प्रतिवर्ष कुम्भ मेला, प्रत्येक छठे वर्ष अर्द्ध कुम्भ तथा बारहवे वर्ष पर महाकुम्भ मेला का आयोजन होता है। इस अवसर पर भारत के प्रत्येक कोने से असख्य तीर्थयात्री जो भिन्न–भिन्न भाषाये बोलते है, विभिन्न प्रकार के परिधानो मे होते है, विभिन्न प्रकार के रीतिरिवाजो एव सस्कृतियो वाले होते है, पवित्र जल मे स्नान हेतु एक साथ एकत्रित होते है। कुम्भ मेला सम्पूर्ण हिन्दू सस्कृति का प्रतीक है। कुम्भ भारत का ही नही वरन् विश्व का सबसे बडा मेला है। यह पौष पूर्णिमा से प्रारम्भ होकर महाशिवरात्रि तक एक माह से अधिक समय तक चलता है। मेले के आयोजन के लिए सगम के समीप

सुनियोजित कुम्भ नगर का निर्माण किया जाता है। वर्तमान शोध प्रबन्ध मे इस सहस्राब्दि के प्रथम महाकुम्भ – 2001 का वर्णन किया गया है।

3 31 कुम्भ नगर का स्थानिक प्रतिरूप

पवित्र गगा–यमुना एव सरस्वती नदियो के सगम स्थल पर अल्पकालिक समय के लिए निर्मित 'कुम्भ नगर का विश्व मानचित्र मे महत्वपूर्ण स्थान है। यह पवित्र कुम्भ नगर केवल अत्याधुनिक नगरीय अवस्थापनात्मक तत्वो से निर्मित नगर नही है बल्कि विभिन्न धर्मों का नगर है, विभिन्न सस्कृतियो का नगर है, विभिन्न भाषाओ का नगर है, पवित्र आत्माओ का नगर है। इसीलिए यह महाकुम्भ नगर है। देश के आध्यात्मिक तथा सास्कृतिक विकास मे भारतवर्ष का कोई भी नगर अथवा क्षेत्र प्रयाग के कुम्भ नगर की समानता नही कर सकता है।

यह कुम्भ नगर अत्यन्त विशिष्ट है जो अल्प समय के लिए, नदियो के सगम स्थल के समीप, धार्मिक पवित्र नगर के रूप मे निर्मित होता है तथा रेल, सडक, नौगमन,वायुमार्ग द्वारा भारतवर्ष के ही नही बल्कि विश्व के सम्पूर्ण भागो से जुड जाता है। सचार क्रान्ति के कारण विश्व का सबसे महत्वपूर्ण नगर बन जाता है।यह नगर अल्प समय के लिए नगर के अत्याधुनिक सुविधाओ जैसे–दूरभाष, इन्टरनेट, स्टार होटल, विभिन्न प्रकार की दुकानो (जहा दैनिक से लेकर विलासिता युक्त वस्तुओ का क्रय–विक्रय होता है), चिकित्सा सुविधाओ, विशिष्ट सुरक्षा व्यवस्था, आदि से युक्त होता है (विस्तृत चित्र स0 3 1 मे देखे)।

कुम्भ नगर के स्थानिक प्रतिरूप के अन्तर्गत नगर की स्थिति एव विस्तार, तीर्थयात्रियो की सख्या, यातायात या परिवहन तन्त्र, योजनाओ, सेवाओ एव कार्यात्मक इकाइयो आदि तथ्यो का विश्लेषण किया गया है।

3.32 स्थिति – विस्तार :

कुम्भ नगर की स्थित 25°26′ अक्षाश उत्तर तथा 81°50′ देशान्तर पूर्व मे, गगा–यमुना एव अदृश्य सरस्वती नदी के सगम स्थल पर है। इस नगर की सीमाए गगा एव यमुना नदी

PRAYAG (ALLAHABAD)
MORPHOLOGICAL STRUCTURE
OF
KUMBH NAGAR
2001
N
GANGA RIVER
YAMUNA RIVER
SANGAM
DARAGANJ
FORT
NEW JHUNSI
OLD JHUNSI
Bath Area
KILA GHAT
PARKING
OLD G.T. ROAD
G.T. ROAD
RAILWAY LINE
RAILWAY STATION JHUNSI
TO VARANASI
TO ALLAHABAD
TO MIRZAPUR
M.G MARG
BAIRAHANA
TRIVENI ROAD
BATH AREA
RETURNE MARG
BUXI BUND ROAD
NAGBASUKI TEMPLE
SRI GURUDEEP ASHRAM
TAPASHI SRI ATMANAND DAS TYAGI JI MAHARAJ
RAIN BOW
ROAD ABADI
COX & KINGS
REWA ROAD
JAGDGURU SHANKARACHARYA
M MAHAMANDLESWAR
A AKARA
D DANDI BARA
A B ACHARYA BARA
K H KHAK CHAUK
I ISKCON
V H P VISWA HINDU PARISHAD
R K RAM KRISHNA MISSION
MAHA KUMBH MELA ADHYATMIC SHIWIR 2001
P PRAYAGWAL
K KALPWASI
TEMPLE MOSQUE
RIVER CULVERT
MELA BOUNDARY
RAILWAY LINE
PANTOON BRIDGE
FLY OVER
WATCH TOWER
B B S BHULE BHATKE SHIWIR
S O SECTOR OFFICE
CLINIC HOSPITAL
TEL TELEPHONE
F FIRE STATION
P H PARKING
R B RAILWAY BOOKING
M T MARKET
E ELECTRIC
T W TUBE WELL
SECTOR BOUNDARY
P S POLICE STATION
P A C P A C
EXHI EXHIBITION
GATA ROAD
T O TOURIST OFFICE
P N PARMARTH NIKETAN
CHINMAY MISSION
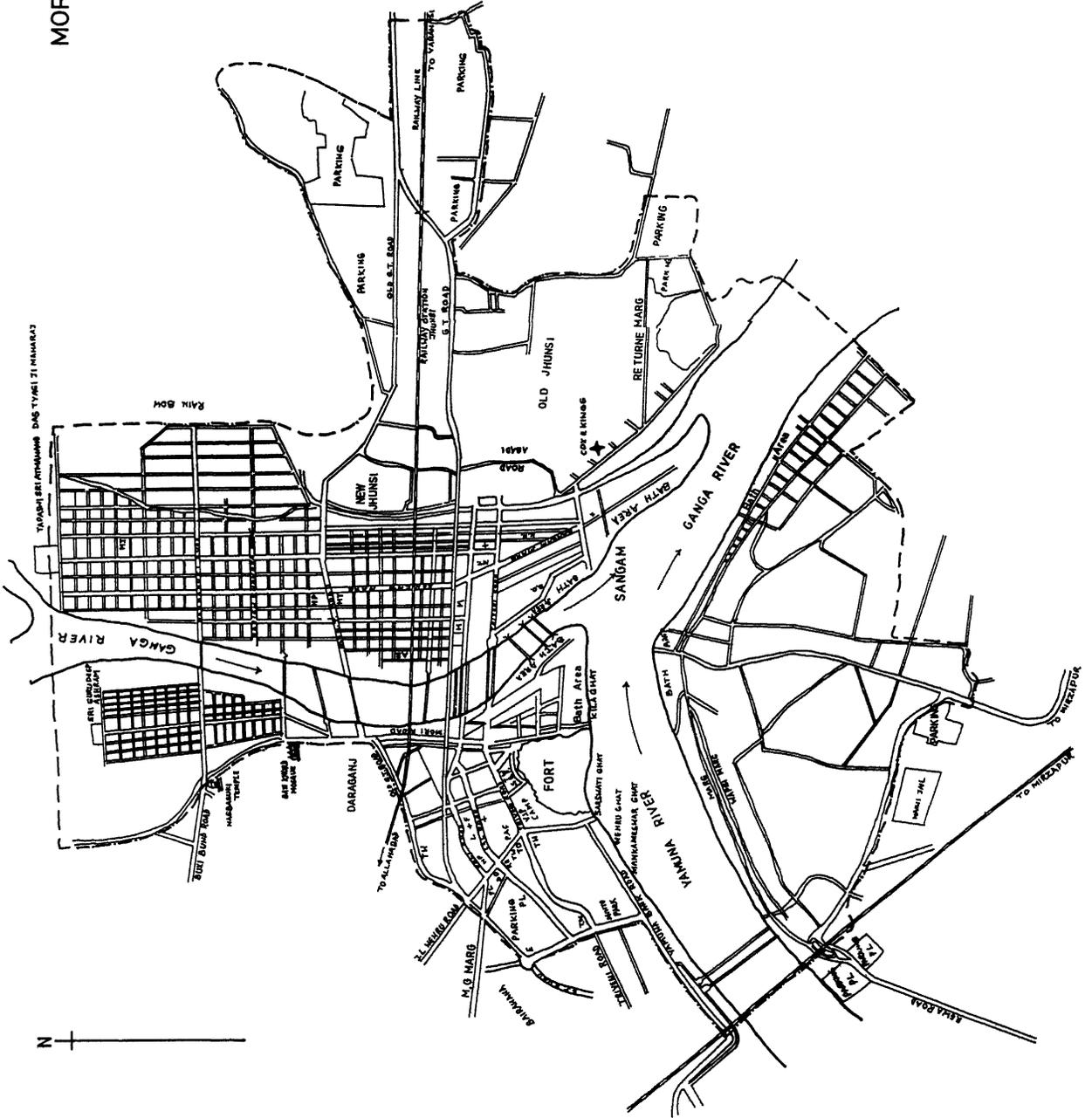
Fig 31

बनाती है परन्तु गगा नदी के पश्चिम दिशा की ओर अर्थात् दारागज की ओर कटान ज्यादा करने से इस कुम्भ नगर का विस्तार गगा के पार पूर्व की ओर होता जा रहा है। इसके लिए गगा नदी पर पीपे के अनेक पान्टुन पुल बनाये जाते है। जनवरी 2001 के महाकुम्भ नगर का विस्तार 1396 हेक्टेयर भूमि पर था। कुम्भ नगर के पूर्व मे नई एव पुरानी झूँसी, पश्चिम मे इलाहाबाद शहर, उत्तर मे फाफामऊ एव दक्षिण मे यमुना नदी तथा उसके पार अरैल एव नैनी क्षेत्र है। इस कुम्भ नगर की समयावधि 9 जनवरी से आरम्भ होकर 21 फरवरी 2001 तक थी। इस नगर को नियोजित रूप से स्थापित करने का कार्य 3–4 माह पूर्व से प्रारम्भ हो जाता है।

3 3 तीर्थ यात्रियो की सख्या

कुभ भारतीय सस्कृति का पुरातन महापर्व है। कुम्भ भारत का ही नही वरन विश्व का सबसे बडा मेला है जहा एक ही समय, एक ही अवसर पर करोडो श्रद्धालु अमृत का पुण्य लेने के लिए उमडते है। इस कुम्भ नगर मे सात करोड तीर्थयात्रियो ने विभिन्न अवसरो पर आकर सगम मे स्नान, दान एव कुम्भ नगर का दर्शन किया। कुम्भ नगर की जनसख्या मे दो तरह की जनसख्या सम्मिलित है, प्रथम वे लोग जो कल्पवासी के रूप मे स्थायी रूप से निवास कर सम्पूर्ण पर्वों के स्नान को किया और दूसरे वे जनसमुदाय जो विभिन्न अवसरो पर यहा आये। कुम्भ नगर मे विभिन्न अखाडो के साधु सन्त, नागाओ, कल्पवासियो, विदेशियो एव प्रशासनिक व्यवस्था को सचालित करने वाले लोग सम्मिलित है। महाकुम्भ के प्रथम स्नान पर्व पौष पूर्णिमा को 40 लाख के लगभग, द्वितीय स्नान मकर सक्रान्ति पर 80 लाख से अधिक लोगो ने एव तृतीय स्नान मौनी आमावस्या को तीन करोड (3 करोड) लोग, चौथे स्नान वसत पचमी को एक करोड से अधिक लोग, पाचवे स्नान माघी पूर्णिमा को 70 लाख एव अन्तिम स्नान महाशिव रात्रि को 45 लाख से ऊपर जनसख्या ने स्नान किया। इस प्रकार पूरे माह कुम्भ नगर की जनसख्या विश्व मे सबसे बडे नगर के रूप मे रहती है। कुम्भ नगरी की जनसख्या मे कल्पवासियो का अलग ही ससार है। कुम्भ नगर मे इनकी सख्या 50 हजार के लगभग रहती है। कल्पवासी लोग अपना घर छोडकर यहा एक माह गगा के किनारे रेत

पर फैले शिविरो मे रहते है। इनमे से कुछ कल्पवासी ऐसे है जो विभिन्न आश्रमो मे रहते है। कल्पवासी यहा एक दस गुणा दस के शिविर, शौचालय और स्थान की सामूहिक व्यवस्था, एक समय भोजन, वह भी स्वय और चूल्हे पर पकाना और ईश्वर भजन ओर प्रवचन सुनते हुए रहते है।

3 34 नगर के लिये यातायात व्यवस्था

अल्प समय के लिए यह कुम्भ नगर यातयात के सम्पूर्ण साधनो से युक्त हो जाता है। इस कुम्भ नगर के लिए एक माह तक देश के हर क्षेत्र से स्पेशल ट्रेने चलती रहती है फिर भी मुख्य स्नानो के दिन यातयात की व्यवस्था कम पड जाती है। कुम्भ के मुख्य स्नान पर्वो पर दिल्ली से इलाहाबाद के बीच विमान सेवा की व्यवस्था की गयी थी। इसके साथ ही दैनिक रूप से सचालित दिल्ली–लखनऊ–पटना–कलकत्ता वायुसेवा को एक माह के लिए कानपुर से जोड दिया गया था जिससे देश–विदेश के पर्यटक एव तीर्थयात्री सुविधा पूर्वक आ सके। कुम्भ नगर के लिए उत्तर रेलवे ने बीस स्पेशल ट्रेने चलायी थी। कुम्भ मेले के समय प्रयाग घाट एव दारागज रेलवे स्टेशन का महत्व अत्यधिक बढ जाता है। तीर्थ यात्रियो के लिए प्रदेश के सभी क्षेत्रो से अतिरिक्त सैकडो बसो की व्यवस्था उत्तर प्रदेश राज्य परिवहन निगम ने किया था। इसके साथ ही प्राइवेट साधनो का प्रयोग भी अत्यधिक सख्या मे होता है। वायु सेवा, सडक एव रेल सेवा के साथ–साथ नौ परिवहन से भी आस–पास के क्षेत्रो से जुड जाता है। परिवहन निगम ने 3300 अतिरिक्त बसे चलायी थी। प्रत्येक बस पर कुम्भ का 'लोगो' लगा रहता था ताकि यात्रियो को कुम्भ की विशेष बसो को ढूढने मे असुविधा न हो।

3.35 कुम्भ नगर की आन्तरिक सरचना एव व्यवस्थाये :

1396 हेक्टेयर भूमि पर विस्तृत कुम्भ नगर की आन्तरिक सरचना एव व्यवस्थाये नियोजित रूप मे तैयार की जाती है। कुम्भ नगर की आन्तरिक सरचना को विकसित करने के लिए इसे 11 सेक्टरो मे विभाजित किया गया था। कुम्भनगर की आन्तरिक सडके 60 मी0

से 80 मी0 चौडी बनायी गयी थी जो एक दूसरे को लगभग समकोण पर काटती थी। आन्तरिक क्षेत्र की प्रमुख सडको का नाम जवाहर लाल नेहरू सडक, त्रिवेणी रोड, काली सडक, तुलसी मार्ग, सगम मार्ग, मुक्ति मार्ग, शकराचार्य मार्ग, मोरी मार्ग इत्यादि रखा गया था। प्रत्येक सेक्टर की अपनी विशिष्टता होती है। सम्पूर्ण कुम्भ नगर विद्युत, पेयजल, शौचालयो व दूरसचार के साधनो से युक्त होता है। कुम्भ नगर की कुछ विशिष्ट व्यवस्था एव आयोजनाओ का वर्णन निम्न है– (विस्तृत मानचित्र स० 3 1 मे देखे)

(1) कुम्भ नगर के अतिरिक्त इलाहाबाद शहर मे यात्रियो को ठहरने के लिए रेलवे एव बस स्टेशनो के निकट 100 केन्द्र बनाये गये थे जिससे तीर्थयात्री सुविधा पूर्वक पहुॅच सके।

(2) कुम्भ नगर के लिए कडे सुरक्षा प्रबध किये गये थे। इसके लिए पूरे नगर को 5 जोन, 15 सेक्टर, 28 थाने एव 35 चौकियो मे विभाजित किया गया था। पुलिस प्रबन्ध हेतु 5 पुलिस लाइन तथा 7 बैरियर बनाये गये थे। नगर की व्यवस्था हेतु 10 अपर पुलिस अधीक्षक, 46 पुलिस उपाधीकक्ष, 74 निरीक्षक, 728 उप निरीक्षक, 860 हेड कान्सटेबिल, 7276 कान्सटेबल तथा 1108 कर्मचारी लगाये गये थे। 150 घुडसवार पुलिस भी तैनात थी। कुम्भ नगर को 7 सचार ग्रिडो मे बाटकर 300 सचार केन्द्रो से जोडा गया था।

(3) कुम्भ नगर मे आग पर नियत्रण के लिए 25 अग्निशमन केन्द्र खोले गये थे। इसके अतिरिक्त 45 कम्पनी पी0ए0सी0 भी तैनात की गयी थी।

(4) पूरे कुम्भ नगर मे 5 खोया पाया केन्द्र खोला गया था जो कम्प्यूटर के माध्यम से एक दूसरे से जुडे हुए थे।

(5) कुम्भ नगर मे अतिरिक्त सुरक्षा व्यवस्था के लिए 15 इन्फ्रारेड नाइट विजन कैमरे लगाये गये थे जिससे घोर अन्धेरे मे भी गतिविधियो पर नजर रक्खी जा सके। पूरे मेला क्षेत्र मे 150 टावर बनाये गये थे ताकि इन पर तैनात सुरक्षा कर्मी दूरबीन से सम्पूर्ण क्षेत्र को सूक्ष्मता से देख सके। इन्फ्रारेड नाइट विजन कैमरे इतने सशक्त होते है

जिससे ढाई किलोमीटर दूर की गतिविधियो को आसानी से पकडा जा सकता है।

(6) कुम्भ नगर क्षेत्र के प्रत्येक सेक्टर मे आयुर्वेद, होम्योपैथ एव एलोपैथ के चिकित्सालय बनाये गये थे। इसके अतिरिक्त बहुत से चिकित्सक व्यक्तिगत रूप मे नि शुल्क चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराते थे। 2001 के कुम्भ नगर की स्वास्थ्य की दृष्टि से सबसे बडी विशिष्टता यह थी कि 'टेली मेडिसिन' के द्वारा स्नान हेतु आये श्रद्धालुओ के स्वास्थ्य की जाच की जा सके। इस टेलीमेडिसिन की जिम्मेदारी लखनऊ के सजय गाधी आयुर्विज्ञान सस्थान के डाक्टरो ने उठायी थी। इसके लिए कुम्भ नगर को आई0एस0 डी0 एन0 लाइन और कम्प्यूटरीकृत उपकरणो मे बने मुख्य चिकित्सालय की मदद से जोडा गया था।

(7) कुम्भ नगर मे प्रचुर मात्रा मे खाद्यान्न, चीनी, मिट्टी के तेल, पेट्रोलियम पदार्थ, कुकिग गैस तथा अन्य आवश्यक वस्तुओ की आपूर्ति के लिए व्यवस्था की गयी थी। इसके लिए विभिन्न सेक्टरो मे 135 उचित दर की दुकाने खोली गयी थी । इसके लिए अस्थाई राशनकार्ड भी बनाये गये थे। जलाऊ लगडी ईधन के लिए 11 लकडी डिपो स्थापित किए गये थे। कुम्भ नगर मे 22 सब्जी के थोक विक्रेता नियुक्त किए गये थे और साग सब्जी की फुटकर बिक्री हेतु 40 दुकाने आवटित कर दी गई थी। नगर मे कुकिग गैस की आपूर्ति हेतु 6 गैस एजेन्सिया खोली गयी थी।

(8) लोक निर्माण विभाग ने बालू तथा रेत मे 78 कि0मी0 लम्बी सडक चेकर्ड प्लेटो को बिछाकर बनायी थी जिन पर 10 टन भार वाले ट्रक भी आसानी से चल सके।

(9) इसी प्रकार विद्युत विभाग द्वारा 640 कि0मी0 लम्बे विद्युत टावरो का जाल मेले मे बिछाया गया था। इन खम्भो पर 2500 किलोमीटर लम्बे विभिन्न क्षमता वाले ओवरहेड तार लगाये गये थे। बिजली विभाग ने लगभग 70 हजार कैम्प कनेक्शन, इतने ही प्रशासनिक कनेक्शनो के अलावा 18000 रग बिरगी स्ट्रीट लाइटे लगायी थीं। रात मे इसकी छटा अत्यन्त निराली लगती थी।

(10) पेयजल विभाग ने एक करोड लीटर पीने के पानी की आवश्यकता को देखते हुए 28 नलकूप लगवाये थे इनमे से 20 तो स्थायी रूप से बन गये है। जलापूर्ति के लिए 200 किलोमीटर लम्बी पाइप लाइनो का जाल बिछाया गया था।

(11) नगर मे स्वास्थ एव सफाई की व्यवस्था उत्तम थी। 8 हजार सफाई कर्मचारी दिन–रात लगे रहते थे। सफाई कार्य उन क्षेत्रो मे कठिन था जहा 5 से 8 लाख कल्पवासी महीने भर प्रवास कर रहे थे।

(12) डाक–तार एव सचार विभाग ने भी अपनी व्यवस्थाओ का जाल बिछा रखा था।

(13) कुम्भ नगर को कवर करने के लिए देश–विदेश के लगभग 600 पत्रकार, टी0वी0 कैमरामैन, प्राइवेट चैनल और दूरदर्शन आदि की टीमे आकर्षण का केन्द्र थी। मीडिया के रुकने, ठहरने और उन्हे पास आदि मुहैया कराने के लिए प्रदेश के सूचना एव जनसम्पर्क विभाग ने अच्छी व्यवस्था की थी।

(14) कुम्भ नगर मे तीर्थयात्रियो की सुरक्षा मे 'जल पुलिस' का योगदान भी महत्वपूर्ण है। नदी मे हर दो मीटर की दूरी पर अपनी नावो मे खडे जल पुलिस के तैराक बराबर सगम मे स्नान करने वालो पर नजर रखते थे। छ सौ से अधिक तैराको, नावो व अन्य बचाव सम्बन्धी उपकरणो से लैस जलपुलिस सगम मे तैनात थी।

(15) गगा जल को प्रदूषण से मुक्त रखने हेतु गगा मे गिरने वाले नालो को रोकने का प्रयास किया गया था। इसके लिए मोरी नाले को स्थायी रूप से टैप करके यमुना पार नैनी की ओर मोड दिया गया था। दूसरा नाला सलोरी के पास गगा मे गिरता था। इसके पानी को रोकने के लिए एक बन्धा बनाकर अस्थायी झील बना दी गयी थी। डेढ महीने मे इस कृत्रिम झील मे तीन करोण लीटर से अधिक गन्दा जल एकत्रित हो गया था।

(16) कुम्भ नगर की जानकारी प्रदान करने के लिए प्रशासन द्वारा कुम्भ बेबसाइट प्रारम्भ किया गया था। इससे बेबसाइट http/www kumbhaldupgovutındıa org कुम्भ की

सारी जानकारी प्राप्त हो जाती थी। दुनिया मे आये सचार क्रान्ति का प्रभाव कुम्भ नगर मे स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। (चित्र सख्या 3 1 देखे) (कुम्भ मेला प्रशासन—2001 एव समाचार पत्रो से प्राप्त सूचना पर आधारित)

इस प्रकार कुम्भ नगर अल्पकालिक समय के लिए भारत का सबसे महत्वपूर्ण नगर बन जाता है जो धार्मिक, सास्कृतिक, आध्यात्मिक एव सुसस्कृत आचार—व्यवहार के केन्द्र के रूप मे विकसत होता है। इस कुम्भ नगर की व्यवस्था को देखकर यह कहा जा सकता है कि "सगम तीरे लघु भारत का दर्शन होता है"

3 4 राष्ट्रीय एव सास्कृतिक एकता मे प्रयाग की भूमिका

भारत के सास्कृतिक विकास मे प्रारम्भ से ही निरन्तरता बनी रही है। इस निरन्तरता के फलस्वरूप भारत मे हिमालय से रामेश्वरम् तथा द्वारका से भारत म्यामार सीमा तक सास्कृतिक एकता के सूत्र सतत् सचरित रहे है। इस सास्कृतिक एकता के साथ—साथ क्षेत्रीय विभिन्नता सदा विद्यमान थी। आज की शब्दावली मे भारत आदि काल से ही एक वृहद् सास्कृतिक सघ बन गया था (दीक्षित रमेश दत्त 2000, पृष्ठ— 227)। प्राचीन हिन्दू सामाजिक विचारको और मनीषियो मे राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को बनाये रखने के लिये अनेक प्रकार के धार्मिक और सामाजिक प्रबन्ध किये थे जिसके फलस्वरूप राष्ट्रीय एकता की एक ऐसी अन्त सलिला अजस्रधारा बह निकली थी जिसने अनेक सहस्राब्दियो तक सम्पूर्ण देश को एक सूत्र मे पिरोये रखा। राष्ट्रीय एकता के इन उपायो मे तीर्थों का चयन और उनकी यात्राओ का प्रबन्ध एक सबसे महत्वपूर्ण उपाय रहा है। जहा राजनीतिक महत्वाकाक्षाओ ने देश को एकीकृत अथवा खण्डित करने का कार्य किया है, वही तीर्थयात्रियो ने धार्मिक विश्वासो पर आधारित शाश्वत मूल्यो से युक्त एकता के सूत्र मे पिरोया है। चतुर राजनैतिक के द्वारा भारत की एकता प्राप्त करने के प्रयासो के बहुत पहले से ही तीर्थयात्रियो के चरणो ने अखण्ड हिन्दुस्तान की सरचना कर दी थी (प्रो0 के0वी0 रगा स्वामी, उद्धृत कुम्भ पर्व प्रयाग सम्पादक देवी प्रसाद दूबे 1989)। तीर्थयात्रियो द्वारा तीर्थ यात्रा करते समय तीर्थस्थलो से सम्बन्धित महापुरूषो, ऋषियो, मुनियो एव वीरो की स्मृतियो को जगाये रखना

देश के समस्त भूभाग के प्रति लगाव का सूचक था। इस कार्य मे हमारे प्राचीन ऋषि सफल भी रहे क्योकि आज भी अनेको वर्षों की दासताओ और सास्कृतिक आक्रमणो एव घात–प्रतिघातो के बीच भी उन स्थलो के लगाव से व्युत्पन्न राष्ट्रीय एकता की भावना यथावत् विद्यमान है। भारत को राष्ट्रीय एव सास्कृतिक एकता के सूत्र मे सगठित करने का सर्वाधिक श्रेय शकराचार्य को जाता है। इन्होने धार्मिक सस्कृति (**Rılıgıo Cultuıe**) के आधार पर एकता स्थापित किया है (**Subramaniam, V 1979, Page - 8**)।

तीर्थ एव श्रद्धा का स्थानिक विसरण

विसरण से तात्पर्य केन्द्र से किसी तत्व का प्रसरण है। भूगोल मे यह दो अर्थों मे प्रयुक्त होता है। क्षेत्रीय प्रसरण एव पुन अवस्थापन (**Clıff A D , Haggett Page - 1981**)। श्रद्धा के स्थानिक विसरण मे किसी केन्द्र से सम्बन्धित श्रद्धा के आयाम का फैलाव होता है। यह प्रक्रिया दो प्रकार से सम्पन्न होती है। प्रथम मे केन्द्र से पण्डा, पुरोहितो एव सन्तो द्वारा प्रवास के दौरान क्षेत्रो मे जाकर तीर्थ की महिमा का वर्णन से प्रसरण होता है और दूसरे मे तीर्थ मे आये लोगो द्वारा अपने आवास मे पहुचने पर तीर्थों के धार्मिक विश्वासो के विसरण-प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है अत यह कार्य अवाध रूप से होता है। धार्मिक विश्वासो के विसरण प्रक्रिया से एक स्थान के लोग दूसरे स्थान के लोगो के करीब आते है और उनमे आपसी समझ बढती है। धार्मिक विश्वास के विसरण तत्र के लिये निम्नलिखित तथ्य उत्तरदायी होते हैं (**Bhardwaȷ S M 1973, Page - 202**)।

1 तीर्थ यात्रियो एव उनके 'सम्पर्क क्षेत्र' के मध्य आवृत्ति।

2 यात्रियो के गमनागमन तथा विस्तार।

3 जातियो के बीच का सामाजिक अवरोध जो सचार को प्रभावित करता है।

4 तीर्थों का सम्भाव्य यात्रियो के लिये ग्रहणशीलता।

5 व्यक्तियो को तीर्थयात्रा करने के उत्तरदायी पूर्व प्रतिबन्ध।

6 तीर्थ केन्द्रो मे निवास करने वाले संत, पण्डा, पुजारियो के सगठन की क्षमता जो

सम्भाव्य तीर्थयात्रियो को तीर्थयात्रा हेतु प्रेरित करे।

7 अभीष्ट पवित्र स्थलो पर पण्डा पुजारियो द्वारा प्रयुक्त विधि जो तीर्थ की विश्वसीनयता मे वृद्धि करती है।

8 प्रसिद्ध महात्माओ की उपस्थिति एव अनुपस्थिति।

तीर्थ एव तीर्थ यात्रियो की अन्तर्क्रिया

इसमे विभिन्न तीर्थ केन्द्रो मे उसके प्रभाव प्रदेश मे आने वाले तीर्थ यात्रियो के बीच मे अन्तर्क्रिया होती है। जिस तीर्थ का प्रभाव प्रदेश जितना ही अधिक होता है उन तीर्थों मे तीर्थयात्रियो के बीच उतना ही अधिक अन्तर्क्रिया होती है। इसी कारण तीर्थयात्रा के केन्द्र तीर्थयात्रियो की अन्तर्क्रिया के माध्यम से देश के अति दूरस्थ केन्द्रो/स्थानो के बीच वैचारिक आदान प्रदान कर राष्ट्र को एक सूत्र मे बाधने का प्रयास करते है। धार्मिकता, भारतीय एकता की सकल्पना का एक अनिवार्य तथ्य है (Bhardwaj S M 1973, Page - 217)। इस प्रकार तीर्थयात्रा न केवल भारतीय राष्ट्रीय एकता को बल प्रदान करती है बल्कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मे स्थानिक एकता लाती है (James, D M C Namara,1995 Page - 371)।

प्रयाग एव राष्ट्रीय तथा सास्कृतिक एकता .

प्रयाग के राष्ट्रीय एकता के वाहक तत्वो मे प्रयाग के तीर्थयात्री, पण्डा, पुजारी, प्रसिद्ध गुरू, कल्पवासी एव पर्यटक प्रमुख है। इसलिए इनका विश्लेषण करना आवश्यक है।

तीर्थयात्री –

प्रयाग उच्च स्तरीय तीर्थ केन्द्र के रूप मे माना जाता है (Bhardwaj, S M 1973)। यहा पर विशाल हिन्दू परिक्षेत्र से तीर्थयात्री आते है। हिन्दू परिक्षेत्र उसे कहते हैं जहा पर हिन्दू धर्म प्रभावकारी होता है (Meinig, Donald, W 1965, Page - 215)। प्रयाग मे तीर्थयात्री किस क्षेत्र से कितने आते है इस हेतु शोधकर्ता ने 2000 यात्रियो का सर्वेक्षण कर ज्ञात करने का प्रयास किया है। इसमे यह स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है (मानचित्र स0 3 2) कि सबसे अधिक तीर्थयात्री उत्तर प्रदेश मे है जो लगभग 1490 है। इसके बाद मध्य प्रदेश (छत्तीसगढ
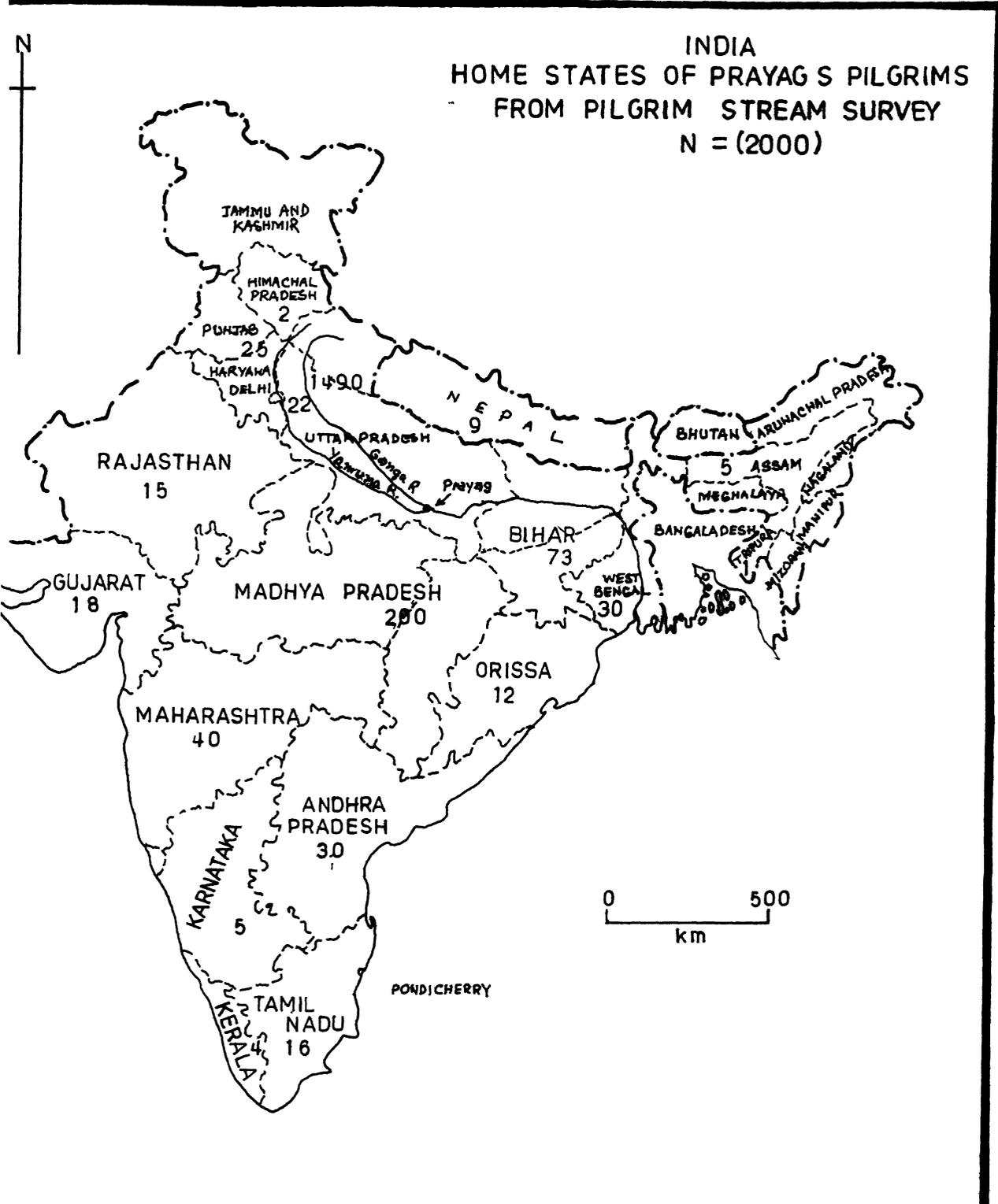
Fig 3 2 INDIA. Home State of Prayags Pilgrims From Pilgrim-Stream Sample Survey
of Pilgrims from each state and from Nepal and the capital district of Delhi are
ven.

सहित) का स्थान आता है यहा से 200 यात्री आते है। बिहार से 73 तीर्थयात्री, प0 बगाल से 30 एव महाराष्ट्र से 40,आन्ध्र प्रदेश से 30, तमिलनाडु से 16, राजस्थान से 15, उडीसा से 12, कर्नाटक से 8, हिमाचल प्रदेश से 2, पजाब एव हरियाण से 25 तथा नेपाल से 9 तीर्थयात्री आये है। इससे स्पष्ट है कि तीर्थयात्रियो की सख्या मुख्यत दो बातो पर निर्भर करती है· प्रथम हिन्दू धर्म के प्रभाव वाले क्षेत्र तथा द्वितीय प्रयाग से दूरी। हिन्दू धर्म प्रभाव वाले क्षेत्रो से यात्रियो की सख्या अधिक है किन्तु अन्य धर्म वाले क्षेत्रो से अपेक्षाकृत सख्या कम है। किन्तु देश के समस्त क्षेत्रो से यात्री वर्ष आते रहते है।

तीर्थ पुराहित/पण्डा :—

प्रयाग के तीर्थ पुराहितो के सर्वेक्षण हेतु लगभग 100 प्रसिद्ध तीर्थ पुरोहितो को चुना गया है जिसमे प्रदेश के अनुसार पुरोहितो का सर्वेक्षण किया गया है क्योकि विभिन्न प्रदेशो के लोग अपने प्रदेश के पुरोहितो के यहा निवास करते हैं और ये तीर्थ पुरोहित भी इन्ही प्रदेशो मे जाते है। इन पुरोहितो के सर्वेक्षण से स्पष्ट है कि 85 तीर्थ पुरोहित उत्तर प्रदेश, बिहार व मध्य प्रदेश के तीर्थयात्रियो से सम्बन्धित है और 5 पुरोहित महाराष्ट्र से सम्बन्धित है, 3 मद्रास एव अन्य शेष दक्षिण भारत से सम्बन्धित तीर्थयात्रियो के पुरोहित हैं। इन पुरोहितो मे बिहार, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश एव प0 बगाल से सम्बन्धित तीर्थ पुरोहित ही अपने यजमानो के यहा जाते है जबकि अन्य क्षेत्रो के पुरोहित प्रवास नही करते। इनके यहा क्षेत्रो से तीर्थयात्री ही आते है।

प्रसिद्ध गुरू :—

प्रयाग के प्रसिद्ध गुरूओ मे शकराचार्य से सम्बन्धित तीर्थ यात्रियो का सर्वेक्षण किया गया है। प्रयाग के प्रसिद्ध गुरूओ मे शकराचार्य के दर्शनार्थ ही अधिकाश तीर्थयात्री आते है। अन्य किसी प्रसिद्ध गुरू के अभाव मे तीर्थयात्रियो का उद्देश्य किसी गुरू के दर्शन हेतु अत्यल्प है।

कल्पवासी :–

जैसा कि पूर्व मे बताया जा चुका है कि प्रयाग मे माघ महीने मे कुम्भ मेला लगता है। यह गगा, यमुना एव अदृश्य सरस्वती के सगम पर एक छोटे नगर के रूप मे प्रतिवर्ष जन्म लेता है और एक महीने के बाद स्वत समाप्त हो जाता है। अत माघ मास मे गगा यमुना के सगम क्षेत्र मे नियमपूर्वक वास चूकि यज्ञ सम्पादन जैसा फलदायी होता है अत इसे कल्पवास कहते है। पौराणिक साहित्य मे कल्पवास शब्द का उल्लेख नही मिलता है किन्तु यह माघ मे सगम क्षेत्र मे वास के लिये व्यवहृत होता है। श्रद्धा, अहिसा एव सयम कल्पवास के मूलाधार है। कल्पवासियो के लिये एक समय के भोजन का नियम है।

अत प्रयाग के सगम क्षेत्र मे माघ मास मे निवास करने वाले लोगो को कल्पवासी कहते है। माघ मास मे लगने वाले माघ मेलो के सर्वेक्षण से स्पष्ट होता है कि सबसे अधिक कल्पवासी उत्तर प्रदेश से आते है (विस्तृत मानचित्र स0 3 3)। इसके बाद मध्य प्रदेश, बिहार बगाल, राजस्थान आदि से आते है। कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, आसाम, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय, अरूणाचल प्रदेश आदि राज्यो से बहुत ही कम कल्पवासी आते हैं।

पर्यटक :–

प्रयाग पर्यटन की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। सगम, इलाहाबाद, हाईकोर्ट, आनन्दभवन, भारद्वाज आश्रम, किला, खुसरोबाग एव इसके आस पास के अन्य केन्द्र पर्यटको के आकर्षण के केन्द्र है। इन स्थलो के दर्शन हेतु प्राय देश के कोने–कोने से लोग आते है। कल्पवास के विपरीत सगम मे स्नान एव पर्यटन के उद्देश्य से आने वाले लोगो की सख्या दूरी के अनुपात मे बढती है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि प्रयाग की महत्ता दूरवर्ती राज्यो के लिये धर्म निरपेक्ष कार्यों एव पर्यटन के लिये अधिक है (Caplan A L H 1982, Page - 157)।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि प्रयाग का तीर्थराज के रूप मे आज भी भारत के अनेक लोगो के आकर्षण का केन्द्र है। वर्ष पर्यन्त यहा पर विभिन्न उद्देश्यों के लिये यात्रियो का आगमन होता रहता है। प्रयाग भारत के दूरस्थ राज्यो से आवागमन के साधनो
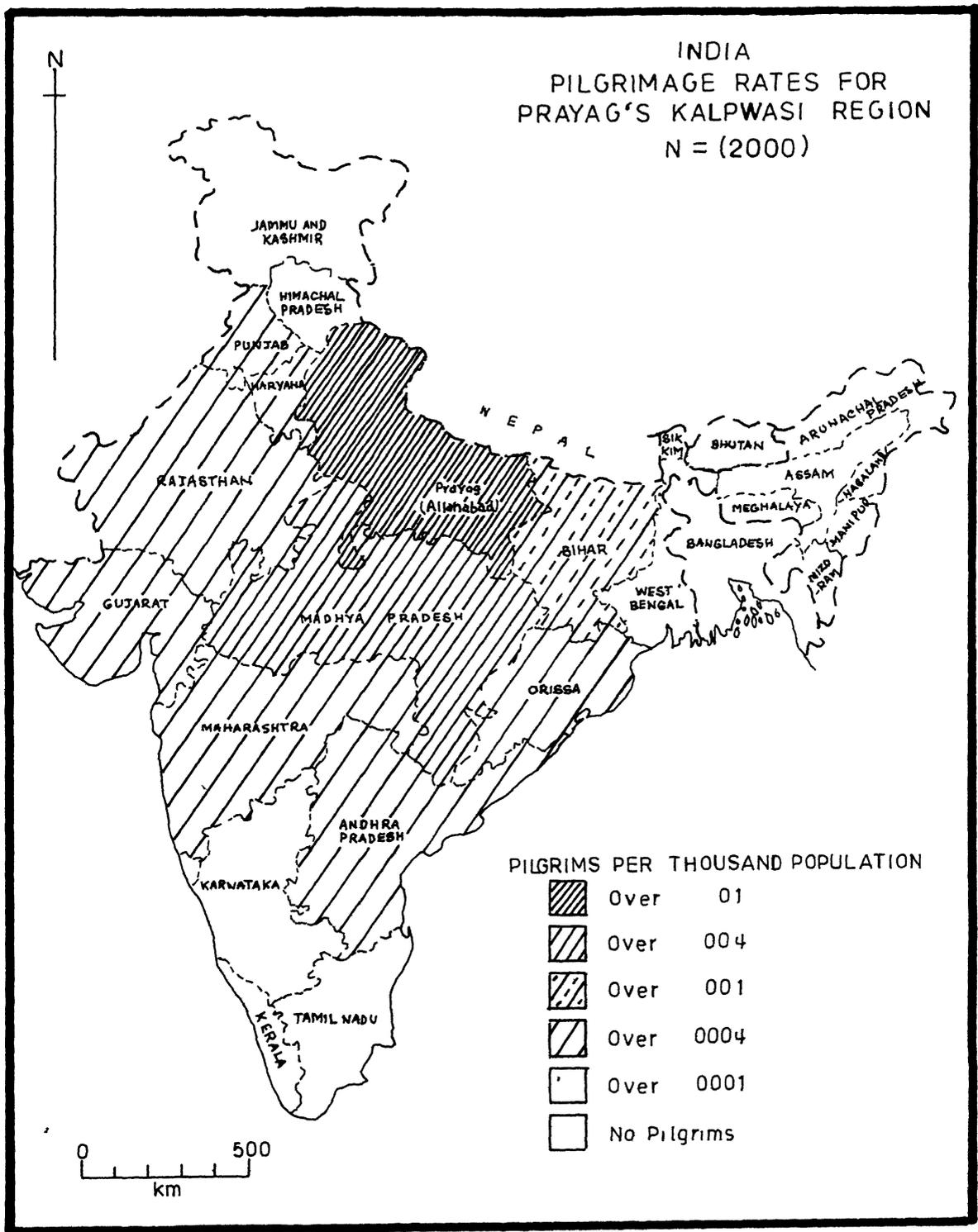
Fig 3.3 India. Kalpwasi Rates For Kumbhfair Region From Kalpwasi Stream Sample Survey. Kalpwasi Rates in Kalpwasis Per Thousand Population are Indicated For each State in India and for Nepal

विशेषकर रेलवे से जुडा है जिसके कारण भारतीय राष्ट्रीय एकता मे निरन्तर योगदान दे रहा है।

3.5 प्रयाग का धार्मिक/सास्कृतिक परिप्रदेश

तीर्थ केन्द्र 'श्रद्धा' के केन्द्र होते है। यहा पर विभिन्न सस्कारो एव धार्मिक कृत्यो हेतु समीपवर्ती क्षेत्रो से लोगो का गमनागमन होता है। तीर्थ केन्द्र समीपवर्ती क्षेत्रो के श्रद्धा के स्तर से ही उत्पन्न होते हैं, जीवन धारण करते है और महत्वहीन हो जाते हैं। इस प्रकार तीर्थ केन्द्रो के यही समीपवर्ती क्षेत्र तीर्थ केन्द्रो के परिप्रदेश कहे जाते है।

तीर्थ केन्द्र प्रयाग पर भारत के सूदूरवर्ती क्षेत्रो तथा विश्व के देशो से भी लोग आते है। महाकुम्भ (जो 12 वर्ष के अन्तराल पर होता है) के समय विश्व के अनेक देशो के लोग यहा आते है। अत इसका परिप्रदेश बहुत ही विस्तृत है इस कारण प्रयाग का परिप्रदेश निर्धारण असम्भव नही तो कठिन साध्य है। किन्तु शोधकर्ता ने इस केन्द्र पर सम्पन्न होने वाले धार्मिक कृत्यो के लिये आने वाले लोगो के परम्परागत रूप से निर्धारित परिक्रमा मार्गों तथा मात्रात्मक तकनीक के माध्यम से इस केन्द्र का परिप्रदेश निर्धारण करने का प्रयास किया है। तीर्थ कार्यों की गहनता के आधार पर प्रयाग के परिप्रदेश को दो भागो मे बाटा गया है। मुख्य परिप्रदेश एव गौड परिप्रदेश। मुख्य परिप्रदेश मे कार्य की गहनता एव यात्रियो की सख्या अधिक होती है तथा यह कार्य नियमित प्रतिदिन होता है तथा गौड परिप्रदेश मे कार्य की गहनता, यात्रियो की सख्या तथा धार्मिक कार्यों का सम्पादन नियमित नही होता है। प्रयाग के धार्मिक/सास्कृतिक परिप्रदेश के निर्धारण की तीन विधिया हैं।

1. परम्परागत विधिः–

इसमे प्राचीन काल से ही तीर्थयात्रियो द्वारा परम्परा रूप से सम्पादित प्रयाग की परिक्रमा मार्गों को सम्मिलित किया गया है। इसमे प्रयाग की अन्तर्वेदी, मध्यवेदी एव वहिर्वेदी परिक्रमा मार्ग की समीए प्रयाग का परिप्रदेश निर्धारित करती हैं। इसे प्रयाग मण्डल भी कहा जा सकता है। इस विधि का प्रयोग करते हुए राणा पी0बी0 सिह ने वाराणसी के तीर्थ मण्डल

का निर्धारण किया है (Singh, Rana PB 1987, Page - 493-524)।

प्रयाग अर्थात् प्रजापति क्षेत्र की सीमा युगो के अनुसार घटती बढती रही है। सत्युग मे चारो धाम इसकी सीमा थे। इसी प्रकार त्रेता एव द्वापर मे अयोध्या, चित्रकूट सभी इस क्षेत्र की सीमा मे अवस्थित थे। प्रयाग मे तीन प्रकार की परिक्रमाये परिकल्पित है— विस्तृत (वहिर्वेदी), मध्यम (मध्यवेदी) तथा सक्षिप्त (अन्तर्वेदी)। इन परिक्रमाओ की वर्तमान मे अक्षयवट (सगम) से चारो ओर क्रमश दूरी दस कोस अर्थात् 32 कि0मी0, पाच कोस अर्थात् 16 कि0मी0 तथा ढाई कोस अर्थात 8 कि0मी0 है। प्रयाग क्षेत्र की पचकोसी परिक्रमा पुराणो मे स्पष्ट रूप से सीमाकित की गई है। जहा तक प्रसिद्ध तीर्थ बताये गये है, वही वास्तविक पचकोसी की सीमा और परिक्रमा मानी जा सकती है। अन्तर्वेदी परिक्रमा के मुख्य स्थल त्रिवेणी, अक्षयवट, धृतकुल्या, आदित्यतीर्थ, रामतीर्थ, कामेश्वर तीर्थ (मनकामेश्वर), वरुआघाट, चक्रतीर्थ, ललिता तीर्थ (ललिता देवी), भारद्वाज आश्रम, द्रौपदी घाट, शिवकोटि, नागवासुकि, दशाश्वमेघ, वेणीमाधव, लक्ष्मीतीर्थ, सोमतीर्थ, अक्षयवट तथा सगम है। इनको विस्तृत रूप मे (मनाचित्र सख्या 3 4) मे दर्शाया गया है।

मध्य वेदी स्थल — वेणीमाधव, हनुमान कुण्ड, सीताकुण्ड, वरुणतीर्थ, यमतीर्थ, चक्रमाधव, सोमतीर्थ, सूर्यतीर्थ, कुबेर तीर्थ, अग्नितीर्थ, शूलटकेश्वर तथा त्रिवेणी हैं।

वहिर्वेदी स्थल—त्रिवेणी, समुद्रकूप, ऐल तीर्थ, नलतीर्थ, ब्रह्मकुण्ड, शाल्मली तीर्थ, उर्वशीतीर्थ, अरुन्धती तीर्थ, मानस तीर्थ, शखमाधव, व्यास आश्रम तथा त्रिवेणी है।

2 अनुभवात्मक या गुणात्मक विधि—

इसमे प्रयाग केन्द्र मे सचालित होने वाले धार्मिक कृत्यो, सस्कारो आदि कार्यों को आधार बनाया गया है। इसमे प्रयाग मे मुण्डन सस्कार, दाहसस्कार, मकर सक्रान्ति तथा माघ मेला मे आने वाले यात्रियो के आधार पर प्रयाग के धार्मिक परिप्रदेश का निर्धारण किया गया है। इसमे मुण्डन सस्कार, दाह सस्कार हेतु आने वाले लोगो के जिलो की सीमाए इसकी प्रधान सीमा बनाती है जबकि गौड सीमा का निर्धारण विभिन्न क्षेत्रो से आने वाले कल्पवासियो

PRAYAG PARIKRAMA
TO LUCKNOW
RIVER GANGA
DROPADIGHAT
SHIVKOTI
BHARADWAJ ASHRAM
DASHASHWAMEDHA
VENIMADHAV
LAKSHAMI TIRTH
SOM TIRTH
VARUNAGHAT
RAM TIRTH
ADITYA TIRTH
AKSHAYAVAT
GHRATKULYA
SANGAM
TO VARANASI
MADHUKULYA
RIVER YAMUNA
SACRED PLACES
RAILWAY LINE
PARIKRAMA PATH
ROAD
STARTING POINT
0
1
km
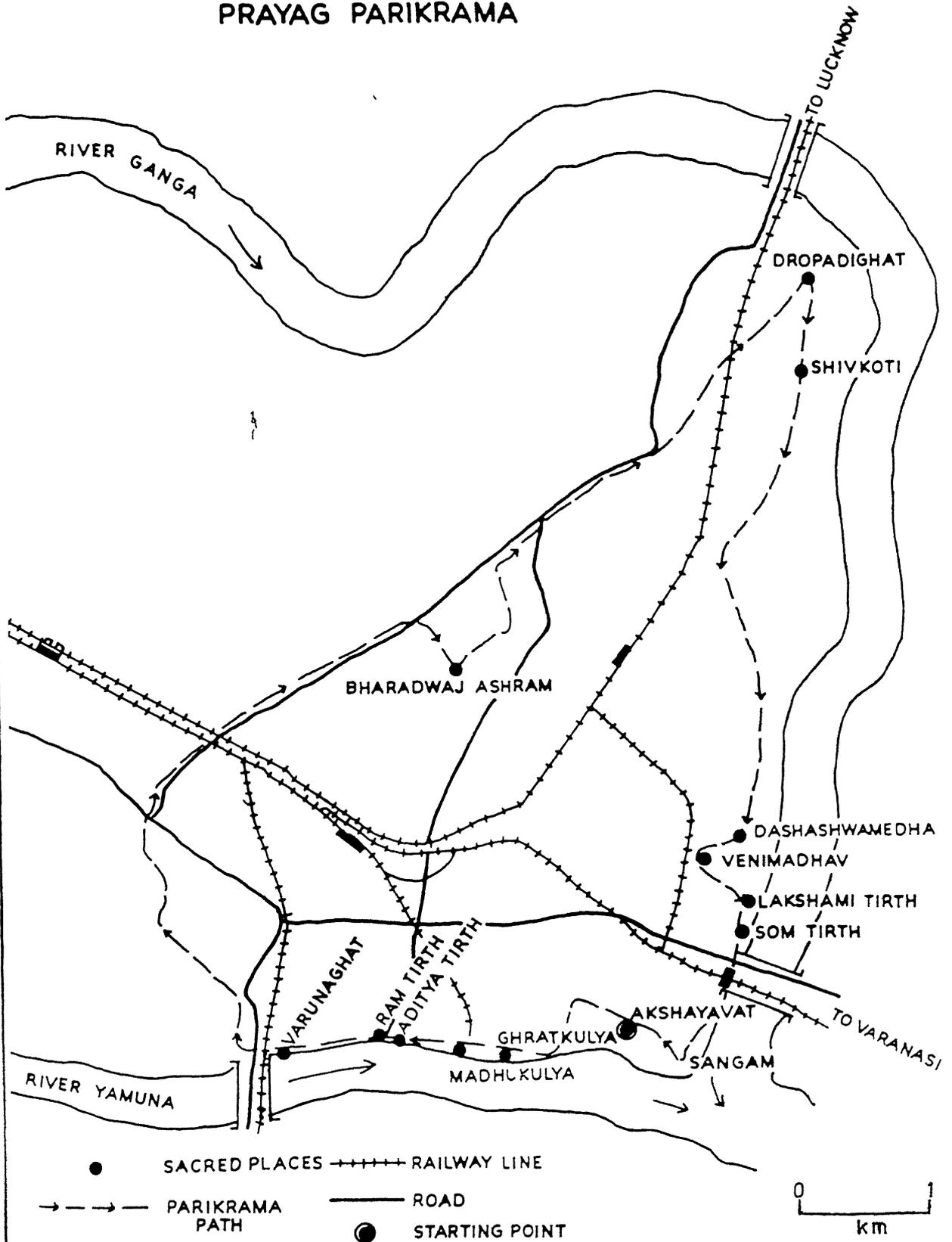
FIG 3.4

के जिलों की सीमा से होता है।

इसमें प्रयाग में सम्पन्न होने वाले कार्यों में से तीन कार्यों को सम्मिलित किया गया है। मुण्डन संस्कार, दाह संस्कार एवं कल्पवास में आने वाले यात्रियों के जिलो के सीमाओं के आधार पर। इसमें शोधकर्ता ने आंकड़ों के संकलन हेतु दो वर्षों (1999–2000) में संगम पर आने वाले लोगों के सर्वेक्षण से किया है। मुण्डन संस्कार एवं दाह संस्कार हेतु आने वाले प्रत्येक कार्य हेतु 1600 लोगों के सर्वेक्षण किये गये हैं। इसमें प्रश्नावली के माध्यम से उनके कार्य के उद्देश्य एवं उनके गांव एवं जिलों को पूछकर उसके आधार पर प्रयाग के परिप्रदेश का निर्धारण किया गया है। मुण्डन संस्कार हेतु आने वाले लोगों का सर्वेक्षण संगम पर किया गया है जबकि दाह संस्कार हेतु आने वाले लोगों का सर्वेक्षण दारागंज एवं रसुलाबाद घाट पर किया गया है।

मुण्डन संस्कार हेतु आने वाले लोगों के सर्वेक्षण के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि यहां पर इस कार्य हेतु आने वाले 85 प्रतिशत लोग इलाहाबाद एवं उसके समीपवर्ती जिलों के होते हैं जिनका मुख्य उद्देश्य मुण्डन संस्कार ही होता है जबकि 15 प्रतिशत लोग उत्तर प्रदेश के दूरस्थ जिलों या दूसरे प्रदेश के होते हैं जिनका उद्देश्य संगम स्नान, तीर्थभ्रमण तथा मुण्डन संस्कार होता है। ऐसे लोग यहां आकर एक या दो दिन निवास करते हैं तथा तीर्थ भ्रमण करने के बाद पुनः समीपवर्ती तीर्थों वाराणसी, चित्रकूट, फैजाबाद आदि चले जाते हैं। पूर्व में बताये गये 85 प्रतिशत इलाहाबाद जिले की सीमाओं से मिलने वाले उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश एवं बिहार के जिले के होते हैं। इनमे उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद, प्रतापगढ़, रायबरेली, फतेहपुर, कौशाम्बी, चित्रकूट, रीवा (मध्य प्रदेश) मिर्जापुर, सोनभद्र, भदोही एवं जौनपुर जिले के लोग सम्मिलित हैं। ये लोग मुण्डन संस्कार सम्पन्न करने के बाद शाम तक अपने घर लौट जाते हैं। यहां से किसी अन्य तीर्थो पर नहीं जाते हैं, ये विशेषकर मध्यमवर्गीय निम्न आयवर्ग के लोग होते हैं।

दाह संस्कार हेतु आये लोगों के सर्वेक्षण से स्पष्ट होता है कि इनमें से 98 प्रतिशत लोग प्रतापगढ़, कौशाम्बी, भदोही, मिर्जापुर, रीवा, चित्रकूट कर्वी, जौनपुर, रायबरेली, फतेहपुर

बादा से सम्बन्धित है, जो सुबह इस कार्य हेतु आते है तथा शाम तक अपने घर लौट जाते है। शेष 2 प्रतिशत लोग अत्यधिक सम्भ्रान्त परिवार से सम्बन्धित होते है जिनका निवास स्थान प्रयाग मे ही है। मध्य प्रदेश से सबसे अधिक लोग अस्थि विर्सजन के लिये आते है ऐसा दूरी के कारण है।

इस प्रकार उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि दो कार्यों से प्रयाग के धार्मिक/सास्कृतिक परिप्रदेश की सीमा के अन्तर्गत इलाहाबाद, प्रतापगढ, जौनपुर, भदोही, मिर्जापुर, रीवा, चित्रकूट, कौशाम्बी, फतेहपुर और बादा जिले सम्मिलित है और यह प्रयाग का मुख्य धार्मिक/सास्कृतिक परिप्रदेश है। (मानचित्र स0 3 5)

प्रयाग के गौड धार्मिक/सास्कृतिक परिप्रदेश के निर्धारण मे माघ मेला मे आने वाले ऐसे लोगो का सर्वेक्षण किया गया है जो विगत पाच वर्षों से कल्पवास के लिये आते है और आगे भी आयेगे। इसमे 1999 एव 2000 मे प्रतिवर्ष 1500 लोगो का सर्वेक्षण किया गया है।

इसमे 70 प्रतिशत लोग इलाहाबाद, प्रतापगढ, जौनपुर, सुल्तानपुर, भदोही, वाराणसी, रायबरेली, मिर्जापुर, गाजीपुर, सोनभद्र, रीवा, कौशाम्बी, चित्रकूट, फतेहपुर के सम्मिलित है। 20 प्रतिशत लोगो मे बलिया, देवरिया, गोरखपुर, महाराजगज, बस्ती, सिद्धार्थनगर, अम्बेडकर नगर, फैजाबाद, लखनऊ, उन्नाव, हमीरपुर, महोबा, चन्दौली जिले के लोग सम्मिलित है। शेष 10 प्रतिशत मे मध्य प्रदेश के छतरपुर, सतना, पन्ना आदि जिले तथा उत्तर प्रदेश के सीमा से सटे बिहार के जिले एव उत्तर प्रदेश के सूदूर पश्चिमी जिले सम्मिलित है।

3 मात्रात्मक विधि.–

इसमे प्रयाग के समीप मिलने वाले प्रमुख तीर्थ केन्द्रो के मध्य की दूरी के आधार पर प्रमाणिक दूरी का निर्धारण कर सीमाकित किया गया है। इस विधि के अन्तर्गत प्रयाग के चतुर्दिक स्थित केन्द्रो की दूरी का मानक विचलन आकलित किया गया है। इसके लिए 18 केन्द्रो का चयन किया गया है। इनकी दूरी इलाहाबद मुख्यालय केन्द्र से ली गयी है। इन केन्द्रो का नाम और दूरी क्रमश कौशाम्बी–58 कि0मी0, श्रृग्वेरपुर–35 कि0मी0, कडा –66

PRAYAG (ALLAHABAD)
CULTURAL CENTERS IN CUTURAL & RELIGIOUS ENVIRONS
100 50 0 100
km
N
Lucknow
Kanpur
Rae Bareli
Faizabad
Ayodhya
Basti
Gorakhpur
Sultanpur
Azamgarh
Mau
Pratapgarh
Jaunpur
Fatehpur
Kara
Shringaverpur
ALLAHABAD
Arail
Kaushambi
Durwasa
Charwa
Varanasi
Khairagarh
Mirzapur
GANGA RIVER
YAMUNA RIVER
BETWA
KEN
TONS
SON
MADHYA PRADESH
BIHAR
State Boundary
District Headquater
Cultural Centers
Roads
River
Primary Area
Secondary Area
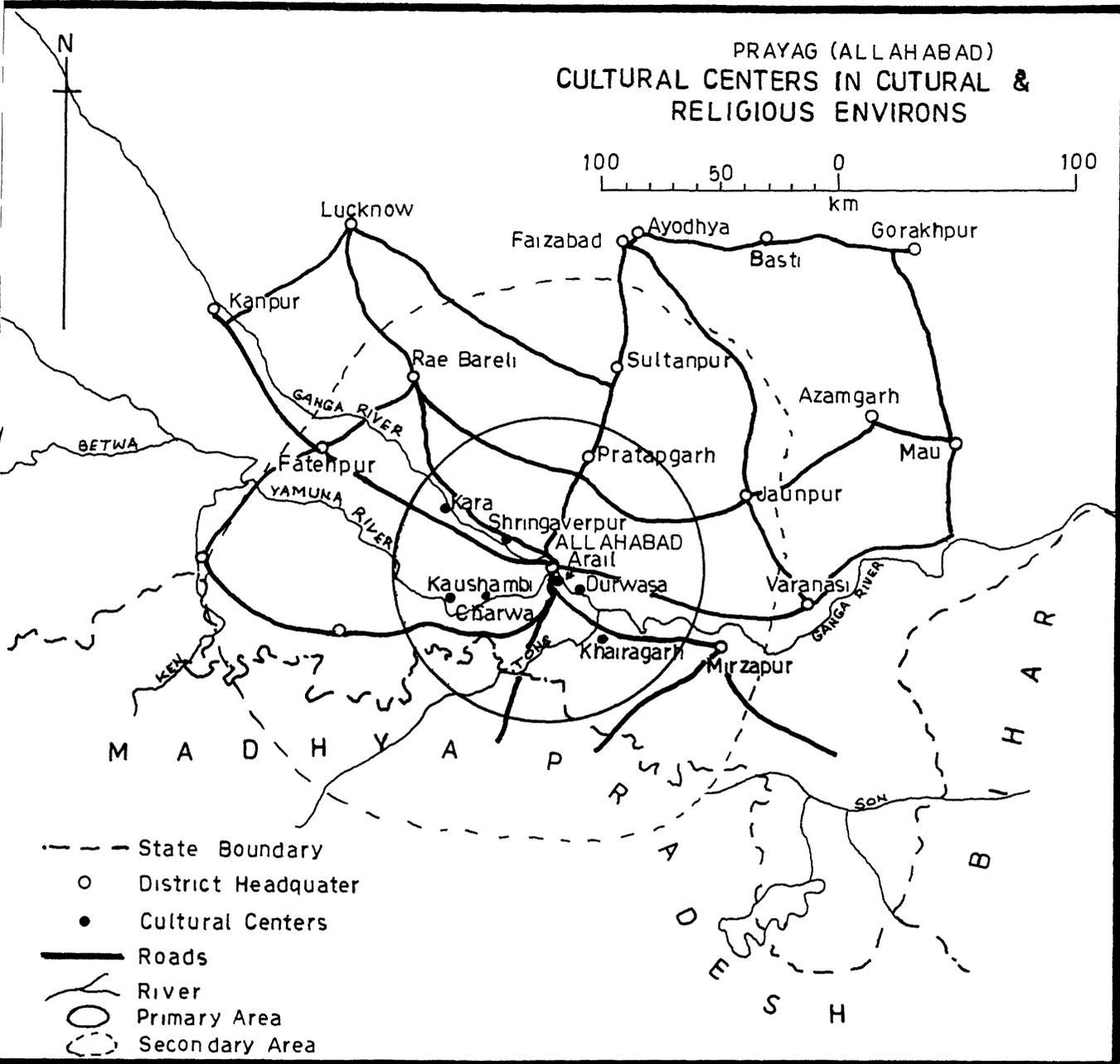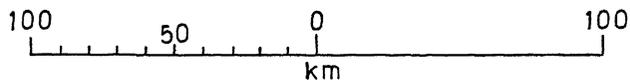
कि0मी0, गढवा–55 कि0मी0, चित्रकूट–130 कि0मी0 विठूर –222 कि0मी0, अयोध्या–167 कि0मी0, मैहर –180 कि0मी0, विध्याचचल–93 कि0मी0 वाराणसी–135 कि0मी0, सारनाथ –145 कि0मी0, लखनऊ –213 कि0मी0, अरैल – 11 कि0मी0, झूसी–9 कि0मी0, लाक्षागृह – 45 कि0मी0, कानपुर 200 कि0मी0, मीटा–24 कि0मी0 तथा खैरागढ – 62 कि0मी0 है। इन केन्द्रो की दूरी का मानक विचलन = 70 कि0मी0 आता है।

मानक दूरी विचलन $= \sqrt{\dfrac{\sum (d - d)^2}{N}} = \sqrt{\dfrac{88220}{18}} = 70\,km$

इस प्रकार 70 किमी0 की दूरी की त्रिज्या से खीची गयी परिधि द्वारा निर्धारित क्षेत्र प्रयाग के धार्मिक/सास्कृतिक परिप्रदेश के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है। (मानचित्र स० 3 5)

निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि परम्परागत विधि, अनुभवात्मक या गुणात्मक विधि तथा मात्रात्मक विधि द्वारा परिसीमित क्षेत्र गगाघाटी के जनप्रदेश मे स्थित हिन्दू जनमानस को एक सूत्र मे बाधा है।इन मे स्थित तीर्थस्थल एव सास्कृतिक केन्द्र देश को एकता के सूत्र मे बाधने मे सदा सहायक रहे है। इस सम्पूर्ण क्षेत्र मे वैष्णव, शैव तथा बौद्ध धर्म पल्लवित, पुष्पित होकर एक दूसरे के पूरक हुए है। शक्ति की उपासना ने इसे भारतीय जनमानस का प्रमुख आधार प्रदान किया है। प्रयाग की धार्मिक, सास्कृतिक, आध्यात्मिक चेतना मानव समाज को एक आधार प्रदान करती है।

3.6 सास्कृतिक परिप्रदेश मे सास्कृतिक केन्द्र .

प्रयाग का सास्कृतिक परिप्रदेश विविध धार्मिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक एव सास्कृतिक केन्द्रो से युक्त है। ये केन्द्र प्रयाग और उसके परिप्रदेशम` स्थित जनमानस को भावनात्मक एकता के सूत्र मे जोडते है। प्रमुख सास्कृतिक केन्द्रो का विवरण निम्न है –

कौशाम्बी :–

यह एक अत्यन्त प्राचीन, धार्मिक, ऐतिहासिक एव व्यापारिक केन्द्र रहा है। इलाहाबाद

से 58 कि0मी0 पश्चिम यमुना के दाहिने तट पर , आधुनिक कोसम से इसको समीकृत किया गया है। यह एक प्राचीन नगर था जो परवर्तीकाल मे बौद्ध केन्द्र के रूप मे अधिक विकसित हुआ। इसकी स्थापना उपरिचरवसु नाम कुरु राजवश के शासक के पुत्र कुशाम्ब ने की थी (महाभारत आदि पर्व, 63/69–71)। वाल्मीकि रामायण मे कौशाम्बी की स्थापना कुश के पुत्र कुशाम्ब द्वारा किये जाने का उल्लेख है (वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड, 32/11)। कोसम के समीप पामोसा ग्राम से प्राप्त एक शिलालेख पर मुद्रित अभिलेख से ज्ञात होता है कि यह ग्राम कौशाम्बी के समीप था (घोष एन0 एन0 1935)।

पुराणो के वर्णन के अनुसार कौशाम्बी मे अनेक राजाओ ने शासन किया है। बौद्ध साहित्य मे इस नगर का विस्तृत वर्णन किया गया है। भगवान बुद्ध ने साधु जीवन के पाचवा एव छठवा वर्ष इस स्थान पर व्यतीत किया था (विनय पिटक, जिल्द दो)। यमुना तट पर स्थित होने के कारण इसका व्यापारिक महत्व अत्यधिक था, अत इसको 'वत्सपत्तन' कहा गया है। यह बौद्ध काल मे प्रमुख व्यापारिक केन्द्र था (घोष0 एन0 एन0 1935)। पुरातात्विक खुदाई मे इस स्थान से अनेक बहुमूल्य वस्तुये पाई गई है। इनमे चादी तथा ताबे के सिक्के, शिव एव पार्वती की सयुक्त मूर्ति, पत्थर का कीर्तिस्तभ प्रमुख है। कोसम के लोग इसे 'राम की छडी' कहते है। यह अशोक के स्तम्भ से मिलता–जुलता हैं। वर्तमान मे कौशाम्बी जनपद बन गया है। वस्तुत यह स्थान प्राचीन सनातन धर्म से सम्बद्ध स्थल है एव सम्प्रति बौद्ध ध र्म के प्रमुख केन्द्र के रूप मे जाना जाता है

श्रृग्वेरपुर :–

श्रृग्वेरपुर एक प्राचीन हिन्दू धार्मिक केन्द्र है। यह प्रयाग के उत्तर–पश्चिम मे 35 कि0मी0 दूर कौडिहार विकास खड के अन्तर्गत आता हैं। इस स्थान पर गगा के तट पर श्रृगी ऋषि का आश्रम था जिन्होने राजा दशरथ के यहा सतान उत्पत्ति के लिए पुत्रेष्टि–यज्ञ कराया था। अत यह स्थान उन्ही के नाम से 'श्रृग्वेर पुर' कहलाता था, जो अब बिगड कर सिगरौर हो गया है (जिला गजेटियर 1986, पृष्ठ–235)। पुरातात्विक खुदाई मे जनरल

कनिघम को इस स्थान से अनेक वस्तुए प्राप्त हुई थी जिनमे इनमे सिक्के प्रमुख थे। 21 सिक्के हिन्दुओ के समय के, एक हिदू सिथियन काल का और 106 मुगलकालीन थे (आर्कियालाजिकल रिपोर्ट, जिल्द–11)। वर्तमान मे यहा श्रृगी ऋषि की एक समाधि एव मन्दिर, श्री राम विश्राम धाम, राम शैय्या, सीताकुण्ड, गौरीशकर घाट एव किला प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं।

कडा–मानिक पुर –

यह एक प्राचीन पवित्र धार्मिक तथा सास्कृतिक स्थान है। यह प्रयाग से 66 कि0मी0 उत्तर–पश्चिम गगा के दाहिने तट पर सिराथू तहसील मे स्थित है। ऐसी अनुश्रुति है कि शिव की पत्नी सती द्वारा आत्मदाह किये जाने के कारण उनका हाथ या कडा वहा गिरा था और इसी आधार पर इसका नाम कडा या कर्कोटक नगर पडा। यहा कालेश्वर महादेव का मन्दिर है। यह स्थान हिन्दुओ के लिये पवित्र तीर्थ स्थान बन गया है। प्राचीन समय मे यह राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यहा सिद्ध सन्त मलुक दास, मदीना के सैय्यद कुतुबदीन तथा ख्वाजा की समाधि एव मकबरे हैं।

गढवा –

यह एक ऐतिहासिक, धार्मिक केन्द्र है, जो प्रयाग से 55 कि0 मी0 दक्षिण पश्चिम बारा तहसील मे स्थित है। इसका प्राचीन नाम 'भट्टग्राम' है, जो गुप्त वशीय राजओ के शासन काल मे एक प्रसिद्ध नगर था। यहा पुरातात्विक खुदाई से विष्णु के दस अवतारो की मूर्तिया प्राप्त हुई है, जो यहा के एक मन्दिर मे रक्खी गयी है। इनमे एक सयुक्त मूर्ति ब्रह्मा, विष्णु और शिव की है, जो नौ फुट लम्बी और चार फुट चौडी है। यहा पत्थर के खम्भो पर गुप्त काल के अनेक पुराने अभिलेख मिले है। (कनिंघम, आर्कियालाजिकल रिपोर्ट्स, जिल्द–3)

अरैल :–

सगम के दक्षिण कोण मे यमुना के उस पार, प्रयाग से 9 कि0मी0 दूर एक गाव के रूप मे विद्यमान है। इसका प्राचीन नाम अलर्कनगर या अलर्कपुरी बताया जाता है। यहा बेनी

माधव और सोमेश्वर नाथ के मन्दिर बहुत प्राचीन है। इस मन्दिर का उल्लेख ऋग्वेद और प्रयाग महात्म्य मे मिलता है और यह माना जाता है कि चन्द्रमा ने राजयक्ष्मा रोग से मुक्त होने के लिये यहा पर चौदह वर्ष तक तपस्या की थी। प्रयाग परिक्रमा का यह प्रमुख स्थल है।

लाक्षागृह –

ऐतिहासिक महत्व का यह प्राचीन स्थान प्रयाग से 45 कि0मी0 पूर्व हडिया के समीप है। यह ऐतिहासिक स्थान सम्प्रति गगा की धारा से कटकर अधिकतर विलुप्त हो गया है किन्तु पुरातात्विक खुदाई से प्राप्त अवशेषो एव अभिलेखो से पता चलता है कि यह प्राचीन समय मे जैन धर्म तथा ब्रह्मण धर्म का महत्वपूर्ण स्थान था। इस लाक्षागिरि का सम्बन्ध कुछ विद्वानो ने महाभारत कालीन लाक्षागृह से योजित किया है।

उपरोक्त वर्णित ऐतिहासिक, धार्मिक, सास्कृतिक केन्द्र के अतिरिक्त प्रयाग के सास्कृतिक परिप्रदेश मे भीटा (सहजाति), खैरागढ, चरवा (चरक मुनि का आश्रम) आदि महत्वपूर्ण सास्कृतिक केन्द्र स्थित है।

References

Bhardwaj, S M (1973) Hindu Place of pilgrimage in India, Thomson Press (India) Limited Delhi P- 202, 217

Cliff, A D Haggett, P ORD, J K and G R Versey (1981) Spatial Diffusion An Historical Geography of Epidemics in an Island, Community, Cambridge, University Press, P-6

Caine, W S (1891) Picturesque India, Vol 1, London

Caplan A L H (1982) Prayag Magh Mela Pilgrimage, Unpublished Ph D diss- in Geography Universitiy of Michigan, P-65, 157

Dubey, D P (1990) A Study in Historical and Religious Porsonality of prayag Un Published P H D Thesis A I H C and A.R C H , B H U P-3

District Gazetteer (1986) Allahabad, Government Publication U P , P-163, 239

Ghosh, N N (1935) Early Hisory of Kushambi, Alld Archaeological Society P-94, 17

James D MC, Namara (1995) Hindu Pilgrimage as a force of India Spatial cohesion and Temporal continuity in D P Dubey ed (1995) Pilgrimage Studies, The Society of Pilgrimage Studies, Allahabad P-371

Meining, Donald W (1965) "The Mormon Culture Region Strategics and patterns in the Geography of the American West 1847-1964" Anaals of the Association of American Geographers, 55 (191-220) P-215

Rai, Subas (1993) Kumbha Mela, History and Religion, Astronomy and cosmobliology, Ganga kaveri Publishing House, Varanasi, P-51

Travernier, J B (1676) Travels in India, Vol-I, P-93, Translated by V Ball, Vol-I, London, 1889, P-116

अथर्ववेद 19/53/3
"पूर्ण कुम्भो अधिकाल अहितस्त — — — — तमाहु परमेव्योगन्।।

बील बुद्धिस्टिक रेकार्डस जिल्द – 1 पृष्ठ – 71 एव श्रीवास्तव शालिग्राम (1937) प्रयाग प्रदीप–पृष्ठ–24

कनिंघम – ए (1961) (i) आर्कियालाजिकल रिपोर्ट जिल्द–3, पृष्ठ–53–60
(ii) आर्कियालाजिकल रिपोर्ट जिल्द – 11, पृष्ठ, 63

मत्स्य पुराण 108/15–16
"तथा सर्वेषु लोकेषु — — — — न चान्यत् किंचिदर्हति।।"

नारद पुराण 2/63/7
"पृथिव्या यानि तीर्थानि — — — — माघे मकरे भास्करे।।"

मनुस्मृति — अध्याय दो, श्लोक सख्या –21, श्रीवास्तव शालिग्राम (1937) प्रयाग प्रदीप पृष्ठ – 3

महाभारत वन पर्व — अध्याय – 87 श्लोक सख्या 18 से 20

महाभारत आदि पर्व — अध्याय – 63 श्लोक सख्या 69 से 71

मुखर्जी आर0 के0 (1947) — एन्शिएन्ट इण्डियन एजूकेशन, लन्दन, पृष्ठ–22

मिश्रा प्रशान्त (1998) — 'अक्षयवट' मातेश्वरी ज्योतिष पीठकृत, इलाहाबाद पृष्ठ –4 से 6

वामन पुराण — 23/19-20

श्री पद्मपुराण — अध्याय 72 शलोक – 16
"प्रयाग वैष्णव क्षेत्र – – – – मदाधारो विराजते।।"

स्कन्दपुराण — 4/6/21, IV (i) 50/55-125,
"प्रथम तीर्थ राजन्तु – – – – धर्म कामार्थमोक्षदम्।।"

सिन्हा, हरेन्द्र प्रताप (1953) — 'भारत को प्रयाग की देन' स्टैन्डर्ड प्रेस, इलाहाबाद पृष्ठ 27, 37

स्किनर (1833) — एक्सकर्शन इन इण्डिया जिल्द –2 पृष्ठ–253

श्रीवास्तव शालिग्राम (1937) — 'प्रयाग प्रदीप' हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, पृष्ठ 18 से 20, पृष्ठ 22 से 25 तथा पृ0 48 से 52

सामाचार पत्र दैनिक जागरण — 26 नवम्बर 2000, लेख 'सगम तीरे लघुभारत' (रतिभान त्रिपाठी)

विनय पिटक — जिल्द–दो, पृष्ठ–184

बील लाइफ आफ ह्वेनसाग, सिन्हा हरेन्द्र प्रताप (1953) 'भारत को प्रयाग की देन' स्टैन्डर्ड प्रेस, इलाहाबाद पृष्ठ स 189

विशप हेबर (1824) — 'ट्रेवेल्स' जिल्द –1, अध्याय – 13 पृष्ठ–33

वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड 52/10
"स लोकपालप्रतिम – – – –वत्सान् मुदितानुपागमन्।।

वाल्मीकि रामायण, अयोध्याकाण्ड 54/5–6
"प्रयागमभिगत पश्य – – – वरिणो वारि घर्षज।।"

वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड, 32/11
कुशाम्बस्तु महातेजा कौशाम्बी मकरोतिपुरम्।।

दीक्षित, डा० रमेश दत्त (2000) — राजनीतिक भूगोल समसामयिक परिदृष्टि, प्रेटिस हाल आफ इडिया, पृष्ठ 227

रगा स्वामी, प्रो० के०वी०(1989) — उद्धृत कुम्भ पर्व प्रयाग, सम्पादक देवी प्रसाद दूबे, शारदा पुस्तक भवन पृष्ठ 1

अध्याय–4

प्रयाग एक शैक्षिक केन्द्र के रूप में

आधुनिक समाज मे राष्ट्रीय एव अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समृद्ध एव सुसस्कृत जीवनयापन हेतु शिक्षा मूलभूत आवश्यकता है। वर्तमान जटिल वैज्ञानिक युग मे जीवन की मूलभूत आवश्यकताओ–भोजन, वस्त्र एव आवास की व्यवस्था हेतु भी शिक्षा एव साक्षरता दोनो अपरिहार्य है। इसके लिए पठन एव लेखन का मात्र प्राथमिक ज्ञान ही पर्याप्त नही है, अपितु उच्च शैक्षणिक स्तर का होना भी नितान्त आवश्यक है। शिक्षा सस्कृति का मूल तत्व है क्योकि शिक्षा के विकास से ही किसी व्यक्ति एव समाज का समन्वित विकास होता है। सस्कृति के प्रसार एव विकास मे भी शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है, अत स्पष्ट है कि किसी केन्द्र अथवा क्षेत्र के सास्कृतिक विकास के लक्ष्य को शिक्षा के विकास से ही प्राप्त किया जा सकता है।

प्रस्तुत अध्याय मे प्रयाग मे शिक्षा के स्वरूप एव सास्कृतिक विकास मे योगदान का विवरण दिया गया है।

शिक्षा .

किसी राष्ट्र की सम्पन्नता या विकास का स्तर वहा के निवासियो के स्वास्थ्य, शिक्षा एव चिन्तन मे परिलक्षित होता है। स्वास्थ्य एव शिक्षा व्यक्ति एव राष्ट्र के निर्माण मे महत्वपूर्ण घटक हैं। शिक्षित मानव राष्ट्र के सास्कृतिक एव राजनैतिक विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। हरितक्रान्ति और औद्योगिक क्रान्ति उच्च शिक्षा की ही देन है। शिक्षा से नवाचार प्रसरण मे सहायता मिलती है, जिससे जनसख्या नियन्त्रण एव रूढिवादिता का समापन हो पाता है। प्राचीन भारत मे शिक्षा की उपयोगिता को उजागर करने के लिए ही 'विद्या विहीन पशु' उक्ति कही गयी थी।

शैक्षिक सुविधाओं का ऐतिहासिक स्वरूप

प्राचीन समय मे भारतवर्ष मे शिक्षा प्रणाली गुरूकुल पद्धित की थी। मुस्लिम काल मे यही शिक्षा प्रणाली 'मक्तब' नाम से प्रचलित हुयी। यही अग्रेजो के शासन काल मे धार्मिक शिक्षा केन्द्र के रूप मे, सस्कृत शिक्षणार्थ 'पाठशाला' एव उर्दू शिक्षण के लिए 'मक्तब' के

रूप मे तथा अग्रेजी शिक्षण हेतु स्कूल, कालेज के रूप मे विकसित हुई।

किन्तु स्वतत्रता प्राप्ति (15 अगस्त 1947) के बाद शिक्षा के विकास के लिए तत्कालीन प्रशासको द्वारा अनेकानेक प्रयास किये गये जिनमे डा0 एस0 राधाकृष्णन की अध यक्षता मे विश्वविद्यालय शिक्षा समिति (1948–49), डा0 ए0एल0 स्वामी मुदालियर की अध यक्षता मे माध्यमिक शिक्षा सेवा आयोग (1952–53), सस्कृत आयोग (1956–57), स्त्री शिक्षा समिति (1957–59), धार्मिक एव नैतिक शिक्षा समिति (1959), बाल कल्याण समिति (1961–62), शारीरिक शिक्षा एव राष्ट्रीय योजना समिति (1964), कन्या शिक्षा समिति (1963–65), डी0एस0 कोठारी की अध्यक्षता मे शिक्षा आयोग (1964–67), बेसिक शिक्षा अधिनियम (1972) और नयी शिक्षा नीति (1986) विशेष उल्लेखनीय है।

उपर्युक्त समस्त समितियो एव आयोगो के गठन से ज्ञात होता है कि भारत सरकार द्वारा शिक्षा स्तर के उन्नयन हेतु समय–समय पर बराबर प्रयास किये जाते रहे हैं। इसी के फलस्वरूप आज देश की साक्षरता का प्रतिशत बढकर 5736 (2001 की जनगणना से) हो गया है जो कि स्वतत्रता प्राप्ति के समय मात्र 18 प्रतिशत था। इतना होते हुए भी विकास की गति धीमी है। इतनी धीमी गति से शिक्षा का प्रसार होने का प्रमुख कारण अत्यधिक तीव्र गति से जनसख्या मे वृद्धि का होना है।

देश के आध्यात्मिक तथा सास्कृतिक विकास मे भारतवर्ष का कोई भी नगर अथवा क्षेत्र प्रयाग की समानता नही कर सकता। वैदिक काल मे जब प्रयाग केवल बना था, यहा के साधु महात्माओ ने आत्मतत्व के गूढतम् रहस्योद्घाटन मे अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया था। प्रयाग ब्रह्मा का यज्ञ स्थान, मुनियो का साधना स्थल, देवताओ का आमोद स्थान और पुण्डरीकाक्ष भगवान का प्रिय निवास स्थान है। प्रयाग के शैक्षणिक स्वरूप का अग्रपंक्तियो मे प्राचीन से लेकर वर्तमान तक की स्थिति का वर्णन किया गया है।

41 प्राचीन शिक्षा का स्थान .

तीर्थराज प्रयाग आदि काल से ही महान शिक्षा का केन्द्र रहा है। प्रयाग की ख्याति वैदिक युग से ही बनी हुई है। वेद कालीन कुछ आर्यजन यहा आकर बस गये थे और यह वैदिक सस्कृति और ज्ञान के केन्द्र के रूप मे विकसित होता गया। गगा और यमुना के सगम के निकट अनेक आश्रमो की स्थापना हुई जहा वैदिक ब्राह्मण निवास करते थे और अपने धार्मिक कृत्यो, अनुष्ठानो का सम्पादन और तपश्चर्या करते थे। इनमे ऋषि भारद्वाज

जो उन परम्परागत सप्त ऋषियो मे से एक थे, जिन्हे ऋग्वेद के सकलन का श्रेय है सर्वप्रमुख और सर्वाधिक यशस्वी थे (मुकर्जी, आर0के0 1947)। यहा एक विश्वविद्यालय था जिसमे लगभग दस हजार विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते थे। भारद्वाज ऋषि इस विश्वविद्यालय के कुलपति थे (सिन्हा, हरेन्द्र प्रताप 1953)। अयोध्या के राजकुमार राम जब बनवास के लिये जाते समय इस आश्रम मे आए थे, तब उन्होने विद्वान आचार्य को शिष्यो की विशाल मण्डली से घिरा हुआ पाया था। (बाल्मीकि रामायण)। उस समय ये आश्रम ज्ञान के केन्द्र थे जहा विद्यार्थियो को गुरू के व्यक्तिगत मार्ग दर्शन मे वेद, इतिहास एव पुराण, राशि (गणित) ज्योतिष, व्याकरण, आयुर्वेद, युद्ध विद्या आदि की विशेष शिक्षा प्रदान की जाती थी (मजूमदार, आर0सी0 1956)। महाभारत युद्ध के पश्चातवर्ती युग मे वत्सो का विशाल राज्य जिसकी राजधानी कौशाम्बी थी, शीघ्र ही उस समय का एक प्रमुख राज्य बन गया। ईशा पूर्व छठी शताब्दी मे उदयन इस सभाग का शक्तिशाली राजा था। वह ललित कलाओ (जिनमे सगीत एव नृत्य सम्मिलित था) और विद्या का महान सरक्षक था (काला, एस0सी0 1950)। प्रसिद्ध ग्रीक इतिहासकार प्लिनी जब पाटलिपुत्र के राजसभा से लौट रहा था तो यहा एक सप्ताह ठहरा था। उसने उल्लेख किया है कि प्रयाग शिक्षा सीखने के एक प्रसिद्ध शहर के रूप मे था (प्लिनी ग्रीक इतिहासकार)। भारद्वाज ऋषि का विश्वविद्यालय कैसे समाप्त हो गया, इसका प्रमाण इतिहास मे नही प्राप्त होता है। इतिहासकार अलबरूनी ने सन्देह व्यक्त किया कि इलाहाबाद अपनी शैक्षिक महत्ता कौशाम्बी के अत्यधिक विकास के कारण खोता गया क्योकि कौशाम्बी उत्तराखड का धार्मिक एव सास्कृतिक केन्द्र बन गया (पाण्डेय विशमभर नाथ 1955)।

प्राचीन समय मे शिक्षा पद्वति का एक प्रमुख तत्व गुरूकुल व्यवस्था थी। इसमे विद्यार्थी अपने घर से दूर गुरू के घर पर निवास कर शिक्षा प्राप्त करता था। कभी–कभी वह शिक्षा केन्द्रो से सम्बद्ध छात्रावासो मे निवास करता था। इस प्रकार के विद्यार्थियो को 'अन्तेवासी' अथवा 'आचार्य कुलवासी' कहा गया है। ऋग्वैदिक अथवा पूर्व वैदिक काल मे शिक्षा का मुख्य पाठ्यक्रम वैदिक साहित्य का अध्ययन था। वैदिक युग के प्रारम्भ मे शिक्षा मौखिक होती थी तथा पवित्र मन्त्रो को कण्ठस्थ करने पर बल दिया जाता था। गुरू विद्या समाप्ति पर शिष्य को जो अनुशासन देता है उससे उपनिषद काल मे शिक्षा के उद्देश्य पर पर्याप्त प्रकाश पडता है (तैतिरीय उपनिषद, 1, 11)।

वैदिक ग्रन्थो का अध्ययन करने वाले विद्यार्थी के लिए ऋग्वेद मे ब्रह्मचारी शब्द प्रयुक्त हुआ है (ऋग्वेद 10, 109, 5)। वैदिक काल मे शिक्षा को प्रकाश और शक्ति का स्रोत समझा जाता था। इसके द्वारा मनुष्य अपनी बुद्धि प्रखर कर जीवन के विभिन्न क्षेत्रो मे ठीक मार्ग का अनुसरण कर सकता था।शिक्षा के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति अपनी शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक शक्तियो का विकास कर इस ससार मे और परलोक मे जीवन के वास्तविक सुख को प्राप्त कर सकता था (ऋग्वेद 10, 717)। अथर्ववेद मे एक ब्रह्मचारी जीवन का उल्लेख इस तरह मिलता है कि वह गुरू के लिए अग्निहोत्र के समिधा एकत्रित करके लाता था और उसके लिए गृहस्थो से भिक्षा माग कर लाता था (अर्थवेद 11 5, 11 3)। ब्रह्मचारी के तीन मुख्य कर्तव्य थे- वैदिक ग्रथो का स्वाध्याय, गुरू की सेवा और ब्रह्मचर्य का पालन।1600 ई०पू० से 500 ई0 तक के शिक्षा व्यवस्था से पता चलाता है कि इस काल मे प्रारम्भिक शिक्षा का जन्म हुआ। कौटिल्य के अनुसार इसी समय बालक पढना, लिखना और गिनना सीखता था। शिक्षा प्रणाली मे राज्य कोई हस्तक्षेप नही करता था। गुरू विद्यार्थी को ब्रह्मचर्य आश्रम मे दीक्षित करता था। विद्या समाप्ति पर शिष्य स्वेच्छा से कुछ धन गुरू दक्षिणा के रूप मे गुरू को देते थे। मनु के अनुसार विद्यार्थी को अपने गुरू को जब तक शिक्षा समाप्त न हो कोई धन नही देना चाहिए (मनु स्मृति 2, 245)।

ब्राह्मण विद्यार्थी साधारणतया अपने अध्ययन काल का पूरा समय वैदिक ग्रथो के अध ययन मे लगाते थे किन्तु क्षत्रिय युद्ध कला और प्रशासन विद्या भी सीखते थे। वैश्य कृषि विज्ञान, पण्यशास्त्र और पशुपालन विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करते थे। मनुस्मृति से ज्ञात होता है कि उस समय अधिकतर विद्यार्थी वैदिक साहित्य के अतिरिक्त स्मृतिया, इतिहास और पुराण पढते थे (मनु स्मृति 2, 10, 3, 232)। मिलिदपण्ह् से ज्ञात होता है कि ब्राह्मण विद्यार्थी उपर्युक्त विषयो के अतिरिक्त कौशल कला, छदशास्त्र, स्वर विज्ञान, श्लोक, व्याकरण, निरूक्त ज्योतिष, शरीर पर मागलिक चिन्हो का विज्ञान, शकुन विज्ञान आदि का अध्ययन करते थे।

4.2 बौद्ध कालीन शिक्षा (लगभग 650 ई0 पू0 से 450 ई0तक)

बुद्ध काल मे प्रयाग वत्स राज्य के अन्तर्गत था जिसकी राजधानी कौशाम्बी थी। उदयन इस राज्य का शासक था। महात्मा गौतम बुद्ध ने कैवल्य की प्राप्ति के पश्चात्

सर्वप्रथम उपदेश सारनाथ मे दिया। उसके पश्चात् गया, नालन्दा, पाटलिपुत्र, राजगृह, व वैशाली का भ्रमण एव उपदेश देते हुए कौशाम्बी गये। यहा उन्होने नवा विश्राम किया। उदयन बौद्ध भिक्षु पिन्डोला के प्रभाव से बौद्ध बन गया। उसने घोषिताराम बिहार भिक्षु सघ को प्रदान किया (श्रीवास्तव, कृष्ण चन्द्र 1985)।

मौर्यो के समय मे भी जैसा कि यहा से प्राप्त अशोक के दो स्तभ लेखो से विदित होता है यह स्थान सस्कृति का केन्द्र था। इस समय से लगभग ईसा की दूसरी शताब्दी तक कौशाम्बी और प्रयाग मे अनेक बौद्ध एव जैन मठो की स्थापना हो चुकी थी जहा धार्मिक और लौकिक शिक्षा दी जाती थी और ये मठ सातवी शताब्दी तक भी विद्यमान थे जब चीनी यात्री हृवेनसाग ने इस स्थान का भ्रमण किया था जिसका उल्लेख उसने अपने भारत भ्रमण के विवरणो मे किया है (थामस, वाट्स 1961)। प्रारम्भ मे बौद्ध बिहार धर्म चितन और मनन के क्षेत्र थे जो परवर्ती काल मे सस्कृति और ज्ञान के केन्द्र बन गये। ब्रह्मण शिक्षा पद्धति मे विद्यार्थी गुरू के परिवार मे जाकर रहता था और विद्यार्थियो की सख्या दस या पन्द्रह से अधिक नही होती थी। किन्तु बौद्ध शिक्षा व्यवस्था मे बिहारो मे शिक्षा दी जाती थी जिनमे भिक्षुओ की सख्या पर्याप्त होती थी। इन बौद्ध भिक्षुओ को सामूहिक शिक्षा दी जाती थी। भिक्षु स्वय कृषि करके अन्न उपजाते थे और बिहार के अदर ही पशुओ का पालन करके दूध, घी, मक्खन आदि प्राप्त करते थे (ओम प्रकाश 1986)। सिद्धि बिहारिको को साधारणतया विनय, गाथाओ, जातक कहानियो, प्रार्थनाओ, मूल तत्वो और बौद्ध दर्शन की शिक्षा दी जाती थी। विनय पिटक के द्वारा उन्हे अभीष्ट अनुशासन सिखाया जाता था और धम्म पिटक के द्वारा बौद्ध धर्म के सिद्धान्त पढाये जाते थे।

युवान च्वाग के अनुसार पहले बालक 'द्वादशाध्यायी' नामक प्रारम्भिक पुस्तक पढते थे। फिर पाच वर्ष की आयु मे उन्हे पाच विज्ञान अर्थात् (1) व्याकरण, (2) शिल्प कला विज्ञान, (3) आयुर्वेद, (4) तर्कशास्त्र, (5) आत्म विज्ञान पढाये जाते थे। इन तीनो के अतिरिक्त तीन अन्य पुस्तके मडक, उणादि, अष्टधातु थी (वाटर्स– 1,154, बील–122)।

उस समय की शिक्षा पालि भाषा मे दी जाती थी जो जन साधारण की भाषा थी। अधि ाकतर पाठ्य पुस्तके सूत्र शैली मे या पद्य मे थी जिससे कि विद्यार्थी उन्हे सरलता से कठस्थ कर सके।

बौद्ध जाति प्रथा के विरूद्ध थे अत उनकी शिक्षा सस्थाओ मे सभी जातियो के

विद्यार्थी प्रविष्ट होते थे। इसलिए जाति प्रथा का बौद्ध शिक्षा सस्थाओ मे शिक्षा के प्रसार पर विशेष प्रभाव नही पडा।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि बौद्ध काल मे प्रयाग एव कौशाम्बी मे शिक्षा का प्रचार–प्रसार बौद्ध मठो एव बिहारो (घोषिता राम जैसे) तक सीमित था। प्रयाग मे प्राचीन शिक्षा जो चल रही थी उन्ही का विकास होता रहा, किसी अन्य नये शिक्षा केन्द्र या व्यवस्था के विषय मे कोई ऐतिहासिक उल्लेख प्राप्त नही होता है। अर्थात् गुरूकुल व्यवस्था एव सीमित रूप मे बौद्ध मठ एव बिहारो तक शिक्षा सीमित थी।

4 3 हिन्दू काल मे शिक्षा (लगभग 500 ई0 पू0 से 1200 ई0 तक)

उच्च शिक्षा के लिए सामूहिक सस्थाओ का उदय इस काल की प्रमुख विशेषता है। आठवी ई0 से हिन्दू मन्दिरो मे महाविद्यालय स्तर की शिक्षा का प्रबन्ध होता था। इनमे अनेक अध्यापक सैकडो विद्यार्थियो को नि शुल्क शिक्षा देते थे। विद्यार्थियो से रहने और खाने का कोई शुल्क नही लिया जाता था। इन महाविद्यालयो के पुस्तकालयो मे अनेक हस्तलिखित पुस्तको के सग्रह विद्यमान थे।

इस काल के साहित्य और अभिलेखो से ज्ञात होता है कि ब्राह्मण विद्यार्थी वेद, शास्त्र और छ दर्शन पढते थे। वे तर्क शास्त्र, पुराणो, नाटको, स्मृतियो और काव्यग्रथो का भी अध ययन करते थे। व्याकरण, साहित्य और तर्क शास्त्र की शिक्षा पर आवश्यकता से अधिक जोर दिया जाता था (इन्सिग रेकर्ड)। इस काल मे विद्यार्थियो को प्रारम्भिक शिक्षा गाव मे ही अध्यापको द्वारा दी जाती थी जिसमे लिखने पढने एव अकगणित आदि की शिक्षा दी जाती थी। इसके लिए गाव वाले उसके निर्वाह के लिए अन्न, वस्त्र आदि देते थे।उच्च शिक्षा के केन्द्र कुछ सीमित केन्द्रो पर विकसित हुए जैसे– नालन्दा, बल्लभी, विक्रमशिला, कौशाम्बी मे कुछ सीमा तक घोषिताराम बौद्ध बिहार आदि मे जो शिक्षा सस्थाए स्थापित की गई वे भी नगरो से दूर आश्रमो मे स्थित थे जिनमे सदा ही उच्च आदर्शों का अनुसरण करने की शिक्षा दी जाती थी। उच्च शिक्षा प्राप्त प्रखर बुद्धि वाले विद्यार्थी छोटी कक्षाओ के विद्यार्थियो को पढा कर शिक्षा देने का अभीष्ट प्रशिक्षण प्राप्त कर लेते थे।

हिन्दू काल तक प्रयाग के कुछ मन्दिरो एव पाठशालाओ मे कुछ प्रारम्भिक शिक्षा देना प्रारम्भ हो गया था। हिन्दू काल मे भी गुरूकुल व्यवस्था कायम थी।

4 4 मध्यकालीन शिक्षा (लगभग 1200 ई0 से 1700 ई0 तक)

मध्यकाल मे पूर्व विकसित गुरूकुल व्यवस्था का अपकर्ष होता गया और ये निजी पाठशालाये बन कर रह गई। जो विद्यालय किसी मन्दिर से सम्बद्ध होते थे उनमे प्रारम्भिक सस्कृत एव व्याकरण, ज्योतिष, गणित आदि विषयो की शिक्षा के साथ–साथ विद्यार्थियो को पौरोहित्यकी शिक्षा भी दी जाती थी (एल0 राइस 1882)। ऐसे प्राथमिक और असाम्प्रदायिक विद्यालय भी खुल गये थे जिनमे पढना, लिखना और साधारण गणित की शिक्षा दी जाती थी। जब मुसलमान इस सम्भाग मे बस गये तो उन्होने अपने मकतब और मदरसे स्थापित किये जिनमे अधिकतर इस्लामी शिक्षा दी जाती थी।

प्रयाग मे अग्रेजो के शासन के पूर्व बालक अपनी शिक्षा (जो मुख्यत धार्मिक होती थी) स्थानीय विद्यालयो मे प्राप्त करते थे जो हिन्दू पाठशालाओ एव मुसलमान मकतबो के रूप मे थी। ये विद्यालय निजी होते थे और निजी तौर पर चलाए जाते थे, उन्हे सरकार से कोई आर्थिक सहायता नही प्राप्त होती थी। व्यवसायी वर्ग के लोगो के लिए वाणिज्यिक किस्म के कुछ 'बाजार' स्कूल थे जिनमे वेतन भोगी अध्यापको द्वारा मुडिया और कैथी लिपिया सिखाई जाती थी और एक प्रकार की व्यावहारिक गणित की शिक्षा दी जाती थी। (जिला गजेटियर इलाहाबाद 1986)। विद्यार्थी छोटी कक्षाओ के विद्यार्थियो को पढा कर शिक्षा देने का अभीष्ट प्रशिक्षण प्राप्त कर लेते थे।

इस काल तक प्रयाग के कुछ मन्दिरो एव पाठशालाओ मे कुछ प्रारम्भिक शिक्षा देना प्रारम्भ हो गया था।

4.5 आधुनिक कालीन शिक्षा :

अग्रेजो के शासन मे आने के पश्चात् प्रयाग मे धीरे–2 सरकारी विद्यालयो का खुलना प्रारम्भ हो गया। सन 1825 मे इलाहाबाद मे निजी प्रयासो से एक स्कूल की स्थापना हुई। जनवरी 1826 मे इसकी फारसी तथा हिन्दी कक्षाओ मे क्रमश 31 और 17 विद्यार्थी थे। बाद मे इस सस्था को सार्वजनिक शिक्षण की सामान्य समिति द्वारा नियमित अनुदान स्वीकृत किया गया था (धर्म भानु 1956)। सन् 1832 मे ईस्ट इडिया कम्पनी के कार्य से सम्बन्धित सेलेक्ट कमेटी (प्रवर समिति) ने यह पाया कि इलाहाबाद मे प्रत्येक 300 बच्चो पर एक स्कूल है (रिपोर्ट 1832)। सन 1836 मे गवर्नमेट ऐग्लो वर्नाक्यूलर स्कूल की स्थापना हुई किन्तु इसे 1846 मे अमेरिकन मिशन को सौंप दिया गया जिसने अगले दो वर्षों मे

इलाहाबाद नगर मे बालिकाओ के लिए एक विद्यालय तथा सात 'बाजार' विद्यालय खुले। 1846 मे तहसीलो के मुख्यालयो पर एक–एक तहसीली स्कूल खोला गया। 1857 के स्वतत्रता सग्राम से सम्बन्धित विद्रोह के फलस्वरूप शिक्षा के क्षेत्र मे अव्यवस्था उत्पन्न हो गयी किनतु 1859 मे तहसीली स्कूल पुन कार्यरत हो गये। 1861 मे इलाहाबाद नगर मे अन्य शिक्षा सस्थाये खोली गयी और बालिकाओ के लिए पहला सरकारी स्कूल 1863 मे खोला गया था। जिला बोर्ड तथा म्युनिसिपल बोर्ड द्वारा अनुरक्षित विद्यालयो के अतिरिक्त वैयक्तिक अभिदाताओ द्वारा अनुरक्षित तथा सरकार द्वारा सहायता प्राप्त बहुसख्यक गैर सरकारी सस्थाओ की स्थापना हुई। वर्ष 1908 तक चायल, दारा नगर, करारी, सोराव, जमुनीपुर, फूलपुर, हडिया, करछना और सिरसा मे मिडिल वर्ना क्यूलर स्कूलो की व्यवस्था करने के अतिरिक्त जिला बोर्ड 51 उच्च प्राथमिक विद्यालयो, 66 निम्न प्राथमिक विद्यालयो तथा 13 बालिका विद्यालयो और 109 अनुदान प्राप्त स्वदेशी विद्यालयो का जिनमे तीन बालिका विद्यालय थे, अनुरक्षण करता था। फिर भी गैर सहायता प्राप्त ऐसे अनेक देशी विद्यालय थे जिनमे मुस्लिम विद्यालयो मे कुरान पढाई जाती थी तथा हिन्दुओ के विद्यालयो मे सस्कृत का प्रारम्भिक ज्ञान कराया जाता था (जिला गजेटियर 1986)। वर्तमान समय मे वर्ष 1999–2000 मे प्रयाग (जनपद– इलाहाबाद) मे 1922 जूनियर बेसिक स्कूल, 586 सीनियर बेसिक स्कूल सेवारत हैं। इस समय 230 हाईस्कूल एव इटरमीडिएट कालेज एव 1 विश्वविद्यालय तथा 16 डिग्री कालेज शिक्षा प्रदान करने हेतु उपलब्ध हैं। जनपद मे सार्वजनिक पुस्तकालयो की सख्या 242 है। वर्ष 2000–2001 तक एक इजीनियरिंग कालेज सहित 6 प्राविधिक शिक्षा सस्थान एव 6 शिक्षक प्रशिक्षण सस्थान भी सेवारत हैं। जनपद मे एक राजकीय सेकेण्ड्री प्राविधिक शिक्षा विद्यालय है (सामाजिक आर्थिक समीक्षा जनपद इलाहाबाद 2000–2001)। वर्तमान मे नगर मे राजर्षिटण्डन मुक्त विश्वविद्यालय भी खुला है जिसमे नगर और सुदूर क्षेत्र के छात्र शिक्षा ग्रहण करते हैं।

इसके साथ ही भारतीय सूचना एव प्रद्यौगिकी सस्थान भी कार्यरत है। यहा सचार क्रान्ति से सम्बन्धित प्रद्यौगिकी का अध्ययन कराया जाता है। 2001 की वर्तमान स्थिति मे नगर मे 173 प्राइमरी स्कूल, 28 जूनियर हाईस्कूल, 55 हायर सेकेन्ड्री/इण्टर कालेज तथा 13 डिग्री कालेज है। इसके अतिरिक्त इलाहाबाद वि0वि0, मेडिकल कालेज, इजीनियरिंग कालेज, पालीटेक्निक, औद्योगिक प्रशिक्षण सस्थान, कृषि प्रशिक्षण महाविद्यालय भी तकनीकी

एव उच्च शिक्षा हेतु उपलब्ध है। नगर के डिग्री कालेजो मे लगभग 16000 विद्यार्थी तथा विश्वविद्यालय मे 10000 से अधिक विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते है।

4.51 साक्षरता का प्रसार :

1881 मे साक्षर पुरूषो का प्रतिशत 5 4 था और साक्षर महिलाओ का प्रतिशत 0 26 था। 1891 मे साक्षर पुरूषो एव महिलाओ का प्रतिशत बढकर क्रमश 6 1 और 0 36 हो गया तथा 1901 मे ऐसे पुरूषो का प्रतिशत बढकर 7 96 हो गया और महिलाओ का प्रतिशत 0 56 हो गया। अगले दशक मे 1911 की जनगणना के आकडो से ज्ञात होता है कि इस जिले मे साक्षर पुरूषो का प्रतिशत 7 0 था और महिलाओ का प्रतिशत 0 7 था। सन् 1921 मे पुरूषो और महिलाओ के मध्य साक्षरता का प्रतिशत क्रमश 7 2 और 1 2 था।सन् 1931 मे 10 2 प्रतिशत पुरूष और 1 7 प्रतिशत महिलाए साक्षर थी। सन् 1951 मे यह प्रतिशत बढकर पुरूष 21 2 और महिलाए 5 2 हो गया। सन् 1961 मे यह 30 44 पुरूषो और महिलाओ का 7 87 था। जनपद मे वर्ष 1981 की जनगणना के अनुसार 28 0 प्रतिशत जनसख्या साक्षर थी। इनमे पुरूषो की साक्षरता 41 5 तथा स्त्रियो की 15 8 थी। 1991 के अनुसार जनपद की साक्षरता 42 7 प्रतिशत है जबकि ग्रामीण एव नगरीय साक्षरता क्रमश 35 0 प्रतिशत एव 69 8 प्रतिशत है। जनपद मे पुरूषो की साक्षरता 59 1 प्रतिशत एव स्त्रियो की साक्षरता 23 5 प्रतिशत है। 2001की जनगणना के अनुसार जनपद की साक्षरता 62 89 प्रतिशत है।

इसमे पुरूषो की साक्षरता 77 13 प्रतिशत तथा स्त्रियो की साक्षरता 46 61 है। इससे स्पष्ट है कि जनपद मे साक्षरता का प्रतिशत तीव्रगति से बढा है (सेन्शस आफ इण्डिया 2001)। साक्षरता दर के बढने का मुख्य कारण स्त्री साक्षरता का बढना, लोगो की जागरूकता और सरकारी योजनाओ का क्रियान्वयन है।

4.52 सामान्य शिक्षा :

वर्तमान समय मे प्रयाग (इलाहाबाद) सम्पूर्ण भारत मे एक महत्वपूर्ण शिक्षा का केन्द्र बन गया है, जहा प्रारम्भिक शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा, प्राविधिक शिक्षा, चिकित्सकीय शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण आदि की शिक्षा दी जाती है। शिक्षा की विभिन्न वर्ग समूहो मे क्या स्थिति है उसका विवरण निम्नाकित है –

प्रि–जूनियर बेसिक शिक्षा .

जब बालक किसी विद्यालय के माध्यम से अपना विद्याध्ययन आरम्भ करता है तो यह ही उसकी प्राथमिक शिक्षा होती है। इसका विद्यार्थी के जीवन मे विशेष महत्व है क्योकि यह शिक्षा का आधार है जिस पर उच्च शिक्षा का भवन निर्मित होता है। भारतीय सविधान मे 14 वर्ष तक के सभी बालको व बालिकाओ के लिए प्राथमिक शिक्षा का दायित्व राज्य सरकारो पर है। उत्तर प्रदेश मे प्राथमिक शिक्षा मुख्य रूप से स्थानीय निकायो, जिला परिषदो और नगर निकायो के हाथ मे है, जो राज्यानुदानित है (विकास पत्रिका, इलाहाबाद 1998 पृष्ठ– 26)। प्रि–जूनियर बेसिक शिक्षा, जो 6 वर्ष तक की आयु वाले बच्चो को दी जाती है, सन् 1948 मे प्रारम्भ हुई और सभवत प्रयाग मे यह सन् 1958 मे इलाहाबाद नगर मे चालू की गयी। एक गवर्नमेट नर्सरी स्कूल के अतिरिक्त इस प्रकार की अनेक निजी सस्थाये (अधिकाशत मान्टेसरी अथवा किन्डर गार्टन), 2 नर्सरी स्कूल (नगर महापालिका द्वारा परिचलित) हैं। ये आदर्श शिशु सदन, लाजपत शिशु बिहार, जवाहर बी0 नर्सरी स्कूल, मान्टेसरी बाल भवन और प्रयाग बालाजी बाडी विद्यालय है। ये सभी विद्यालय सरकार द्वारा सहायता प्राप्त है। इन विद्यालयो मे लगभग 424 बालक और 626 बालिकाये है। नगर मे प्रति 3760 की जनसख्या पर एक प्राइमरी स्कूल है।

जूनियर और सीनियर बेसिक शिक्षा

बेसिक शिक्षा (जिसे वर्धा शिक्षा योजना भी कहा जाता है) पद्धति को सरकार ने कुछ परिष्कारो के साथ सन् 1939 मे अपनाया था। प्रयाग मे (राज्य के अन्य स्थानो की भाति) बेसिक शिक्षा का पाठ्यक्रम आठ वर्ष का है तथा कक्षा एक से पाच तक की कक्षाए जूनियर बेसिक स्कूल मे तथा कक्षा छ से आठ तक की कक्षाए सीनियर बेसिक स्कूल मे आती है। इस सोपान मे शिक्षा का नियन्त्रण स्थानीय निकायो के अपने–अपने क्षेत्राधिकार के अधीन है अर्थात् इलाहाबाद नगर मे नगर महापालिका तथा छावनी क्षेत्र मे छावनी बोर्ड के अधीन है।

इलाहाबाद नगर पालिका बोर्ड अपने अधिकारिता मे आने वाले क्षेत्रो मे 1961 मे बालिकाओ के लिए अनिवार्य प्राइमरी शिक्षा लागू कर दिया था। वर्ष 1963–64 मे बालको के 131 जूनियर स्कूल तथा बालिकाओ के 105 जूनियर बेसिक स्कूल थे। 1964–65 मे बालको के 6 सीनियर बेसिक स्कूल थे जिनमे 1381 छात्र थे और बालिकाओ के 9 स्कूल

थे जिनमे 1003 छात्राये थी। छावनी क्षेत्र मे शिक्षा की व्यवस्था छावनी बोर्ड द्वारा की जाती है। यह बोर्ड के अधिशासी अधिकारी के प्रभाराधीन है। यहा बालको का एक जूनियर बेसिक स्कूल है और दो स्कूल बालिकाओ के है। बालको का एक सीनियर बेसिक स्कूल भी है जिसमे 299 छात्र है। वर्तमान समय मे कैन्ट क्षेत्र जो ममफोर्ड गज और तेलियरगज के मध्य स्थिति है इसमे एक केन्द्रीय विद्यालय भी है जहा कक्षा एक से बारह तक की शिक्षा दी जाती है। नगर मे 28 जूनियर हाईस्कूल है जो प्रति 23,220 की जनसख्या पर एक है (मानचित्र स० 4 1)।

माध्यमिक शिक्षा

माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक शिक्षा के पश्चात् तथा उच्च शिक्षा के पूर्व होती है अत यह प्राथमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा को जोडने की कडी है। यह विद्यार्थी के किशोरावस्था से सम्बन्धित होने के कारण उसके शारीरिक एव मानसिक परिवर्तन को तीव्र गति से प्रभावित करती है तथा शिक्षण क्षेत्र की सामाजिक, आर्थिक , धार्मिक और सास्कृतिक क्षमता को प्रदर्शित करती है। इस तरह माध्यमिक शिक्षा उच्च शिक्षा के लिए आधारशिला का कार्य करती है।

प्रयाग मे भी अन्य भागो की तरह पहले माध्यमिक शिक्षा जिला स्कूलो मे दी जाती थी जिनका अनुरक्षण सरकार द्वारा किया जाता था। वर्ष 1921 मे बोर्ड आफ हाईस्कूल एण्ड इण्टरमीडिएट एजूकेशन, यू0पी0 की स्थापना हो जाने पर हाईस्कूल की परीक्षा कक्षा 10 के अन्त मे तथा इण्टरमीडिएट की परीक्षा कक्षा 12 के अन्त मे होने लगी। प्रयाग मे वर्तमान समय मे कुल माध्यमिक विद्यालयो की सख्या जो सरकारी मान्यता प्राप्त है, 55 है। इनमे बालको के इण्टरमीडिएट कालेजो की सख्या 22 है। उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जिन्हे हायर सेकेन्ड्री स्कूल के नाम से भी जाना जाता है, की सख्या 14 है। इनमे कक्षा 6 से 10 तक की शिक्षा दी जाती है। नगर मे प्रति 11820 की जनसख्या पर एक माध्यमिक विद्यालय है। नगर मे सचालित इन सस्थाओ का प्रबन्ध प्राइवेट ऐजेन्सियो द्वारा किया जाता है और उन्हे सरकार से वित्तीय सहायता मिलती है। नगर मे एक गवर्नमेन्ट बालक तथा एक बालिका इण्टर कालेज भी है जो पूर्णत राज्य सरकार के अधीन है। नारी शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य सरकार ने 1 जनवरी 1965 से बालिकाओ की शिक्षा को इण्टरमीडिएट स्तर तक नि शुल्क कर दिया है। इनमे से नगर के सचालित कुछ प्रमुख

PRAYAG (ALLAHABAD)
DISTRIBUTION OF EDUCATIONAL INSTITUTIONS
N
University of Allahabad
Degree College
H S School For Boys
" " " " Girls
English School
Training College
Library
Cinema
Hospital
Park
GANGA RIVER
UA
FORT
YAMUNA RIVER
1 0 1 2
km
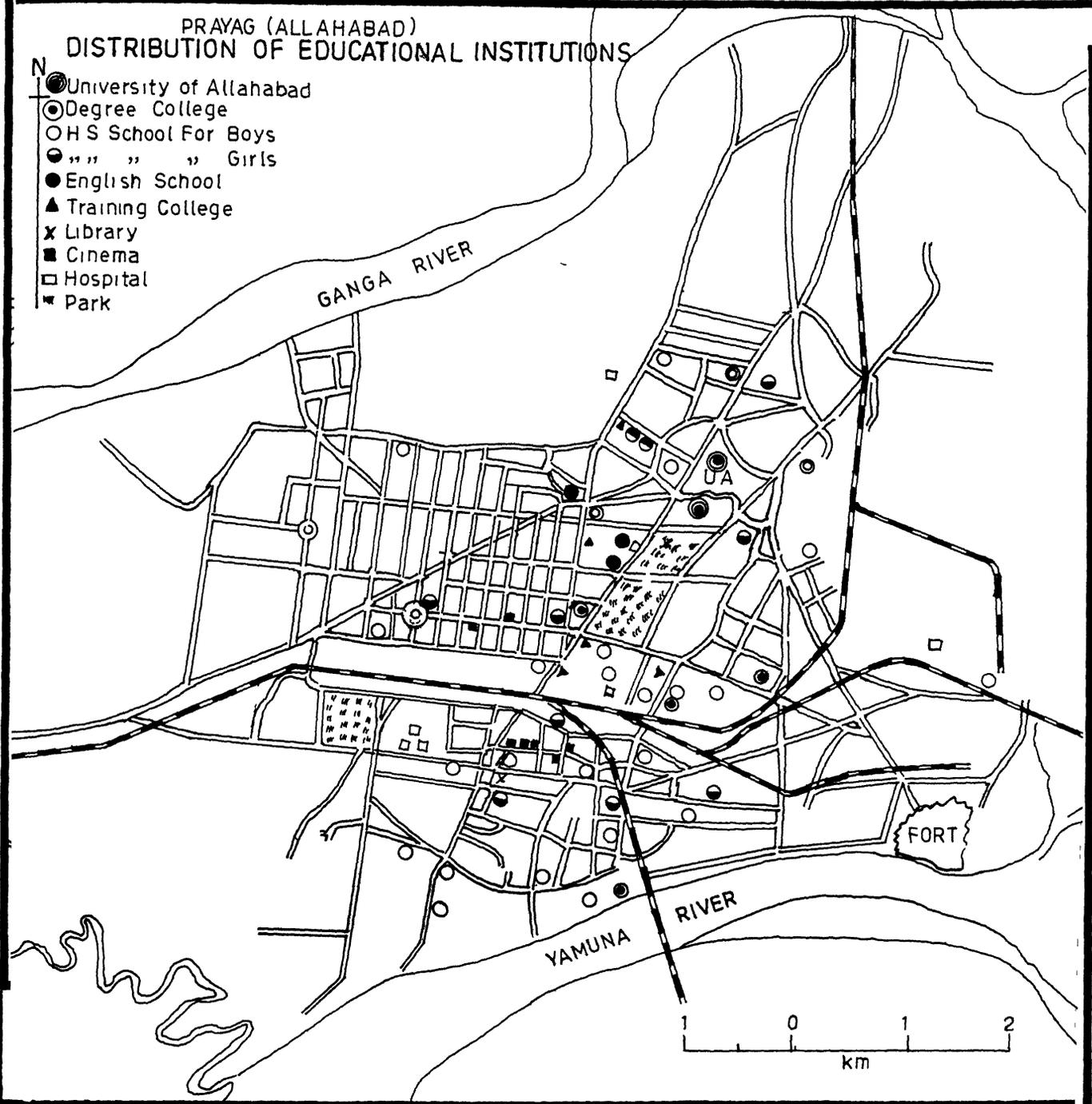
Fig 4.1

विद्यालयो का सक्षिप्त विवरण निम्न है –

महिला सेवा सदन इण्टरमीडिएट कालेज, इलाहाबाद की स्थापना जुलाई 1930 मे की गयी थी और इसकी अपनी इमारत है। इसमे एक प्रशिक्षण अनुभाग है। यह कालेज बालिकाओ को सामाजिक कार्यकर्ता के रूप मे तथा बेसिक और मिडिल स्कूलो के लिए अध्यापिकाओ के रूप मे प्रशिक्षित करता है तथा उन्हे ऐसी कला और शिल्प शिक्षा प्रदान करता है कि वे शिक्षा प्राप्त करने के साथ–साथ अपनी जीविका भी कमा सके। वर्ष 1962 से यह महाविद्यालय छात्राओ को प्रयाग महिला विद्यापीठ तथा बी0ए0 की परीक्षाओ के लिए भी तैयार करता है।

वर्ष 1955 मे महिला ग्राम विद्यापीठ, प्रयाग की स्थापना हुई जिसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रो की बालिकाओ और महिलाओ मे शिक्षा का प्रसार करना तथा माध्यमिक और उच्च शिक्षा को ग्रामीण स्वरूप प्रदान करना है।इस हेतु इस विद्यापीठ मे ग्रामीण विज्ञान को अनिवार्य विषय बना दिया गया है। यह विद्यापीठ पुरानी मिडिल और हाईस्कूल, इण्टरमीडिएट, बी0ए0 और एम0ए0 की परीक्षाओ के अनुरूप क्रमश ग्राम प्रवेशिका, ग्राम विनोदिनी, महाविदुषी, भारती और आचार्य की परीक्षाओ का सचालन करता है। इन परीक्षाओ मे प्रतिवर्ष एक हजार से अधिक छात्राए सम्मिलित होती है। महिला सेवा सदन इस विद्यापीठ की एक सहबद्ध सस्था है।

नगर का सबसे पुराना स्कूल इडियन गर्ल्स हायर सेकेन्डरी स्कूल, इलाहाबाद है जिसकी स्थापना सन 1882 मे हुई थी। सन् 1930 तक यहा नि शुल्क शिक्षा दी जाती थी परन्तु बाद मे शुल्क लेना प्रारम्भ कर दिया गया। इसका प्रबन्ध इलाहाबाद इडियन गर्ल्स सोसाइटी नामक एक रजिस्टर्ड सोसाइटी द्वारा किया जाता है। वर्ष 1947 मे यह हायर सेकेन्ड्री स्कूल हो गया। वर्तमान मे यहा 1000 से अधिक छात्राए अध्ययनरत है। (मानचित्र स० 4 1)

नगर के अन्य प्रमुख विद्यालयो का सक्षिप्त विवरण सूची के रूप मे दिया गया है–

नगर के कुछ प्रमुख माध्यमिक विद्यालयो का विवरण

	विद्यालय कानाम	स्थापना वर्ष/इ0 की मान्यता वर्ष	छात्रो की सख्या एव विषय
1	अग्रवाल विद्यालय इण्टरमीडिएट कालेज, इलाहाबाद	1910/1955	1250 साहित्य, विज्ञान वाणिज्य
2	कर्नलगज इण्टरमीडिएट कालेज, इलाहाबाद	1932/1950	1400 से अधिक, साहित्य, विज्ञान कृषि
3	डी0ए0वी0 इण्टरमीडिएट कालेज, इलाहाबाद	1914/1954	1300 से अधिक साहित्य, विज्ञान वाणिज्य
4	सारस्वत खत्री पाठशाला इण्टरमीडिएट कालेज, इलाहाबाद	1921/1955	1200 साहित्य, विज्ञान
5	यादगार–ए–हुसैनी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	1942/1948	900 साहित्य, विज्ञान वाणिज्य, धार्मिक (इस्लामी शिक्षा)
6	हमीदिया गर्ल्स इण्टरमीडिएट कालेज, इलाहाबाद	1934/1951	1100 साहित्य, विज्ञान
7	ऐगलो बगाली इण्टरमीडिएट कालेज, इलाहाबाद	1875/1926	1500 साहित्य, विज्ञान कृषि
8	सिटी ऐगलो वर्नाक्यूलर इण्टर कालेज, इलाहाबाद	1869/1886	3000 साहित्य, विज्ञान वाणिज्य, कृषि, कम्प्यूटर
9	कैलाशनाथ काटजू हायर सेकेन्ड्री स्कूल, इलाहाबाद	1931/1965	1000 साहित्य, विज्ञान
10	कास्थवेट गर्ल्स कालेज इलाहाबाद	1895/1921	1500 साहित्य, विज्ञान वाणिज्य, कम्प्यूटर
11	सेवा समिति विद्यामन्दिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	1910/1920	800 साहित्य, विज्ञान

12	द्वारका प्रसाद बालिका इण्टरमीडिएट कालेज, इलाहाबाद	1931/1942	1300 साहित्य, विज्ञान वाणिज्य, कम्प्यूटर
13	राजकीय इण्टरमीडिएट कालेज, इलाहाबाद	1836/1927	1500 साहित्य, विज्ञान वाणिज्य, कृषि, कम्प्यूटर
14	आर्य कन्या इण्टरमीडिएट कालेज, इलाहाबाद	1905/1950	1604 साहित्य, विज्ञान वाणिज्य
15	हैहय क्षेत्रीय इण्टरमीडिएट कालेज, इलाहाबाद	1947/1956	900 साहित्य, विज्ञान
16	गौरी पाठशाला इण्टरमीडिएट कालेज, इलाहाबाद	1904/1950	1040 साहित्य, वाणिज्य
17	अग्रसेन इण्टरमीडिएट कालेज, इलाहाबाद	1933/1951	1800 साहित्य, विज्ञान वाणिज्य
18	हिन्दू महिला विद्यालय इण्टरमीडिएट कालेज, इलाहाबाद	1936/1950	1100 साहित्य, विज्ञान
19	केसरवानी वैश्य पाठशाला इण्टरमीडिएट कालेज, इलाहाबाद	1912/1954	1027 साहित्य, विज्ञान वाणिज्य
20	राधारमन इण्टरमीडिएट कालेज दारागज, इलाहाबाद	1889/1946	1200 साहित्य, विज्ञान वाणिज्य
21	सरयूपारीण इण्टरमीडिएट कालेज, इलाहाबाद	1934/1953	800 साहित्य, विज्ञान
22	मेरी वाना मकर गर्ल्स हायर सकेन्ड्री स्कूल, इलाहाबाद	1885/1952	800 साहित्य, विज्ञान कम्प्यूटर
23	कुलभाष्कर आश्रम कृषि कालेज, इलाहाबाद	1930	700 साहित्य, कृषि
24	यूइग क्रिश्चियन इटरमीडिएट कालेज, इलाहाबाद	1923/1960	1260 साहित्य, विज्ञान वाणिज्य

25	जगत तारन बालिका इण्टर कालेज, इलाहाबाद	1930/1950	1100 साहित्य, विज्ञान वाणिज्य
26	ईश्वरशरण इण्टरमीडिएट कालेज, इलाहाबाद	1933/1955	1000 साहित्य, विज्ञान वाणिज्य
27	काली प्रसाद इण्टरमीडिएट कालेज, इलाहाबाद	1873/1910	1800 साहित्य, विज्ञान कृषि, वाणिज्य
28	राजकीय बालिका इण्टरमीडिएट कालेज, इलाहाबाद	1946/1951	900 साहित्य, विज्ञान

उपरोक्त के अतिरिक्त भी सी0बी0एस0सी0 एव आई0एस0सी0 बोर्ड के कई बालक/बालिका विद्यालय सचालित हैं जहा प्राथमिक से इण्टर तक की कक्षाए चलती हैं।

उच्च शिक्षा :

महाविद्यालय/विश्वविद्यालय मे प्राप्त की गयी शिक्षा को ही उच्च शिक्षा के रूप मे जाना जाता है। इस स्तर की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियो के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। इस शिक्षा का अन्य उद्देश्य उच्च शिक्षा हेतु विद्यार्थियो को वाणिज्य, कृषि, उद्योग, राजनीति और प्रशासन सम्बन्धी प्रशिक्षण देना है। इन उद्देश्यो की आपूर्ति करने पर ही इस स्तर की शिक्षा सफल मानी जाती है।

प्रयाग मे पहले उच्च शिक्षा सस्थाओ का सबन्ध कलकत्ता यूनिवर्सिटी से होता था। यहा राज्य का सर्वप्रथम विश्वविद्यालय इलाहाबाद विश्वविद्यालय 1887 मे स्थापित किया गया, जो एक्ट 18 के अधीन एक परीक्षा निकाय के रूप मे स्थापित किया गया था। 1914 तक इस विश्वविद्यालय मे कानून के विद्यालय के अतिरिक्त कोई अन्य शिक्षण एव शिक्षक वर्ग नही था। 1922 मे इसको ऐकिक शैक्षिक तथा आवासीय सस्था के रूप मे मान्यता दी गयी। वर्तमान समय मे इस विश्वविद्यालय मे कला, विज्ञान, वाणिज्य, कानून, चिकित्सा तथा इजीनियरिंग के सकाय है। 1955 मे विश्वविद्यालय कालेज, सहयुक्त कालेज तथा सघटक कालेज की श्रेणियो वाले कालेज खोले गये (जिला गजेटियर 1986)। इस समय प्रयाग मे विश्वविद्यालय के अतिरिक्त 14 महाविद्यालय हैं। इन महाविद्यालयो मे 5 कानपुर विश्वविद्यालय द्वारा शासित या अधीन है (उच्च शिक्षा की प्रगति 1993)। 8 इलाहाबाद विश्वविद्यालय के

अधीन है एव 1 राजकीय महाविद्यालय है।

वर्तमान मे इलाहाबाद नगर मे 15 महाविद्यलाय एव एक विश्वविद्यालय कार्यरत है। 2001 की जनगणना से नगर मे प्रति 65625 जनसख्या पर एक महाविद्यालय उपलब्ध है। प्रयाग विश्वविद्यालय पूर्व के कैम्ब्रिज नाम से विख्यात है। वर्तमान समय मे विश्वविद्यालय स्वय 10000 से अधिक छात्रो को शिक्षा देने का कार्य कर रहा है।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अधीन कालेज

इलाहाबाद विश्वविद्यालय पूर्णत आवासीय विश्वविद्यालय हैं। विश्वविद्यालय मे विभिन्न विषयो की शिक्षा देने के साथ–साथ अपने अधीन 9 महाविद्यालयो के सचालन का कार्य भी करता है। इन महाविद्यालयो मे निम्न विषयो की शिक्षा दी जाती है–

	विद्यालय कानाम	स्थापना वर्ष/	विषय
1	चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय	1950	स्नातक–कला, विधि, विज्ञान, वाणिज्य
2	इलाहाबाद डिग्री कालेज		स्नातक–कला, विज्ञान, विधि वाणिज्य
3	ईश्वर शरण महाविद्यालय	1955	स्नातक–कला, वाणिज्य
4	एस0एस0खन्ना महिला महाविद्यालय		स्नातक–कला, वाणिज्य
5	हमीदिया महिला महाविद्यालय		स्नातक–कला,
6	जगत तारन महिला महाविद्यालय	1960	स्नातक–कला, वाणिज्य
7	आर्य कन्या महाविद्यालय		स्नातक–कला,
8	राजर्षि टण्डन महिला महाविद्यालय		स्नातक–कला,
9	इलाहाबाद एग्रीकल्चरल इन्स्टीट्यूट,नैनी,इलाहाबाद		स्नातकोत्तर–विज्ञान, कृषि
	स्वायत्तशासी सस्था		
10	इविग क्रिश्चियन कालेज	1902	स्नातक–कला, विज्ञान

राजकीय महाविद्यालय :

प्रयाग मे दो राजकीय महाविद्यालय हैं, जो 1990 के बाद खोले गये।

11	हेमवती नन्दन बहुगुणा राजकीय महाविद्यालय नैनी, इलाहाबाद	1993	स्नातक–कला, विज्ञान
12	श्यामा प्रसाद मुकर्जी महाविद्यालय फाफामऊ, इलाहाबाद	1997	स्नातक–कला, विज्ञान

कानपुर विश्वविद्यालय के अधीन महाविद्यालय

13	कुल भाष्कर स्नातकोत्तर महाविद्यालय	1930	स्नातकोत्तर–विज्ञान कृषि
14	महिला सेवा सदन डिग्री कालेज		स्नातक–कला
15	प्रयाग महिला विद्यापीठ महाविद्यालय		स्नातक–कला

इन महाविद्यालयो मे तीन ऐसे महाविद्यालय है जहा 3000 से अधिक छात्र सख्या है। इनमे सी0एम0पी0 महाविद्यालय, ईविग क्रिश्चियन कालेज, इलाहाबाद डिग्री कालेज का नाम मुख्य है। शेष अन्य किसी महाविद्यालय मे छात्रो की सख्या 400 से कम नही है। वर्तमान समय मे इविग क्रिश्चियन कालेज स्वशासित हो गया है, यद्यपि अभी तक छात्रो को इलाहाबाद विश्वविद्यालय की ही डिग्री मिलती है। लेकिन वह पूर्णत स्वाधीन रूप से कार्य करता है। सूचना प्रद्यौगिकी की शिक्षा एव इसके प्रसार का प्रभाव इलाहाबाद वि0वि0 मे एव राष्ट्रीय सूचना केन्द्र के रूप मे दृष्टिगत हो रहा है। इस प्रकार एक प्रमुख सूचना प्रद्यौगिकी केन्द्र के रूप मे भी विकसित हो रहा है। इस प्रकार प्रयाग वर्तमान समय मे सम्पूर्ण भारत मे न केवल उच्च शिक्षा के लिए विख्यात है बल्कि भारतीय प्रशासनिक सेवाओ एव प्रान्तीय प्रशासनिक सेवाओ मे सर्वाधिक छात्रो को प्रदान करने वाले केन्द्र के रूप मे भी सर्वविख्यात है (मानचित्र स० 4 1)।

4 53 व्यावसायिक तथा प्राविधिक शिक्षा :

प्रयाग मे वर्तमान समय मे अनेक व्यावसायिक तथा प्राविधिक शिक्षण सस्थाए है जिनमे शिक्षण एव प्रशिक्षण का कार्य सम्पादित किया जाता है। प्रमुख सस्थाए निम्न है–

विद्यालय कानाम	स्थापना वर्ष	विषय
1 महिला शिल्प भवन, इलाहाबाद	1938	डिप्लोमा पाठ्यक्रम
2 राजकीय काष्ठ कला विद्यालय, इलाहाबाद		(प्राविधिक शिक्षा, उ0प्र0 कानपुर के नियत्रण के अधीन)
3 राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण सस्थान, इलाहाबाद	1952	प्राविधिक प्रशिक्षण
4 इलाहाबाद पालीटेक्निक, इलाहाबाद	1955	
7 नार्दन रीजनल स्कूल आफ प्रिन्टिग टेक्नालाजी, इलाहाबाद	1957	
8 गवर्नमेन्ट सेकन्डरी टेक्निकल स्कूल, इलाहाबाद	1959	
9 औद्योगिक प्रशिक्षण सस्थान नैनी	1962	प्राविधिक व्यवसायो मे प्रशिक्षण
10 राजकीय दीक्षा विद्यालय, इलाहाबाद	1959	प्रशिक्षण विद्यालय
11 महिला सेवा सदन जूनियर ट्रेनिग कालेज	1930	प्रशिक्षण विद्यालय
12 गवर्नमेन्ट सेन्ट्रल पैडागाजिकल इन्स्टीट्यूट, इलाहाबाद	1948	
13 मोतीलाल नेहरू मेडिकल कालेज इलाहाबाद	1961	चिकितसीय शिक्षा इ0वि0वि0 से सम्बद्ध
14 मोतीलाल नेहरू रीजनल इजीनियरिंग कालेज, इलाहाबाद	1961	इ0वि0वि0 से सम्बद्ध
15 यूनानी मेडिकल कालेज, इलाहाबाद	1904	
16 होम्योपैथिक मेडिकल कालेज इलाहाबाद	1955	
17 इलाहाबाद एग्रीकल्चरल इन्स्टीट्यूट नैनी	1910	कृषि से सम्बन्धित डिप्लोमा एव शोध पाठ्यक्रम

उपरोक्त सस्थाओ के अतिरिक्त अनेक ऐसी छोटी सस्थाए है जो विविध प्रकार के लघु एव कुटीर उद्योगो से सम्बन्धित प्रशिक्षण प्रदान करती है।

4.54 प्राच्य शिक्षा :

सस्कृत

प्रयाग मे सस्कृत की चार पाठशालाये है जो सस्कृत और अन्य विषयो मे शिक्षा प्रदान करती है। प्रयाग के सर्वप्रथम सस्कृत पाठशाला धर्म ज्ञानोपदेश सस्कृत विद्यालय, इलाहाबाद है जो 1810 मे स्थापित हुआ। दूसरा श्री किशोरी लाल बेनी माधोसस्कृत पाठशाला इलाहाबाद है जो 1905 मे स्थापित की गयी। तीसरी गौरीशकर स्मारक सस्कृत महाविद्यालय श्रृग्वेरपुर मे स्थित है। इसकी स्थापना 1925 मे हुई। चौथी रामदेशिक सस्कृत महाविद्यालय और वैष्णव आश्रम, इलाहाबाद है जिसकी स्थापना 1934 मे की गयी थी। इन विद्यालयो मे साहित्य, न्याय, हिन्दी, अग्रेजी, गणित, इतिहास, भूगोल आदि के साथ–साथ वेद, वेदान्त, व्याकरण आदि पढाये जाते है। प्रयाग मे उत्तर प्रदेश का सबसे बडा सस्कृत शोध सस्थान, गगा नाथ झा सस्कृतशोध सस्थान नाम से स्थापित है। यह कम्पनी बाग मे स्थित है।

अरबी और फारसी :

प्रयाग मे अरबी के सात मदरसे हैं जो सरकार द्वारा दिये जाने वाले अनुदान और सार्वजनिक चन्दे से चलाये जाते है। इनमे अरबी की तीन उपरीक्षाओ अर्थात् मौलवी, आलिम और फाजिल तथा फारसी की दो परीक्षाओ अर्थात् मुशी और कामिल के लिए विद्यार्थियो को तैयार किया जाता है। प्रमुख मदरसे दर्स ए निजामी मदरसा अरबिया मदीनतुल इल्म, मदरसा आलिया मिस्बाहुल उलूमा मदरसा अरबिया एजाजिया, मदरसा इशाअतल उलूम, मदरसा जामे निजामिया, है (जिला गजेटियर इलाहाबाद 1986)। इस जिले की अरबी और फारसी की सबसे बडी शिक्षा सस्था मदरसा जामे निजामिया की स्थापना 1937 मे हुई थी। यह सस्था उत्तर प्रदेश की अरबी और फारसी परीक्षा परिषद के निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुरूप विद्यार्थियो को अरबी और फारसी की परीक्षाओ के लिये तैयार करती है। यह सस्था निर्धन छात्रो को 300 रूपये की वार्षिक छात्रवृत्तिया भी प्रदान करती है।

4.55 प्रौढ शिक्षा :

ज्ञातव्य है कि जहा पर 14 वर्ष तक के बच्चो को शिक्षित होना अनिवार्य है, वही

अशिक्षित प्रौढो के लिए भी शिक्षा सुविधा उपलब्ध कराना आवश्यक है क्योकि राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व सास्कृतिक इत्यादि सभी क्षेत्रो के विकास मे सहयोग की दृष्टि से समाज के प्रत्येक वर्ग का शिक्षित होना अत्यन्त आवश्यक है। इसी को दृष्टिगत करके 2 अक्टूबर 1978 को राष्ट्रीय प्रौढ शिक्षा कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ जिसमे सन् 1978 मे ही क्रियान्वित की गयी राष्ट्रीय सेवा योजना, नेहरू युवा केन्द्र तथा साक्षरता मिशन इत्यादि ने अपना भरपूर सहयोग दिया। जनपद मे सामान्य जन मानस तक शिक्षा की ज्योति पहुचाने के उद्देश्य से समस्त साक्षरता कार्यक्रम लागू है। इलाहाबाद नगर पालिका, उत्तर प्रदेश का ऐसा प्रथम स्थानीय निकाय है जिसने 1919 मे प्रौढ व्यक्तियो के लिये रात्रि पाठशालाये प्रारम्भ की थी और 1922–23 मे यहा ऐसी दो पाठशालाये थी। 1999–2000 तक उनकी सख्या बढकर 12 हो गयी थी और उनमे पढने वाले विद्यार्थियो की सख्या 21851 है।

4.56 <u>विकलाग व्यक्तियो की शिक्षा :</u>

उत्तर प्रदेश मूक एव बधिर सस्थान, इलाहाबाद की स्थापना 1929 मे की गयी थी और यह अपने ढग की थोडी ही सस्थाओ मे से एक है। ऐसी सस्थाओ मे शारीरिक दृष्टि से अक्षम बच्चो को सकेत द्वारा बातचीत करने के अलावा हिन्दी, अग्रेजी, इतिहास, भूगोल, गणित और विज्ञान के विषय भी पढाये जाते है तथा उन्हे अपना जीविकोपार्जन स्वय करने योग्य बनाने के लिये बढईगीरी, कपडे की छपाई और दर्जीगीरी का प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाता है। इस सस्था मे एक छात्रावास भी है। इस सस्था को राज्य सरकार और नगर महापालिका, इलाहाबाद से अनुदान प्राप्त होते है। योग्य विद्यार्थी को इस सस्था मे नि शुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है। 1999–2000 मे इस सस्था मे 10 अध्यापक और 85 विद्यार्थी है।

4 57 <u>शारीरिक शिक्षा :</u>

शारीरिक शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास एव शारीरिक, मानसिक विकास मे अत्यन्त सहायक होती है। इसीलिए कहा जाता है कि स्वस्थ्य शरीर मे स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है। इन्ही तथ्यो को ध्यान मे रखकर इलाहाबाद की लगभग सभी तरह की शिक्षा सस्थाओ मे बालक और बालिकाओ को शारीरिक शिक्षा प्रदान की जाती है। 1948 मे इस जिले मे अनिवार्य शारीरिक प्रशिक्षण की योजना प्रारम्भ की गयी थी। कुछ

इण्टरमीडिएट कालेजो मे राष्ट्रीय सुरक्षा योजना के अनुसार प्रशिक्षण दिया जाता है। इस प्रकार की कुछ अन्य सस्थाओ मे राष्ट्रीय कैडेट कोर, प्रान्तीय शिक्षक दल और सहायक कैडेट कोर के अन्तर्गत प्रशिक्षण दिया जाता है। भारत स्काउट और गाइड सघ के तत्वाधान मे भी सभी तरह के विद्यालयो मे प्रशिक्षण दिया जाता है और सभी अवर माध्यमिक विद्यालयो मे युवक मगल दल गठित किये गये है। राज्य महिला शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय, इलाहाबाद की स्थापना पुरूषो और महिलाओ दोनो ही को इस प्राकार का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिये 1946 मे की गयी थी। इस महाविद्यालय की उस शाखा को जिसमे पुरूषो को शारीरिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता था 1954 मे यहा से हटाकर रामपुर ले जाया गया और महिलाओ के शारीरिक प्रशिक्षण की शाखा को राजकीय महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय से सम्बद्ध कर दिया गया। यह सस्था स्नातको को शारीरिक शिक्षा पाठ्यक्रम का उपाधि-पत्र तथा अभिस्नातक विद्यार्थियो को शारीरिक शिक्षा का प्रमाण-पत्र प्रदान करती है।

प्रान्तीय रक्षक दल की स्थापना 1948 मे हुई थी और इसके कार्यकलाप सम्पूर्ण जिले मे फैले हुए है।

4.6 प्रयाग का शैक्षिक परिप्रदेश :

नगरो के समीप स्थित चारो ओर के क्षेत्र, जो नगरो के साथ सामाजिक, आर्थिक दृष्टि से सम्बद्ध या अन्योन्याश्रित होते है, उनके प्रभाव प्रदेश का निर्धारण करते है। ये प्रदेश सकेन्द्रीय अथवा कार्यात्मक प्रदेश भी कहे जाते हैं। नगरीय प्रभाव प्रदेश का अध्ययन नगरीय भूगोल मे अनेक विद्वानो द्वारा किया गया है। इनमे शेवर्ट ई0 डीकिन्सन (1947) और चौन्सी डी हैरिस (1941), एफ0एच0डब्ल्यू0 ग्रीन (1950), इयूजेन वान क्लीफ (1941), स्टेनली डाग (1932), जी0टेलर (1951), ए0ई0 स्मेल्स (1947), आदि विदेशी विद्वान तथा प्रो0 आर0एल0 सिह (1955), बनारस के प्रभाव प्रदेश, प्रो0 लाल सिह (1956), आगरा नगर के प्रभाव प्रदेश, प्रो0 उजागिर सिह (1961) इलाहाबाद के प्रभाव प्रदेश, प्रो0 आर0एल0 द्विवेदी (1961) इलाहाबाद नगर के प्रभाव प्रदेश, आदि भारतीय भूगोलविदो द्वारा अध्ययन किया गया है। इनमे से प्रो0 उजागिर सिह एव प्रो0 आर0एल0 द्विवेदी ने नगर के प्रभाव प्रदेश का निर्धारण करते समय शिक्षा सेवा को एक चर (तत्व) के रूप मे मानकर अध्ययन किया है।

सस्कृति के मूल तत्वो मे शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण स्थान होता है। अध्ययन क्षेत्र प्रयाग

एक शैक्षणिक केन्द्र होने के साथ–साथ भारत का एक प्रमुख सास्कृतिक, धार्मिक केन्द्र भी है। अत यह आवश्यक है कि प्रयाग और उसके परिप्रदेश मे शिक्षा का प्रसार अत्यधिक हो क्यो कि बिना शिक्षा के विकास के प्रयाग के सास्कृतिक क्षेत्र का सुसस्कृत एव समन्वित विकास सम्भव नही होगा।

शैक्षणिक सेवा प्रदेश का निर्धारण .

प्रयाग अपने प्राचीन विशिष्टता के पथ पर चलते हुए वर्तमान समय मे भी यह नगर शिक्षा केन्द्र के रूप मे अपनी विशिष्टता बनाए हुए है जहा कान्वेट स्तर के स्कूल से लेकर माध्यमिक, विश्वविद्यालयो एव प्रशासनिक सेवाओ की तैयारी के लिए छात्र देश के अन्य भागो से यहा आते हैं। प्रयाग के शैक्षणिक प्रभाव क्षेत्र को जानने के लिए शोधकर्ता विश्वविद्यालय के बी0ए0 प्रथम वर्ष कला सकाय मे प्रवेश लेने वाले नवीन छात्रो की सख्या को आधार माना है। नगर के शैक्षणिक प्रभाव क्षेत्र को जानने के लिए आवश्यक है कि किन–किन क्षेत्रो से अधिक सख्या यहा अध्ययन हेतु आती है। इसकी तुलना एक माध्यमिक विद्यालय के 1957–58 की सख्या एव वर्तमान समय के सख्या के आधार पर किया गया है। अग्रसेन इण्टर कालेज के कक्षा–9 के 164 छात्रो मे 71 प्रतिशत शहर के, 19 प्रतिशत इलहाबाद जिले के और 10 प्रतिशत उत्तर प्रदेश के दूसरे जिले से आये हुए थे (1956–57)

इसी तरह सी0ए0वी0 इण्टर कालेज के कक्षा 11 मे 287 छात्रो मे 70 प्रतिशत शहर के, 13 प्रतिशत इलाहाबाद जिले के तथा 17 प्रतिशत उ0प्र0 के अन्य जिले से आये हुए छात्रो की थी। इसी तरह विश्वविद्यालय स्तर पर वी0ए0–प्रथम मे कुल 1381 छात्रो मे 52 प्रतिशत इलाहाबाद जिले से, 19 प्रतिशत इसके आसपास के जिलो से, 26 प्रतिशत उ0प्र0 के अन्य जिलो से और 3 प्रतिशत दूसरे राज्यो से थे (द्विवेदी आर0एल0 1961)।

वर्तमान समय मे 2000–2001 सत्र मे इन विद्यालयो मे छात्रो की स्थिति निम्न है–

सारणी सख्या–4 1

कुल सख्या	शहर %	इलाहाबाद जिला %	आस–पास के जिले %	उ0प्र0के अन्य क्षेत्र से %
		अग्रसेन इण्टर कालेज कक्षा–9		
360	85%	10%	4%	1%
		सी0 ए0 वी0 इण्टर कालेज		
320	80%	12%	6%	2%
		विश्वविद्यालय स्तर पर कक्षा बीए0 प्रथम वर्ष		
3700	60%	11%	22%	5%

सारणी से स्पष्ट है कि शहर के छात्रो का प्रतिशत बढा है 1957–58 की तुलना मे। इसका कारण यह है कि स्वतत्रता के पश्चात इलाहाबाद शहर को छोडकर अन्य क्षेत्रो तथा इलहाबाद जिले के आस–पास के जिलो मे और उ0प्र0 के अन्य क्षेत्रो मे माध्यमिक से लेकर विश्वविद्यालय स्तर के विद्यालयो का अभाव था जिससे शहर के बाहर के क्षेत्र का प्रतिशत अधिक था आज के वर्तमान समय मे ग्रम स्तर से लेकर छोटे कस्बो एव नगरो मे विद्यालयो की अधिकता से छात्र आस–पास विद्यालय मे माध्यमिक स्तर पर शिक्षा अधिक ग्रहण कर लेते हैं।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय का पूरे देश मे एक महत्वपूर्ण स्थान है अत इस गुणवत्ता के चलते अभी भी विश्व विद्यालय स्तर पर माध्यमिक की तुलना मे बाहरी क्षेत्रो से आने वालो की सख्या अधिक है। इलहाबाद नगर के आस–पास के जिलो यथा–बादा, फत्तेहपुर, रायबरेली, प्रतापगढ, जौनपुर, वाराणसी और मिर्जापुर से आने वाले छात्रो की सख्या अधिक है।

प्रो0 सिह ने बनारस और इलाहाबाद के प्रभाव प्रदेश की तुलना करते हुए लिखा है कि इलाहाबाद बनारस के प्रभाव क्षेत्र की सीमा मे से अधिक छात्रो को अपनी तरफ आकर्षित करता है (सिह आर0एल0 1955)। परन्तु वर्तमान समय मे गोरखपुर वि0वि0,पूर्वांचल वि0वि0 जौनपुर के खुल जाने के बाद से यह सख्या कम हुई है। फिर भी, इलाहाबाद

N
EDUCATIONAL ENVIRONS OF PRAYAG
(Allahabad)
RaeBareli
Fatehpur
Ganga River
Pratapgarh
Jaunpur
Yamuna River
Banda
Allahabad
Kaushambi
U A
Varanasi
Ganga River
Chitrakut
Mirzapur
Primary Service Area
Secondary Service Area
U A University of Allahabad
34 0 34
km
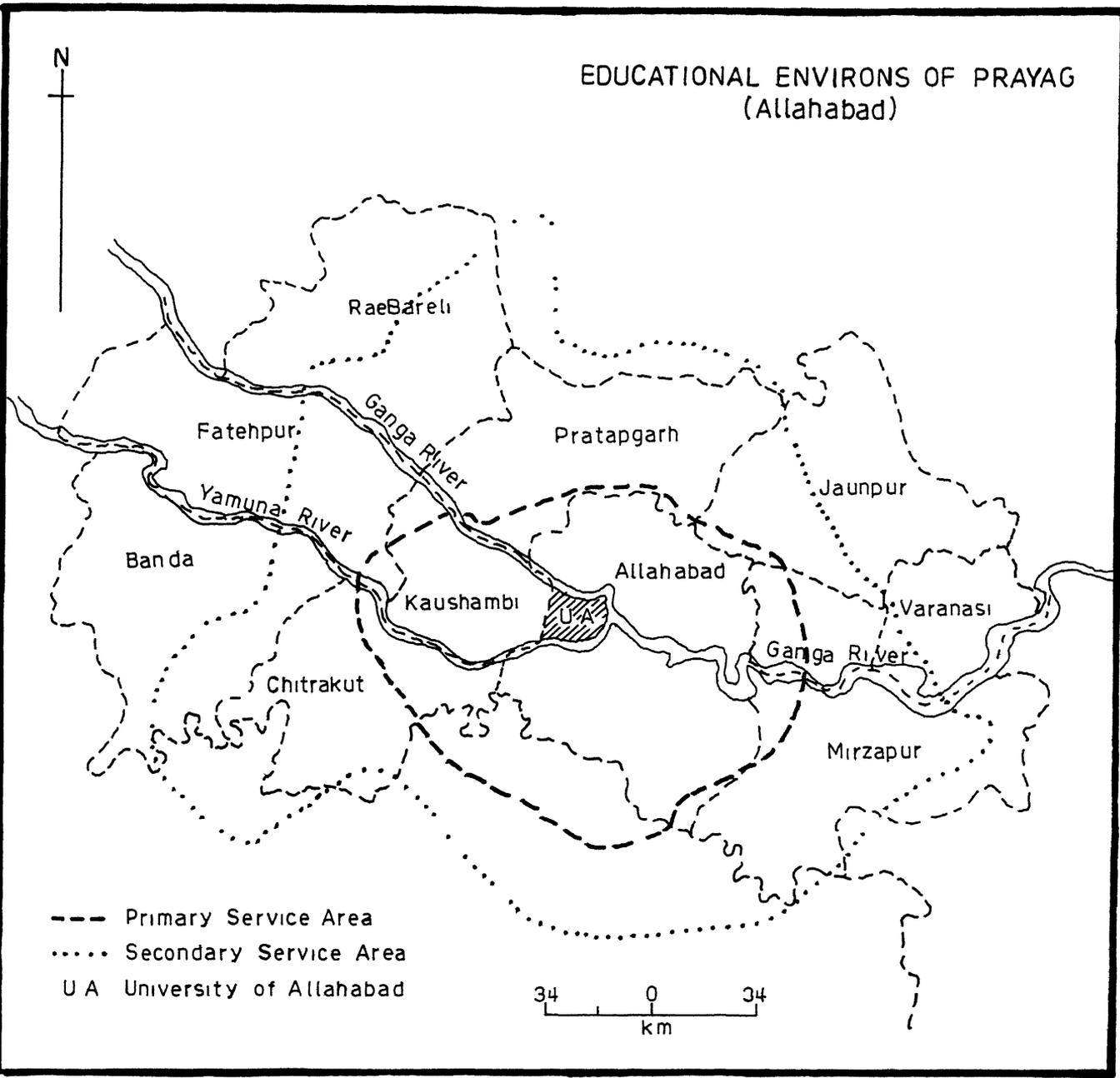
Fig 42

विश्वविद्यालय के अपने मानक, गुणवत्ता और अच्छे वातावरण के कारण आस–पास के जिले के साथ–साथ उ0प्र0 के अन्य भागो से आने वाले छात्रो की सख्या अधिक है।

वर्तमान मे उपयुक्त परिस्थितियो के कारण इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद के चतुर्दिक स्थित क्षेत्रो से अत्यधिक सख्या मे छात्रो को अपनी तरफ आकर्षित किये हुए है। नगर के प्रभाव प्रदेश के निरीक्षण से विश्वविद्यालय के कार्य क्षेत्र का पता चलता है। यह परीक्षण बी0ए0 भाग एक 2000–2001 के विभिन्न क्षेत्रो से आने वाले छात्रो की सख्या पर आधारित है। इस निरीक्षण से निम्न निष्कर्ष प्राप्त होता है–

सारणी सख्या–4 2

कम स0	क्षेत्र	कुल सख्या–3700	प्रतिशत %
1	इलाहाबाद जिला	1998	54 %
2	इलाहाबाद के समीपवर्ती जिले (बादा, फतेहपुर, रायबरेली, प्रतापगढ, जौनपुर, वाराणसी, मिर्जापुर)	925	25 %
3	उत्तर प्रदेश के अन्य जिले	703	19 %
4	दूसरे राज्य	74	2 %
	योग	**3700**	**100 %**

इस निरीक्षण से स्पष्ट है कि शिक्षा के प्रभाव प्रदेश का विस्तार कितना है जहा से अत्यधिक मात्रा मे छात्र अध्ययन के लिये आते है। वर्तमान समय मे अन्य महाविद्यालय भी इस नगर मे शिक्षा सेवा प्रदान कर रहे है परन्तु अन्तिम रूप से प्रभाव क्षेत्र की सीमा विश्वविद्यालय द्वारा सेवित क्षेत्र को मानना ही उपयुक्त है। शैक्षणिक सेवा प्रदेश का निर्धारण दो स्तर पर किया गया है। प्रथमत प्राथमिक क्षेत्र और दूसरा द्वितीयक क्षेत्र, इससे विश्वविद्यालय के प्रभाव प्रदेश का निर्धारण किया गया है। (मानचित्र स0 4 2)

References

Pande, Bishambhar Nath (1955) — Allahabad Retrospect And Prospect, The Municipal Press Allahabad" Page- 140

Report of the Select Committee on the affairs of the East India Company, Vol-1, Page - 483, Published 1832

मुकर्जी, आर0के0 (1947) — एन्शिएन्ट इण्डियन एजूकेशन लन्दन पृष्ठ–22 एव जिला गजेटियर इलाहाबाद (1986)पृष्ठ–163

सिन्हा, हरेन्द्र प्रताप (1953) — 'भारत को प्रयाग की देन' पृष्ठ–162बाल्मीकि रामायण–पृष्ठ–319

मजूमदार, आर0सी0 तथा अन्य (लन्दन 1956) — 'ऐन एडवान्स हिस्ट्री आफ इडिया' पृष्ठ– 71

काला, एस0सी0 (1950) — 'टेराकोटा फीगर्स फ्राम कौशाम्बी' पृष्ठ–38 प्लिनी (ग्रीक इतिहासकार) 'नेचुरल हिस्ट्री'

तैत्तिरीय उपनिषद– 1,11

ऋृग्वेद– 10,109,5

ऋृग्वेद– 10,717

अथर्ववेद– 11–5,11–3,6,108,2,133,3

मनुस्मृति– 2,10,3,232

मनुस्मृति– 2,245

श्रीवास्तव कृष्ण चन्द्र (1985) — 'प्राचीन भारत का इतिहास तथा सस्कृति' पृष्ठ–812

थामस वाट्स (1961) — 'आन युवान च्वागस ट्रेवेल्स इन इन्डिया' पृष्ठ–366

ओम प्रकाश (1986) — 'प्राचीन भारत का सामाजिक एव आर्थिक इतिहास' तृतीय सशोधित

सस्करण पृष्ठ–219

वाटर्स– 1,154, बील–122

राइस, एल0 (1882)	अपेन्डिक्स टू दि रिपोर्ट आफ इडियन एजूकेशन कमीशन आफ पृष्ठ–73
इत्सिग रेकर्ड, पृष्ठ– 170	
धर्म–भानु (1956)	हिस्ट्री ऐण्ड एडमिनिस्ट्रेशन आफ दी नार्थ वेस्टर्न प्राविसेज पृष्ठ– 35 (आगरा 1956)
सामाजिक आर्थिक समीक्षा (1996)	जनपद इलाहाबाद, कार्यालय अर्थ एव सख्याधिकारी इलाहाबाद पृष्ठ– 3
जिला गजेटियर (1986)	इलाहाबाद, पेज– 172,167,163
उत्तर प्रदेश मे उच्च शिक्षा की प्रगति (1993)	उच्च शिक्षा निदेशालय उ0प्र0 इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट पृष्ठ– 21
विकास पत्रिका, इलाहाबाद (1998)	पृष्ठ– 26

अध्याय–5

प्रयाग एक प्रशासनिक और राजनैतिक केन्द्र के रूप में

आर्य सस्कृति का केन्द्र स्थान, पवित्र त्रिवेणी धारा से सिचित, शिरोमणि प्रयागराज का प्रशासनिक एव राजनैतिक इतिहास बहुत प्राचीन है। इस देश के इतिहास मे प्रयाग का सदैव से गौरवपूर्ण स्थान रहा है। देश के स्वाधीनता सग्राम मे प्रयाग का योगदान सर्वोपरि है। प्रयाग वह स्थान है जिसने अपनी ऐतिहासिक परम्परा, प्राचीनता, गौरव के अनुसार देशोद्धार के किसी कार्य से अपने को विमुख नही किया है। प्रयाग के राजनैतिक एव प्रशासनिक स्थिति का वर्णन विभिन्न काल खण्डो के अनुसार निम्नवत् है –

5 1 प्रारम्भिक प्रशासनिक स्थिति

अति प्राचीन समय मे प्रयाग कौशाम्बी राज्य के अन्तर्गत स्थिति था (श्रीवास्तव शालिग्राम 1937)। प्रयाग के निकट गगा और यमुना के मध्य की भूमि वत्स देश कहलाती थी, जिसकी राजधानी प्रयाग से लगभग 48 कि०मी० पश्चिम यमुना के दाहिने किनारे पर कौशम्बी नगरी थी। इसको राजा कोशब ने अपने नाम पर बसाया था, जो चन्द्रवशीय नरेशो की दसवी पीढी मे हुआ था। प्रयाग के ऐतिहासिक, प्रशासनिक महत्व को कौशाम्बी ने अत्यधिक बढाया है (घोष, एन०एन० 1937)। प्राचीन समय मे प्रयाग का प्रशासन कौशाम्बी राज्य के अनुसार सचालित होता था। मत्स्य पुराण मे कहा गया है कि जब हस्तिनापुर (जिला मेरठ मे) गगा द्वारा बहा ले जाया गया तब कुरू अथवा भरतवशी राजा निचक्षु (अर्जुन के पौत्र परीक्षित की वश परम्परा मे पाचवे) ने हस्तिनापुर को त्याग दिया और कौशाम्बी मे निवास करने चले आये (बील बुद्धिस्टिक रेकार्ड)। वसत्थप्यकासनी के अनुसार सूर्यवशी राजाओ के विभिन्न राजवशो ने भी कौशाम्बी मे शासन किया था। इस सभाग मे पाये गये अनेक ऐतिहासिक शिलालेखो, मुहरो एव सिक्को पर भी कौशाम्बी का नाम अकित है। यहा से प्राप्त मूर्तिकला एव वास्तुकला सम्बन्धी अनेक अवशेषो, मिट्टी की छोटी मूर्तियो तथा अन्य स्मृति चिन्हो से इस बात का सकेत मिलता है कि कौशाम्बी नगर उत्तम कलाओ का

मिलता है अपितु उन दिनों के कलाकारों एवं शिल्पकारों द्वारा अर्जित की गयी शिल्पीय श्रेष्ठता के उच्च स्तर का भी पता चलता है (श्रीवास्तव, शालीग्राम 1937)।

5.2 बौद्ध कालीन प्रशासनिक स्थिति :

बौद्ध काल में प्रयाग वत्स राज्य के शासक उदयन के अधीन था जिसकी राजधानी कौशाम्बी थी। सन् ईसवी से लगभग 450 वर्ष पहले से इस स्थान का कुछ–कुछ पता चलता है जब महात्मा गौतम बुद्ध यहां पधारे और कुछ दिनों तक रूककर उन्होंने स्वधर्म प्रचार किया। उस समय मगध में अजात–शत्रु राज्य करता था।

सन् ईसवी से 319 वर्ष पहले चन्द्रगुप्त मौर्य मगध के राजसिंहासन पर बैठा। इसने समस्त उत्तर भारत को जिसके अन्तर्गत प्रयाग भी था, अपने अधिकार में कर लिया था यद्यपि वत्स देश उस समय के मगध नरेशों के अधीन हो गया था फिर भी उनके शासक प्रायः कौशाम्बी में ही रहा करते थे।

सन् 400 ईसवी के पश्चात् चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासन काल में चीन देश का पहला बौद्धयात्री फाह्यान भारत में आया जिसने प्रयाग का वर्णन अपनी पुस्तक में किया है (बील, बुद्धिस्टिक रेकार्डस)।

सन् 606 ई0 के लगभग मगध थानेश्वर के राजा हर्षवर्धन के अधीन हो गया। हर्षवर्धन ने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया। तबसे प्रयाग कन्नौज राज्य के अन्तर्गत हुआ। सन् 644 में चीनी यात्री ह्वेनसांग हर्षवर्धन के साथ प्रयाग में भी आया था। इस स्थान का वह अपनी भाषा में नाम 'पो–लोये किया' रक्खा। उसने प्रयाग का विस्तार, कृषि, जलवायु, शिक्षा आदि का विस्तृत वर्णन किया है। हर्षवर्धन की मृत्यु (648 ई0) के पश्चात् 748 ई0 तक प्रयाग गौड़ के पाल नरेशों–गोपाल और धर्मपाल के अधीन रहा।

सन् 810 ई0 से कन्नौज में परिहार राजपूतों का राज्य हुआ। इस वंश का राजा त्रिलोचनपाल सन 1027 ई0 में प्रयाग में रहता था।

अन्त में सन 1090 ई0 में चन्द्रदेव गहरवार ने कन्नौज का राज्य ले लिया। तबसे मुसलमानों के आने तक राज्य उसी के घराने में रहा और प्रयाग भी उसी के अर्न्तगत रहा।

5.3 मध्यकालीन या मुगलकालीन प्रशासन (1194 से 1800 ई0 तक) :

प्रयाग सर्वप्रथम 1194 ई0 में मुगल प्रशासन के अन्तर्गत आया। इस समय मुगल शासक शहाबुद्दीन गोरी ने उत्तर भारत की दो बड़ी राजधानियों कन्नौज और दिल्ली को

क्रमश अपने अधिकार मे कर लिया और पूर्व मे काशी तक अपना अधिकार जमा लिया।

तेरहवी शताब्दी के आरम्भ मे दिल्ली के मुसलमान बादशाहो द्वारा पूर्वीय प्रदेशो की देख रेख के लिए 'कडा' एक केन्द्र बनाया गया। यहा जयचन्द्र के समय का एक पुराना किला गगा के तट पर पहले से मौजूद था। अत इस किले मे कुछ सेना लेकर सूबेदार रहने लगा। यह समय दिल्ली के प्रथम बादशाह कुतुबुद्दीन ऐबक का था। तबसे लेकर तीन सौ वर्ष से कुछ ऊपर तक प्रयाग कडे के शासको के अधीन रहा।

प्रसिद्ध मुगल बादशाह अकबर प्रयाग के राजनैतिक एव प्रशासनिक तथा ऐतिहासिक क्षेत्र मे सर्वाधिक योगदान दिया है। अकबर के दरबार के तीन प्रसिद्ध इतिहास लेखक थे। उनमे से अब्दुल कादिर बदायुनी ने 'मुतखबुल तवारीख' मे लिखा है कि सन 982 हिजरी (1574 ई0) मे सफर महीने की 23वी तारीख को अकबर प्रयाग मे आकर ठहरा जिसको लोग प्राय 'इलाहाबास' कहते थे। अकबर ने इस स्थान मे एक बडे राज्य प्रासाद की आधार–शिला रखी और इस नगर का नाम 'इलाहाबाद' रखा। जब किला और नगर बन चु का था तब अकबर ने कडा और जौनपुर के पुराने सूबो को तोडकर इस स्थान को एक नये सूबे का केन्द्र बनाया। अकबर के बारह सूबो (प्रान्तो) मे पहला सूबा 'इलाहाबाद' ही था, जिसका विवरण अबुल फजल ने आइने अकबरी मे इस प्रकार लिखा है– यह सूबा दूसरे इकलीम मे है। इसकी लम्बाई 160 कोस तथा चौडाई 122 कोस है। गगा और यमुना इसकी प्रमुख नदिया है। (मानचित्र स० 5 1 अकबर के समय का इलाहाबाद का मानचित्र)

पुन इसके आगे इस सूबे का राजनैतिक विभाग और आय–व्यय का ब्योरा इस प्रकार दिया गया है–

"इस सूबे मे 3 दस्तूर (मण्डल)", 10 सरकार (उपप्रान्त) और 177 परगने या महाल है, जिन की सरकारी जमा 21,24,27,819 दाम (5310691 रूपया) और 12 लाख ताम्बूल (पान) है।

अबुल फजल ने अकबर के समय मे परगनेवार जमीदारो की जो जातिया लिखी है उन मे अब कही–कही बहुत बडा हेर–फेर हो गया है। अकबर के समय मे राजनैतिक दृष्टि मे यह एक बडे महत्व का सूबा था इसलिए इसका शासक राजघराने का ही कोई व्यक्ति हुआ करता था। उसकी सहायता के लिए किले मे कुछ सेना एक पृथक आफिसर के

N
RULE DURING AKBAR REGIME - ALLAHABAD
1596
GOVT OF MANIKPUR
GOVT OF JAUNPUR
GOVT OF KARA
GOVT OF BHATGORA
(Bara)
REWA STATE
GOVT OF CHUNAR
SORAON
SIKANDARPUR
SINGHRAUR
MAH
ALLAHABAD
JHUSI
KIWARD
BHADOHI
JALALABAD
(Araial)
TAPPA CHIYANBE
TAPPA CHAURACIYA
SAKTHIGARH
KHAIRAGARH
TAPPA UPRAURA
Ganga River
Yamuna River
Ganga River
Tons River
13
0
13
km
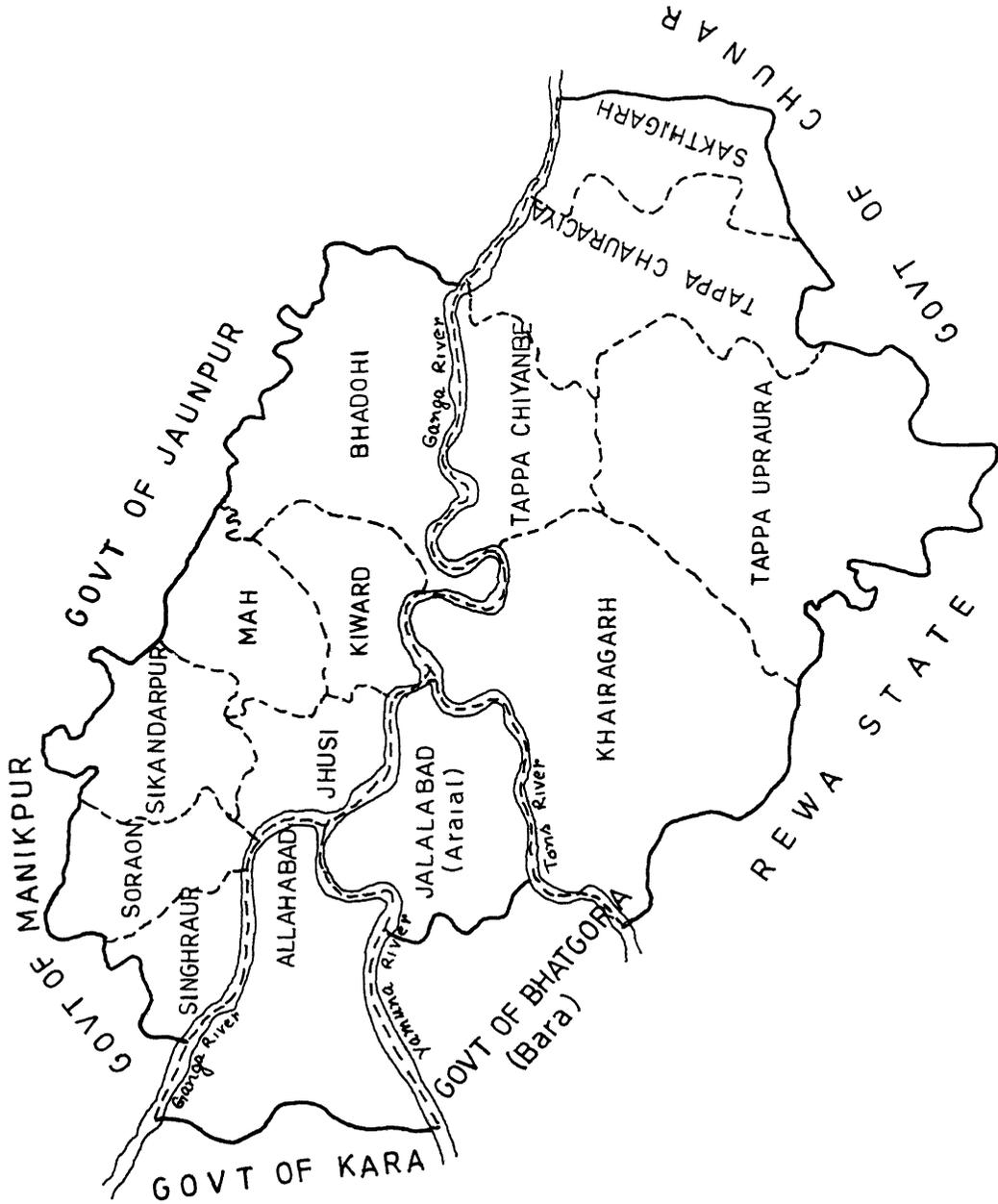
Fig 51

अधीन रहती थी जिसको 'फौजदार' कहते थे। इस नियम के अनुसार सन 1597 मे अकबर का पुत्र दानियल यहा का सूबेदार हुआ था।

सन् 1605 ई0 मे अकबर के मरने के बाद उसका पुत्र सलीम जो जहागीर के नाम से राजसिहासन पर बैठा। यहा जो कुछ मुसलमानी इमारते है वह उसी के समय की है। खुनदाबाद की सराय और खुसरोबाग उसी के बनावाए हुए है। उस समय रेल न होने से प्राय जलमार्ग द्वारा ही व्यापार हुआ करता था। यहा कालीन बहुत अच्छा बनता था। इस समय प्रयाग के किले मे चादी और ताबे के सिक्को की सरकारी टक्साल थी। जहागीर ने अपने नाम से ये सिक्के ढलवाये जो पहले अकबर के नाम से थे। 1605 मे ही अकबर के मरने के बाद 'जहागीर' दिल्ली के तख्त पर बैठा और अपने बेटे परवेज को इलाहाबाद का सूबेदार बनाकर भेजा। इसी समय जहागीर ने प्रयाग के किले मे अशोक की लाट पर फारसी अक्षरो मे अपनी वशावली और अपने राज्याभिषेक की तिथि आदि अकित कराई (श्रीवास्तव, शालिग्राम 1937)।

सन् 1624 ई0 मे जहागीर के दूसरे पुत्र खुर्रम ने भी पिता के विरूद्ध सिर उठाया। उस समय मिर्जा रूस्तम प्रयाग का सूबेदार था। 1628 ई0 मे जहागीर के मरने पर खुर्रम, 'शाहजहा' के नाम से दिल्ली का बादशाह हुआ। ऐसा माना जाता है कि इसी के समय से इस स्थान का नाम 'इलाहाबास' के स्थान पर 'इलाहाबाद' हुआ। शाहजहा के राज्यकाल मे कोई विशेष उल्लेखनीय घटना प्रयाग मे नही हुई (श्रीवास्तव, शालिग्राम 1937)।

सन् 1658 ई0 मे औरगजेब ने अपने पिता शाहजहा को कैद करके गद्दी पर बैठा। उस समय औरगजेब के बडे भाई दाराशिकोह की ओर से कासिम बारहा प्रयाग का सूबेदार था। औरगजेब के समय मे फ्रान्स का प्रसिद्ध यात्री टैवर्नियर भारत की सैर के लिए आया था उसने यहा का तात्कालिक वृतान्त इस प्रकार लिखा है.– "इलाहाबास (इलाहाबाद) एक बडा शहर है, जो गगा यमुना के सगम की नोक पर बसा हुआ है। यहा एक महल (किले मे) है। इस महल मे सूबेदार रहता है, वह भारत के उच्च श्रेणी के अधिकारियो मे है। कोई मनुष्य बिना सरकारी आज्ञा के गगा या यमुना पार नही कर सकता" (टैवर्नियर 1676)।

सन् 1666 ई0 मे महाराज शिवाजी अपनी विलक्षण चतुराई द्वारा दिल्ली मे औरगजेब के कपट जाल से मुक्त होकर मथुरा होते हुए प्रयाग पधारे थे। यहा दारागज मे 'कविकलस' नाम के पडे के यहा अपने पुत्र शभु (सभा) को सुरक्षित छोडकर काशी होते हुए

अपने देश को चले गये (श्रीवास्तव, शालिग्राम 1937)।

औरगजेब की कूटनीति से दाराशिकोह को दिल्ली का राज्य नही मिला फिर भी प्रयाग मे दारा के अनेक चिन्ह अब तक पाये जाते है। किले के उत्तर मे मुहल्ला 'दारागज' और कडे के पास कस्बा 'दारानगर' अभी भी बसे है।

सन् 1782 ई0 मे एक अग्रेज यात्री जार्जफारेस्टर ने प्रयाग मे सरायो मे ठहरने का उल्लेख करते हुए लिखा है कि औरगजेब के राज्यकाल मे सरकार इलाहाबाद मे 11 महाल और 5512 गाव थे (यदुनाथ सरकार 1932)।

सन् 1707 ई0 मे औरगजेब की मृत्यु हो गई। उस समय से लेकर सन 1712 ई0 तक अबदुल्ला खा प्रयाग का हाकिम था। सन् 1720 ई० मे राजा रत्न चन्द प्रयाग आये और यहा गिरिधर बहादुर से मिलकर उनको किले के बदले मे अवध की सूबेदारी तथा जवाहरात देकर प्रयाग पर अधिकार किया। गिरिधर के किला छोडने पर मुहम्मद खा वगस प्रयाग का सूबेदार हुआ और सन् 1732 तक यह सूबा इस के अधिकार मे रहा।

सन 1732 ई0 मे यह सूबा सरबुलद खा को मिला। उसने अपनी ओर से रोशन खा को अपना नायब बनाकर भेजा परन्तु सन् 1735 ई0 मे फिर मुहम्मद खा यहा का सूबेदार हुआ। सन् 1743 ई0 मे यह सूबा अवध के नवाब सफदर जग को मिला तथा 1749 ई0 तक सफदर जग की ओर से राजा नवल राय प्रयाग के आमिल नियुक्त हुए।

सन् 1758 ई0 मे मुहम्मद कुली खा प्रयाग का हाकिम था। सन् 1759 मे शुजाउदौला तथा कुली खा के बीच युद्ध हुआ, कुली खा पराजित हुआ इस तरह 1759 ई0 मे प्रयाग का किला और सूबा शुजाउदौला के हाथ लगा जो अवध का सूबेदार था।

1764 मे बक्सर की लडाई मे शुजाउदौला अग्रेजो से हारकर भाग गया और शाहआलम अग्रेजो की स्थिति देखते हुए आत्मसमर्पण कर दिया। अग्रेजो ने इसका सम्मान करते हुए वार्षिक कर निर्धारण कर शाहआलम के अधिकार मे ही रहने दिया परन्तु इस समय तक अग्रेजो का इन क्षेत्र पर पूर्ण अधिकार हो गया था (श्रीवास्तव शालीग्राम 1937)।

शाहआलम के बाद इसका उत्तराधिकारी सआदत अलीखा ने एक सधि पुन 21 फरवरी 1798 को की जिसमे रकम बढाकर 76 लाख रूपया वार्षिक कर दिया तथा प्रयाग किला अग्रेजो को दे दिया। परन्तु यह रकम सदैव बकाया रहती थी अत 14 नवम्बर सन् 1801 ई0 को अग्रेजो के साथ लखनऊ मे फिर एक सधि की जिसके अनुसार इस वार्षिक

रकम और पिछली शेष के बदले मे प्रयाग का जिला और इलाको के साथ सदैव के लिए ईस्ट इडिया कपनी को दे दिया गया उसी समय से प्रयाग मे मुसलमानो के शासन काल का अन्त हो गया।

5 4 ब्रिटिश कालीन प्रशासन .

प्रयाग अग्रेजो के प्रभुत्व शासन मे नवम्बर 1801 ई0 मे आया। इस समय मार्केस अत् बेलेसली ईस्ट इडिया कपनी की ओर से भारत के गवर्नर जनरल थे। मध्य काल मे अकबर के समय इलाहाबाद (प्रयाग) के अन्तर्गत 10 सरकारे (जिले) और 177 परगने थे। परन्तु नवम्बर 1801 मे जब यह अग्रेजो को मिला तो इसमे केवल 5 सरकारे (जिले) थी, जिनके परगनो की सख्या 26 थी।ये सरकारे इस प्रकार थी– इलाहाबाद, कडा, मानिकपुर,भटघोरा (बारा) और कोडा। उस समय फतेहपुर हसवा भी इलाहाबाद ही मे सम्मिलित था परन्तु परगना किवाई इससे पृथक् था।

सन् 1816 मे परगना किवाई अवध से लेकर प्रयाग के जिले मे सम्मिलित किया गया और 1825 मे सरकार ने कडा और कोडा कुछ पुराने परगनो को लेकर एक पृथक् जिला 'फतेहपुर' को बनाया तभी से इस जिले मे चौदह परगने रह गए जो अब तक हैं। नौ तहसीलो मे बारा की तहसील अक्टूबर 1825 मे तोडकर करछना मे मिला दी गई है।

सन् 1841 से 1862 तक जिले की सीमा मे इतना और हेर–फेर हुआ है कि कुछ गाव परगना कडा से फतेहपुर मे और खैरागढ से मिर्जापुर के जिले मे मिलाए गए है।

इलाहाबाद के सबसे पहले कलक्टर मिस्टर ए0 अहमूटी थे, जिनके नाम से 'मुट्ठीगज' का मुहल्ला बसा है। मार्च सन् 1829 से डिविजनल कमिश्नरी स्थापित हुई। मिस्टर रार्बट बार्लो यहा के पहले कमिश्नर हुए थे (श्रीवास्तव शालीग्राम 1937)।

ब्रिटिश शासन प्रबन्ध

अग्रेजी राज्य पहले बगाल से आरम्भ हुआ था। इसलिए यहा का शासन भी पहले कुछ दिनो तक बगाल के ही शासको द्वारा होता रहा। सन् 1836 ई0 मे 41 जिलो का एक अलग प्रान्त 'पश्चिमोत्तर देश' के नाम से बनाया गया और उसकी देखभाल के लिए प्रयाग मे एक लेफ्टिनेन्ट गर्वनर नियुक्त किया गया। इसके एक साल पहले तक राजधानी इलाहाबाद के स्थान से आगरा बना दी गई और सन् 1857 के बलवे तक वह वही रही। हाईकोर्ट सन 1843 तक यहाँ रहा इसके पश्चात् आगरा चला गया, पुन सन 1868 ई0 मे

प्रयाग आ गया। "बोर्ड आफ रेवेन्यू" सन् 1831 मे स्थापित हुआ और तब से वह बराबर यही रहा।

प्रयाग की अग्रेजी राज्य मे क्या स्थिति थी इसके विषय मे अनेक यूरोपीय ग्रन्थकारो तथा यात्रियो की पुस्तको मे वर्णन मिलता है।

सन् 1815 ई0 के ईस्ट इण्डिया के गैजेटियर मे लिखा है कि "उस समय यहा 10 घरो मे 9 कच्चे थे। शहर मे कुछ ही ईट की इमारते थी। अफीम, शक्कर, नील और कपास यहा से देशावर को जाया करता था"। मिस्टर डब्ल्यू एस0 फेन का प्रयाग के विषय मे कहना है– "जिस भूमि की नोक पर प्रयाग उपस्थिति है, वह एक ही उपजाऊ स्थान है। भारत मे और कही ऐसे सुन्दर वृक्ष और बाटिकाए नही पाई जाती, जाडे भर गुलाब तथा अन्य प्रकार के फूल खूब खिलते हैं। यहा का सिविल स्टेशन (रामबाग) अपनी चौडी–चौडी सडको, सुन्दर छायादार रास्तो, अच्छे–अच्छे बगलो, बडे–बडे चौरस अहातो और बागीचो के साथ कोई 15–19 वर्ग कि०मी० मे फैला हुआ है" (Caine, W S 1891)।

सन 1837 मे रार्बट साहब ने लिखा था– "प्रयाग का वर्तमान नगर विशेषतया किले के पश्चिम यमुना के किनारे बसा हुआ है। इसकी स्थिति बहुत ही उत्तम है, परन्तु बस्ती मे घरो की दशा बडी हीन और शोक जनक है।" (रार्बट, सीन्स अब हिन्दुस्तान–1)

5 5 <u>स्वतत्रता आन्दोल मे प्रयाग की भूमिका .</u>

प्रयाग एक धार्मिक एव सास्कृतिक केन्द्र होने के साथ–साथ स्वतत्रता आन्दोलन का महत्वपूर्ण स्थान एव प्रेरणा श्रोत स्थल रहा है। सन् 1857 से 1947 तक प्रयाग का योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण था। 1857 के सग्राम काल मे दबी हुई चेतना पुन जाग्रत हुई और पूरे देश को सगठित करने के महान अभियान का सूत्रपात इस क्षेत्र मे बहुत जल्दी ही हो गया।1857 के प्रारम्भ मे स्वतत्रता सग्राम 1859–60 तक किसी न किसी रूप मे चलता रहा। भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस की स्थापना 1884 मे हुई और 1921 मे उसने नागपुर मे गाधीजी के नेतृत्व मे सर्वप्रथम एक विशाल जन आन्दोलन आरम्भ करने का निश्चय किया। बीच के इन वर्षो मे भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस की दृष्टि से इलाहाबाद का महत्व कितना अधिक था, यह इस बात से स्पष्ट है कि इस बीच काग्रेस के तीन वार्षिक अधिवेशन इलाहाबाद मे ही हुए। पहला अधिवेशन 1888 मे जार्जयूल की अध्यक्षता मे हुआ, दूसरा अधिवेशन 1892 मे उमेश चन्द्र बनर्जी की अध्यक्षता मे हुआ और तीसरा अधिवेशन 1910 मे

श्री विलियम बेडर वर्न की अध्यक्षता मे हुआ (बाजपेयी, डा0 राजेन्द्र कुमारी 1985)।

5.51(1) <u>आन्दोलन मे समाचार पत्रो की भूमिका</u>

स्वतत्रता आन्दोलन मे प्रयाग के समाचार पत्रो की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका थी क्योकि ये जनभावना को उद्वेलित करने के सबसे महत्वपूर्ण श्रोत थे। नवम्बर सन् 1907 मे 'स्वराज्य' नामक इलाहाबाद से एक पत्र निकला, यही से सर्वप्रथम इस शान्तिपूर्ण प्रान्त मे क्रान्तिकारी प्रचार तथा प्रयास का सूत्रपात होता है। इसके सम्पादक शान्तिनारायण भटनागर थे जो पहले किसी पजाबी समाचार पत्र के सचालक थे। इस पत्र का उद्देश्य लाला लाजपत राय तथा सरदार अजीत सिह की नजरबन्दी से रिहाई की यादगरी थी। इस समाचार पत्र का लहजा शुरू से ही सरकार के विरूद्ध था, किन्तु ज्यो–ज्यो इसके दिन बीतने लगे, यह और गरम होता गया। अन्त मे खुदीराम बोस के सम्बन्ध मे आपत्ति जनक लेख लिखने के कारण इनको लम्बी सजा हुई (सिन्हा हरेन्द्र प्रताप 1953)।

'स्वराज' समाचार–पत्र फिर भी बन्द न हुआ, चलता रहा। एक के बाद एक इसके आठ सम्पादक नियुक्त हुए जिसमे सबको सजाए हुई। इन आठ सम्पादको मे से सात पजाबी थे। 1910 के प्रेस ऐक्ट के बाद ही यह समाचार पत्र बन्द किया जा सका। जिन लेखो पर आपत्ति की गई थी उनमे से एक खुदी राम बोस पर था। दूसरे ऐसे लेखो के शीर्षक इस प्रकार थे– 'बम या बायकाट', 'जालिम और दबाने वाला'।

इलाहाबाद मे 1909 मे एक ऐसा ही समाचार पत्र 'कर्मयोगी' निकाला जिसके सम्पादक प0 सुदरलाल 'भारत मे अग्रेजी राज्य' के लेखक थे। सम्पादको एव समाचार पत्रो मे कार्य करने वालो को कितना कष्ट और सजाए थी इसका अदाज इस कहानी से आसानी से हो जाता है। 'स्वराज्य' मे ही एक सम्पादक के लिए विज्ञापन प्रकाशित हुआ था जिसमे कहा गया था– "स्वराज्य अखबार के लिए ऐसा सम्पादक चाहिए जिसे दो सूखी रोटिया, एक गिलास सादा पानी और हर सम्पादकीय लेख पर दस वर्ष की सजा मिलेगी" इस शर्त पर भी 'स्वराज्य' को सम्पादको की कमी नही पडी और न तो सम्पादको को सजा देने मे ही किसी प्रकार की कजूसी की गयी। सम्भवत ससार के इतिहास मे शायद ही कोई दूसरा अखबार होगा जिसके आठ सम्पादको को कुल मिलाकर 125 वर्ष की सजाए दी गयी हो।

पत्रकारिता की दृष्टि से इलाहाबाद ने अपनी शानदार परम्परा का बराबर निर्वाह किया। 1910 मे ही 'कर्मयोगी' को प्रेस ऐक्ट का शिकार होना पडा और बाद मे चलकर

'अभ्युदय' को भी ऐसी ही लडाई लडनी पडी। ऐसे ही 'भविष्य' साप्ताहिक समाचार पत्र उन दिनो उग्र विचारधारा का प्रमुख पत्र था। इस प्रकार स्पष्ट है कि इन समाचार पत्रो ने वातावरण बनाने मे जितना योगदान किया उतना और माध्यमो के बसके बाहर था (बाजपेयी डा0 राजेन्द्र कुमारी 1985)।

5.51(ii) क्रान्तिकारी आन्दोलन की कर्म भूमि

इलाहाबाद क्रान्तिकारी आन्दोलन की कर्म भूमि के रूप मे बना रहा। गरम दलो के नेताओ का प्रभाव भी इस नगर पर बराबर पडता रहा। उग्र विचारो ने उस समय विद्यार्थी समाज मे जो आग लगायी थी उसके फलस्वरूप श्री गोविन्द बल्लभ पत, प0 रविशकर शुक्ल, वेकटेश नारायण तिवारी जैसे नये लोग आये। उस समय मे काग्रेस अन्य प्रदेशो मे सरकारी अधिकारियो के लिए सुविधाजनक सस्था थी तब भी उत्तर प्रदेश के गर्वनर सर आकलैण्ड इसे पसन्द नही करते थे। नरम विचारधारा के नेताओ के लिए भी इलाहाबाद बहुत महत्वपूर्ण शहर रहा है। मोतीलाल जी, मालवीय जी तथा तेज बहादुर सप्रू के सम्मिलित प्रयत्नो से इलाहाबाद मे 'लीडर' दैनिक सबादपत्र प्रकाशित किया गया और श्री सी0वाई0 चिन्तामणि जैसे महत्वपूर्ण व्यक्ति उसके सम्पादक बनाये गये। 'लीडर' का प्रभाव इस देश की राजनीति पर काफी लम्बे समय तक पडता रहा।

सर तेज बहादुर सप्रू भी अपनी पीढी के अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यक्ति थे और उन्हे कितने ही बडे काम करने का श्रेय प्राप्त हुआ। श्री पुरूषोत्तम दास टडन तथा कैलाशनाथ काटजू अपने जमाने के अत्यन्त प्रमुख राजनेताओ मे से थे (बाजपेयी डा0 राजेन्द्र कुमारी 1985)।

5.51(iii) राष्ट्रभाषा आन्दोलन मे प्रयाग की भूमिका

एक स्वतत्र राष्ट्र का आन्दोलन शुरू करने के साथ–साथ राष्ट्र भाषा का आन्दोलन भी प्रमुख रूप से इलाहाबाद से ही शुरू हुआ। भारतेन्दु युग के प्रसिद्ध लेखक पडित बालकृष्ण भट्ट ने इलाहाबाद से 'हिन्दी प्रदीप' का प्रकाशन प्रारम्भ करके अपनी भाषा का आन्दोलन आगे बढाया था। आगे चलकर मदन मोहन मालवीय और श्री पुरूषोत्तम दास टडन ने इस आन्दोलन को एक राष्ट्र व्यापी आन्दोलन का रूप दे दिया। 1910 मे अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना की गयी और बाद मे इलाहाबाद मे उसका एक मुख्यालय भी स्थापित किया गया। श्री पुरूषोत्तम दास टडन ने पूरे जीवन भर हिन्दी

को राष्ट्र भाषा बनाने के लिए सघर्ष किया (बाजपेयी डा0 राजेन्द्र कुमारी 1985)।

असहयोग आन्दोलन के प्रारम्भ होने के पहले श्रीमती एनी बेसेट तथा श्री लोकमान्य तिलक के नेतृत्व मे चलने वाले 'होमरूल' आन्दोलन को भी इलाहाबाद ने सर्वाधिक समर्थन दिया। अग्रेज शासको के विरूद्ध कडी भाषा का उपयोग करने के कारण श्रीमती एनी बेसेन्ट को गिरफ्तार कर लिया गया। उनकी गिरफ्तारी के कारण पूरे देश मे आन्दोलन की एक विशाल लहर उमड पडी और इस लहर के चलते बहुत से ऐसे लोग भी स्वतत्रता आन्दोलन की ओर उन्मुख हुए जो अब तक तटस्थ थे। इलाहाबाद उस समय उदीयमान बुद्धिजीवियो और बैरिस्टरो का शहर था। जहा पडित मोती लाल नेहरू, तेज बहादुर सप्रू, मदन मोहन मालवीय जैसे महत्वपूर्ण नेता निवास करते थे। अपनी परम्परा के अनुरूप इलाहाबाद ने इस बार भी सर्घष करके आगे बढने की परम्परा का पालन किया। जेल से छूटने के बाद 4 अक्टूबर 1914 को श्रीमती एनी बेसेन्ट जब इलाहाबाद आयी तो वहा उनका अभूतपूर्व स्वागत किया गया।

इस देश के मच पर गाधी जी के प्रवेश करने के साथ जो परिर्वतन घटित हुए उनमे भी इलाहाबाद की महत्वपूर्ण भूमिका थी। असहयोग को सबसे पहला समर्थन अखिल भारतीय खिलाफत काग्रेस ने 1920 मे अपने इलाहाबाद अधिवेशन मे ही दिया।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के सिसिले मे जवाहर लाल जी ने इसी समय पहली बार जेल यात्रा की। 1929 मे लाहौर अधिवेशन की अध्यक्षता भी श्री जवाहर लाल नेहरू ने किया। उन्ही की अध्यक्षता मे लाहौर काग्रेस के अवसर पर रावी नदी के तट पर 26 जनवरी को पूर्ण स्वतत्रता का निश्चय काग्रेस ने किया। यह पहला ऐतिहासिक निर्णय था जिसने अब तक के चले आते हुए स्वतत्रता आन्दोलन को एक निर्णायक मोड दिया। इसी समय के आस–पास श्री मोती लाल जी ने अपना निवास स्थान 'आनन्द भवन' राष्ट्र को सौपा।

एक पिता के कारण अपना निवास स्थान उन्हे अपने पुत्र को देना चाहिए था लेकिन उन्होने एक महान राष्ट्र सेवक के नाते अपना भवन देश की सबसे बडी सस्था भारतीय काग्रेस के अध्यक्ष को दे दिया।

1928 से 1947 तक अखिल भारतीय काग्रेस का प्रधान कार्यालय बराबर इलाहाबाद मे ही रहा। नमक सत्याग्रह आन्दोलन मे गाधी जी के आदेश पर राष्ट्रीय काग्रेस जवाहर लाल जी के नेतृत्व मे इस महान सघर्ष मे आ गयी। जवाहर लाल जी ने गिरफ्तार होने के

पहले अपने पिता मोती लाल जी को अध्यक्ष पद का उत्तराधिकारी बनाया। मोती लाल जी ने अस्वस्थ होते हुए भी नमक सत्याग्रह आन्दोलन को अपनी पूरी ताकत से आगे बढाया और सघर्ष करते–करते मृत्यु को भी वरण किया । पत्नी स्वरूप रानी ने महिलाओ के जत्थे का नेतृत्व करते हुए सडक पर पुलिस की मार खायी और वे धूल मे बेहोश होकर गिर पडी।

किसान आन्दोलन की नीव इलाहाबाद मे असहयोग के दिनो मे ही पड चुकी थी। बाद मे 1931 के लगान बन्दी आन्दोलन मे उसी चेतना का विकास हुआ । इस आन्दोलन मे इलाहाबाद की हडिया तहसील ने महत्व पूर्ण कार्य किया (डा0 राजेन्द्र कुमारी 1985)।

5.52 चन्द्रशेखर आजाद का क्रान्तिकारी सघर्ष :

भारत के स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास मे जिन क्रान्तिकारी वीरो का नाम अमर है , उनमे चन्द्रशेखर आजाद का नाम प्रथम पक्ति के आत्म बलिदानियो मे से है। चन्द्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई 1906 को हुआ था (गुप्ता, मन्मथ 1985)। यद्यपि उनका जन्म अलीराजपुर स्टेट, मध्य प्रदेश के भावरा नामक स्थान मे हुआ था, किन्तु प्रयाग उनका कार्यक्षेत्र था और अन्त मे वही पर वीरगति प्राप्त होने के कारण प्रयाग के साथ उनका सम्बन्ध अटूट रूप मे जुडा हुआ है। उनकी जीवनी सूत्रो से विदित होता है कि बाल्यकाल से ही उनमे देश प्रेम की भावना भर गयी थी (टडन, हरिमोहन दास 2001)।

चन्द्रशेखर आजाद 1920 मे सस्कृत पढने के लिए काशी आ गये। सस्कृत के ये छात्र अत्यन्त पोगा पथी माने जाते थे, क्योकि एक तो ब्राह्मण, दूसरे काशी और तीसरे सस्कृत का अध्ययन, परन्तु आश्चर्य है कि जब महात्मा गाधी की लहर चली, जलियावाला हत्याकाड हुआ तो सस्कृत के ये छात्र सबसे अधिक प्रभावित हुए, जबकि इनकी आर्थिक दशा अत्यन्त दयनीय थी (नर्मदा 1964)।

1921 ई0 मे असहयोग आन्दोलन के समय वे सर्वप्रथम गिरफ्तार किये गये और जब वे 15 बेत की सजा खाने के बाद बाहर आये तो ज्ञानव्यापी मे काशी की जनता ने उनका बडा स्वागत सत्कार किया। फिर चौरीचौरा काण्ड हुआ और उसमे उन्हे बन्द कर दिया गया। इसी समय वे क्रान्तिकारियो के सम्पर्क मे आये और 'आजाद' नाम से विख्यात हुये। वे समस्त उत्तर प्रदेश के क्रान्तिकारियो के अग्रदूत थे।

इसी समय 'आजाद' भगत सिह के सम्पर्क मे आये और उन्होने एक समाजवादी दल का गठन कर तद्नुसार कार्य करने लगे। भगत सिह और बटुकेश्वरदत्त ने एसेम्बली

मे बम फेका और गिरफ्तार हो गये। पुन लाहौर षड्यन्त्र केस चला। 'साइमन कमिशन' के बायकाट मे लाला लाजपत राय पर लाठिया पडी और इसी कारण बाद मे वे शहीद हो गये। प्रतिशोध मे आजाद और उसके तीन साथियो भगत सिह, जयगोपाल और राजगुरू ने सैंडर्स नामक एक पुलिस अधिकारी की हत्या कर दी। आजाद ने निरन्तर रात–दिन ब्रिटिश सरकार के दमनो के विरूद्ध षड्यन्त्र रचे, किन्तु पुलिस उनको गिरफ्तार नही कर सकी। राम प्रसाद बिस्मिल (कवि भी थे) ने इनके क्रान्तिकारी स्वरूप के कारण इनका नाम 'क्विक सिल्वर' यानी पारा रख दिया था। पारा भी कभी–कभी उतरता है, पर आजाद निरन्तर चढते ही गये, जब तक कि उन्होने सुकरात की तरह शहादत का जाम पी नही लिया। वह कई लोगो को क्रान्तिकारी आन्दोलन मे ले आये भी थे। भगत सिह के साथ इनकी जोडी अद्वितीय थी। सैन्डर्स हत्याकाण्ड, असेम्बली बमकाण्ड, काकोरी षड् यन्त्र इन सब कार्यो मे आजाद का अति प्रत्यक्ष सहयोग रहा (गुप्ता, मन्मथ नाथ 1985)।

चन्द्रशेखर आजाद सदैव एक काटे की तरह ब्रिटिश साम्राज्यवाद के गले मे खटकते रहे। 27 फरवरी 1931 ई0 को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क मे वे एकाएक पुलिस द्वारा घेर लिये गये। चारो ओर फैले सिपाहियो से कई घण्टो वे लडते रहे और गोलियॉ चलाते रहे, किन्तु अन्त मे स्वय की गोली के शिकार होकर वीरगति को प्राप्त हुए। कम्पनीबाग मे जिसका वर्तमान नाम मोतीलाल नहेरू पार्क है, जिस स्थान पर आजाद शहीद हुए थे वहा वर उनका एक स्मारक बना हुआ है। आजाद का चरित्र आज और सुदूर भविष्य तक देशभक्त भारतीयो युवको के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

लाल बहादुर शास्त्री ने लिखा है कि चन्द्रशेखर आजाद पोथी पढकर नही बल्कि यो ही जीवन के विद्यालय मे सीखकर, एक के बाद एक क्रान्तिकारी कदम उठाते चले गये, जैसे नदी किसी पूर्वज्ञान की बदौलत नही बल्कि स्वत स्फूर्ति गति से सागर की ओर दौडती चली जाती है।

एक रूसी इतिहाकार ने हिसाब लगाकर बताया है कि औसत रूसी क्रान्तिकारी का कर्म जीवन, सिवा उनके जो देश के बाहर भाग गये थे, दो साल का होता था, परन्तु खतरनाक से खतरनाक काम करते हुए भी चन्द्रशेखर आजाद का कर्मजीवन सात वर्ष का रहा।

आजाद महान क्रान्तिकारी थे, ऐसे महान क्रान्तिकारियो के दो ही अन्त होते है, एक

लेनिन की तरह सफल क्रान्ति के शिखर पर या शहादत के क्रूस पर चढकर। आज सम्पूर्ण देश उनके क्रान्ति कारी सघर्ष के लिए ऋणी है।

5 53 भारत छोडो आन्दोलन मे प्रयाग की भूमिका .

8 अगस्त सन् 1942 को सायकाल 8 बजे मौलाना अबुल कलाम की अध्यक्षता मे महात्मा गाधी के द्वारा 'भारत छोडो' की घोषणा की गयी। इस घोषणा से सम्पूर्ण विश्व मे यह समाचार बिजली की तरह फैल गया। ब्रिटिश साम्राज्य के विरूद्ध भारत मे धीरे–धीरे जो असतोष का ज्वालामुखी धधक रहा था। उसका यह भयकर विस्फोट 'भारत छोडो' प्रस्ताव के रूप मे सर्वसम्मति से स्वीकृत हो गया। इस आन्दोलन की घोषणा के तत्काल बाद मौलाना आजाद, महात्मा गाधी, सरदार पटेल, जवाहर लाल नेहरू आदि मूर्धन्य नेता बन्दी कर लिये गये और उस ऐतिहासिक अधिवेशन मे जितने प्रतिनिधि उपस्थित हुए थे वे सभी अपने घर पहुचने से पहले या पहुचने पर बन्दी कर लिये गये (यादव, प्रकाश चन्द्र 1985)।

सम्पूर्ण देश नेता विहीन एव किकर्तव्यविमूढ हो गया था। सयोगवश ब्रिटिश पार्लियामेन्ट मे भारत सचिव लार्ड एमरी ने यह वक्तव्य दे दिया कि भारत के नेता यह चाहते थे कि भारत मे ब्रिटिश साम्राज्य नष्ट करने के लिए रेलवे लाइने उखाड दी जायें, तार के खम्भे उखाड दिये जाए, कचहरियो पर अधिकार कर लिया जाये, थाने फूक दिये जाएं, सभी ब्रिटिश सस्थान नष्ट कर दिये जाये। इतना सकेत बहुत पर्याप्त था। छात्रो ने विशेषत उत्तर भारत के छात्रो ने, उनमे भी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, प्रयाग के छात्रो ने इसे ही अपने नेता का आदेश मानकर इसके अनुसार आन्दोलन छेड दिया। तार के खम्भे तोड डाले गये, रेलवे पर अधिकार कर लिया गया। छात्रो के आदेश के अनुसार ही गाडिया चलने लगी, कचहरियो और थानो पर काग्रेस के झण्डे टागे जाने लगे, देखते–देखते सारी शासन व्यवस्था लुज–पुज कर दी गयी।

लार्ड एमरी ने जो सकेत दिये थे उनकी सहस्त्रो प्रतिया हाथ से लिखकर सभी विद्यालयो मे बाट दी गयी मुख्यत इसलिए भी कि उनके सभी प्रिय नेता जिसके परिणामस्वरूप छात्र उत्तेजित हो उठे। बन्दी कर लिये गये थे और इसलिए भी कि उनके सभी प्रिय नेता बन्दी कर लिये गये थे और इसलिए भी कि उन्हे अपनी सारी कार्य योजना

मिल गयी थी। बहुत से अध्यापको ने भी छात्रो का नेतृत्व किया और बडे व्यवस्थित ढग से लार्ड एमरी द्वारा सुझायी हुई सारी योजनाये क्रियान्वित होने लगी। कचहरियो पर स्टेशनो पर और सभी प्रशासकीय स्थानो पर छात्रो ने अधिकार कर लिया। इस अवसर पर सभी शासकीय विभागो के अधिकारियो ने छात्रो का साथ दिया कुछ ने प्रत्यक्ष कुछ ने परोक्ष। केवल पुलिस विभाग ही ऐसा था जो ब्रिटिश साम्राज्य का पूर्ण रूप से सहयोग कर रहा था। पुलिस विभाग के कुछ थानेदारो और सिपाहियो ने ऐसी–ऐसी क्रूरतापूर्ण बर्बरताए की जिससे क्रूरता भी लज्जित हो जाती। जितना भी अत्याचार करना उन्होने अपने विभाग से सीखा था उसका प्रयोग करने मे उन्होने कोई सकोच नही किया। पुलिस विभाग के इन नर पशुओ ने छात्र नेताओ और लार्ड एमरी के सुझाव के अनुसार तथा अपने प्रिय नेताओ के प्रति किये हुए दुर्व्यवहार का प्रतिशोध लेने वाले छात्रो को खोज–खोज कर बन्दी किया यातनाए दी और उनकी हत्या भी की।

9 अगस्त को 5 बजे शाम को इलाहाबाद युनिवर्सिटी के विद्यार्थियो ने एक बहुत बडा जुलूस निकाला। यह जुलूस अलबर्ट रोड होते हुए पुरूषोत्तमदास पार्क पहुचा इसके बाद यहा से पुन विद्यार्थियो का हुजूम पूरे शहर मे घूमा और पुन यही पार्क मे आकर सभा हुई। कई विद्यार्थियो का भाषण हुआ और दूसरे दिन पुन चार बजे जुलूस निकालने का निश्चय हुआ। चूकि इस समय सभी नेता बन्दी थे अत विद्यार्थियो ने इस आन्दोलन की कमान सभाली। इसी क्रम मे 10 अगस्त 1942 को भी सम्पूर्ण शहर मे जुलूस निकाला गया और इस दिन की कमान दो स्त्रिया राष्ट्रीय झण्डा लिए कर रही थी (यादव प्रकाश चन्द्र 1985)।

11 अगस्त सन् 1942 को 'भारत छोडो' आन्दोलन के अविस्मरणीय दिनो मे इलाहाबाद नगर एव जिले मे लोगो ने राष्ट्रीय गतिविधियो मे तन–मन से भाग लिया। ग्राण्ड ट्रंक मार्ग पर स्थित एक छोटे से गाव मे सैदाबाद के किसानो ने जुलूस निकाला। पुलिस ने जुलूस को तितर–बितर होने का आदेश दिया। उनके ऐसा न करने पर मजिस्ट्रेट ने गोली चलाने का आदेश दिया। इसके फलस्वरूप किसानो ने 'इकलाब जिन्दाबाद' के नारे के साथ गोलियो की बौछार का सामना करते हुए अपने प्राण त्याग दिया।

12 अगस्त को दिन मे 11 बजे जुलूस निकाला गया, उस जुलूस को दो हिस्सो मे किया गया। एक कचहरी की ओर गया और दूसरा कर्नेलगज इडियन प्रेस के रास्ते से

गया। जैसे ही जुलूस इडियन प्रेस के पास पहुचा वैसे ही कचहरी मे लोगो ने गोली चलने की आवाज सुनी अत अब लोगो ने कम्पनी बाग के अन्दर से जुलूस को घुमाकर कचहरी पहुचे। जब लोग कचहरी पहुचे तो वहा देखा कि काफी लोग घायल हैं, भीड अत्यधिक इकट्ठा हो गई। इस जुलूस मे हजारो लोग थे जिसमे काफी सख्या मे युनिवर्सिटी की लडकिया भी थी, गोली चलने पर लाल पद्रमधर की मृत्यु हो गई। कुछ देर मे शहर भर मे यह झूठी अफवाह फैल गई कि श्रीमती विजय लक्ष्मी प0 की बडी लडकी और मुल्ला साहब की लडकी की गोली लगने से मृत्यु हो गई है। इस समाचार से शहर भर की जनता मे क्रोध फैल गया। वे तार काटने लगे, डाकखानो पर धावा बोलकर उनके कागज आदि जलाने लगे। अग्रेजी टोपी छीन–छीनकर जलाने लगे, कई सरकारी मोटरे भी जो किला से सामान लेकर जा रही थी विद्यार्थियों ने जला दिया। पुलिस चौकी पर भी भीड गई और कई जगह झण्डा फहरा दिया। बडे–बडे पीपे सडक पर फैला दिया जिससे पुलिस की लारी आ जा न सके। तीन–चार दिन तक ऐसा मालूम देता था कि अग्रेजी राज्य समाप्त हो गया, कई जगह तो जनता ने पुलिस का डट कर मुकाबला किया। कुछ पुलिस वाले तो अपनी जान बचाकर भाग गये। एक जत्था उसी दिन इडियन प्रेस मे घुस आया। भीड पहले डाकखाने मे घुसी और कागज आदि जला दिया, खिडकी के शीशे तोड डाले, बाद मे प्रेस के फाटक तोडे और फिर शीशे तोडने लगे, प्रेस के अन्दर घुस गये, इतने मे प्रेस के मालिक ने कहा हम तो आप लोगो के साथ हैं, हमारा नुकसान आप लोग क्यो करते हैं ? इसके बाद लोगो को प्रेस से निकाला गया और प्रेस बन्द कर दिया गया। बाहर भीड ने तार काटा, खम्भा उखाडा, पुलिस की लारी आकर उन पर गोली चलाई, कोई घायल नही हुआ। लारी मे सभी अग्रेज सिपाही थे। इस प्रकार कई दिनो तक शहर भर मे तोड–फोड का काम जारी रहा। लोगो को यह विश्वास हो गया कि तोड–फोड भी कार्यक्रम मे है।

आन्दोलनकारी लोगो ने कुछ डाकखाने या रजिस्ट्री आफिस आदि पर दखल कर लिया, कही–कही पर लोगो ने आग भी लगा दी।

12 अगस्त को गोली जब कचहरी मे छात्रो पर पुलिस ने चलाई थी उस समय अदालत मे भूतपूर्व सब डिवीजनल अफसर श्री अमीर रजा साहब वही पर सामने अपने कमरे मे थे और आखो देखा बयान दिया था– " मैंने निकट से देखा था कि श्री पद्मधर सिह की मृत्यु कानूनन गोली चलाने से नही हुई बल्कि जानबूझकर उनकी हत्या की गई। दो

सौ निहत्थे और निरीह छात्रो पर गोली चलाना युद्धभूमि का वीरतापूर्ण कार्य न था। उन लोगो ने एक घटे से अधिक समय तक गोली का सामना किया। इस स्थिति मे लाठी और गोली की वर्षा की गई जो सर्वथा अनुचित था। मैं निश्चित रूप से कह सकता हू कि पुलिस ने 10–10 मिनट पर 5 या 6 बार गोली चलाई। गोली चलाने पर भी सभी छात्र अपने स्थान पर लेट गये। केवल एक लडकी खडी थी जो तनिक भी नही घबराई। एक छात्र भी झण्डा लिए खडा था। कुछ घुडसवार पुलिस के आखो मे आसू आ गये थे।एक वीर छात्र पुलिस के बीच मे खडा था और यह कह रहा था कि हम सभी भाई है। वह वीर छात्र गोली चलते रहने पर भी उनके बीच खडा था और अपनी बात दोहराता रहा। पुलिस उसके कथन से इतनी प्रभावित हुई कि लज्जावश अपने मुह को दूसरी ओर फेर लिया।इतना ही नही तत्कालीन जिला मजिस्ट्रेट डिक्सन का चेहरा उस स्थिति को देखकर उदासीन हो गया था। वे जब अपने अदालत के कमरे मे जा रहे थे उनके पैर लडखडा रहे थे।" डिप्टी सुपरीटेन्डेन्ट पुलिस एस0एन0 आगा और सिटी मजिस्ट्रेट श्री एन्थोनी के रूख मे कोई परिवर्तन नही हुआ। सरकारी नीति के विरोध मे श्री अमीर रजा ने डिप्टी कलेक्टर के पद से इस्तीफा दे दिया।

13 अगस्त 1942 को 'भारत छोडो' पूरी तेजी और जोश के साथ चल रहा था। इसमे भाग लेने वाले निम्नाकित सत्याग्रही अग्रेजी पलटन की गोलियो से शहीद हुए:–

(1) श्री मुरारी मोहन भट्टाचार्य (आयु 40 वर्ष) आप शाहगज के रहने वाले थे और झा एण्ड कम्पनी मे दवा की बिक्री करते थे।

(2) श्री भगवती प्रसाद (24 वर्ष) मिल मे काम करते थे और बादशाही मण्डी इलाहाबाद के निवासी थे।

(3) श्री अब्दुल मजीद– आप सब्जी मण्डी इलाहाबाद के निवासी थे और विद्यार्थी थे। आपकी उम्र 18 वर्ष की थी।

14 अगस्त के दिन आदोलन और पुलिस का दमनचक्र दोनो जोर–शोर से चल रहा था। जिले और शहर दोनो जगह पुलिस ने गोली चलायी। निम्नाकित देश प्रेमियो ने आत्मोत्सर्ग किया:–

(1) श्री द्वारिका प्रसाद (आयु 22 वर्ष) आप विद्यार्थी थे और हीवेट रोड इलाहाबाद के निवासी थे।

(2) श्री लल्लन मिश्रा– आप किसान थे तथा समाज सेवी थे।आप तहसील करछना मे करमा गाव के निवासी थे।

17 अगस्त के दिन कीटगज निवासी श्री महावीर एक दुकान के मालिक थे। जमुना के पुल पर पुलिस के आदेशो का उल्लघन करने के कारण गोली से मार डाले गये।

24 अगस्त के दिन पुलिस ने सभाओ पर रोक लगा रखी थी। किन्तु श्री हजारी राम पाण्डेय ने जो हडिया तहसील के अन्तर्गत बनकट के निवासी थे और उत्पाती सत्याग्रही थे। इस आज्ञा का उल्लघन किया और पुलिस की गोली खाकर सहर्ष प्राण त्याग दिया और मृत्यु के समय आप की उम्र 32 वर्ष थी।

इन सात शहीदो के अलावा अज्ञात अनेक ऐसे देश प्रेमी थे जो 12 अगस्त 1942 को पुलिस की गोली से मृत्यु को प्राप्त हुए। अस्पतालो की रिपोर्ट के अनुसार काल्विन अस्पताल मे मिलिटरी ट्रक द्वारा गोली से घायल होकर पाच व्यक्तियो के निर्जीव शरीर लाए गये थे, इन लोगो की पहचान नही हो सकी क्योकि इनके शवो को प्राप्त करने वाला कोई नही मिला। इनके शरीरो को पुलिस ने मिट्टी का तेल छिडक कर जला दिया और इस प्रकार इलाहाबाद के अज्ञात शहीद आजादी की राह मे प्राणोत्सर्ग करने वाले अनामियो की सूची मे ही विद्यमान है।

प0 नेहरू द्वारा सन् 42 के आन्दोलन की प्रशसा:

प0 नेहरू ने इस आन्दोलन की प्रशसा निम्न शब्दो मे की है– "पिछले तीन वर्षो मे हमारे देश मे महान परिवर्तनकारी घटनाए हुई है। तीन साल पूर्व शक्तिशाली सरकार ने हमारे देश मे बहुत ही भयानक दमन किया। नेताओ को जेल मे बद कर देने के बाद सरकार" निशस्त्र निरीह जनता का दमन किया और उसे कुचल डालने का कार्य शुरू कर दिया।नई दिल्ली से यह समाचार भेजा गया कि काग्रेस को कुचल दिया गया और अब वह मर चुकी है। लेकिन ससार के इतिहास मे सबसे शानदार और आश्चर्यजनक दृश्य देखने को मिला और इस देश की जनता ने सरकार की चुनौती को भी वीरतापूर्वक पुरूषोचित ढग से और बहादुरी के साथ सरकार को समुचित जवाब दिया।अगर उन्नीस सौ बयालिस का आन्दोलन न हुआ होता तो उससे यह साबित होता कि भारत 40 करोड मृतको का देश है और उसमे कोई पुरूषत्व नही है। लेकिन आज हम अपना सिर ऊचा किए हुए अपराजित और विजयी के रूप मे खडे है (यादव प्रकाश चन्द्र 1985)।

5 54 स्वतत्र भारत मे प्रयाग का राजनीतिक योगदान

भारत मे राष्ट्रीय स्वतत्रता की प्राप्ति के लिए विभिन्न सगठनो, व्यक्तियो और बुद्धिजीवियो द्वारा जिस सुस्थिर भूमिका का निर्माण हुआ उसमे प्रयाग का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान रहा। स्वतत्र भारत के नव निर्माण मे प्रयाग ने अपनी भूमि से अनेक महान विभूतियो को जन्म दिया और अनेक महान विभूतियो का कार्यस्थल बना। इन विभूतियो मे मुशी काली प्रसाद कुलभास्कर, प्यारे लाल श्रीवास्तव, देशभक्त प0 अयोध्या नाथ, प0 मदन मोहन मालवीय, डा0 सर सुन्दर लाल जी, सरतेज बहादुर सप्रू, प0 मोती लाल नेहरू, प0 जवाहर लाल नेहरू, श्रीमती विजय लक्ष्मी पडित, इन्दिरा गाधी, राजीव गाधी, राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन, लाल बहादुर शास्त्री, श्री मगला प्रसाद, श्री मोहन लाल गौतम, बद्री प्रसाद सिन्हा, डा0 कैलाश नाथ काटजू, लाल पद्मधर सिह, गगा नाथ झा आदि का नाम स्वर्णाक्षरो मे अकित है (हरिमोहन दास टडन 1995)।

स्वतत्र भारत मे प्रयाग का राजनीतिक योगदान तीन प्रधानमत्रियो प0 जवाहर लाल नेहरू, श्रीमती इन्दिरा गाधी एव राजीव गाधी के रूप मे सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

प्रयाग की भूमि से तीन प्रधानमत्रियो को देने का श्रेय यदि किसी को है तो वह है श्रीमती कमला नेहरू को जिन्होने खुद कुछ न लिया, बस प्रधानमत्री दिया। प0 जवाहर लाल नेहरू एव कमला नेहरू के शादी का एक इतिहास है। प0 मोतीलाल नेहरू के भाई बशीधर प्रकाण्ड ज्योतिषी थे।उन्होने ज्योतिष गणना कर मोती लाल को बताया कि पुरानी दिल्ली के सीताराम बाजार मे जवाहरमल कौल की प्रथम सतान कमला कौल के वशजो को राजयोग का योग है। यही कारण था कि कमला कौल की कुण्डली मे राजयोग के साथ जीवन पर्यन्त अस्वस्थता का भी योग था परन्तु राजयोग की महत्ता देखते हुए स्वास्थ्य का कोई ध्यान नही दिया गया जबकि मोतीलाल नेहरू की पत्नी स्वरूप रानी स्वय जीवन पर्यन्त बीमार रही। कमला नेहरू का जन्म 1 अगस्त 1899 को हुआ तथा सैंतिस बसन्त देखने के बाद 28 फरवरी 1936 को निधन हो गया।

कमला नेहरू ने अपने पति, पुत्री और नाती के रूप मे भारत को प्रधानमत्री दिया और अब उनके नवासे की दुल्हन सोनिया गाधी भी उसी कतार मे खडी हैं। (राष्ट्रीय सहारा पेपर 1 8 1999)

5.54(i) प० जवाहर लाल नेहरू

भारत को आजाद करने मे बापू के दाहिने हाथ, आजाद भारत मे बापू के उत्तराधिकारी और पूर्वी ससार का उदीयमान सूर्य, प्रयाग नगर की अमर ज्योति, अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र के श्रेष्ठ कुटनीतिज्ञ जवाहर लाल नेहरू का जन्म 14 नवम्बर 1889 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय के प्रसिद्ध अधिवक्ता व स्वतत्रता सेनानी प0 मोती लाल नेहरू के घर मे हुआ था (सिन्हा हरेन्द्र प्रताप 1953, पृष्ठ 112)।

नेहरू जी सन् 1912 मे बैरिस्टर होकर इगलैण्ड से भारत लौटे। असहयोग आन्दोलन के प्रारम्भ होने पर नेहरू जी ने बैस्टिर पद त्याग कर भारत माता की सेवा मे जुट गये। सन् 1921 मे इन्हे पहली बार जेल मे बद किया गया जब ये असहयोग आन्दोलन मे प्रमुखता से भाग लेने लगे। दूसरी बार 1922 मे ये प्रयाग मे विदेशी कपडे की दुकानो पर धरना देते समय पकडे गये और एक वर्ष की कडी कैद और 100 रूपये जुर्माना की सजा मिली। सन् 1924 मे प्रयाग नगर निगम के चेयरमैन सर्वसम्मति से चुने गये। इस समय प्रयाग नगर की अत्यधिक उन्नति हुई। सितम्बर 1928 मे इन्होने भारतीय स्वाधीनता सघ स्थापित किया।

लाहौर काग्रेस अधिवेशन मे नेहरू जी के प्रयत्नो से काग्रेस का उद्देश्य औपनिवेशिक स्वराज्य के स्थान पर 'पूर्ण स्वतत्रता' हो गया और देश ने 26 जनवरी 1930 को पूर्ण स्वाधीनता की प्रतिज्ञा किया। उसी अधिवेशन मे इन्होने भारत मे जनतत्र की स्थापना की उद्घोषणा भी की (सिन्हा हरेन्द्र प्रताप 1953 पृष्ठ–115)। सन 1930 मे सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ होते ही नेहरू जी को गिरफ्तार कर लिया गया तथा एक वर्ष बाद सरकार से समझौता होने पर उन्हे छोड दिया गया। सन् 1934–35 मे अल्मोडा जेल मे उन्होने अपनी 'आत्म कथा' लिखी।

सन 1936 मे वे लखनऊ काग्रेस के अध्यक्ष हुए और इसी वर्ष इन्होने 'भारत एक खोज' (डिस्कवरी आफ इडिया) नामक प्रसिद्ध पुस्तक लिखी। काग्रेस ने प्रान्तो मे जब शासन चलाना स्वीकार कर लिया तब इन्होने समस्त राष्ट्र के सगठन एव विकास के लिए एक वैज्ञानिक योजना नेशनल प्लानिग कमेटी के रूप मे जनता के सामने उपस्थित की। नेहरू जी स्वय इसके अध्यक्ष थे। इसी आधार पर स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात् राष्ट्रीय योजना आयोग बना जो आज भी कार्यरत है।

इसी समय गाधी जी का व्यक्तिगत आन्दोलन चला, मार्च 1942 मे क्रिप्स मिशन भारत आया और असफल होकर लौट गया। इसके पश्चात् 1942 की महत्वपूणर्प क्रान्ति 'भारत छोडो' का युद्व प्रारम्भ हो गया। अन्य प्रमुख नेताओ के साथ नेहरू जी को भी गिरफ्तार कर जेल में बद कर दिया गया। पुन 1945 मे नेहरू जी जेल से बाहर आये। जेल से छूटने के पश्चात् नेहरू जी ने देश–विदेश मे अग्रेजी शासन से सघर्ष कर आजाद हिन्द फौज के ढिल्लन, सहगल, शाहनवाज आदि को मुक्त कराया।

सन् 1945 के पश्चात् देश की समस्त राजनीति नेहरू जी द्वारा ही संचालित होती रही है। 1946 मे नेहरू जी पुन काग्रेस अध्यक्ष चुने गये और वायसराय लार्डवेवेल द्वारा केन्द्र मे अस्थायी सरकार बनाने के लिए आमत्रित किये गये। 9 दिसम्बर 1946 को दिल्ली मे विधान परिषद का उद्घाटन हुआ जिसमे 13 दिसम्बर को नेहरू जी ने भारतीय विधान का उद्देश्य सम्बन्धी प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसे विधान परिषद द्वारा ग्रहण कर लिया गया। यही ऐतिहासिक प्रस्ताव हमारे जनतत्र तथा धर्म निरपेक्ष विधान की आधार शिला है। 26 जनवरी 1950 से इसी संविधान के अनुसार शासन कार्य चल रहा है। स्वतत्र भारत के प्रथम प्रधानमत्री के रूप मे नेहरू जी ने यह प्रमाणित कर दिया है कि वह केवल आजादी की लडाई मे लडने वाले योद्धा नहीं, बल्कि शासन सूत्र चलाने मे भी पूर्ण चतुर है (सिन्हा हरेन्द्र प्रताप 1953, पृष्ठ—11 7)।

देश मे विद्यमान निर्धनता एव बेरोजगारी को दूर करने के लिए नेहरू जी ने घरेलू उद्योगो के विकास पर बल दिया क्योकि ये लघु पूजी से भी इन उद्योगो को प्रारम्भ किया जा सकता है। नेहरू जी का मत था कि विज्ञान और तकनीक के विकास से जो बेरोजगारी फैलेगी उसे नियोजन की सुव्यवस्थित प्रणाली से ठीक किया जायेगा। इस प्रकार भारतीय नियोजन के जनक जवाहर लाल जी ने देश की मजबूत नीव डालकर उस पर आलीशान भारत के निर्माण का ठोस कार्य किया (सिह, राम लोचन प्रसाद 1985)। प० जवाहर लाल नेहरू के स्वतत्रता सग्राम आन्दोलन मे महत्तवपूर्ण निभाने एव प्रथम प्रधानमत्री बनने से प्रयाग का गौरव और भी अधिक बढा।

5.54(ii) श्रीमती इन्दिरा गाधी :

प्रियदर्शनी, वीरागना श्रीमती इन्दिरा गाधी का जन्म 19 नवम्बर 1917 को अपने समय के सर्वाधिक वैभव सम्पन्न और प्रभावशाली परिवार मे हुआ। इनका जीवन सघर्षो से भरा था। स्वतत्रता आन्दोलन के वातावरण मे जन्म लेकर पली–बढी इन्दिरा जी ने अपना जीवन स्वतत्रता संघर्ष एव देश की एकता–अखण्डता, सुरक्षा एव विकास मे समर्पित कर दिया।

13 वर्ष की अवस्था मे सन् 1930 मे इन्दिरा जी ने इलाहाबाद मे बानर सेना का गठन किया और 'सत्याग्रह' समिति के अनुरोध पर बानर सेना की कप्तान बनी। अपने आयु अवस्था के निर्भीक बच्चो के साथ "बानर सेना जिन्दाबाद, इन्कलाब जिन्दाबाद" का नारा लगाते हुए बानर सेना का जुलूस सम्पूर्ण नगर में भ्रमण किया। इलाहाबाद की आजादी मे बानर सेना का भी महत्वपूर्ण योगदान था (यादव, श्री प्रकाश सिह 1985)।

1931 मे इन्दिरा जी विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के शाति निकेतन मे शिक्षा प्राप्त करने गयी। 1940–41 मे आक्सफोर्ड मे शिक्षा प्राप्त की और भारत लौटने पर वे स्वतत्रता सग्राम मे अपनी पूरी सक्रियता से जुड गयी। 26 वर्षीया इन्दिरा जी का विवाह मई 1942 मे आनन्द भवन मे फिरोज गाधी के साथ हुआ। आजादी मिलने तक इन्दिरा जी की जीवनचर्या काग्रेस के जुझारू कार्यकर्ता की जीवनचर्या थी। 1960 मे श्रीमती इन्दिरा गाधी काग्रेस अध्यक्ष बनी। 1964 मे अपने पिता की मृत्यु के बाद श्री लाल बहादुर शास्त्री के मन्त्रिमण्डल मे इन्होने सूचना एव प्रसारण मत्री का कार्यभार सभाला। दो वर्ष बाद 1966 मे इन्दिरा जी देश की प्रधानमत्री बनी (यादव, प्रकाश चन्द्र 1985)।

इन्दिरा जी का महत्वपूर्ण ऐतिहासिक योगदान बैंको का राष्ट्रीयकरण, प्रिवीपर्स की समाप्ति और राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को सुरक्षित रखना है। इन सबका मूलमत्र उनका "गरीबी हटाओ" का नारा था। बैको का राष्ट्रीयकरण इस उद्देश्य से किया कि इसका लाभ देश के करोडो किसान, मजदूर, छोटे कारीगर और अन्य निर्धन लोगो को मिल सके। चूकि बैंक देश के साधन के स्रोत होते है अत इनसे गरीबी मिटाने और रोजगार बढाने मे अधिक सहायता मिल सकती है (सिह राम लोचन प्रसाद 1985)।

इन्दिरा के शासन काल की तीसरी उपलब्धि भारत के अन्तरिक्ष कार्यक्रमो का सफल विकास है। 1975 मे आर्यभट्ट उपग्रह 1980 मे राकेट रोहितो, 1982 मे एप्पल एव इसेट सचार उपग्रह स्थापित कर विश्व के चार प्रमुख राष्ट्रो अमेरिका, रूस, फ्रास और कनाडा के समकक्ष स्थान प्राप्त कर लिया।

18 मई 1974 को सफल भूमिगत परमाणु परीक्षण करके भारत विश्व की एक प्रमुख परमाणु शक्ति बन गया। जनवरी 1982 मे भारतीय अनुसधान दल का दक्षिणी ध्रुव प्रदेश मे पहुचना भी इन्दिरा युग की एक महान उपलब्धि है। भारत ने पाकिस्तान को 1971 के युद्ध मे बुरी तरह पराजित कर 6 दिसम्बर 1971 को बगलादेश नाम से एक नये राष्ट्र को मान्यता प्रदान की (यादव, प्रकाश चन्द्र 1985)।

इन्दिरा जी के शासन काल की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि अपने प्राणो की आहुति देकर देश की एकता और अखडता की रक्षा करना है। इसके लिए इन्होने पजाब मे स्थित स्वर्ण मन्दिर, जो आतकवादियो की शरण स्थली बना हुआ था, मे सैन्यबल का प्रयोग किया। इस कार्य का सम्पूर्ण देश मे स्वागत हुआ।

श्रीमती इन्दिरा गाधी के प्रधानमत्रित्व काल का अभी सोलह वर्ष भी पूर्ण नही हुआ था कि किशोर भावुकता, देशभक्ति से भावाकुल हो 30 अक्टूबर 1984 को भुवनेश्वर की एक जनसभा मे भाषण दिया कि "अगर मै मर भी जाऊँ तो मुझे गर्व होगा। मैं निश्चिन्त हू कि मेरे खून का एक–एक कतरा इस राष्ट्र को मजबूत और गतिशील बनाने मे सहयोग करेगा।" इस उक्ति के चौबीस घण्टे भी पूर्ण नही हुए थे कि 31 अक्टूबर 1984 को प्रात 9 बजकर 17 मिनट पर जैसे ही इन्दिरा जी अपने आवास से बाहर निकली अपने दो आत्म विस्मृत, पागल–विश्वासघाती, नृशस और कूर अगरक्षको की गोलियो का निशान बनकर धरती पर गिर गई एव मृत्यु हो गयी (यादव, प्रकाश चन्द्र 1985)।

श्रीमती इन्दिरा गाधी की जो अधूरी वसीयत प्रकाश मे आई है उससे सबसे बडी प्रेरणा यह मिलती है कि हर भारतवासी को अपने भारतीय होने का गर्व होना चाहिए। अगर इस देश का प्रत्येक नागरिक सबसे पहले अपने को भारतीय समझे और इस भावना से भारत की गौरवपूर्ण विरासत और परम्परा को आगे बढाते हुए देश के सम्मान वर्धन का दृढ सकल्प से प्रयास करे, तो न तो इसकी आजादी व एकता पर आच आने पाये और न बडी से बडी चुनौती इसे डिगा पाये। इस देश की अनेकता मे एकता की कुजी, यही भारतीय

होने की भावना हैऔर इसी से श्रीमती गाधी अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर बढती गई और देश को प्रगति की ओर ले जाने के सकल्प पर मरते दम तक अडिग रही।

5.54(iii) श्री राजीव गाधी .

भारत के प्रधानमत्री प0 जवाहर लाल नेहरू के नाती (Garand Son) और प्रथम महिला प्रधानमत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी के बडे पुत्र राजीव का जन्म 20 अगस्त 1944 को मुम्बई के शीरोडकर नर्सिंग होम मे हुआ था। इनके जन्म के समय इनके पिता फिरोज गाधी स्वतत्रता सग्राम के सघर्ष मे जूझ रहे थे, और नाना जवाहर लाल जेल मे थे। राजीव गाधी का बचपन स्वतत्रता सग्राम मे ही बीता।

राजीव गाधी और उनके छोटे भाई सजय गाधी दोनो की प्रारम्भिक शिक्षा दिल्ली मे 'शिव निकेतन' मे हुई। इसके बाद राजीव गाधी देहरादून के बेलहाम विद्यालय मे आई0एस0सी0 करके सीनियर कैम्ब्रिज की पढाई करने के लिए इगलैण्ड गये। यहा इन्होने मैकेनिकल इजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त की। विमान सचालन का प्रशिक्षण भी उन्होने लदन मे ही लिया। 1970 मे राजीव गाधी इडियन एयरलाइन्स मे विमान सचालक के पद पर नियुक्त हुए। जून 1981 मे ये उत्तर प्रदेश के अमेठी ससदीय क्षेत्र से चुन लिए गये। तब इन्हे अखिल भारतीय काग्रेस समिति का महासचिव बना दिया गया (ढुढिराज 2001)।

प्रधानमत्री के रूप मे श्री राजीव गाधी का भारतीय राजनीति मे आगमन अत्यन्त दुखद परिस्थित मे हुआ। 31 अक्टूबर 1984 मे श्रीमती गाधी के निधन के पश्चात् इन्हे भारत का प्रधानमत्री बनाया गया। राजीव गाधी ने प्रधानमत्री के रूप मे अनेक उल्लेखनीय कार्य किये।

24 जुलाई 1985 को पजाब समस्या का समाधान करने हेतु शिरोमणि अकाली दल के अध्यक्ष सत हरचद सिह लोगोवाल से समझौता किया और वहा चुनाव सम्पन्न कराया। आसाम की गुत्थियो को सुलझा कर वहा भी चुनाव कराया। एक ही वर्ष मे चार बार विदेश की यात्राए की। विभिन्न देशो से अच्छे मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाने की दिशा मे प्रयास किये। 7 दिसम्बर 1985 मे ढाका मे आयोजित (सार्क) देशो के द्वि-दिवसीय शिखर सम्मेलन मे भारत का प्रतिनिधित्व प्रभावकारी ढग से किया।

राष्ट्रसघ की 40 वी वर्षगाठ पर 24 अक्टूबर 1985 को दिये भाषण से अपने को

तीसरे विश्व के नेता के रूप मे स्थापित कर लिया। नयी शिक्षा नीति के तहत देश भर मे शिक्षाविदो समेत सरकारी तौर पर बारह राष्ट्रीय सम्मेलन कराये। आम आदमी तक आधुनिक सुविधाए पहुचे इसके लिए इन्होने गावो तक टेलीफोन सुविधा दिये जाने की घोषण की। बेरोजगार युवाओ के लिए नेहरू रोजगार योजना चलाई। मतदाताओ की आयु 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष किए जाने का ऐतिहासिक फैसला किया। इन्होने खुली अर्थव्यवस्था तथा टैक्नोलाजी को प्रश्रय दिया, परन्तु अमेरीका या यूरोप के पीछे चलने वाले नही बने। 34 वर्ष बाद चीन की यात्रा करके दोनो देशो के बीच सबन्ध मजबूत करने का प्रयत्न किया।

इन्होने मैक्सिको, तजानिया, अर्जेन्टीना के साथ मिलकर आणविक निरस्त्रीकरण के विरोध मे नया गुट बनाया। 1988 से 1989 तक 'बोफोर्स' का विरोध झेला (ढुढिराज 2001)।

1985 मे काग्रेस की सरकार बनने पर राजीव जी ने दोनो सदनो मे दल–बदल विधेयक को पारित कराया। विरोधी दल के सशोधन को स्वीकार करते हुए उन्होने कहा था कि यद्यपि इस सशोधन से दल–बदल कानून मे कुछ कमिया रह जाती है परन्तु उन्हे फिर आगे दूर किया जायेगा। इस घटना से यह भली भाति स्पष्ट हो गया कि वे सबको साथ लेकर चलना चाहते हैं। यह उनकी दूरदर्शिता और राजनीतिक सूझबूझ का पहला ज्वलन्त सजीव उदाहरण था (सिह राम लोचन 1985)।

गाधी, नेहरू और इन्दिरा जी की तरह राजीव जी भी विश्व मे शान्ति के अग्रदूत बन गये। हथियारो की बढती होड और अन्तरिक्ष के बढते तनाव से वे अत्यन्त चिन्तित थे। 24 अक्टूबर 1985 को उन्होने राष्ट्र सघ के सदस्य देशो का आवाह्न किया कि वे समानता के इस युग मे भूखमरी, रगभेद और परमाणु सैन्यवाद के विरूद्ध सर्घष करे। श्री गाधी ने कहा कि हमे विश्व से भुखमरी दूर करने के लिए सर्घष करना चाहिए। मानव सम्मान की समानता के लिये इस युग मे हमे जाति भेद जैसे अपराधो की निन्दा करनी चाहिए। हमे विश्व से आणविक भौतिकवाद को समाप्त करना चाहिए। मानव की सृजनात्मक शक्ति का उपयोग सुख समृद्धि के लिये किया जाना चाहिये विनाश के लिए नही। उन्होने कहा कि हम गुट निर्पेक्ष देश सह अस्तित्व मे विश्वास करते हैं लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था और परमाणु हथियार का सह अस्तित्व नही हो सकता। स्वतत्रता और रग भेद साथ नही रह सकते। इस तरह विज्ञान और शक्ति का भी सह अस्तित्व नही हो सकता है। उन्होने

आतकवाद को वर्तमान की सबसे बडी चुनौती बताया (सिह, राम लोचन 1985, पृष्ठ–51)।

10वी लोकसभा के चुनाव प्रचार के दौरान 21 मई 1991 को मद्रास (चेन्नई) से 50 किलोमीटर दूर 'श्री पेरम्बुदूर' मे चुनावी भाषण के लिए मच की ओर बढते हुए एक महिला ने उन्हे माला और गुलदस्ता भेट किया और उसी के साथ एक जोरदार धमाके से 'भारत मा के राजदुलारे' के टुकडे इस प्रकार हवा में बिखर गये कि उन्हे पहचानना, ढूढना और जोडना असम्भव हो गया।

भारत सरकार ने अपनी मातृभूमि पर प्राण न्यौछावर करने वाले इस 'युग हृदय सम्राट' को मरणोपरान्त 'भारत रत्न' से सम्मानित किया।

5 6 प्रयाग का वर्तमान प्रशासनिक स्तर

प्रयाग वर्तमान समय मे एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक केन्द्र होने के साथ–साथ प्रशासको के निर्माण एव प्रान्तीय प्रशासको के चयन के केन्द्र के रूप मे भी महत्वपूर्ण है। प्रयाग (इलाहाबाद) को सन् 1834 मे पश्चिमोत्तर प्रान्त की राजधानी घोषित किया गया था, परन्तु वर्ष 1836 मे राजधानी इलाहाबाद से हटाकर आगरा कर दी गई। सन 1836 के फरवरी माह मे इसे पुन इलाहाबाद स्थानान्तरित कर दिया गया। सन् 1877 मे अवध को इस प्रान्त मे मिला लिये जाने पर अवध स्थित मुख्य कार्यकारी प्राधिकारी के मुख्यालय को लखनऊ से इलाहाबाद को स्थानान्तरित कर दिया गया। इस प्रकार इलाहाबाद एक सौ बीस वर्ष तक इस राज्य की विधित राजधानी बना रहा। यद्यपि सन् 1921 मे सचिवालय तथा विद्यार्थी प्रशाखाओ सहित सभी महत्वपूर्ण सरकारी कार्यालयो को लखनऊ स्थानान्तरित कर दिया गया था (जिला गजेटियर 1986 इलाहाबाद जनपद)।

वर्तमान मे प्रयाग (जनपद इलाहाबाद) का भौगोलिक क्षेत्रफल 5437 27 वर्ग कि0मी0 है। वर्तमान मे कौशाम्बी के अ लग जनपद बन जाने से गगा–यमुना के दोआब क्षेत्र का एक विशाल भाग (1836 79 वर्ग कि0मी0) जनपद इलाहाबाद से अलग हो गया है। जनपद इलाहाबाद मे हडिया, फूलपुर, सोराव, करछना, मेजा, बारा, कोराव नामक सात तहसीले हैं। जनपद का प्रशासनिक मुख्यालय इलाहाबाद नगर है। इलाहाबाद मण्डल मुख्यालय भी है। इस मण्डल मे इलाहाबाद के अतिरिक्त फतेहपुर, कौशाम्बी व प्रतापगढ जनपद स्थित है।

जनपद मे कुल 3074 ग्राम है, जिनमे आबाद ग्रामो की सख्या 2799 एव गैर आबाद ग्रामो की सख्या 75 है।

जनपद के सभी ग्रामो को 20 विकास खण्डो मे विभाजित किया गया है। बारा नामक तहसील एव कौधियारा नामक विकास खण्ड नव सृजित है। हडिया तहसील मे 4 विकास खण्ड–धनुपुर, हडिया, प्रतापपुर, सैदाबाद, फूलपुर तहसील मे 3 विकास खण्ड– बहादुरपुर, बहरिया, फूलपुर, सोराव तहसील मे 4 विकास खण्ड– होलागढ, कौडिहार, मऊ आइमा, सोराव, बारा तहसील मे 2 विकास खण्ड– जसरा, शकरगढ, मेजा तहसील मे 4 विकास खण्ड– कोराव, माण्डा, मेजा, उरूवा तथा करछना तहसील मे 3 विकास खण्ड– चाका, करछना, कौधियारा स्थित है (सामाजिक आर्थिक समीक्षा–2001)।

वर्तमान प्रयाग (जनपद इलाहाबाद) मे एक नगर महापालिका, एक छावनी क्षेत्र एव 16 नगर क्षेत्र समिति टाउन एरिया है। वर्ष 2001 मे 1425 ग्राम सभाए, 218 न्याय पचायत एव 218 पचायत घर जनपद मे स्थित है। ग्रामो के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से सभी ग्रामो को तहसील क्षेत्रो के अन्तर्गत 20 विकास खण्डो मे विभक्त किया गया है, जिसके लिए 20 विकास खण्ड इकाइया कार्यरत हैं। जनपद मे उक्त के अतिरिक्त 9 नगर पचायते, एक छावनी क्षेत्र तथा नगर निगम इलाहाबाद की इकाई कार्यरत है। (मानचित्र स० 5 2)

जिले का सामान्य प्रशासन जिलाधिकारी मे निहित है, जिसे कलक्टर तथा जिला मजिस्ट्रेट के नाम से पद नामित किया गया है। उसे दण्डाधिकारीय और कार्यकारीय दोनो ही अधिकार प्राप्त है और वह जिले मे होने वाले समस्त शासकीय कार्यकलापो का केन्द्र है। कलक्टर के रूप मे वह राजस्व प्रशासन का मुख्य अधिकारी होता है और राजस्व तथा भू–राजस्व के रूप मे वसूली योग्य समस्त बकायो की उगाही के लिए उत्तरदायी होता है। जिला मजिस्ट्रेट के रूप मे वह दण्ड प्रक्रिया सहिता तथा विशेष अधिनियमो के अधीन विनिर्दिष्ट अधिकारो का प्रयोग करता है। जिले की पुलिस उसके अधीन रहती है और सर्वोच्च प्राधिकारी की हैसियत से वह जिले मे शाति और व्यवस्था बनाये रखने के लिए होता है। समस्त विकास सम्बन्धी योजनाओ के प्रभावकारी एव यथासमय कार्यान्वयन के लिए वह जिला नियोजन कार्यालय समिति का अध्यक्ष भी होता है। जिला मजिस्ट्रेट के रूप मे उसे जो न्यायिक अधिकार प्रदत्त किये गये थे वे 1955–56 के अपर जिला मजिस्ट्रेट

N
ALLAHABAD DISTRICT
ADMINISTRATIVE UNIT
DISTRICT PRATAPGARH
DISTRICT JAUNPUR
DISTRICT BHADOHI
DISTRICT MIRZAPUR
MADHYA PRADESH
DISTRICT BANDA
DISTRICT KAUSAMBHI
Mau Aimma
Holagarh
SORAON
Baharia
PHULPUR
Pratappur
Kaurihar
Ganga River
ALLAHABAD
Bahadurpur
Saidabad
Dhanupur
HANDIA
Yamuna River
Jasra
BARA
Chaka
KARCHHANA
Uruwa
Kaundhiara
Tons River
Shankargarh
MEJA
Manda
Koraon
Belan River
Ps
STATE BOUNDARY
DISTRICT ,,
TAHSIL ,,
BLOCK ,,
DISTRICT HEADQUATER
TAHSIL ,,
BLOCK ,,
RAILWAY LINE
ROADS
RIVERS
Police Station
10
0
10
km

Fig 5 2

(न्याय) को सौप दिये गये है।

कलक्टर के अधीन 8 परगना अधिकारी है, इनमे से प्रत्येक के प्रभार मे एक परगना है और वह इन्ही परगना अधिकारियो की सहायता से प्रशासन चलाता है। परगना अधिकारियो को अपने परगने मे राजस्व, कार्यपालिका एव न्यायिक आदि बहुविधि कर्तव्यो का निर्वहन तो करना ही पडता है साथ ही उन्हे विकास सम्बन्धी विभिन्न कार्य कलापो को भी पूरा करना पडता है। गाव सभाओ की भूमि प्रबन्ध समितियो, जमीदारी विनाश योजना तथा भूमि सुधार सम्बन्धी कार्यों आदि की भी देख–रेख इन्ही परगना अधिकारियो को करनी पडती है। राजस्व प्रशासन की सुविधा के लिए प्रत्येक तहसील को एक आवासिक तहसीलदार के प्रभार मे रखा गया है। उन तहसीलदारो की सहायता नायब तहसीलदार करते है (उ0प्र0 जिला गजेटियर 1986, पृष्ठ–120)।

एक अप्रैल 1958 को जिला कलेक्शन आफिसर का पद समाप्त कर दिया गया और 15 नवम्बर 1962 को कलेक्शन नायब तहसीलदार के पद को नियमित नायब तहसीलदार के पद मे विलय कर दिया गया और एक डिप्टी कलेक्टर (जिसे अब आफिस सर इन्चार्ज कलेक्शन कहा जाता है) को अपने निजी कृत्यो के साथ भू–राजस्व तथा अन्य सरकारी देयो की वसूली के लिए उत्तरदायी बना दिया गया है।

पुलिस प्रशासन

पुलिस बल मे ज्येष्ठ पुलिस अधीक्षक, एक अपर पुलिस अधीक्षक एक सहायक पुलिस अधीक्षक और 7 अन्य उपअधीक्षक है। जिले का प्रभार पुलिस अधीक्षक के हाथ मे है और ग्रामीण क्षेत्रो के फौजदारी सम्बन्धी कार्य का प्रभार अपर पुलिस अधीक्षक के हाथ मे है। पुलिस लाइन तथा यातायात नियन्त्रण का प्रभार सहायक पुलिस अधीक्षक के हाथ मे है। सात उपअधीक्षको मे से दो उपअधीक्षक शहरी क्षेत्रो के प्रभारी हैं और पाच उपअधीक्षक ग्रामीण क्षेत्रो के प्रभारी हैं। पुलिस प्रशासन के उद्देश्य से जिले को क्षेत्रीय दृष्टि से सात क्षेत्रो मे बाट दिया गया है और उन्हे तीस पुलिस थानो मे विभाजित कर दिया गया है। प्रत्येक पुलिस थाने को एक स्टेशन आफिसर के प्रभार मे रख दिया गया है जो कि सामान्यतया सब इस्पेक्टर की श्रेणी का होता है।

प्रशासन का दूसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ न्यायपालिका है जिसका अध्यक्ष जिला एव सेशन जज है। जिला जज के रूप में उसका न्यायालय जिले का सर्वोच्च सिविल न्यायालय

है और उच्च न्यायालय के अधीक्षण के अधीन रहते हुए बगाल, आगरा और आसाम सिविल न्यायालय अधिनियम 1887 के अधीन वह अपनी अधिकारिता की स्थानीय सीमाओ के अन्तर्गत सभी सिविल न्यायालयो पर प्रशासनिक नियन्त्रण रखता है। वह पदेन जिला रजिस्ट्रार भी है और जिले के सब रजिस्ट्रार के कार्यालयो पर नियत्रण रखता है और भारतीय रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1908 (इडियन रजिस्ट्रेशन ऐक्ट–1908) के अधीन अपीलो की सुनवायी करता है। उसके आदेशो के विरूद्ध अपीले उच्च न्यायालय मे की जाती है। सेशन जज के रूप मे उसका न्यायालय जिले मे फौजदारी का उच्चतम न्यायालय है।वह कानून द्वारा प्राधिकृत कोई भी दडात्मक सजा दे सकता है। परन्तु मृत्यु दड के दण्डादेश पर उच्च न्यायालय की पुष्टि आवश्यक है। वह प्रथम श्रेणी के मजिस्ट्रेटो द्वारा पारित आदेशो के विरूद्ध की गयी अपीलो की सुनवायी भी करता है। जिला जज, सिविल और सेशन जज, दिवानी जज, लघुवाद न्यायालय के जज तथा दो मुसिफो के न्यायालय इलाहाबाद के सिविल न्यायालय है। मुसिफो को छोडकर ये सभी अधिकारी अपनी अधिकारिता का प्रयोग पूरे जिले मे करते है, जबकि मुसिफ (पश्चिमी) सिविल की अधिकारिता मे दोआब और इलाहाबाद शहर और मुसिफ (पूर्व) की अधिकारिता मे गगापार तथा यमुनापार के क्षेत्र आते हैं। इस स्थायी स्टाफ के अतिरिक्त 3 सिविल और सेशन जजो और 4 अपर मुसिफो की नियुक्ति अस्थायी रूप से की गयी है जिनकी अधिकारिता पूरे जिले पर है। प्रथम अस्थायी सिविल और सेशन जज नवम्बर 1954 से कार्य कर रहा है और एक मुसिफ 1955 से कार्य कर रहा है।

जिले मे आठ न्यायाधिकारी तथा दो ज्यूडिशियल सिटी मजिस्ट्रेट हैं। राजस्व विधि तथा भारतीय दड सहिता के अधीन सभी मामलो का निवारण न्यायाधिकारियो तथा मजिस्ट्रेटो तथा असिस्टेन्ट कलक्टरो (प्रथम श्रेणी) द्वारा किया जाता है। जिले मे प्रथम श्रेणी के अधिकार प्राप्त चार अवैतनिक स्पेशल मजिस्ट्रेट है और इसके अतिरिक्त नौ अवैतनिक बेच मजिस्ट्रेट (जिसमे सिविल बेच, दोआब बेच और गगापार, यमुनापार बेच सम्मिलित) भी है जो केवल द्वितीय तथा तृतीय श्रेणी के फौजदारी के मामलो का ही निवारण करते हैं (उ0प्र0 जिला गजेटियर 1986)।

References

Cane, W S (1891) Picturesqe India, London

बाजपेयी, डा0 राजेन्द्र कुमारी (1985) लेख '1857 से 1942 तक के योगदान' पुस्तक स्वतत्रता सग्राम मे इलाहाबाद,अखिल भारतीय स्वतत्रता सग्राम सेनानी सम्मेलन, इन्दिरा महानगर, प्रयाग द्वारा प्रकाशित पृष्ठ–1,2,3,3,3,4

बील, बुद्धिस्टिक रेकार्ड्स, जिल्द–1, पृष्ठ–71,72

ढुढीराज (2001) 'भारत के प्रधानमत्री' अर्पित प्रकाशन इलाहाबाद, पृष्ठ–28,30

घोष, एन0एन0 (1935)ऐन अर्ली हिस्ट्री आफ कौशाम्बी (इलाहाबाद) पृष्ठ–77

जनपद गजेटियर (1986) इलाहाबाद जनपद पृष्ठ–120,121

गुप्ता, मन्मथ नाथ (1985) 'चन्द्रशेखर आजाद' स्वतत्रता सग्राम मे इलाहाबाद पृष्ठ–80

नर्मदा (1964) पत्रिका के विशेषाक 'भविष्य पीढियो के लिए थाती' पृष्ठ–108

राष्ट्रीय सहारा समाचार पत्र (1 8 1999) लेख 'खुद कुछ न लिया, बस प्रधानमत्री दिया' लेखक के0 विक्रम राव

राव, के0एन0 (1970) नेहरू डाइनेसी, वाणी प्रकाशन (कमला नेहरू की कुण्डली से) पृष्ठ–66

श्रीवास्तव, शालीग्राम (1937) 'प्रयाग प्रदीप' पृष्ठ–22,25,39,40,41,49,53,56,57

सिन्हा, हरेन्द्र प्रताप (1953) 'भारत को प्रयाग की देन' पृष्ठ–324,112,115,117

सिह, राम लोचन प्रसाद (1985) लेख 'महात्मा गाधी से राजीव गाधी तक' स्वतत्रता सग्राम मे इलाहाबाद पृष्ठ–47,49,50,51

सामाजिक आर्थिक समीक्षा (2001) इलाहाबाद जनपद पृष्ठ–8

टैवर्नियर (1676) 'ट्रेविल्स इन इडिया' जिल्द–1, पृष्ठ–93,94

टडन, हरिमोहन दास (2001) 'प्रयाग राज' पृष्ठ–97

टडन, हरिमोहन दास (1995) 'प्रयागराज लाला मनोहर दास का परिवार' पृष्ठ–95

यदुनाथ सरकार (1932) 'इडिया अव् औरगजेब' पृष्ठ–127

यादव प्रकाश चन्द्र (1985) लेख 'सन बयालिस के तूफानी दिन' स्वतंत्रता सग्राम मे इलाहाबाद पृष्ठ–35–40, 36

यादव प्रकाश चन्द्र (1985) लेख 'बानर सेना की कप्तान' पृष्ठ–20

यादव प्रकाश चन्द्र (1985) लेख 'इन्दिरा जी की शहादत' स्वतत्रता सग्राम मे इलाहाबाद पृष्ठ–79,77

अध्याय–6

प्रयाग एक परिवहन एवं संचार के केन्द्र के रूप में :

यातायात का महत्व नगरो के विकास एव जीवन के लिये अनिवार्य और असदिग्ध है क्यो कि नगरो को दूसरे नगरो एव अनगरीय क्षेत्रो से जोडने का कार्य तथा नगर के विभिन्न भागो को भी आपस मे जोडने का कार्य यातायात मार्गो एव साधनो द्वारा ही होता है। ये मार्ग एव साधन मिलकर किसी नगर के परिवहन तन्त्र का निर्माण करते है (सिह ओ0 पी0 1979) । परिवहन के साधन किसी भी देश या क्षेत्र की सभ्यता एव सस्कृति के वाहक माने जाते है। वर्तमान सभ्यता, नगरो का विकास एव अर्थव्यवस्था का बदलता हुआ स्वरूप परिवहन साधनो का प्रतिफल है (रिछरिया, एच सी 1990)। कोनान (1965) महोदय के अनुसार परिवहन के अतिरिक्त दूसरा ऐसा महत्वपूर्ण साधन नही है जो किसी भी अविकसित क्षेत्र के आर्थिक, सामाजिक एव सास्कृतिक प्रगति मे तीव्र विकास ला सके। इस प्रकार परिवहन सेवाएँ ही दूरी को कम एव जनसाधारण के पारस्परिक विचारो का आदान–प्रदान करने वाली कडी है। इससे न केवल जनसख्या एव वस्तुओ को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाने मे सुविधा होती है बल्कि विचार एव कौशल को भी एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश तक पहुँचाया जा सकता है। इन लाभो के अतिरिक्त परिवहन व्यवस्था उच्च जीवन स्तर के विकास, अवधारणात्मक परिवर्तन, ज्ञान–विज्ञान एव नये विचारो के विस्तार, प्रौधौगिकी एव अनुसधान के प्रसार, विकास के कार्यक्रम, समाज कल्याण आदि सामाजिक उपलब्धियो के वितरण मे सहायक होती है। परिवहन एव सचार व्यवस्था भाषा, प्रथाए एव पर्यावरणीय दीवारो को तोडकर सामाजिक समरसता को सुलभ बनाती है (स्ट्रार्ट 1934)। राजनीतिक और प्रशासनिक क्षेत्र मे भी परिवहन एव सचार व्यवस्थाए अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती हैं। राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय एकता और अखण्डता, सुरक्षा, न्याय, प्रशासन, कानून और व्यवस्था आदि मे उल्लेखनीय रूप से सहायक होती है (तिवारी–1990)। सुव्यवस्थित परिवहन तन्त्र के माध्यम से किसी स्थान पर उपभोक्ता वस्तुओ का अभाव नही होने पाता है एव इससे समूचे देश या उसके एक बडे क्षेत्र मे समान मूल्य रखने मे सहायता मिलती है (तिवारी एव–त्रिपाठी 1987)। इस प्रकार परिवहन एव सचार का

सामाजिक, सास्कृतिक, धार्मिक एव नगरीय विकास के गत्यात्मक पहलूओ का मूल्याकन करने के लिए इस अध्याय मे प्राचीन से वर्तमान परिवहन सचार व्यवस्था की समीक्षा की गयी है।

अनुकूल स्थिति

प्रयाग (इलाहाबाद) उत्तरप्रदेश के कवाल (KAVAL) नगरो मे सर्वाधिक महत्वपूर्ण है क्यो कि केवल यही नगर एक तरफ गगा मैदान मे पूर्व–पश्चिम के व्यापार को नियन्त्रित करता है और दूसरी तरफ भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्रो और दकन क्षेत्र को जोडता है। यह नगर दो महान नदियो गगा यमुना के सगम पर स्थित होने से पूर्वी और उत्तरी भारत के मध्य व्यापार के लिए प्राकृतिक जलमार्ग प्रस्तुत करता है। यह नगर भारत के मुख्य रेलमार्ग पर स्थित है, जो गगा मैदान के अत्यधिक उपजाऊ और सघन अधिवासित क्षेत्र को वनो से ढके हुए, विरल अधिवासित कम विकसित लेकिन सम्भावनाओ से धनी मध्य भारत के पठार और सुदूर दक्षिण तक की कपास पेटी को जोडता है। इसी प्रकार इसकी स्थिति उत्तर भारत के मध्य मे होने से वायु परिवहन के लिए उपयुक्त स्थिति प्रदान करता है (सिह, उजागिर 1959)।

6.1 प्राचीन परिवहन तन्त्र :

प्रयाग (इलाहाबाद) अत्यन्त प्राचीन काल से हिन्दुओ का तीर्थ स्थान रहा है और इस स्थान पर विशेषकर कुम्भ मेले के अवसर पर लोग लाखो की सख्या मे एकत्र होते है। प्राचीन काल मे लोग सडक और नदियो के मार्गों द्वारा यहा पर आते थे और वर्तमान समय मे इनके अतिरिक्त रेल और हवाई मार्गों से भी आते है। प्राचीन समय मे प्रयाग का परिवहन तन्त्र कौशाम्बी नगर के कारण विकसित हुआ। ईसा के कई शताब्दी पूर्व कौशाम्बी नगर व्यापारिक मार्गों द्वारा पाटलिपुत्र, वाराणसी, मथुरा और तक्षशिला जैसे नगरो से जुडा हुआ था तथा दक्षिण और पश्चिम की ओर से कौशल तथा मगध को जानेवाली वस्तुओ के लिए एक महत्वपूर्ण प्रवेश द्वार था। कौशाम्बी मे वर्मा तथा पूर्वी देशो से गगा और यमुना नदी के द्वारा अवाध रूप से गमनागमन होता था। दक्षिण–पश्चिम तथा उत्तर–पश्चिम से आने वाली सडके भी कौशाम्बी मे मिलती थी जिनके द्वारा यहा पर माल का निर्यात और आयात किया

जाता था(घोष, एनएन 1945)।

(i) सड़के –

प्राचीन समय से 1857 तक सभी मार्गों को स्थानीय माना जाता था और ऐसा लगता है कि कोई भी पक्की सडक नही बनायी गयी थी। सामान्यतया माल बोझा ढोने वाले जानवरो और बैलगाडियो (जो एक घटे मे लगभग आठ किलोमीटर तक चलती थी) पर लादकर ले जाया जाता था। मुगलकाल मे इस नगर का दिल्ली, आगरा, लखनऊ, वाराणसी, मद्रास, नागपुर तथा बम्बई जैसे स्थानो से बराबर सम्पर्क बना रहा। सडक मार्गों से इन स्थानो की दूरी क्रमश 663 5, 476 37, 204 39, 133 58, 1697 85, 614 77 और 1572.33 कि0मी0 है (जेम्स रेनेल 1792)। अकबर के शासन काल मे यह नगर कालीन उद्योग का केन्द्र बन गया और यहा से कालीनो, सूती साडियो, मोटे कपडो का बम्बई तथा वाराणसी आदि नगरो के लिए पर्याप्त मात्रा मे निर्यात किया जाता था। उसके शासन काल मे सडके पूर्णत निरापद थी और व्यापारियो को सरक्षण प्रदान किया जाता था (इलाहाबाद जिला गजेटियार उ0प्र0 1986 पृष्ठ–92)।

(ii) नदी परिवहन या नौ परिवहन –

प्रयाग दो बडी नदियो–गगा और यमुना के सगम पर स्थित है, इसलिए प्राचीन समय से आने–जाने के लिए यह एक बहुत उपयुक्त स्थान रहा है। नदी परिवहन की सुविधा के कारण ही इस नगर का अधिक विकास हुआ।

गदर से पूर्व ईस्ट इडिया कपनी के शासन–काल मे जब रेल नही चली थी तो कलकत्ते से यहा तक एक स्टीमर मेल अर्थात् जहाजी डाक चला करती थी, जिसका स्टेशन यहा कुछ टूटे–फूटे पक्के घाट के रूप मे किले के पश्चिम मन¯कामेश्वर के समीप बना हुआ है। इस जलमार्ग की लम्बाई बरसात मे भगरौटी नहर के द्वारा 1300 कि0 मी0 और अन्य ऋतुओ मे सुदरवन हो कर 1424 कि0 मी0 थी। गर्मी और जाडे मे स्टीमर कलकत्ता से 25 दिन मे यहा पहुॅचता था और 15 दिन मे लौट जाता था, परन्तु वर्षा मे यहा से कलकत्ता पहुॅचने मे केवल 9 दिन लगते थे।

वर्तमान समय मे नहरो के निकल जाने से गगा मे जल बहुत कम हो गया है, परन्तु

यमुना के रास्ते आज भी कुछ नावे भाऊ और बाजरा इत्यादि अन्न ले कर पूर्व की ओर जाया करती है और उधर से चावल लाद कर लाती है। प्रतापपुर की खान से पत्थर भी नावो पर प्रयाग मे आता है (श्रीवास्तव, शालीग्राम 1937)।

वर्तमान समय मे इलाहाबाद और कलकत्ता के मध्य जलपरिवहन की नियमित सेवा पुन प्रारम्भ हो गयी है। 11 अक्टूबर 1999 को पहली खेप इलाहाबाद से कलकत्ता को भेजी गयी। इसको पहुॅचने मे 14 दिन का समय लगा। मनकामेश्वर के पास स्थित टूटे—फूटे पक्के घाट को व¨र्तमान सुविधाओ, सडक व सचार सेवाओ से सुव्यवस्थित कर दिया गया है (मानचित्र स० 6 1)। (प्रादेशिक समाचार 5 अक्टूबर 2000, प्रसारण लखनऊ)

6.2 ब्रिटिश काल मे परिवहन का विकास :—

ब्रिटिश काल मे प्रयाग मे परिवहन तथा सचार साधनो का अत्यधिक विकास हुआ। अग्रेजो के शासन काल मे सडको के निर्माण और उनके सुधार का कार्य आरम्भ हुआ। इसी काल मे पथकर लगाया गया। इस काल मे मुख्यत पक्की सडको एव रेल परिवहन का विकास हुआ। इस काल मे प्रयाग के विकास का आधार तैयार हुआ।

(i) <u>गाड ट्रक रोड और अन्य सड़के –</u>

1883 मे जिले मे मुख्य रूप से चार पक्की सडके बन गईं थी। प्रथम 'ग्राड ट्रक रोड' यह प्रयाग की सबसे बडी पक्की सडक है, जिसका पुराना नाम 'शेरशाही सडक' है। शेरशाह का समय 1540 से 1545 ई0 तक रहा है। यह सडक उसी समय की बनी हुई बताई जाती है।, परन्तु मरम्मत न होने के कारण बहुत बिगड गई थी। इसलिए अग्रेजी राज्य होने पर सन् 1818 तक प्राय गगा और यमुना के जलमार्ग से ही लोग पश्चिम से काशी यात्रा किया करते थे। सन् 1828 ई0 मे यह सडक वर्तमान रूप मे पूर्व से प्रयाग तक बनी और उसके तीन वर्ष बाद कानपुर तक बन गई। पहले यह सडक प्रयाग से पश्चिम गगा के किनारे—किनारे हो कर गयी थी क्यो कि जलमार्ग होने के कारण प्राय बडे—बडे प्रसिद्ध स्थान गगा के तट पर बसे हुए थे। अब यह कुछ दक्षिण की ओर हट कर बनी है। ग्राड ट्रक रोड 122 31 कि0मी0 की दूरी तक इस जिले से होकर गुजरती है (श्रीवास्तव शलीग्राम 1937)।

ALLAHABAD DISTRICT
MEANS OF TRANSPORT & COMMUNICATION
N
TO PRATAPGARH
FROM LUCKNOW
SH 38
Mauaima
Soraon
Fajalabad
Phulpur
TO JAUNPUR
TO VARANASI
Sarswatipur
FROM KANPUR
NH-2
ALLAHABAD
HANDIA
NH-2
TO VARANASI
Yamuna R
Ganga R
Jasra
Karchhana
Sirsa
FROM BANDA
SH 44
FROM MANIKPUR
Shankargarh
Tons R
MEJA
TO MIRZAPUR
Bharatganj
NH27
FROM REWA
Koraon
Belan R
Badokhar
NATIONAL HIGHWAY. NH-2
STATE HIGHWAY SH-9
OTHER ROADS
RAILWAY LINE
FERRY POINTS.
WATERWAYS
AIRWAYS & AIRPORT
10 0 10
km

Fig 61

अग्रेजी शासनकाल मे यह सडक दारागज मे गगानदी को नावो के पुल से पार करती थी (जिसका उपयोग केवल सूखे मौसम मे होता था) और वर्षा ऋतु मे नदी नावो से पार की जाती थी। यह सडक झूँसी, चायल और कडा के परगनो मे होकर जाती है (जिला गजेटियर 1986 इलाहाबाद)।

दूसरी पुरानी सडक जौनपुर रोड है जो झूँसी से ग्राड ट्रक रोड से निकलकर उत्तर और पूर्व को फूलपुर होती हुई चली गई है। पन्द्रहवी शताब्दी मे जौनपुर मे मुसलमानो का एक अलग राज्य स्थापित था सभवत उसी समय यह सडक बनी होगी। इस की लम्बाई इस जिले मे 33 किलोमीटर थी।

तीसरी सडक फैजाबाद रोड है जो गदर के लगभग पक्की हुई थी। यह सडक इलाहाबाद नगर से फाफामऊ के निकट नावो के पुल से होकर प्रतापगढ जिले मे प्रवेश करती थी।

चौथी पुरानी सडक जबलपुर रोड (जो सोहागी मार्ग कहलाता है) यमुना पर रेलवे पुल से प्रारम्भ होता था और दक्षिण की ओर अरैल और बारा परगनो से होता हुआ 43 45 कि0 मी0 की दूरी तक जिले मे गुजरता था।

ब्रिटिश काल मे 24 4 कि0मी0 पक्की तथा 1321 27 कि0 मी कच्ची सडके तथा 5892 कि0मी0 ग्रामीण पगडडिया भी थी।वर्ष 1923 मे जिले मे 436 13 कि0मी0 पक्की तथा लगभग 1248 85 कि0मी0 कच्ची सडके थी (जिला गजेटियर 1986)।

(ii) <u>रेलवे लाइन –</u>

इलाहाबाद जिले मे रेलो का इतिहास और विकास 1859 से प्रारम्भ होता है जब ईस्ट इण्डियन रेलवे की स्थापना की गयी। सर्वप्रथम ईस्ट इण्डियन रेलवे सन् 1857 मे कलकत्ता से मिर्जापुर तक चली थी। यहा केवल भरवारी स्टेशन तक लाइन बनाने के लिए सामान ले कर रेल आया–जाया करती थी और उसके आगे सडक बन रही थी, उसी समय गदर प्रारम्भ हो जाने से सारा काम बन्द हो गया। पुन जब शान्ति स्थापित हुई तो 3 मार्च सन् 1859 से प्रयाग से कानपुर तक रेल चलने लगी, परन्तु यमुना पर पुल न होने से केवल किले के स्टेशन तक गाडी आती–जाती थी। अप्रैल 1864 तक टोस का पुल तैयार हो जाने पर

मिर्जापुर से यमुना उस पार तक रेल चलने लगी। इसके पश्चात् 15 अगस्त सन् 1865 को यमुना का पुल तैयार होकर खुला। तब प्रयाग से बडे स्टेशन तक रेले आने लगी।

सन् 1867 मे नैनी से जबलपुर लाइन खुली और सन् 1907 से बम्बई मेल के लिए छिउकी वाली लाइन निकाली गई (श्रीवास्तव, शालीग्राम 1937)।

इलाहाबाद से दूसरी लाइन सन् 1905 मे इलाहाबाद से फैजाबाद तक निकली जिसके लिए फाफामऊ के निकट गगापर दूसरा पुल बना। 1 जनवरी 1905 को इसका उद्घाटन 'कर्जन ब्रिज' के नाम से हुआ था। इसके पश्चात् फाफामऊ से दो लाइने और निकली। पहली 18 जून 1906 को जौनपुर तक, दूसरी 2 नवम्बर 1911 को रायबरेली तक।

सन् 1912 मे बगाल नार्थ वेर्स्टन रेलवे की छोटी लाइन प्रयाग से बनारस तक निकली और इसके लिए दारागज मे एक और पुल गगा के ऊपर बनाया गया। यह पुल यहा के सभी पुलो से लम्बा अर्थात् 9380 फीट अथवा 1 61 कि0मी0 से कुछ अधिक है। आइजेट साहब उस समय इस रेलवे के चीफ इजीनियर थे, इसलिए उन्ही के नाम से इसका नामकरण 'आइजेट ब्रिज' हुआ है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि जहा ब्रिटिश काल के पूर्व प्राकृतिक एव धीमी गति के साधनो का विकास हुआ वही इस काल मे आधुनिक एव गत्यात्मक परिवहन का जाल तैयार किया गया (जिला गजेटियर 1986)।

6.3 स्वातत्र्योत्तर/वर्तमान काल मे परिवहन का विकास :-

स्वतत्रता के पश्चात् परिवहन का अत्यधिक विकास हुआ। प्रयाग वर्तमान समय मे अपने निकटवर्ती जनपदो तथा देश के अन्य भागो से सुव्यवस्थित राजपथ एव रेलमार्ग द्वारा जुडा हुआ है।

(i) नई सडको का विकास –

वर्ष 1947 से सडको के निर्माण पर अत्यधिक जोर दिया गया क्योकि ये मदे पचवर्षीय आयोजनाओ की प्रमुख मदो मे से है। 1955 मे प्रान्तीय सरकारो द्वारा (भारत के सभी जिलो मे) "स्टार और ग्रिड सिद्धान्त" को कार्यान्वित करने का निश्चय किया गया। इस सिद्धान्त

के अनुसार इलाहाबाद के लिए 590 63 कि0 मी0 पक्की सडको की आवश्यकता पाई गयी थी। द्वितीय आयोजना अवधि मे इस सीमा मे और भी वृद्धि कर दी गयी।

चूकि यह नगर उत्तर भारत के एक महत्वपूर्ण औद्योगिक केन्द्र कानपुर के निकट स्थित है इस कारण जिले मे और अधिक पक्की सडको की आवश्यकता है। तृतीय पचवर्षीय आयोजनावधि मे 64 कि0मी0 पक्की सडको का आधुनिकीकरण किया गया है। अध्ययन क्षेत्र की सडको को मुख्य रूप से राष्ट्रीय राजमार्ग, राज्यमार्ग, मुख्य जिलामार्ग और ग्रामीण सडको के रूप मे विभक्त किया गया है। केन्द्र सरकार राष्ट्रीय राजमार्गों का तथा राज्य सरकार प्रान्तीय राजमार्गों तथा जिले की बडी सडको का अनुरक्षण करती है तथा जिला परिषद नगर महापालिका, इलाहाबाद और इलाहाबाद कैन्टूनमेन्ट तथा अन्य जिला एव ग्राम्य सडको का अनुरक्षण किया जाता है (जिला गजेटियर 1986)।

(अ) <u>राष्ट्रीय राजमार्ग –</u>

राष्ट्रीय राजमार्ग समस्त देश को आर्थिक व सैनिक दृष्टिकोण से एक सूत्र मे बाध देते है। राष्ट्रीय राजमार्ग न केवल परिवहन की दृष्टि से बल्कि अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने मे भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। सम्बद्ध अध्ययन क्षेत्र प्रयाग से सडक–ए–आजम और राष्ट्रीय राजमार्ग न–27 (इलाहाबाद–रीवा मार्ग) गुजरते है।सडक–ए–आजम जिसे राष्ट्रीय राजमार्ग न 2 से जाना जाता है, जो जनपद मे वाराणसी की ओर से आकर हण्डिया तहसील मे प्रवेश करती है। यह मार्ग गगा नदी के समानान्तर चलकर सिराथू तहसील से कानपुर की तरफ चला जाता है। जनपद मे इसकी कुल लम्बाई 130 कि0 मी0 है। देश का व्यस्ततम मार्ग होने के कारण इसे दोहरे मार्ग की सुविधा प्राप्त है।

इलाहाबाद–रीवा राष्ट्रीय राजमार्ग न 27 प्रयाग के दक्षिण–पश्चिम से गुजरता है और जिले मे 41 8 कि0मी0 की दूरी तय कर मध्य प्रदेश राज्य के रीवा जनपद मे प्रवेश करता है। जनपद मे लगभग 27 06 कि0मी0 सडके ऐसी हैं जो राष्ट्रीय राजमार्ग के सहायक सडक के रूप मे कार्य करती है (मानचित्र स 6 1)।

<u>राजकीय राजमार्ग –</u>

राजकीय राजमार्ग का महत्व व्यापार व उद्योग की दृष्टि से अधिक है। इनके निर्माण

और ठीक दशा में रखने का दायित्व राज्य सरकार का होता है। इलाहाबाद जनपद में इस समय राजकीय राजमार्गों की कुल लम्बाई 216 कि0मी0 है। सम्बद्ध राजकीय राजमार्ग अध्ययन क्षेत्र को पड़ोसी जनपदों से जोड़ते हैं। इनमें से प्रमुख राजकीय मार्ग निम्न हैं:-

(1) प्रतापगढ़–सुल्तानपुर–फैजाबाद मार्ग – 9

(2) उन्नाव–रायबरेली–लखनऊ मार्ग – 38

(3) इलाहाबाद–बांदा मार्ग – 44

(4) इलाहाबाद–मिर्जापुर मार्ग – 27

राजकीय राजमार्ग नं0 9 जनपद को प्रतापगढ़, सुलतानपुर व फैजाबाद से जोड़ता है, जिसकी जनपद में कुल लम्बाई 27.39 कि0 मी0 है। यह मार्ग इलाहाबाद शहर से प्रारम्भ होकर फाफामऊ के पास गंगा नदी पर बने चन्द्रशेखर आजाद सेतु को पार करता हुआ सोरांव तथा मऊ आइमा विकास खण्ड से होकर प्रतापगढ़ जनपद में प्रवेश करता है।

राजकीय मार्ग नं0 38 जनपद को उन्नाव, रायबरेली और लखनऊ से जोड़ता है। जनपद में इसकी कुल लम्बाई लगभग 30 कि0मी0 है। यह मार्ग फाफामऊ, कौड़िहारा व निन्दुरा से होकर प्रतापगढ़ जनपद में प्रवेश करता है।

राजकीय राजमार्ग नं0 44 इलाहाबाद को बांदा जनपद से जोड़ने का मुख्य मार्ग है जिसकी जनपद में कुल लम्बाई 50 कि0मी0 है। यह चाका, जसरा, शंकरगढ़ विकास खण्डों से होकर बांदा जनपद में प्रवेश करता है। राजकीय राजमार्ग नं. 27 नैनी, करछना, मेजा और माण्डा होता हुआ मिर्जापुर जनपद में प्रवेश करता है। इस मार्ग की जनपद में कुल लम्बाई 60 कि0मी0 है। इन राज्य राजमार्गों की औसत चौड़ाई 3.66 मीटर है।

सारणी सख्या– 6.1

पक्की सडको की लम्बाई (कि०मी० में)

क्र0स0	विभाग	1993–94	94–95	97–98	98–99
पुनर्गठित					
(1)	लोक निर्माण विभाग	2902	2940	2224	2262
(2)	स्थानीय निकाय	944	944	911	911

स्रोत – सामाजिक आर्थिक समीक्षा 2000–2001 पृष्ठ 27

उपरोक्त के अतिरिक्त सुनिश्चित रोजगार योजना, पूर्वांचल विकास निधि, सासद क्षेत्र योजना, जवाहर रोजगार योजना तथा नगरीय अवस्थापना टास्क फोर्स योजना के माध्यम से नगरीय तथा ग्रामीण अचलो के सम्पर्क मार्गों का निर्माण किया जा रहा है।

(स) अन्य सडके .–

उपरोक्त सडको के अलावा जनपद मे अन्य अनेक सडके है जो यातायात प्रवाह मे कुल 3946 कि0मी0 का योगदान देती हैं। इनके रख–रखाव की जिम्मेदारी सार्वजनिक निर्माण विभाग, नगर महापालिका, छावनी बोर्ड तथा जिलापरिषद आदि की है। इन पक्की सडको के अतिरिक्त सम्पूर्ण जनपद मे कच्ची सडको का एक जाल सा बिछा हुआ है जो ग्रामीण क्षेत्रो को कस्बो से या पक्की सडको से जोडते है। वर्तमान समय मे उत्तर प्रदेश सरकार ने व्यापक सडक निर्माण अभियान चलाया है जिसके अन्तर्गत 1500 से अधिक जनसख्या वाले गावो को पक्की सडको से जोड देने की व्यवस्था है (मानचित्र स 6 1)। पुनर्गठित जनपद मे वर्ष 1998–99 मे सार्वजनिक निमार्ण विभाग की कुल 2262 कि0मी0 लम्बी सडक तथा कुल सडको की लम्बाई भी 3223 कि0मी0 है (सामाजिक आर्थिक समीक्षा 2000-2001)।

(i) रेलवे का विकास –

प्रयाग (जनपद इलाहाबाद) मे रेलो का इतिहास और विकास 1859 ई0 से प्रारम्भ होता है, जब ईस्ट इण्डियन रेलवे का प्रसार इस क्षेत्र तक किया गया। जैसा कि ब्रिटिश काल मे रेलवे का आधारभूत विस्तार हो गया जिसको स्वतत्रता के पश्चात् और अधिक विकसित कर अत्यधिक गत्यात्मक बना दिया गया है। सन् 1865 मे यमुना ब्रिज के निर्माण के साथ ही प्रयाग पूरब मे मुगलसराय, पश्चिम मे कानपुर तथा दक्षिण मे जबलपुर से जुड गया। सन् 1951 मे अध्ययन क्षेत्र के रेलवे का अधिकाश भाग उत्तर रेलवे के अधीन आ गया जो ब्रिटिश काल मे ईस्ट इण्डियन रेलवे के अधीन था, केवल कुछ भाग ही पूर्वोत्तर और मध्य रेलवे के अधीन रहा (जिला साख्यिकी पत्रिका इलाहाबाद 1990)। इलाहाबाद सन् 1997 मे उत्तर मध्य रेलवे का मुख्यालय बन गया। इलाहाबाद मे रेलवे भर्ती बोर्ड होने के साथ ही रेलवे कम्प्यूटर आरक्षण व्यवस्था भी विकसित है। जनपद मे रेलो की कुल लम्बाई 337 25 कि0मी0 है। इलाहाबाद उत्तरी, मध्य एव पूर्वी रेलवे का एक महत्वपूर्ण जक्शन है। अध्ययन क्षेत्र की रेलवे लाइनो का विवरण इस प्रकार है – (देखिए मानचित्र स 6 1)

1	दक्षिणी पूर्वी, इलाहाबाद–मुगलसराय रेलमार्ग	–	56 कि0मी0
2	उत्तरी पश्चिमी, इलाहाबाद–कानपुर रेलमार्ग	–	60 कि0मी0
3	पूर्वी , इलाहाबाद–जौनपुर वाराणसी रेलमार्ग	–	61 कि0मी0
4	उत्तरी, इलाहाबाद–फैजाबाद रेलमार्ग	–	33 कि0मी0
5	इलाहाबद–लखनऊ रेलमार्ग	–	43 कि0मी0
6	मध्य रेलवे इलाहाबाद–जबलपुर रेलमार्ग	–	38 25 कि0मी0
7	इलाहाबाद–वाराणसी रेलमार्ग	–	46 00 कि0मी0
	कुल योग	–	337 25 कि0मी0

इलाहाबाद–मुगलसराय तथा इलाहाबाद–कानपुर रेलवे लाइन पूर्णत विद्युतीकृत तथा दोहरी परिवहन व्यवस्था से सम्पन्न है। यह रेल लाइन देश के दो महानगरो (दिल्ली–कलकत्ता)

को जोडने वाली सबसे व्यस्ततम रेलमार्ग है। यह जनपद के दक्षिणी–पूर्वी भाग माण्डा रोड रेलवे स्टेशन से प्रवेश कर ऊँचडीह, मेजारोड, मीरपुर, करछना, छिऊकी, नैनी, इलाहाबाद जक्शन फिर सुबेदारगज, वमरौली, मनौरी, सैय्यद सरावा, भरवारी, सिराथू और कनवर स्टेशनो से होकर गुजरती है। इलाहाबाद–दिल्ली को यह मार्ग जोडता है।

इलाहाबाद–जौनपुर–वाराणसी रेलमार्ग इलाहाबाद जक्शन से प्रारम्भ होकर प्रयाग, फाफामऊ, फूलपुर, उग्रसेनपुर, जघई तथा 61 कि0मी0 की दूरी तय कर जौनपुर तथा वाराणसी की ओर जाता है।

इलाहाबाद से फैजाबाद की तरफ जाने वाली रेल लाइन प्रयाग, फफामऊ, दयालपुर और मऊआइमा होकर गुजरती है तथा यह जनपद मे 33 कि0मी0 की दूरी तय करती है।

इसी प्रकार इलाहाबाद–लखनऊ रेलमार्ग फाफामऊ से अलग होकर गोहरी, कौडिहारा, निन्दुरा से होती हुई रायबरेली–लखनऊ की ओर चली जाती है। यह जनपद मे कुल 43 कि0मी0 की दूरी तय करती है।

मध्य रेलवे जबलपुर – इलाहाबाद खण्ड के माध्यम से शकरगढ, जसरा, इरादतगज और नैनी से होकर गुजरती है तथा यमुनापार के दक्षिणी भाग के लोगो के लिए उपयोगी है।

इलाहाबाद – वाराणसी मार्ग पूर्वोत्तर रेलवे का भाग है। इलाहाबाद सिटी रेलवे स्टेशन को यह मार्ग दारागज, झूँसी, रामनाथपुर, सैदाबाद, हण्डिया और मीटी आदि स्टेशनो को जोडता है। जनपद मे इस रेलवे की कुल लम्बाई 46 कि0मी0 है। इस मार्ग के ब्रडगेज मे परिवर्तन के पश्चात् इलाहाबाद जक्शन से जुड गया है। वर्तमान समय मे इलाहाबाद (प्रयाग) के सभी रेलमार्ग ब्राडगेज मे परिवर्तित हो गये है (देखिये माचित्र स 6 1)।

रेलवे द्वारा माल का यातायात .

वर्ष 1951 से जिले से बडी मात्रा मे माल रेल द्वारा बाहर भेजा जा रहा है। उत्तर रेलवे के इलाहाबाद जंक्शन स्टेशन के यार्ड और इलाहाबाद सिटी स्टेशन की भडारण तथा परिवहन क्षमता को बढाया जा रहा है। इन दोनो स्टेशनो के बीच की दूरी 4 8 कि0मी0 है।

वर्ष 1963–64 मे उत्तर रेलवे द्वारा 1,16,316 टन नमक, घी, खाद्यान्न, तिलहन,

पशुधन, सब्जियो आदि दूसरे जिलो तथा राज्यो को निर्यात की गयी तथा 2,63,480 टन नमक, सीमेन्ट, लोहा, सामान्य व्यापारिक माल, पेट्रोल से उत्पादित वस्तुए, शक्कर, सुपारी, कोयला आदि सामग्री दूसरे जिले तथा राज्यो से आयात की गयी। इसी प्रकार 1963–64 मे इलाहाबाद सिटी स्टेशन से पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार तथा बगाल को 85,185 क्विंटल आटा, खाद्यान्न, आलू तथा तिलहन आदि पूर्वोत्तर रेलवे के माध्यम से निर्यात किया गया। इस रेलवे लाइन से मिट्टी का तेल, कोयला तथा चाय आदि वस्तुए आयात भी की गयी (जिला गजेटियर 1986)।

2000–2001 मे उत्तर रेलवे द्वारा 3,78,648 टन नमक, घी, खाद्यान्न, तिलहन, पशुधन दूसरे राज्यो तथा जिलो को भेजा गया। उसके साथ ही 5,78670 टन नमक, सीमेण्ट, लोहा, व्यापारिक माल दूसरे क्षेत्रो से मगाया गया। इसी प्रकार इलाहाबाद सिटी से 2000–2001 मे पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार तथा बगाल आदि को 2,12,425 क्विटल खाद्यान्न, सब्जी, तिलहन, दाल आटा आदि पूर्वोत्तर रेलवे द्वारा भेजा गया (इलाहाबाद जक्शन एव सिटी स्टेशन के मालगोदाम से प्राप्त सूचना के आधार पर)।

(iii) वायु परिवहन –

परिवहन के अन्य साधनो की अपेक्षा प्रयाग मे वायुपरिवहन का कम विकास हुआ है। यहा एक हवाई अड्डा ग्राड ट्रक रोड पर शहर से 10 कि0मी0 पश्चिम बमरौली मे स्थित है। इस वायु परिवहन द्वारा इलाहाबाद–दिल्ली–कलकत्ता वायुमार्ग द्वारा देश के अन्य भागो से जुडा हुआ है। बमरौली हवाई अड्डे से जो उडाने पहले साप्ताहिक थीं वे अब प्रत्येक दिन हो गयी है। यह युद्ध से पूर्व उत्तरी भारत का महत्वपूर्ण वायु स्टेशन था जो दो कि0मी0 के वर्ग मे इलाहाबाद–कानपुर रेलवे लाइन के दक्षिण मे फैला है। अन्तिम युद्ध के बाद इसका विस्तार रेलवे लाइन के उत्तर भी हो गया है।

1950–51 के समय मे स्टेशन मुख्यत नागरिक उड्डयन (Aniation) प्रशिक्षण केन्द्र के रूप मे भी उपयोग किया जाता था। एक उडान स्कूल 1948 सितम्बर मे यहा प्रारम्भ किया गया। उस समय अनेक पायलट यहा प्रशिक्षित हुए। वास्तव मे यहा से प्रशिक्षित लोगो की सख्या बहुत अधिक नही रही। यह 1950, 51 और 52 मे क्रमश 14, 20 और 30 थी। (सिविल एयर रिपोर्ट 1953)।वर्तमान समय मे प्रयाग दिल्ली–इलाहबद–वाराणसी–कलकत्ता,

अन्तर्देशीय वायुमार्ग पर स्थित है। यहा से इण्डियन एयर लाइन्स की उडानो द्वारा यात्री, मूल्यवान सामग्री तथा डाक ढोने का कार्य होता है।

6.4 परिवहन तन्त्र की स्थानिक प्रणाली :

अध्ययन क्षेत्र प्रयाग अपने निकटवर्ती जनपदो से सुव्यवस्थित राजपथ एव रेलमार्ग द्वारा जुडा हुआ है। इस क्षेत्र मे प्रवाहित होने वाली गगा तथा यमुना नदिया नौ परिवहन की सुविधा प्रदान करती है परन्तु अन्य द्रुत गति के साधनो के उपलब्ध हो जाने के कारण इनका महत्व नगण्य हो गया है। इसी प्रकार इलाहाबाद–दिल्ली–कलकत्ता वायुमार्ग द्वारा यह क्षेत्र देशके अन्य भागो से जुडा हुआ है। परिवहन तन्त्र की स्थानिक प्रणालिया किसी क्षेत्र के परिवहन जाल एव प्रतिरूप को प्रस्तुत करने मे सहायक होती है। अध्ययन क्षेत्र प्रयाग का निम्न स्थानिक प्रणाली द्वारा विश्लेषण किया गया है। इसको प्रस्तुत करने के लिए तुलनात्मक दूरी आवश्यक है अत क्षेत्र की परिवहन प्रणाली को प्रदर्शित करने के लिए सम्पूर्ण जनपद क्षेत्र को लिया गया है।

(i) रेल सड़क अभिगम्यता :–

रेल और सडक की अभिगम्यता की अवधारणा परिवहन मार्ग से न्यूनतम दूरी के सिद्धान्त पर आधारित है। रेलवे केवल मुख्य केन्द्रो को ही जोडती है तथा एक निश्चित रेलवे स्टेशन पर ही रुकती है। इसके विपरीत सडके छोटे से छोटे केन्द्रो को भी जोडती है तथा बस स्टेशन और बस स्टापो पर रुकती हैं। रेल और बस के अतिरिक्त अन्य सेवा केन्द्रो को जोडने के लिए हल्के वाहनो का भी प्रयोग होता है। चित्र 6 2 A तथा 6 2 B क्रमश अध्ययन क्षेत्र के सडक और रेल अभिगम्यता को प्रदर्शित करते है।
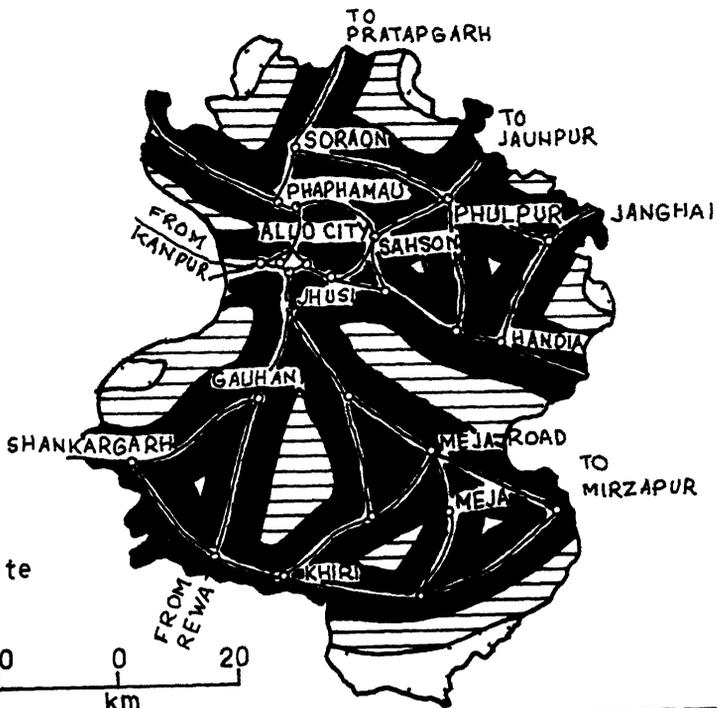
N
A
PRAYAG (ALLAHABAD DISTRICT)
ACCESSIBILITY BY ROADS
TO PRATAPGARH
TO JAUNPUR
SORAON
PHAPHAMAU
PHULPUR
JANGHAI
FROM KANPUR
ALLD CITY
SAHSON
JHUSI
HANDIA
GAUHANI
SHANKARGARH
MEJA ROAD
TO MIRZAPUR
MEJA
KHIRI
FROM REWA
Distance in km
< 5 High
5 – 10 Moderate
> 10 Low
20 0 20
km
N
B
PRAYAG (ALLAHABAD DISTRICT)
ACCESSIBILITY BY RAILWAYS
TO PRATAPGARH
FROM LUCKNOW
JANGHAI
FROM KANPUR
TO VARANASI
FROM JABALPUR
TO MIRZAPUR
Distance in km
< 5 High
5 – 10 Moderate
> 10 Low
20 0 20
km
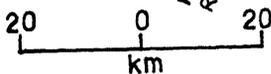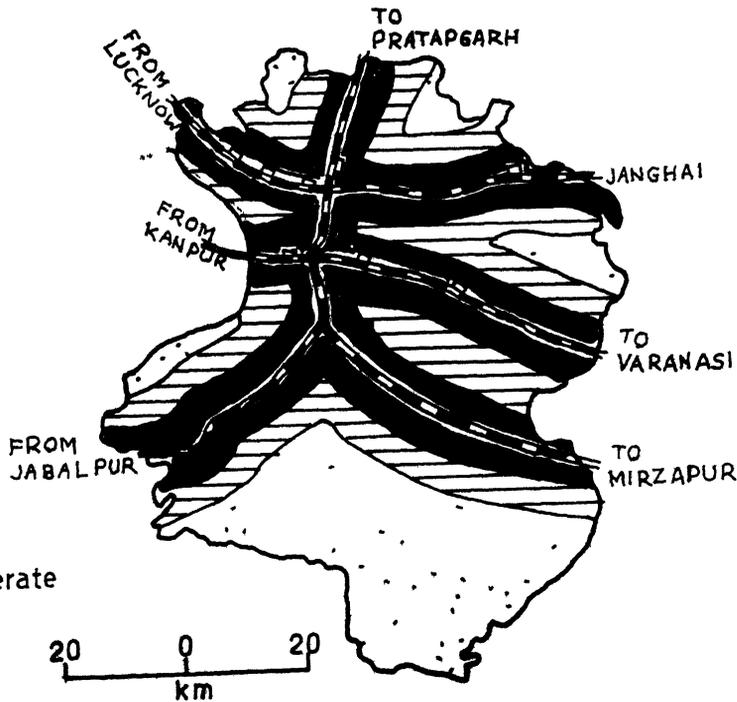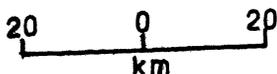
Fig 62

सारिणी सख्या 6-2

यातायात सुविधा के अनुसार गॉवो का प्रतिशत

	ग्राम मे	1 कि0मी0 से कम	1–3 कि0मी0 तक	3–5 कि0मी0 तक	5 कि0मी0 से अधिक
पक्की सडके	253	148	313	144	142
रेलवे स्टेशन	13	29	118	128	712
बस स्टेशन/ स्टाप	79	79	276	190	376

स्रोत (जनपद साख्यिकीय पत्रिका 2000)

सारणी 62 से स्पष्ट है कि क्षेत्र के 712 प्रतिशत गाव रेलवे स्टेशन से 5 कि0मी0 से भी अधिक दूर स्थित है। रेल अभिगम्यता मानचित्र से यह भी स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र का अधिकाश भाग (नगर को छोडकर) रेल सुविधा से वचित है। रेलवे द्वारा उच्च अभिगम्यता (5 कि0मी0 से कम) गगा पार और द्वाब क्षेत्र के उत्तरी भाग मे पायी जाती है। इसी प्रकार 5–10 कि0मी0 की अभिगम्यता जनपद के पूर्वी भाग व गगा के निकट सकीर्ण क्षेत्र मे परिलक्षित होती है। उसके विपरीत द्वाब क्षेत्र के दक्षिणी भाग और यमुनापार क्षेत्र का अधिकाश भाग 10 कि0मी0 से अधिक दूरी की अभिगम्यता को प्रदर्शित करता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि गगापार का अधिकाश भाग तीव्र अभिगम्यता को, द्वाब क्षेत्र का उत्तरी और मध्यवर्ती भाग तथा यमुनापार का उत्तरी भाग मध्यम अभिगम्यता को तथा द्वाब और यमुनापार का दक्षिणी भाग कम अभिगम्यता को प्रदर्शित करता है। इसका प्रमुख कारण है कि गगापार क्षेत्र 4 रेलवे लाइनो के अनुप्रस्थ काट पर स्थित है जैसे यह वाराणसी, जौनपुर, प्रतापगढ और लखनऊ मार्गों को जोडती है जबकि यमुनापार क्षेत्र मिर्जापुर और जबलपुर की तरफ से आने वाले दो अनुप्रस्थ कटानो पर स्थित है तथा द्वाब क्षेत्र कानपुर जाने वाले एक मात्र रेलवे लाइन से सम्बद्ध है।

चित्र स 62 B मे प्रदर्शित सडको की अभिगम्यता एक अलग ही परिदृश्य उपस्थित करती है। सडक परिवहन का विकास वर्तमान समय मे अधिक तीव्रगति से हुआ है। वर्ष

PRAYAG (ALLAHABAD DISTRICT)
BUS TRAFFIC FLOW & SERVICE AREA
N
CIRCLE WITH 50 KM R
From Pratapgarh
From Lucknow
To Jaunpur
From Kanpur
To Varanasi
To Mirzapur
From Manikpur
From Rewa
Buses
45
25
15
10
5
1
10 0 10 20 30
km
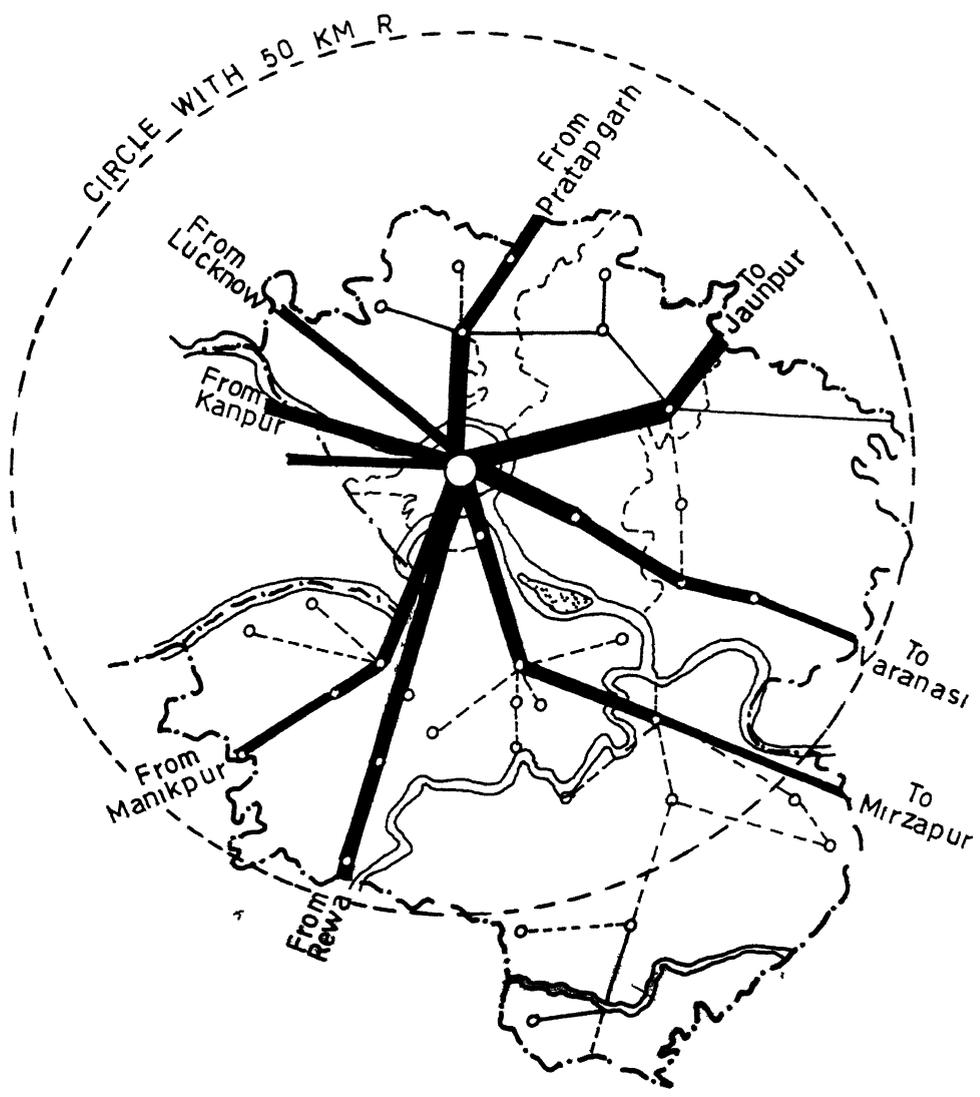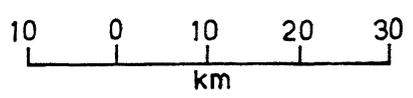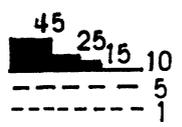
Fig 6.3

1990 तक 25 प्रतिशत से अधिक गाव सीधे पक्की सडको से जुड गये है, जो 1998 तक बढकर 36 प्रतिशत से अधिक हो गया। केवल 14 प्रतिशत ही गाव ऐसे है जिन्हे सडको तक पहुँचने के लिए 5 कि0मी0 से अधिक की दूरी तय करनी पडती है (सारिणी स 62)। गगापार, द्वाब और यमुनापार के मध्यवर्ती क्षेत्र के मुख्य भाग सडको द्वारा उच्च अभिगम्यता को प्रदर्शित करते है। मध्यम अभिगम्यता वाले क्षेत्र गगा नदी के साथ तथा द्वाब क्षेत्र के मध्य दक्षिणी भाग और यमुनापार के करछना तहसील तथा सुदूर दक्षिणी–पश्चिमी भाग मे स्थित है। कम अभिगम्यता वाली सडके सम्पूर्ण क्षेत्र मे फैली हुई है जो जनपद के बाहरी सीमा पर स्थित हैं। इसमे मुख्य रूप से धानूपुर, बहरिया, होलागढ, कौशाम्बी, सिराथू, कडा, कोराव आदि विकास खण्डो के भाग सम्मिलित है। वर्तमान समय मे कौशाम्बी जनपद इलाहाबाद से अलग हो जाने के कारण स्थिति मे परिवर्तन हो गया है।

(ii) परिवहन प्रवाह :–

परिवहन मार्ग से होने वाले यातायात प्रवाह के आधार पर भी क्षेत्र के परिवहन जाल का मूल्याकन किया जा सकता है। चित्र स 63 अध्ययन क्षेत्र मे बस परिवहन प्रवाह को प्रदर्शित करता है। चित्र से स्पष्ट है कि अधिकाश बसे इलाहाबाद–फूलपुर–जौनपुर मार्ग पर चलती हैं। इसके बाद क्रमश इलाहाबाद–सोराव–मऊ आइना–प्रतापगढ, इलाहाबाद–हण्डिया–वाराणसी, इलाहाबाद–करछना–मेजा–माण्डा–मिर्जापुर और इलाहाबाद–मूरतगज–फतेहपुर–कानपुर, इलाहाबाद–शकरगढ–रीवा–जबलपुर आदि का स्थान है। वर्तमान समय मे यमुना पुल पर अत्यधिक यातायात दबाव है। अत यहा एक और पुल बनाने की आवश्यकता है।इस दिशा मे केन्द्रीय मानव ससाधन विकास मत्री मुरली मनोहर जोशी जी के कर कमलो द्वारा नवम्बर 2001 को नये यमुना पुल का उद्घाटन कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है। (मानचित्र स० 63)

(iii) रेल सडक सयोजकता :–

किसी भी क्षेत्र का आर्थिक विकास परिवहन मार्गों के सयोजकता और परिवहन तथा सचार के साधनो की उपलब्धता पर अत्यधिक निर्भर करता है। सयोजकता यातयात प्रवाह और परिवहन अभिगम्यता के अध्ययन मे भी सहायता करता है। अध्ययन क्षेत्र को रेल–सडक

सयोजकता का विश्लेषण करने के लिए तीन भौतिक प्रदेशो मे (दोआब, गगापार और यमुनापार) विभक्त कर निम्न सूत्र का प्रयोग किया गया है:–

$IB = \frac{e}{V}$ जहा B सयोजकता का सूचकाक (सकेतकाक) है, e मार्गों की सख्या और V केन्द्रो, बिन्दुओ (सेवा केन्द्र/रेलवे स्टेशन और टर्मिनल प्वाइन्ट) का द्योतक है। यदि सूचकाक का मान 'I' से कम आता है तो वह मार्ग के विरल सयोजकता अर्थात् वह मार्ग किसी अन्य मार्ग से नही जुडा है, का द्योतक है और यदि सूचकाक का मान 'I' है तो बहुत से केन्द्रो को जुडा हुआ प्रदर्शित करता है तथा यदि सूचकाक का मान 'I' से अधिक है तो वह मार्ग जाल के केन्द्रीय बिन्दु से बहुत से वैकल्पिक मार्गों से जुडा हुआ है ऐसा प्रदर्शित करता है। मानचित्र स 6 4A तथा 6 4B से स्पष्ट है कि सूचकाक 1 34 है जो वैकल्पिक मार्गों के अधिक जुडाव को प्रदर्शित करता है। सयोजकता सूचकाक का सबसे अधिक मान (1 40) यमुना पार क्षेत्र मे है। दूसरे नम्बर पर दोआब क्षेत्र (1 30) है तथा तीसरा स्थान (1 29) गगापार क्षेत्र का है। रेलवे और सडक सयोजकता को चित्र सख्या 6 4A तथा 6 4B स्पष्ट प्रदर्शित करता है कि यमुनापार क्षेत्र मे वैकल्पिक मार्गों की सम्भावना दोआब और गगापार क्षेत्र से अधिक है। गगापार क्षेत्र का मान न्यूनतम है क्यो कि यहा शाखा मार्ग बहुत कम है। यही कारण है कि अध्ययन क्षेत्र का उत्तरी क्षेत्र अभिगम्यता मे भी कम है।

(iv) परिवहन सरचना एक विश्लेषण :–

मार्ग जाल विश्लेषण हेतु गणित के टोपोलाजी का भूगोलवेत्ताओ ने बहुतायत से प्रयोग किया है। इसमे दो प्रकार के माप प्रयुक्त किये जाते हैं – (अ) बिना अनुपात के माप (ब) आनुपातिक माप। बिना माप के अनुपातो मे साइक्लोमेटिक नम्बर एव व्यास का प्रयोग होता है जबकि आनुपातिक मापो मे अनेक प्रकार के सूचकाको काप्रयोग किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन मे अनुपात के मापो, सयोजन आव्यूह आदि का प्रयोग किया गया है।

मार्ग जाल विश्लेषण हेतु ऐसे सयोजन आव्यूह का निर्माण किया गया है, जिसमे अध्ययन क्षेत्र के प्रमुख केन्द्रो (जो क्षेत्र के प्रमुख सेवा केन्द्र भी है) को ग्रथि के रूप मे माना गया है। इसके लिए नाभिक मापन स्तर पर प्रदर्शित द्विचर प्रेक्षणो 0, 1, का प्रयोग किया गया है। '0' के द्वारा दो ग्रन्थियो के बीच मे अप्रत्यक्ष ढग से जुडे मार्गों को दर्शाते है जबकि '।'

N
A
PRAYAG (ALLAHABAD DISTRICT)
ROAD CONNECTIVITY
To Pratapgarh
Mauaima
To Lucknow
Nindura
Soraon
To Jaunpur
Phulpur
Phaphamau
Pratappur
ALLAHABAD
Sahason
Dhanupur
Bahadurpur
Jhusi
Bamarauli
Naini
Handia
To Varanasi
Chaka
Karchhana
Jasra
From Banda
Nimi
Meja Road
To Mirzapur
Shankergarh
Jari
Meja
Manda Road
Bharatganj
Manda
Naribari
Koraon
From Rewa
10 0 10 20 30
km
Badokhar
To Mirzapur
PRAYAG (ALLAHABAD DISTRICT)
RAIL CONNECTIVITY
N
B
To Pratapgarh
To Lucknow
Mauaima
Nindura
Sewaeth
Kaurihar
To Jaunpur
Phulpur
Janghai
Phaphamau
To Varanasi
Bamrauli
ALLAHABAD
Naini
Saidabad
Handia
To Varanasi
10 0 10 20 30
km
Jasra
Karchhana
Meja Road
From Manikpur
Sankergarh
Manda Road
To Mirzapur
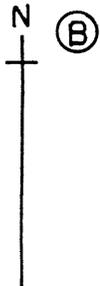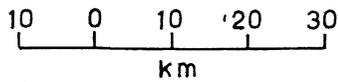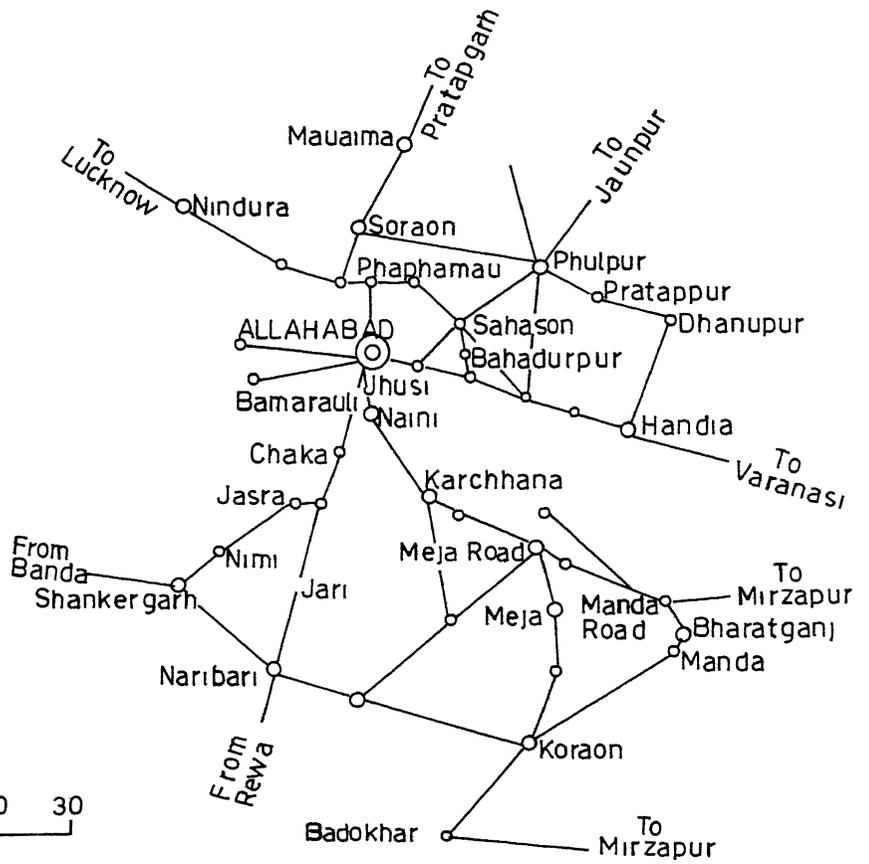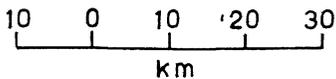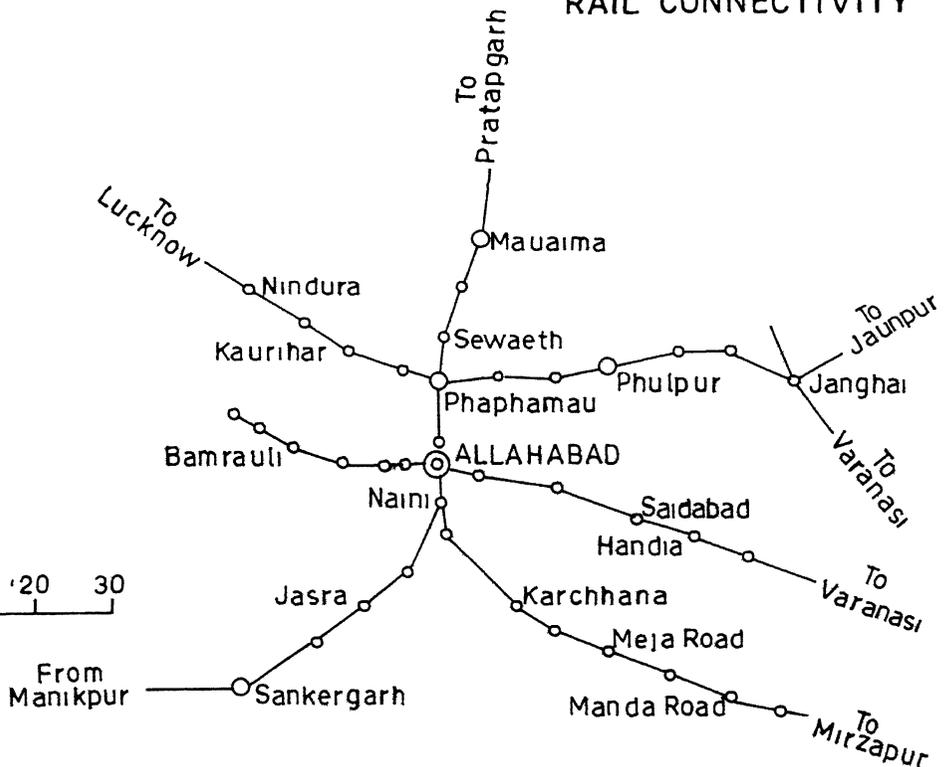
विभिन्न ग्रन्थियो के मध्य प्रत्यक्ष सम्बन्ध का सूचक है। इस प्रकार द्विचर प्रेक्षणो का प्रयोग कर मार्ग जाल के टोपोलाजिकल ग्राफ को आव्यूह का रूप देकर प्रत्येक बिन्दु की केन्द्रीयता का मापन कर लेते है।अध्ययन क्षेत्र मे परिवहन जाल के विश्लेषण के लिए सडक एव रेलमार्ग हेतु अलग–अलग सयोजन आव्यूह बनाये गये है (सारिणी स0 6 3 और 6 4)। सडक सयोजन आव्यूह मे इलाहाबाद की केन्द्रीयता सबसे अधिक (6) पायी जाती है जबकि शकरगढ, मऊ आइमा एव कौडिहार की केन्द्रीयता 1 है। सहसो, सैदाबाद, फूलपुर की केन्द्रीयता 4 है। मूरतगज, झूसी, मेजा, मझनपुर की केन्द्रीयता 3 है। कोराव, भारतगज, माण्डा, करछना, नैनी, हण्डिया, सराय अकील, सिराथू और बमरौली की केन्द्रीयता 2 है। इस प्रकार सयोजन आव्यूह से स्पष्ट है कि बडे एव विकसति केन्द्रो की केन्द्रीयता अधिक है जैसे इलाहाबाद, सहसो, सैदाबाद, फूलपुर जबकि अविकसित तथा मुख्यालय से दूर स्थित केन्द्रो की केन्द्रीयता कम है।

रेलमार्ग के लिए बने सयोजन आव्यूह़ से स्पष्ट है कि इलाहाबाद और फाफामऊ की केन्द्रीयता 4 है जो क्षेत्र मे सबसे अधिक केन्द्रीयता का द्योतक है। इससे स्पष्ट है कि इलाहाबाद तथा फाफामऊ सबसे व्यस्ततम् रेलवे स्टेशन है। परन्तु फाफामऊ केन्द्र का विकास इलाहाबाद केन्द्र के स्तर तक का नही है। यहा की अधिक केन्द्रीयता मान का कारण विभिन्न क्षेत्रो से आने वाली रेलो को बाध्य होकर इस स्थान से गुजरना है, क्योकि इलाहाबाद नगर मे प्रवेश का मार्ग फाफामऊ के पास बने गगा का पुल ही है। नैनी की भी केन्द्रीयता अधिक (3) होने के कारण भी यमुना नदी पर एक मात्र पुल का होना है। परन्तु विकास की दृष्टि से नैनी औद्योगिक क्षेत्र इलाहाबाद शहर का ही विस्तारण है। अन्य केन्द्र जिनकी केन्द्रीयता 1 और 2 है वे क्षेत्र के विकसित सेवा केन्द्र है जो क्रमश विकास की ओर अग्रसर हो रहे है।

क्षेत्र के परिवहन जाल विश्लेषण हेतु ग्राफ सिद्धान्त का भी प्रयोग किया गया है। इसमे बिन्दु तथा वाहु दो मुख्य तत्व है जिनके माध्यम से परिवहन जाल का विश्लेषण किया जाता है (रजा – 1985)। सारिणी मे α (अल्फा) और γ (गामा) सूचकाको का प्रयोग कर क्षेत्र के परिवहन जाल के विश्लेषण का प्रयास किया गया है।

सारिणी सख्या – 65

सडक और रेल परिवहन निर्देशाक

क्षेत्र	सूचकाक	सडक परिवहन निर्देशाक	रेल परिवहन निर्देशाक
गगापार	α	129	085
	γ	137	115
यमुनापार	α	153	052
	γ	116	181
द्वाब	α	161	047
	γ	143	166
सम्पूर्ण क्षेत्र	α	117	035
	γ	042	047

सारणी सख्या 6 5 के अवलोकन से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र के तीनो प्रमुख भौतिक विभागो गगा पार, यमुनापार और द्वाब का α और γ सूचकाको का निर्देशाक 1 से कम आ रहा है जो असम्बद्ध परिवहन जाल का सूचक है। इसी तरह यदि किसी क्षेत्र का γ सूचकाक 1 से कम आता है तो वह अपूर्ण सम्बद्धता वाला मार्ग जाल कहलाता है (सिह 1997 पृष्ठ 51)। यदि परिवहन के लिए सम्पूर्ण क्षेत्र का भी परिकलन किया जाय तो उक्त तथ्य की ही पुष्टि होती है।

परिवहन जाल के उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र मे रेल एव सडक सुविधाए बहुत उपयुक्त नही हैं जिससे समन्वित विकास नही हो पा रहा है।

6.5 परिवहन प्रदेश :–

परिवहन एव सचार के साधन नगर और उसके परिप्रदेश के मध्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। नगर स्वय अपनी सेवाओ/आवश्यकताओ के लिए अपने परिप्रदेश पर निर्भर करता है वही उसका परिप्रदेश नगरीय सुविधाओ के लिए अपने निकटवर्ती नगर पर निर्भर होता है। इस पारस्परिक निर्भरता एव एक दूसरे के सर्वांगीण एव समन्वित विकास को

परिवहन एव सचार के साधन अत्यधिक गति प्रदान करते है। अध्ययन क्षेत्र प्रयाग (इलाहाबाद) मे जैसा कि परिवहन के सभी साधनो रेल, सडक, जलमार्ग एव वायु सेवाओ का अत्यधिक विकास हुआ है, यहा डाक एव तार, दूरभाष, रेडियो और दूरदर्शन का अत्यधिक विकास तो हुआ ही है साथ मे वर्तमान सचार क्रान्ति इन्टरनेट से भारत के सभी महत्वपूर्ण नगरो से जुड गया है।

अध्ययन क्षेत्र के परिवहन प्रदेश के निर्धारण के लिए यातायात प्रवाह को आधार माना गया है। यातायात प्रवाह के अन्तर्गत बस सेवा को मुख्य रूप से आधार बनाया गया है क्योकि यह अन्य साधनो (रैल–जलमार्ग) की अपेक्षा नगर और उसके परिप्रदेश के मध्य अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि चित्र स 63 को देखे तो स्पष्ट है कि यातायात प्रवाह की प्रकृति इलाहाबाद और उसके अन्तर्नगरीय सम्बन्धो को उसके परिप्रदेश के मध्य खोलती है। चित्र से स्पष्ट है कि इलाहाबाद प्रत्यक्षत रायबरेली, लखनऊ, फतेहपुर और कानपुर से पश्चिम मे, और उत्तर मे प्रतापगढ सुल्तानपुर, फैजाबाद से तथा उत्तर पूर्व मे जौनपुर, आजमगढ और पूर्व मे वाराणसी, मिर्जापुर, दक्षिण–पश्चिम मे बांदा तथा रीवा से जुडा हुआ है। चित्र सख्या 63 को देखने से स्पष्ट है कि अत्यधिक यात्रियो का प्रवाह इलाहाबाद–रीवा रोड पर है। यहा 7 बसे चाघा से इलाहाबाद प्रतिदिन जाकर लौट आती है जबकि 2 बस रीवा तक जाती है। इसी प्रकार इलाहाबाद मिर्जापुर रोड पर मेजा तक 12 बसे यात्रियो कोइलाहाबाद तक लाती है। उत्तर मे प्रतापगढ, जौनपुर, वाराणसी सरकारी बसो से जुडा हुआ है। इन मार्गो मे सबसे व्यस्त रोड इलाहाबाद–बादशाहपुर है। इलाहाबाद–कानपुर रोडवेज सेवा दोआब क्षेत्र को अत्यधिक सुविधा प्रदान करती है।

सरकारी परिवहन के अतिरिक्त कुछ व्यक्तिगत बसे विभिन्न मार्गो पर सेवाए प्रदान करती हैं क्योकि सरकारी परिवहन सुविधा अधिक नही दे पा रहा है। प्राइवेट एसे लम्बी यात्रा नही प्रदान करती बल्कि शहर से 75 कि0मी0 तक की दूरी तक जाती है। सबसे लम्बी दूरी इलाहाबाद और चित्रकूट के मध्य 70 कि0मी0 को पूर्ण करती है। सरकारी और प्राइवेट बसे प्रतिदिन 11 विभिन्न मार्गो पर परविहन सेवाए उपलब्ध कराती हैं। 10 बसे इलाहाबाद और लालगज के मध्य, 6 बसे इलाहाबाद से दरवा, 4 शकरगढ, 4 मुबारकपुर, 6 कोहराघाट, 3 चित्रकूट और कोराव (परिवहन कार्यालय, इलाहाबाद 2000)।

प्राइवेट बस सेवाए जिलामुख्यालय को ग्रामीण क्षेत्रो से जोडने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जिसमे अधिकाश सडके पक्की है कुछ कच्ची भी है।

इस प्रकार प्रयाग (इलाहाबाद) केन्द्र से 50 कि0मी0 की वृत्ताकार सीमा द्वारा परिवहन प्रदेश का निर्धारण किया गया है, जहा से परिवहन प्रवाह सर्वाधिक है (मानचित्र स० 6 3)।

6.6 वर्तमान सचार तन्त्र :

नगरी जीवन के लिए त्वरित और सुविधाजनक सचार सेवा अत्यन्त आवश्यक है। डाक सेवा सचार का सबसे सस्ता साधन है जबकि दूरभाष (टेलीफोन) और तार त्वरित सेवा है, परन्तु कुछ महगी। अत्यधिक विकसित सचार सेवा उन्नतशील नगरीय समुदाय की पहचान है। आज के वर्तमान वैज्ञानिक एव तकनीकी युग मे सचार सेवाओ ने नवीन क्रान्ति उपस्थित कर दिया है, जिसके अन्तर्गत न केवल अपने आस–पास या देश मे बल्कि विश्व के किसी भी भाग की सूचना दूसरे भाग मे तत्काल प्राप्त हो जाती है और वह भी न केवल सुनकर बल्कि सचित्र देखते हुए, यह वास्तव मे सचार क्रान्ति की ही देन है। अध्ययन क्षेत्र प्रयाग मे सचार के साधनो का विकास एव उनकी स्थिति का अध्ययन निम्न सेवाओ के द्वारा किया गया है।

सारणी तालिका सख्या 6.6

प्रति सचार सुविधाओ पर जनसख्या भार

क्रम स	सचार सुविधा	सख्या	प्रति सुविधा जनसख्या भार
1	डाकघर	407	9559
2	तारघर	68	57215
3	पी0सी0ओ0	2757	1411
4	टेलीफोन्स कनेक्शन्स	85544	455

स्रोत – सामाजिक आर्थिक समीक्षा 2000–2001 जनपद इलाहाबाद

(i) डाकघर –

प्राचीन समय मे द्रुत धावक, नाई और चौकीदार सचार के मुख्य अभिकर्ता हुआ करते थे। लेकिन जब उन्नीसवी शताबदी मे अग्रेजो ने जनपद इलाहाबाद का अधिग्रहण किया तो क्षेत्र मे डाक सेवाए प्रारम्भ हुई। प्रधान डाकघर की स्थापना सन् 1935 मे की गयी। सन् 1864 से पहले पुलिस कर्मचारी और चौकीदार ही डाक पहुचाया करते थे जिनका स्थान कालान्तर मे डाकिया ने ले लिया (जोशी–1968)। 1954 मे नगर मे 41 डाकघर थे जो 1989–90 मे बढकर 82 हो गया। 1995 मे जनपद मे 544 डाकघर हो गये जिनमे ग्रामीण क्षेत्र मे सख्या 456 और नगर मे 88 हो गयी। नगर मे डाकघरो का समुचित विवरण नही है। नगर के कुल डाकघरो मे 24 ठीक शहर मे, 8 सिविल लाइन, 8 कटरा और कर्नलगज, 6 अल्लापुर और दारागज और 42 नगर के विभिन्न भागो मे फैले हुए है। 31 मार्च 2000 तक पुनर्गठित जनपद मे कुल 407 डाकघर हैं। इनके कम होने का कारण कौशाम्बी का जनपद बन जाना है (सामाजिक आर्थिक समीक्षा 2001)।

जनपद इलाहाबाद मे प्रति लाख जनसख्या पर डाकघरो की सख्या 9559 आती है। इस प्रकार प्रत्येक डाकघर पर औसत जनसख्या का दबाव 10000 है। इससे यह स्पष्ट है कि जनपद मे डाकघर समुचित रूप से वितरित नही है।

(ii) तारघर .–

आधुनिक युग मे किसी देश का सामाजार्थिक विकास इस बात पर निर्भर करता है कि वहा दूरसचार सुविधाओ की उपलब्धता और उपभोग की क्या स्थिति है। जनपद इलाहाबाद मे 19 वी शताब्दी मे केन्द्रीय सरकार ने इलाहाबाद रेलवे जक्शन के समीप एक तारघर की स्थापना की, जिसकी एक शाखा कचहरी डाकघर मे भी स्थापित की गयी। आज जनपद मे कुल 68 तारघर है जिनमे से 41 ग्रामीण क्षेत्र मे तथा 27 शहरी क्षेत्र मे स्थापित है। अत स्पष्ट है कि नगर का अधिकाश भाग तारघर से 1/2 कि0मी0 से भी कम दूर है। सघनित C B D क्षेत्र का तारघर दक्षिण मे कोतवाली मे स्थित है। उत्तरी और दक्षिणी क्षेत्र मे तारघरो का कम विकास हुआ है। पश्चिम मे सिविल लाइन व कटरा क्षेत्रो मे तार सेवा की अच्छी स्थिति है।

(iii) दूरभाष सेवाए –

अध्ययन क्षेत्र प्रयाग (जनपद मुख्यालय इलाहाबद) मे एक दूरभाष विनिमय केन्द्र है। मार्च 2000 मे जनपद मे 85544 दूरभाष सयोजन है जिसमे से 65544 शहरी क्षेत्र मे तथा शेष 20000 के लगभग ग्रामीण क्षेत्रो मे है। जनपद मे 2757 सार्वजनिक दूरभाष केन्द्र है जिनमे से 2245 शहरी क्षेत्र मे तथा 512 ग्रामीण क्षेत्रो मे है (सामाजिक आर्थिक समिक्षा 2000 इलाहाबाद)। वर्ष 1992–93 मे जनपद मे टेलीफोन की सख्या 12393 एव पब्लिक काल आफिस काल की सख्या 276 रही है जिसमे 429 टेलीफोन एव 69 पब्लिक काल आफिस ग्रामीण क्षेत्र मे एव 11964 टेलीफोन एव 207 पब्लिक काल आफिस नगरीय क्षेत्र मे है (सामाजार्थिक समीक्षा इलाहाबाद 1995)। वर्तमान समय मे एस टी डी एव आई एस डी दूरभाष सुविधा ने सचार व्यवस्था मे क्रान्ति ला दिया है। अद्यतन स्थानीय काल के रेन्ज मे वृद्धि कर देने से पूरे जनपद के साथ–साथ आस–पास के क्षेत्र जो 200 कि0मी0 तक स्थित है, स्थानीय दर पर सूचना प्राप्त हो जाती है। 1992–93 तथा मार्च 2000 की सख्या से स्पष्ट है कि सम्पूर्ण जनपद मे दूरभाष सेवाओ की सख्या मे अत्यधिक वृद्धि हुई है।

(IV) आकाशवाणी –

अध्ययन क्षेत्र मे आकाशवाणी केन्द्र की स्थापना स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात् 1 फरवरी 1949 को हुई। अप्रैल 1950 मे इसे आलइण्डिया रेडियो लखनऊ तथा बाद मे इसे वाराणसी से भी जोड दिया गया जिससे इसके कार्यक्रमो की गुणवत्ता तथा प्रसारण क्षमता मे वृद्धि हुई है। इसके द्वारा प्रसारित कार्यक्रम से ग्रामीण समुदाय, नगरीय समुदाय, विद्यार्थी, बच्चे, महिलाए लाभान्वित होते हैं। सम्बद्ध अध्ययन क्षेत्र मे 1988–89 मे 450,000 रेडियो, ट्राजिस्टर रिसीवर थे तथा सामुदायिक रेडियो सेटो की सख्या 60 थी। दूरदर्शन तथा टेपरिकार्डर क्रान्ति के कारण रेडियो की महत्ता कुछ कम हुई है, परन्तु अपनी गुणवत्ता, प्रसारण विशेषता तथा सस्ता होने के कारण सचार व्यवस्था मे यह आज भी काफी कारगर है। आकाशवाणी केन्द्र के अन्तर्गत एफ एम चैनल के प्रारम्भ होने से रेडियो सुनने वालो की सख्या अत्यधिक बढी है।

(v) दूरदर्शन व चलचित्र –

दूरदर्शन तथा चलचित्र मनोरजन के सबसे सुलभ साधन है। सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक व सास्कृतिक तथ्यो को चलचित्र के माध्यम से जन मानस तक आसानी से पहुँचाया जा सकता है। इसके द्वारा सामाजिक कुरीतियो पर भी कुठाराघात किया जा सकता है। दृश्य तथा श्रव्य दोनो व्यवस्था होने के कारण इससे शिक्षा के प्रसार तथा ज्ञान के सवर्धन मे सहायता मिलती है। इसमे यदि भाषा स्पष्ट नही है तो भी वाछित सदेश को चित्र द्वारा ग्रहण कर लेता है (चौधरी 1983)। इससे पुरानी रूढियो एव कुरीतियो को समाप्त कर समाज मे नवीन परिवर्तन लाया जा सकता है तथा एक नये समाज की स्थापना की जा सकती है। अध्ययन क्षेत्र मे अधिकाश चलचित्र केन्द्रो का सकेन्द्रण इलाहाबाद शहर तथा उसके आस–पास के शहरी क्षेत्रो मे ही सीमित है। वर्तमान समय मे दूरदर्शन के द्वारा स्वच्छ एव स्पष्ट प्रसारण हेतु 10 किलोवाट के शक्ति वाले ट्रासमीटर इलाहाबाद नगर मे स्थापित किया जा चुका है। इलाहाबाद जनपद मे स्थापित दूरदर्शन अपने प्रसारण केन्द्र के माध्यम से अनेक कार्यक्रमो का प्रसारण करता है। वर्तमान समय मे इसका प्रसारण प्रतिदिन शाम को छ से सात बजे तक होता है जिसमे नगर मे घटित होने वाले सभी प्रकार के सास्कृतिक शैक्षिक तथा अन्य प्रकार के कार्यक्रमो को दिखाया जाता है। भविष्य मे इस दिशा मे और भी उन्नति की आशा है। देश समाज की वर्तमान आवश्यकताओ को देखते हुए इन कार्यक्रमो की गुणवत्ता मे भी सुधार की आवश्यकता है। एतदर्थ यदि स्थानीय भाषा एव स्थानीय कार्यक्रमो का सहारा लिया जाय तो दूरदर्शन को और भी प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

TABLE NO. 6.3

Road Connectivity Matrix

	AD	BA	MU	BH	SI	KA	SA	PH	KU	SO	MA	SH	PU	JH	SB	HA	NA	KA	ME	MD	BH	KO	SN	MN	T
AD	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	0	1	0	6
BA	1	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	2
MU	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	3
BH	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	3
SI	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	2
KA	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	3
SA	1	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	2
PH	1	0	0	0	0	0	0	0	1	1	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	4
KU	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1
SO	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	3
MA	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1
SH	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	4
PU	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	0	0	0	4
JH	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	3
SB	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	1	1	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	4
HA	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	2
NA	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	2
KA	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	0	0	0	2
ME	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	1	0	1	0	0	3
MD	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	0	2
BH	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	2
KO	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	0	2
SN	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1
MN	0	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	3
T	6	2	3	3	2	3	2	4	1	3	1	4	4	3	4	2	2	2	3	2	2	2	1	3	64

AD	=	ALLAHABAD
BA	=	BAMRAULI
MU	=	MURATGANJ
BH	=	BHARWARI
SI	=	SIRATHU
KA	=	KARARI
SA	=	SARAIAQIL
PH	=	PHAPHAMAU
KU	=	KAURIHAR
SO	=	SORAON
MA	=	MAUAIMA
SH	=	SAHSON
PU	=	PHULPUR
JH	=	JHUNSI
SV	=	SAIDABAD
HA	=	HANDIA
NA	=	NAINI
KA	=	KARCHANA
ME	=	MEJA
MD	=	MANDA
BH	=	BHARATGANJ
KO	=	KORAON
SN	=	SHANKARGARH
MN	=	MANGHANP
T	=	TOTAL

TABLE NO. 6.4

Railway Connectivity Matrix

	AD	BA	MU	BH	SR	SA	PH	NI	MA	HO	PU	JA	JH	HA	NA	KA	ME	MD	SI	SO	JS	SH	T
AD	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	0	0	0	0	0	4
BA	1	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	2
MU	0	1	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	2
BH	0	0	1	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	2
SR	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1
SA	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
PH	1	0	0	0	0	0	0	1	1	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	4
NI	0	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1
MA	0	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1
HO	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
PU	0	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	2
JA	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1
JH	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	2
HA	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1
NA	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
KA	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	0	0	0	2
ME	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	0	0	2
MD	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	1
SI	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
KA	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
JS	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	0	0	1	2
SH	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0
T	4	2	2	2	1	0	4	1	1	0	2	1	2	1	3	2	2	1	0	0	2	1	34

AD = ALLAHABAD
BA = BAMRAULI
MU = MURATGANJ
BH = BHARWARI
SR = SIRATHU
SA = SARAIAQUIL
PH = PHAPHAMAU
NI = NINDURA
MA = MAUAIMA
HO = HOLAGARH
PU = PHULPUR
JA = JANGAI
JH = JHNUSI
HA = HANDIA
NA = NAINI
KA = KARCHANA
ME = MEJA ROAD
MD = MANDA
SI = SIRSA
KO = KORAON
JS = JASRA
SH = SHANKARGARH
T = TOTAL

सारणी स 6.7

इलाहाबाद जनपद यातायात एव सचार सेवाओ का प्रतिरूप

विकास खण्ड	डाकघर	तारघर	टेलीफोन	पब्लिक काल आफिस	रेलवे स्टेशन	बस स्टेशन/ स्टाप
कौडिहार	39	5		22	5	17
होलागढ	8	4		14	–	4
मउआइमा	11	1		10	2	5
सोराव	14	1		13	3	12
बहरिया	15	2		13	1	10
फूलपुर	12	1		11	2	2
बहादुरपुर	19	4		28	3	8
प्रतापपुर	17	2		12	3	10
सैदाबाद	13	3		15	1	10
धनूपुर	15	1		11	–	23
हडिया	14	1		13	3	4
जसरा	16	3		5	1	12
शकरगढ	15	2		15	1	18
चाका	15	1		15	1	8
करछना	20	4		10	3	22
कौधियारा	9	1		8	–	6
उरूवा	19	4		13	2	4
मेजा	21	4		9	–	7
कोराव	24	1		10	–	33
मान्डा	19	2		8	3	14
योग ग्रामीण	335	47		255	35	229
इलाहाबाद नगर एव कैण्ट क्षेत्र	66	1	69996	1941	11	3

स्रोत – साख्यिकीय पत्रिका 2000–2001

सारणी स 6.8

जनपद इलाहाबाद–सडक परिवहन तत्र

वर्ष / विकास खण्ड	ग्राम मे	1 कि0मी0 से कम	1 - 3 कि0मी0	3 - 5 कि0मी0	5 कि0मी0 से अधिक	कुल
1 कौडिहार	104	29	40	13	21	207
2 होलागढ	44	5	23	14	4	90
3 मउआइमा	55	15	8	9	6	93
4 सोराव	46	11	20	23	6	106
5 बहरिया	84	38	39	30	8	199
6 फूलपुर	78	30	29	9	2	148
7 बहादुरपुर	89	15	22	23	5	154
8 प्रतापपुर	69	35	13	9	3	129
9 सैदाबाद	62	24	51	19	—	156
10 धनूपुर	61	41	49	27	12	190
11 हडिया	46	36	26	5	13	126
12 जसरा	68	25	10	4	2	109
13 शकरगढ	92	35	29	14	15	185
14 चाका	61	14	18	2	2	97
15 करछना	63	36	15	5	—	119
16 कौधियारा	38	22	8	9	6	83
17 उरुवा	51	22	16	2	—	91
18 मेजा	53	25	26	28	16	148
19 कोराव	60	31	45	40	27	203
20 मान्डा	35	41	39	31	20	166

References

Cannon, A M (1965) New Raılways Constructıon and the pattern of Economıc Development of East Afrıca, Transactıons Instıtute of Brıtısh Geographers, d No 36 P-21

Chaudhary, M (1983) Fılm as a Medıum of communıcatıon Its Potentıal and Achıevment Yojana, Vol 27, No-11, June-16-30, P-18

Ghosh N N (1945) Early Hıstory of Kaushmabı P-8

Joshı, E B (1968) Uttar Pradesh Dıstrıct Gazetteers, Allahabad Government Press Allahabad, 151

(1986) P- 94, 95, 95

Ramanujam, K N (1984) Roads for prosperıty, Kurukshetra, Vol 32 No 2, June 1984, P-27

Rıchacharıya, H C (1990) Transport Bases of Development Unıversıty Prakashan, New Delhı, P-18

Sıngh, Ujagır (1959) Growth of Transport and communıcatıon ın Allahabad, The JGJ of Indıa Vol V Part 4, December 1959 Varanasi

Sıngh, O P (1979) Urban Geography Text Book P-251

Srıvastav, Salıgram (1937) Prayag Pradeep, Hındustan Acadamy, P-201, 202

Strart Daggett (1934) Prıncıpales of Inland Transportatıon Geographıcal Revıew Vol 25, P-227

Tiwarı R C and Trıpathı, S (1987) Role of Transport ın Development, Avadh, Journal of Socıal Scıences Vol 1 P-66, 67

Tiwarı, R C and Yadav, H S (1990) Spatıal Characterıstics of Transport Network ın Allahabad Dıstrıct, U P, Natıonal Geographer, Vol 25, No -I, June 1990, P P-17, 29

Cıvıl Aır Reports (1953) Reports of the Committee on Tr aınıng of cıvıl Aır Pılots, P-32

Banovıa, M R (1958) The Economıcs of Transport P-2

Truman C Bıgham and Merrıll, J Robert (1952) "Transportatıon, Prıncıples and Problems", P-6

Mılne, A M (1955) The Economıcs of Inland Transport, P-28

जेम्स रेनेल (1792) मेम्वायर आफ मैप, हिन्दुस्तान आफ मुगल इम्पायर, पेज स 318, 327

साख्यिकीय पत्रिका (1990) जनपद इलाहाबाद अर्थ एव सख्या प्रभाग, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

सामाजिक आर्थिक समीक्षा (1995) जनपद इलाहाबाद पेज स 15

सामाजिक आर्थिक समीक्षा (2001) पृष्ठ स 27, 28

प्रादेशिक समाचार (5 10 2000) प्रसारण लखनऊ

परिवहन कार्यालय, इलाहाबाद (2000) परिवहन अधिकारी क्षेत्रीय से प्राप्त सूचना के आधार पर

<u>अध्याय–7</u>

प्रयाग एक नगरीय केन्द्र के रूप में :

इलाहाबाद का भौगोलिक सर्वेक्षण (स्थिति और परिस्थिति) इस नगर के विभिन्न आवश्यकताओ और परिस्थितियो के स्वरूप को प्रस्तुत करता है जो इसके उत्पत्ति और विकास के लिए उत्तरदायी है। ऐसी परिस्थितिया और आवश्यकताए इतिहास के विभिन्न समयो मे परिवर्तित होती रही हैं और इस नगर के सरचनात्मक स्वरूप का विकास किया है। हमारे देश का कोई भी नगर हमारे सास्कृतिक विकास के विभिन्न अवस्थाओ का इतना स्पष्ट स्वरूप प्रस्तुत नही करता है जितना प्रयाग नगर। यहा का भौगोलिक पर्यावरण, सामाजिक परिवर्तन और बदलता हुआ राजनैतिक स्वरूप नगर के विस्तृत भू–भाग को प्रभावित किया है। इस नगर का प्रत्येक विस्तृत भाग एक विशिष्ट सास्कृतिक स्वरूप है जो इसके ऐतिहासिक विकास को प्रस्तुत करता है। कुम्भ नगर की अवस्थिति के समय प्रयाग की जनसख्या भारत के विशालतम महानगरो से भी अधिक हो जाती है।

7 1 <u>प्रयाग नगर की उत्पत्ति एवं विकास :</u>

प्रयाग अतिप्राचीन काल से ही त्याग और तप के मुख्य स्थल के रूप मे मान्यता प्राप्त है। सृष्टि के देवता ब्रह्मा ने यहा पर यज्ञ किया था (इलाहाबाद 1962) जिससे इस स्थान का नाम प्रयाग पडा। 'प्र' शब्द उत्तम और 'याग' शब्द यज्ञ का द्योतक है। प्रयाग का दूसरा तात्पर्य पवित्र नदियो का सगम भी है। उत्तर के पर्वतीय भाग मे अलकनन्दा (गगा की सहायक नदी) मे मिलने वाली अनेक नदियो के स्थल पर अनेक प्रयाग स्थित हैं जैसे–देव प्रयाग, रूद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग, नन्द प्रयाग आदि। प्रयाग जो हमारा अध्ययन स्थल है उसकी प्रसिद्धि त्रिवेणी के रूप मे है जहा गगा, यमुना एव अदृश्य सरस्वती, तीन पवित्र नदियो का सगम है। मनु स्मृति के अनुसार विशन से प्रयाग तक विस्तृत भू भाग मध्य देश मे सम्मिलित था (शर्मा जी0आर0 1957–59)। लिग पुराण के अनुसार चन्द्र वश के पूर्व पुरूष पुरूखा एल ने यमुना के उत्तरी सभाग मे शासन किया था जिसकी राजधानी प्रतिष्ठानपुर आधुनिक झूसी थी जो गगा के किनारे इलाहाबाद नगर के दूसरी ओर स्थित थी (बाबू साधू चरण प्रसाद 1902)।

बाल्मीकी रामायण मे प्रयाग के स्थान पर केवल ऋषि भारद्वाज की कुटिया का उल्लेख मिलता है (शास्त्री आर0एम0 1944)।

प्रयाग केवल एक साफ किया हुआ वन भाग था जो गगा यमुना दोआब और दक्षिणोन्मुख ट्रैक के सुदूरवर्ती भाग मे फैला हुआ था (ज्याग्राफिकल निबन्ध 1937)। इससे स्पष्ट होता है कि लगभग 1000 वर्ष ईसा पूर्व गगा यमुना सगम के समीप प्रयाग नगर न होकर केवल तपोभूमि था। चीनी यात्री ह्वेनसाग ने अपनी यात्रा के वर्णन मे जिस प्राचीन नगर प्रयाग का उल्लेख किया है उसका अस्तित्व बाद के वर्षो मे माना जा सकता है।

प्रारम्भिक बुद्ध कालीन मूलपाठो मे नगर के रूप मे प्रयाग का उल्लेख नही मिलता है। मज्झिम निकाय के अनुसार बाहुक (बूढी राप्ती), सुन्दरिका, सरस्वती और बाहुमती (नेपाल मे बागमती) नदिया थी तथा गया और पयाग (प्रयाग) केवल तीर्थ या गगा पर घाट थे (ला0बी0सी0 1932)। महावस्तु और ललित विस्तार महत्वपूर्ण सस्कृत बौद्ध मूलपाठ है जिनमे मध्य देश के देशो और नगरो का विवरण मिलता है लेकिन उसमे भी प्रयाग नगर का उल्लेख नही है (ला0बी0सी0 1932)। इस प्रकार पालि और सस्कृत मूलपाठो के अनुसार प्रारम्भिक बौद्ध काल मे प्रयाग नाम का नगर अस्तित्व मे नही था या प्रारम्भिक बौद्धो को उसकी जानकारी नहीं थी। विदेशी यात्री फाहियान (400 ई0) और ह्वेनसाग (7 ई0) ने प्रयाग का बार–बार उल्लेख किया है जिससे पता चलता है कि ईसा पूर्व प्रथम सहस्त्राब्दि के उत्तरार्द्ध मे या अन्तिम बौद्ध काल मे प्रयाग नगर का अस्तित्व था। टाड के अनुसार प्रयाग राजपूतो की अति प्राचीन नगरी थी और मैकडोनियन साम्राज्य के काल मे थी जिसका निरीक्षण ईसा पूर्व चौथी शताब्दी मे मेगस्थनीज ने अपने भारत भ्रमण के समय किया था (टाड जे0 1873)। चन्द्रगुप्त मौर्य के समय मे गगा यमुना दोआब के सगम के निकट प्रयाग नाम का एक नगर था (टीवीनिग, टी0 1893)।

एस0सी0 काला के अनुसार यह नगर झूसी के टीले के नीचे ढका था और प्रयाग अशोक के शासन के अन्तर्गत था जिसने प्राचीन नगर के हृदय भाग मे पत्थर का स्तभ खडा किया था। कहा जाता है कि अशोक ने चम्पक वन मे नगर के दक्षिणी पूर्वी भाग मे स्तूपो का निर्माण कराया था जिसकी दीवाले ह्वेनसाग के भ्रमण काल मे 30 मीटर से अधिक ऊँची थी (फूहरर ए0 1891)। उक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्राचीन प्रयाग नगर

500 ईसा पूर्व के पहले अस्तित्व मे नही था और सभावना बनती है कि यह नगर ईसापूर्व प्रथम सहस्त्राब्दि के उत्तरार्द्ध मे अस्तित्व मे आया। लेकिन यह प्रश्न अभी भी रहस्य ही बना हुआ है कि कब और किसने इस नगर को सस्थापित किया। ह्वेनसाग ने प्राचीन नगर का विस्तृत वर्णन किया है लेकिन एलबेरूनी ने उस पर ध्यान नही दिया है। एलबेरूनी ने सभवत 11वी शदी के प्रथम चतुर्थाश मे प्रयाग को देखा, लेकिन उन्होने प्रयाग नगर के स्थान पर प्रयाग के वृक्ष का उल्लेख किया है। इस प्रकार उनके अनुसार प्रयाग वृक्ष (अक्षयवट) का सूचक है और गगा यमुना के सगम पर कोई प्रयाग नगर नही है (सचाऊ इ0सी0 1910) क्योकि जब महमूद गजनी फतेहपुर के निकट गगा के किनारे पर असनी पर अधिकार किया तो वह प्राग (प्रयाग) को बिना देखे बुन्देल खण्ड को पार नही किया होता जहा लूटपाट करने के लिए उसको उपयुक्त नगर मिल गया होता। पुन जब महमूद गोरी बनारस पर अधिकार किया तो प्राग (प्रयाग) उसके मार्ग मे पडा होगा लेकिन उसके किसी भी इतिहास वेन्ता का ध्यान उधर नही गया (कोनीवेयर एच0सी0 और हीवेट जे0पी0 1893)। इससे स्पष्ट होता है कि 11वी शदी मे सगम के किनारे कोई नगर नही था। कनिंघम का मत है कि अलबरूनी के समय मे नगर मरूस्थल मे बदल गया था (कनिंघम 1950)।

ऊपर के विवरणो से स्पष्ट होता है कि भारत पर मुसलमानो के आधिपत्य के बहुत पहले ही प्रयाग का प्राचीन नगर विलुप्त हो गया था। एक अन्य मत यह है कि अकबर के पूर्व वर्तमान इलाहाबाद के स्थान पर कोई नगर नही था। लेकिन यह मत स्वीकार्य नही है क्योकि गगा यमुना सगम पर प्राचीन समय मे नगर का अस्तित्व अवश्य था। अकबर को श्रेय है कि उसने प्राचीन नगर को पुर्नजीवन दिया और इसका नामकरण इलाहाबाद किया। मुगल बादशाह अकबर ने इलाहाबाद नगर को वर्तमान रूप मे पुनर्स्थापित किया, जो पूर्व मे किले के समीप स्थित था। अकबर ने अपने शासन के 21वे वर्ष मे इस किले का निर्माण किया था (कोनी बेयर और हीवेट 1890)। यह भी सभावना है कि अकबर के बहुत पहले प्राचीन नगर प्रयाग या तो मरूस्थल मे बदल गया या नदियो द्वारा बहा दिया गया था क्योकि अकबर के समय के इतिहासवेक्ता अब्दुल कादिर बदायुनी के अनुसार नदी के किनारे एक ऊँचा वृक्ष अवस्थित था (इलियट एच0एम0 1910) जो सातवी शताब्दी मे सगम से 1 6 किमी0 की दूरी पर था। यह भी सभव है कि 9 वी शताब्दी के अन्तर्गत दोनो नदिया

हर्ष के समय मे सगम और नगर के बीच पडने वाले बालू के मैदान को पूर्ण रूपेण अपरदित करके हटा दिया हो और जल के किनारे पवित्र वृक्ष बच गया हो (कनिधम 1950)। इससे निष्कर्ष निकलता है कि प्राचीन नगर का आधा भाग नदियो द्वारा अपरदित कर हटा दिया गया था और शेष आधा भाग यहा के निवासियो द्वारा मरूस्थल बना दिया गया था।

पूर्व के पृष्ठो मे आवश्यक ऐतिहासिक और पुरातात्विक आकडो के अभाव मे इस दुर्बोध शीर्षक का उल्लेख किया गया है, फिर भी इस शीर्षक को बन्द नही कर देना चाहिये क्योकि डा0 एस0सी0 काला का कहना है कि "झूसी वाले स्थल के क्रमबद्ध खुदाई से पूर्व आर्यों के बसावो के इतिहास मे नया प्रकरण उमडने की सभावना है और इससे प्राचीन प्रयाग के रहस्य को समझाने मे सहायता मिल सकती है जिस प्रयाग की प्रकृति और पहचान अभी भी पूर्वानुमान का विषय बनी हुई है" (काला एस0सी0 7–2–57 ए0बी0 पत्रिका)।

अन्त मे कहा जा सकता है कि पुरातात्विक और वाह्य दृश्यो के आधारो पर वर्तमान नगर बहुत प्राचीन नही प्रतीत होता है लेकिन विदेशी यात्रियो के प्रमाणो के आधार पर इलाहाबाद नगर निश्चय ही पूर्वनगर की छूटी महानता पर बनाया गया है।

नगर की उत्पत्ति :

रेनर महोदय का कहना है कि नगरो की उत्पत्तिया विषम और जटिल होती है (रेनर जी0टी0 1951)। किसी भी स्थान पर नगर के विकास मे कार्यात्मक और पर्यावरणीय कारक एक साथ मिलकर कार्य करते है। सामान्यतया नगर अपने द्वारा सम्पन्न किये जाने वाले कार्यो से उत्पन्न होते है और वे उन कार्यो से सबन्धित कई लक्षणो को प्राप्त करते हैं, फिर भी पर्यावरणीय कारको–स्थिति, स्थल और ससाधनो का भी प्रभाव पडता है (स्मेल्स, ए०ई० 1953)। नगरो की उत्पत्ति के कारक इतिहास के विभिन्न कालो मे भिन्न–भिन्न होते हैं। उक्त अवलोकनो के प्रकाश मे इलाहाबाद नगर की उत्पत्ति का उल्लेख अग्रलिखित पृष्ठो मे किया गया है।

7.1(i)नगर की प्राचीन उत्पत्ति :

पश्च पृष्ठो मे उल्लेख किया गया है कि वर्तमान नगर प्राचीन प्रयाग नगर के समीप अवस्थित था। यह सत्य है कि प्रारम्भ मे नदी कृत क्षेत्रो मे कृषि उत्पादन मे आधिक्य के कारण नगरीय बसावो का जन्म हुआ और नदी परिवहन की सुविधा के कारण उनका

उत्पादन और अधिक बढा (सिह, आर०एल० 1956) फिर भी कुछ ऐसी मानवीय आवश्यकताये थी जिन्हे इन प्रारम्भिक नगरो को पूरा करना था। भारत मे नदियो के सगम प्रारम्भिक नगरो के स्थल होते थे जिनके साथ कोई न कोई पवित्रता जुडी होती थी। ऐसे पवित्र स्थलो पर लोग एकत्रित होने लगते हैं और वार्षिक मेले नियमित रूप से लगने लगते हैं। प्राचीन नगर प्रयाग तीन पवित्र नदियो गगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के सगम स्थल पर उत्पन्न हुआ। त्रिवेणी मे सम्पूर्ण भारत से तीर्थ यात्रियो का नियमित आगमन होता रहा। फलत तीर्थ यात्रियो की आवश्यकताओ की पूर्ति के लिये सगम के निकट स्थायी बसाव अस्तित्व मे आया। आगे चलकर यहा नौका निर्माण, काष्ठ और पत्थर पर खुदाई, सोना, चादी, ताबा के तार, कीमती पत्थर, आभूषण, वस्त्र इत्यादि से सम्बन्धित उद्योग भी स्थापित हुए। प्राचीन समय मे गगा और यमुना नदियो ने परिवहन व सचार की सुविधाये प्रदान की। इन नदियो के सगम ने एक सुरक्षित स्थल प्रदान किया तथा इनसे निरन्तर जलापूर्ति भी होती रही। इस प्रकार सगम की भौतिक दशाओ और धर्म की प्राचीन सास्कृतिक दशाओ ने मिल कर नगर वसाव के केन्द्र को जन्म दिया। हिन्दुओ की प्राचीन मान्यता के अनुसार नदी की ओर उन्मुख मन्दिरो का निर्माण किया जाना चाहिये। प्रयाग सगम के चारो तरफ मन्दिरो और छोटे वसाओ से घिरा हुआ है। इस प्रकार प्राचीन प्रयाग की उत्पत्ति धर्म से सबन्धित है (द्विवेदी, आर0एल0 1961)।

7 1(ii) मध्यकालीन विकास :

जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है कि मुस्लिम आक्रान्ताओ द्वारा प्राचीन प्रयाग नगर नष्ट–भ्रष्ट हो गया था। अकबर के शासन काल मे इस नगर का विकास किया गया था। सगम के पास अकबर ने अपने फौजो को रखने के लिये एक किले का निर्माण कराया और इसको एक प्रान्तीय शासकीय केन्द्र के रूप मे विकसित किया, अब प्रयाग मे राजनीतिक क्रियाकलाप होने लगे ओर धार्मिक कार्यो के साथ–साथ देश की राजनीतिक हलचल के केन्द्र के रूप मे विकसित होने लगा। इस प्रकार प्रयाग का यह राजनीतिक स्वरूप यथावत् ब्रिटिश अग्रेजो के शासन काल मे भी अक्षुण रहा।

7.1(iii) अर्वाचीन विकास :

इलाहाबाद नगर का विकास औद्योगिक क्रान्ति से अलग, एक धार्मिक एव राजनीतिक क्रियाकलापो के केन्द्र के रूप मे हुआ। ब्रिटिश शासको के इस केन्द्र मे बसने के साथ यह

उत्तर भारत का प्रमुख प्रशासनिक केन्द्र के रूप मे विकसित होता गया। यहा पर गवर्नर जनरल का निवास स्थान था जहा पर आज मेडिकल कालेज है। ब्रिटिश शासन मे ही इलाहाबाद हाइकोर्ट बना जो आज भी उत्तर प्रदेश का उच्च न्यायालय के केन्द्र के रूप मे है। लखनऊ के उत्तर प्रदेश की राजधानी बन जाने से इलाहाबाद हाईकोर्ट का एक पीठ राजधानी मे स्थापित हुआ है। यही पर ए0जी0 आफिस, माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश का मुख्य कार्यालय एव कई प्रमुख प्रशासनिक केन्द्र स्थित हैं। आनन्द भवन भारतीय स्वतत्रता आन्दोलन का केन्द्र रहा है। इलाहाबाद मुख्य नगर से दूर यमुना नदी के दक्षिण मे नैनी औद्योगिक क्षेत्र की स्थापना के साथ इलाहाबाद मे औद्योगिक कार्य शुरू हुए किन्तु आज भी इलाहाबाद की पहचान एक धार्मिक, राजनीतिक एव शैक्षणिक केन्द्र के रूप मे ही है। इसी कारण इसका विकास बहुत ही मन्द गति से हुआ है (द्विवेदी आर0एल0 1961)।

7 1(iv) प्रतिष्ठानपुर (झूसी)

प्रतिष्ठानपुर प्रयाग के पूर्व गगा के पूर्वी तट पर यह एक बहुत ही प्राचीन स्थान है। यह चन्द्रवशीय राजाओ की राजधानी थी। बाल्मीकी रामायण उत्तरकाड मे (सर्ग 100से 103 तक) तथा 'देवी भागवत' मे (बारहवे अध्याय मे) इस स्थान के आदि राजाओ का वर्णन है। 'लिग पुराण' पूर्वार्ध के बारहवे अध्याय मे उल्लेख है कि इलाके पुत्र पुरूरवा ने यमुना से उत्तर की ओर प्रयाग के निकट अपनी राजधानी प्रतिष्ठानपुर मे राज्य किया था।

मत्स्य पुराण के अध्याय 110 तथा 'स्कद पुराण' काशी खण्ड के सातवे अध्याय मे प्रतिष्ठानपुर के महात्म्य का वर्णन करते हुए बताया गया है कि गगा के पूर्व त्रिभुवन विख्यात प्रतिष्ठान नगरी है।

महाभारत के उद्योग पर्व अध्याय 114 मे इस स्थान के राजा ययाति का वर्णन है। कालिदास ने अपने प्रसिद्ध नाटक 'विक्रमोर्वशीय' मे इसी प्रतिष्ठानपुरी के राजा पुरूखा को नायक बनाया है (श्रीवास्तव, शाली ग्राम 1937)। मुसलमानो के समय मे शेखतकी नामक एक प्रसिद्ध फकीर यहा रहते थे। उन की कब्र गगा के किनारे अब तक बनी हुई है, जहा वर्ष मे एक बार मेला लगता है। अकबर ने इस स्थान का नाम बदल कर 'हादियाबास' रखा था, परन्तु वह नाम प्रचलित नही हुआ।

झूसी नगर इलाहाबाद किले के सामने, गगा और मनसइता के सगम के बायी ओर 25°26′ अक्षाश उत्तर और 81°54′ देशान्तर पूर्व मे एक ऊँचे टीले पर स्थित है। यह नगर

फूलपुर से 23 किलोमीटर दक्षिण–पश्चिम की ओर है तथा यह एक पक्की सडक इलाहाबाद–वाराणसी राष्ट्रीय मार्ग से जुडा हुआ है तथा फाफामऊ पुल होकर इलाहाबाद से 29 किमी0 की दूरी पर स्थित है। पूर्वोत्तर रेलवे गगा नदी को रेलपुल द्वारा पार करके इसी गाव के दक्षिण भाग से होकर गुजरती है और यही पर झूसी रेलवे स्टेशन स्थित है।

प्रशासनिक दृष्टि से झूसी एक टाउन एरिया है जिसमे बेलासैलाबी, पुरासूरदास और झूसी कोहना गावो के कुछ भाग सम्मिलित है (उत्तर प्रदेश जिला गजेटियर 1986)। इसका क्षेत्रफल 1 16 वर्ग किमी0 तथा कुल जनसख्या 7943 है। इस जनसख्या मे पुरूषो की सख्या 4745 तथा स्त्रियो की सख्या 3198 है। यहा साक्षरता का प्रतिशत 1991 मे 51 78 है तथा सस्ते गल्ले की चार दुकाने है। झूसी मे दो जूनियर बेसिक स्कूल, एक सीनियर बेसिक स्कूल, एक हायर सेकेन्ड्री स्कूल बालक, एक ऐलोपैथिक चिकित्सालय, एक परिवार एव मातृ शिशु कल्याण केन्द्र, दो राष्ट्रीय कृत बैक शाखाये, एक डाक एव तार घर, नौ पब्लिक काल आफिस तथा 175 टेलीफोन सख्या है (साख्यिकीय पत्रिका 1996)।

झूसी कोहना या पुरानी झूसी कीं पहचान पुराणो मे वर्णित प्रतिष्ठानपुर या कसी से की गई है जो कन्नौज के प्रतिहार राजा त्रिलोचन पाल की राजधानी थी। यह भी कहा जाता है कि केसी नाम से चीनी यात्री ह्वेनसाग द्वारा वर्णित किया–शी0पु0लो0 का ही बोध होता है। यह चीनी यात्री 629 और 644 ई0 के बीच किसी समय इस जिले मे आया था। ऐसी अनुश्रुति है, किसी समय इस स्थान का नाम काल्पनिक कथाओ मे राजा हरबोग के नाम पर हरबोगपुर या हरमूमपुर था। सिद्ध सन्त गोरखनाथ और उनके गुरू मछदर नाथ के हस्तक्षेप के कारण इस राजा का पतन और नगर का विनाश हो गया। यह नगर सत सैय्यद अली मुर्तजा के आह्वान पर 1359 मे भूचाल से नष्ट हो गया। झूसी कोहना मे बहुत से प्राचीन अवशेष है। गगा के बाये तट पर हस कुटी या हस तीर्थ नाम का एक भवन है जो एक ऊँचे टीले पर स्थित है और जिसे 150 वर्ष पुराना बताया जाता है। हस कुटी मे पूर्व से पश्चिम की ओर जाने वाले रास्ते के दक्षिण मे एक मन्दिर है, और इसके उत्तर मे एक प्रतिमा है जिसकी पीठिका पर सस्कृत भाषा मे एक प्राचीन लेख उत्कीर्ण है। हस तीर्थ के दक्षिण की ओर थोडी दूर पर समुद्र कूप है और अनुश्रुति के अनुसार यह वही समुद्र कूप है जिसका वर्णन मत्स्य पुराण तथा पद्म पुराण मे मिलता है।

यह समुद्र कूप 1885 तक एक टीला मात्र था, किन्तु उसी वर्ष सत सुदर्शन दास ने

इस कूए का पुननिर्माण करवाया। इसी के पास एक हनुमान मन्दिर तथा अनेक गुफाये है जिसमे साधु निवास करते है। समुद्र कूप के दक्षिण मे सैय्यद सदरूल हक तकीउद्दीन मुहम्मद अब्दुल अकबर जो शेख तकी के नाम से अधिक लोकप्रिय है, का प्रसिद्ध मकबरा है। शेख तकी वर्ष 1320 मे झूसी मे पैदा हुए थे तथा 1384 मे वही पर मृत्यु हुई थी। फर्रूखसियर (जब दिल्ली के सिहासन के लिये जहादार से युद्ध के लिये जा रहा था) मार्ग मे इस सत की मजार पर नवम्बर 1712 मे आया था। मकबरे के नजदीक ही उत्तर पश्चिम की ओर एक बहुत बडा वृक्ष है जिसे सामान्य रूप से सत की दातून कहा जाता है और यह 500 वर्ष पुराना माना जाता है। स्थानीय लोग इसे 'विलायती इमली' कहते है परन्तु वनस्पति विज्ञान की दृष्टि से इसका विलायती इमली होना सिद्ध नही हो पाया है।

वर्तमान समय मे यह नगर इलाहाबाद के समीप युग्म नगर के रूप मे विकसित हो रहा है। साथ ही इलाहाबाद महानगरपालिका इसका सुव्यवस्थित विकास कर रही है। यहा अध्यापको के लिए सेण्ट्रल ट्रेनिग कालेज, ग्राम सेवको के लिए एक प्रशिक्षण केन्द्र, एक बीज गोदाम, धर्मशाला एव एक निरीक्षण गृह हैं। पत शोध सस्थान तथा एम0आर0आई0, और हरीश चन्द्र शोध सस्थान भी यहा स्थित है। प्रत्येक सोमवार तथा शुक्रवार को यहा बाजार लगता है। दशहरा के अवसर पर यहा एक विशाल मेला भी लगता है जहा लगभग 10100 व्यक्ति आते है (उत्तर प्रदेश जिला गजेटियर इलाहाबाद 1986)।

72 इलाहाबाद के नगरीय भू–आकार का वर्तमान विकास

नगरीय भू–आकार या नगरीय भूमि उपयोग नगरीय आकारिकी का महत्व पूर्ण अग है। नगरीय भू–आकार के अन्तर्गत नगर के विस्तार एव स्वरूप का अध्ययन किया जाता है। नगरीय आकारिकी का सम्बन्ध नगर के भीतर के जिन पहलुओ से है उन्हे दो रूपो या प्रकारो मे रखा जा सकता है– (1) आन्तरिक कार्यात्मक सरचना या कार्यात्मक आकारिकी और (2) स्थानो एव निर्माणो का भौतिक स्वरूप और व्यवस्था। नगर की कार्यात्मक आकारिकी मे उसके भीतर की भिन्न–भिन्न क्षेत्रीय इकाइयो, सस्थाओ और निर्माणो के कार्यों का विश्लेषण किया जाता है, (सिह ओ0पी0 1976) जबकि नगर के भीतर के भौतिक स्वरूप और कुल दृश्य मिलकर नगरीय भू दृश्य का निर्माण करते हैं, जैसा स्मेल्स महोदय ने भी बताया है (स्मेल्स ए0ई0 1953)। इन भौतिक स्वरूपो की कार्यात्मक व्याख्या करने पर नगरीय भू–दृश्य का अध्ययन पूर्ण किया जा सकता है। अत स्पष्ट है कि भौतिक

स्वरूपो के उपागम से नगरीय आकारिकी को देखने पर नगरीय भू दृश्य का अध्ययन होता है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि नगरीय आकारिकी अन्ततोगत्वा नगरीय भू–दृश्य का ही अध्ययन है।

नगरीय भूमि उपयोग कार्यात्मक आकारिकी का एक बदला हुआ रूप या नाम है जिसके अन्तर्गत नगर के भीतर की भूमि–इकाइयो या सम्पूर्ण क्षेत्र के मानव द्वारा किये गये उपयोगो को शामिल किया जाता है। 'कार्यात्मक आकारिकी' अधिक व्यापक शब्द लगता है, क्योकि इसमे सभी तरह की आन्तरिक इकाइयो के कार्यों का अध्ययन होता है, जबकि नगरीय भूमि उपयोग मे केवल 'भूमि' के कार्यों का अध्ययन होता है, लेकिन अन्य सभी इकाइयो या निर्माणो के कार्य व्यावहारिक अर्थ मे भूमि उपयोग के ही कार्य है क्योकि इन सभी इकाइयो का निर्माण या अस्तित्व भूमि पर ही होता है। अत स्पष्ट है कि आकारिकी, सरचना, भूमि उपयोग और भू–दृश्य इनमे अन्तर शब्दो का ही अधिक है, अर्थ का वस्तुत बहुत कम (सिह, ओ०पी० 1979)।

7 21 <u>वर्तमान भूमि उपयोग का स्वरूप</u> .

अध्ययन क्षेत्र इलाहाबाद नगर के भू आकार के वर्तमान विकास का विश्लेषण नगरीय भूमि उपयोग के वर्तमान स्वरूप के आधार पर किया गया है। यह स्वरूप 1987 के भू–उपयोग के आकडे के आधार पर विश्लेषित किया गया है। इलाहाबाद के वर्तमान स्वरूप के विश्लेषण के पूर्व इसके ऐतिहासिक स्वरूप को सक्षेप मे समझना आवश्यक होगा क्यो कि तभी पूर्व स्वरूप से वर्तमान की तुलना सम्भव होगी।

19वी शताब्दी के प्रारम्भ मे नगर का वास्तविक स्वरूप अत्यन्त सीमित था। जब 1801 मे अग्रेजो ने इस नगर को अधिकार मे लिया तब यह बडा नगर नही था। किला ग्रैंड ट्रक सडक और दो बडी नदियो ने उस समय इस नगर के महत्व को बढाने मे योगदान किया। आर0हेबर के अनुसार यह नगर यमुना के किनारे तक ही सीमित था (हेबर आर0 1828)। 1857 की क्रान्ति के बाद नगर का फैलाव वृहद रूप मे हुआ। 1858 मे प्रान्तीय सरकार का और 1868 मे हाईकोर्ट का स्थान आगरा से इलाहाबाद किये जाने के कारण नगर की वृद्धि को प्रोत्साहन मिला। 1818 के सर्वे अभिलेखो के अनुसार नगर का क्षेत्र 27 45 वर्ग किमी0 था जो 1863 मे बढकर 52 83 वर्ग किमी0 और 1870 मे 58 01 वर्ग किमी0 हो गया जो स्वतत्रता के पश्चात् तक लगभग यही क्षेत्रफल रहा। नगरीय स्वरूप का विस्तार

स्वतत्रता के पश्चात् तीव्र गति से हुआ। इसका विस्तार 1961 मे 63 15 वर्ग किमी0 पर और 1991 मे 82 18 वर्ग किमी0 पर हो गया है।

1950 तक के नगर के भू स्वरूप को देखे तो स्पष्ट होता है कि इस समय तक चौक क्षेत्र मुख्य नगर के रूप मे था। 1911 मे हिवेट सडक, 1916 मे शिवचरन लाल सडक और क्रासथ्वेट सडक तथा 1929 मे जीरो रोड बनाई गयी। इन सडको के बनने से चौक क्षेत्र और विकसित हुआ। इस समय तक लुकरगज, जार्जटाउन, टैगोर टाउन, न्यू कटरा दक्षिणी मलाका ममफोर्डगज, न्यू वैरहना, तुलारामबाग, सोबतिया बाग व अलोपीबाग, आवासीय क्षेत्र के रूप मे विकसित होने लगा।

लूथर रोड के पूर्व मे स्थित निम्न भूमि क्षेत्र अगेजो के लिए अनुपयुक्त समझा जाता था। कलान्तर मे उसी निम्न भूमि क्षेत्र पर सोबतियाबाग मे भारतीयो के लिए एक नया सिविल स्टेशन बनाया गया। स्व0 कवि रवीन्द्र नाथ टैगोर के नाम पर 1930 के दशक मे टैगोर टाउन का विकास किया गया। 1927 मे न्यूकटरा क्षेत्र बना। प्रारम्भ मे एलेनगज व ममफोर्ड गज छोटे–छोटे गाव थे। सर जार्ज एलेन के नाम पर एलेनगज नाम पडा जो तत्कालीन पाइनियर प्रेस के सस्थापक थे। म्युनिसिपल बोर्ड के पूर्व चेयर मैन मिस्टर ममफोर्ड के नाम पर ममफोर्डगज नामकरण किया गया। नगर के दक्षिण पश्चिम मे कई गृह निर्माण योजनाए प्रारम्भ की गई। दक्षिण पूर्व मे साउथ मलाका, बाईकाबाग और रामबाग योजनाए प्रारम्भ की गयी।

7 22 1990 के समय मे नगर भू–आकार

नगर के वर्तमान स्वरूप का अत्यधिक विस्तार हो गया है। 1960 के दशक तक इलाहाबाद जहा कुछ सीमित क्षेत्र पर विकसित था वही आज वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे नगर का विस्तार गगा और यमुना नदियो के पार नैनी एव झूसी तक विस्तृत हो गया है। वर्तमान भूमि उपयोग सर्वेक्षण वर्ष 1987 के अनुसार 5802 हेक्टेयर (31 34 प्रतिशत) विकसित भूमि तथा 12709 हेक्टेयर (68 66 प्रतिशत) अविकसित भूमि है। वर्तमान कैण्ट का 1639 हेक्टेयर क्षेत्र विकसित क्षेत्र मे सम्मिलित नही किया गया है। वर्ष 1967 की महायोजना मे वर्तमान/विकसित क्षेत्र 3079 हेक्टेयर था। अत विगत 20 वर्षों मे लगभग 2723 हेक्टेयर अतिरिक्त भूमि पर नगर विकास हो चुका है। नगर की कुल वर्तमान विकसित भूमि मे से 3851 हेक्टेयर (66 4 प्रतिशत) मुख्य नगर मे, 1456 हेक्टेयर (25 1 प्रतिशत) नैनी मे, 273 हेक्टेयर (4 7

प्रतिशत) झूसी मे तथा 222 हेक्टेयर (3 8 प्रतिशत) फाफामऊ मे है। मुख्य नगर मे नगर का विस्तार उत्तर पूर्व मे सलोरी, बघाडा गोविन्दपुर मे तथा पश्चिम मे सुलेम सराय की ओर हुआ है। उपनगरीय क्षेत्रो मे सर्वाधिक विस्तार नैनी मे हुआ है, जहा विकास प्राधिकरण की आवासीय योजनाये कार्यान्वित की जा रही है। झूसी मे नगर विस्तार अपेक्षाकृत कम रहा

सारणी–7 1

इलाहाबाद नगर का वर्तमान भूमि उपयोग (1987) विकसित क्षेत्र

(क्षेत्रफल हेक्टेयर मे)

क्र0 स0	भूमि उपयोग	मुख्यनगर	नैनी	झूसी	फाफामऊ	योग	प्रतिशत
1	आवासीय	2452 85	561 25	78 00	103 00	3195 10	55 1
2	व्यावसायिक	147 00	20 50	3 50	14 50	185 50	3 2
3	उद्योग	51 00	424 00	11 00	–	486 00	8 4
4	राजकीय	176 00	134 00	–	–	310 00	5 3
5	मनोरजन	121 00	–	–	–	121 00	2 1
6	सार्वजनिक/अर्द्ध सार्व0 सुविधाए	166 00	140 10	4 0	–	310 10	5 3
(क)	शिक्षा	126 00	140 00	4 00	–	270 00	
	डिग्री कालेज	58 00	–	–	–	58 00	
	टेक्निकल	68 00	140 00	4 00	–	212 00	
(ख)	स्वास्थ्य	40 00	0 10	–	–	40 10	
	सक्रामक रोग चिकित्सालय	3 00	–	–	–	3 00	
	सामान्य चिकित्सालय	37 00	0 10	–	–	37 10	

7	सार्वजनिक उपयोगिताये/ सेवाये	2000	1100	–	–	3100	05
(क)	जलकल	1200	–	–	–	1200	
(ख)	विद्युत	800	1100	–	–	1900	
8	यातायाता एव परिवहन	71670	16550	17630	10500	116350	201
(क)	रेल मार्ग	47240	11000	15500	8000	81740	
(ख)	सडक मार्ग	20430	5550	1680	2500	30160	
(ग)	बस अड्डा	300	–	450	–	750	
(घ)	ट्रक अड्डा	3700	–	–	–	3750	
	योग	**385055**	**145635**	**27280**	**22250**	**580220**	**100**
	प्रतिशत	**664**	**251**	**47**	**38**	**10000**	

स्रोत– इलाहाबाद महानगर योजना 2001, पृष्ठ–23

है। फिर भी आवास एव विकास परिषद द्वारा कई आवासीय योजनाए लागू की जा चुकी है। फाफामऊ मे भौतिक विस्तार मुख्य मार्गो के किनारे प्राय पट्टिका रूप मे है। (मानचित्र स० 71)

नगरीय भूआकार के भौतिक विस्तार का विश्लेषण करने के पश्चात् यह जानना आवश्यक है कि वर्तमान भू–आकार का स्वरूप किन–किन रूपो मे नगर के कितने क्षेत्र पर विस्तृत है क्योकि तभी वास्तविक स्वरूप का पता चलेगा।

723 आवासीय स्वरूप

इलाहाबाद नगर के अन्तर्गत कुल आवासीय क्षेत्र लगभग 3195 हेक्टेयर है। वर्तमान आवासीय क्षेत्र का लगभग 77 प्रतिशत मुख्य नगर मे विस्तृत है। जैसा कि वर्तमान मुख्य नगर का विस्तार पूर्व मे सलोरी, बघाडा, गोविन्दपुर तेलियरगज तथा पश्चिम मे सुलेमसराय तक हुआ है। नगर की आवासीय स्थिति को देखे तो पता चलता है कि चौक क्षेत्र एव पुराना

PRAYAG (ALLAHABAD)
LAND-USE PATTER
N
To Lucknow
To Pratapgarh
To Varanasi
PHAPHAMAU
GANGA RIVER
PRAYAG
BAMRAULI
JHUNSI
FORT
NAINI
YAMUNA RIVER
To Manikpur
To Mugalsarai
Undefine Area
River
Garden
Flood Affected
Commercial Area
Residencial Area
Industrial Area
Government Use
Recreation
Technical Instit
University
Railway Line
Bus Stand
Truck Stand
km
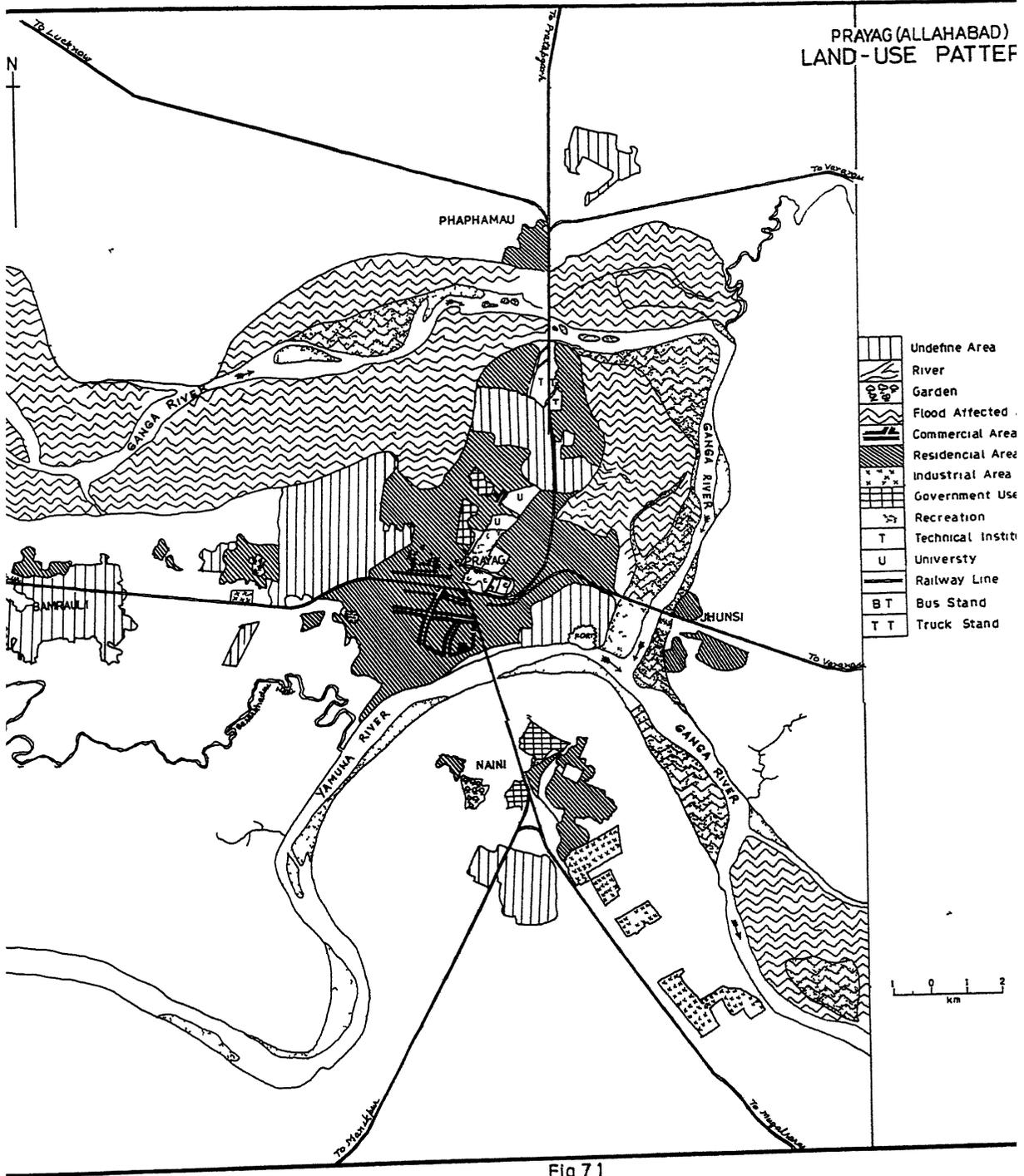
Fig 71

कटरा क्षेत्र मे आवास अत्यन्त सकरे स्वरूप मे स्थित है जहा आवास के मध्य गलिया या अत्यन्त पतली सडक पाई जाती है। दारागज के कुछ क्षेत्रो मे सकीर्ण आवासो का विस्तार है। सामान्य तौर पर इलाहाबाद नगर के अन्तर्गत आवासीय विस्तार क्षैतिज रूप मे विस्तृत है। अन्य कवाल नगरो की अपेक्षा इलहाबाद नगर का आवासीय घनत्व सबसे कम है। 2001 की महायोजना मे आवासीय क्षेत्रफल 5214 हेक्टेयर बताया गया है। इसमे मुख्य नगर मे 625 91 हेक्टेयर क्षेत्रफल पर आवासीय घनत्व 400 से कम, 3169 08 हेक्टेयर क्षेत्रफल पर मध्यम घनत्व 400 से 600 के मध्य तथा 513 हेक्टेयर पर उच्च घनत्व 600 से अधिक पाया जाता है।

इसी प्रकार मुख्य नगर के उपनगरीय क्षेत्र मे 2001 की महायोजना मे नैनी के 1204 10 हेक्टेयर, झूसी के 909 24 हेक्टेयर एव फाफामऊ के 1200 91 हेक्टेयर क्षेत्रफल पर आवासीय क्षेत्र का विस्तार है। इलाहाबाद के उपनगरीय क्षेत्र के सम्पूर्ण भाग पर मध्यम आवासीय घनत्व 400 से 600 का है।

7 24 व्यावसायिक स्वरूप

इलाहाबाद नगर के कुल 185 50 हेक्टेयर क्षेत्रफल पर व्यावसायिक प्रतिरूप का विस्तार है। चौक, घटाघर, जानसेनगज, खुल्दाबाद, मुट्ठीगज, कटरा तथा कर्नलगज नगर के पुराने वाणिज्यिक क्षेत्र है। नये वाणिज्यिक क्षेत्रो मे सिविल लाइन्स, तेलियरगज, कीडगज, दारागज, सुलेमसराय तथा नैनी की बाजारे है। इन सभी बाजारो का विकास परम्परागत रूप से ही हो रहा है। केवल सिविल लाइन्स का बाजार आधुनिक तथ नियोजित हैं। इसके अतिरिक्त नगर के बाहर प्रमुख मार्गो के किनारे–किनारे अनियोजित दुकाने स्थापित करने का क्रम भी जारी है। पूर्व विकसित नये तथा पुराने वाणिज्यिक क्षेत्रो से लगे हुये भागो मे भी मुख्य मार्गो तथा गलियो के किनारे–किनारे बाजारो का विस्तार होता जा रहा है। नगर के अन्तर्गत कुल व्यावसायिक क्षेत्र लगभग 186 हेक्टेयर है जो कुल विकसित क्षेत्र का 3 2 प्रतिशत है। व्यावसायिक विकास का 79 प्रतिशत मुख्य नगर मे, 11 प्रतिशत नैनी मे, 2 प्रतिशत झूसी तथा 8 प्रतिशत फाफामऊ मे है।

7 25 औद्योगिक स्वरूप

वर्ष 1961–70 के दशक मे इलाहाबाद नगर की उल्लेखनीय प्रगति हुई। इस दौरान केन्द्र तथा राज्य सरकार की अनेक औद्योगिक परियोजनाये चालू की गई और नैनी

इलाहाबाद का औद्योगिक क्षेत्र बना। इसके अतिरिक्त तेलियरगंज में मोतीलाल नेहरू इंजीनियरिंग कालेज से सम्बद्ध एक औद्योगिक आस्थान विकसित हो गया है। दूसरा औद्योगिक आस्थान नैनी में विकसित है। भारी उद्योगों का विकास केवल नैनी में हुआ है। इस समय नगर मे कुल 1332 औद्योगिक इकाइयां स्थापित हैं, जिनमें 7 वृहद, 7 मध्यम तथा 1318 लघु एवं लघुतर इकाइयां है। इन इकाइयों में श्रमिकों की कुल संख्या 19792 है। उद्योगों के अन्तर्गत विकसित भूमि 486 हेक्टेयर है जो कुल विकसित क्षेत्र का 8.4 प्रतिशत है। कुल औद्योगिक भूमि का 87 प्रतिशत नैनी में, 10 प्रतिशत मुख्य नगर में तथा केवल 3 प्रतिशत झूंसी में है।

7.26 राजकीय कार्यालय :

ब्रिटिश काल में प्रदेश की राजधानी होने के कारण इलाहाबाद में प्रदेश के महत्वपूर्ण कार्यालय स्थित हैं। इनमें राजकीय मुद्रणालय, महालेखाकार, मण्डलरेल प्रबन्धक, उच्च न्यायालय, माध्यमिक शिक्षा परिषद आदि मुख्य हैं। इसके अतिरिक्त मण्डल स्तर, जिलास्तर तथा स्थानीय निकाय स्तर के कार्यालय भी यहां स्थित हैं। सर्वेक्षण के अनुसार इस समय नगर में कुल 298 कार्यालय हैं जिनमें 51 केन्द्र सरकार, 202 राज्य सरकार, 41 अर्द्धराजकीय तथा 4 स्थानीय निकाय के हैं। इन कार्यालयों में लगभग 61,000 कर्मचारी कार्यरत हैं जिनमें 16,100 केन्द्र सरकार, 33100 राज्य सरकार, 10,000 अर्द्धसरकारी तथा 1800 स्थानीय निकाय के कार्यालयों में कार्यरत हैं। नगर के अधिकांश राजकीय कार्यालय रेलवे लाइन के उत्तर सिविल लाइन्स, ममफोर्डगंज, कटरा, जार्जटाउन, टैगोर टाउन, तेलियरगंज, राजापुर, चर्चलेन आदि में स्थित हैं। प्रशासनिक दृष्टि से उच्च न्यायालय, माध्यमिक शिक्षा परिषद, राजकीय मुद्रणालय, महालेखाकार आदि कार्यालयों का विकेन्द्रीकरण करके उनके शाखा कार्यालयों की स्थापना प्रदेश के अन्य नगरों में की गई है इससे यह सम्भावना बनी है कि बड़े कार्यालयों की स्थापना अब इलाहाबाद में नहीं होगी तथापि मण्डल स्तर, जिलास्तर तथा स्थानीय स्तर के कार्यालयों की यथा स्थिति अवश्यम्भावी है। राजकीय कार्यालयों के अन्तर्गत कुल वर्तमान भूमि लगभग 310 हेक्टेयर है जो कुल विकसित भूमि का 5.3 प्रतिशत है। कार्यालयों के अन्तर्गत लगभग 83 प्रतिशत भूमि मुख्य नगर मे स्थित है शेष 17 प्रतिशत नैनी में है।

7 27 मनोरजन हेतु खुले स्थलो एव पार्को के रूप मे .

इसके अन्तर्गत लगभग 121 हेक्टेयर भूमि का नगर मे उपयोग हुआ है जिनमे नगर महापालिका के पार्को के अन्तर्गत 16 3 हेक्टेयर भूमि है। इसके अतिरिक्त अल्फ्रेड पार्क की 53 4 हेक्टेयर, खुसरू बाग की लगभग 26 हेक्टेयर, मिण्टो पार्क की 5 3 हेक्टेयर, तथा नेहरू पार्क की लगभग 20 हेक्टेयर भूमि पार्को के अन्तर्गत है। वाह्य एव खुले मनोरजन हेतु नगर की उपलब्ध भूमि कुल विकसित भूमि की केवल 2 1 प्रतिशत है। सिविल लाइन्स तथा नगर के उत्तरी भाग मे खुले स्थलो की अधिकता है जबकि दक्षिणी भाग, जहा नगर की अधिकाश जनसख्या निवास करती है, मे इन स्थलो की अत्यन्त कमी है। नैनी, झूसी तथा फाफामऊ उपनगरीय क्षेत्रो मे सुव्यवस्थित खुले स्थलो तथा पार्को का प्राय अभाव है।

7 28 सार्वजनिक / अर्द्ध सार्वजनिक सुविधाओ का स्वरूप

इन सुविधाओ के अन्तर्गत कुल 310 हेक्टेयर भूमि है जो कुल विकसित भूमि का 5 3 प्रतिशत है। इसमे से 270 हेक्टेयर शिक्षा, 40 हेक्टेयर स्वास्थ्य के अन्तर्गत है।

7 29 सार्वजनिक उपयोगिताओ / सेवाओ का स्वरूप

इन सुविधाओ के अन्तर्गत कुल 31 हेक्टेयर भूमि है जो कुल विकसित भूमि का 0 5 प्रतिशत है। इनमे से जलकल के अन्तर्गत 12 हेक्टेयर भूमि मुख्य नगर मे तथा विद्युत के अन्तर्गत 8 0 हेक्टेयर भूमि मुख्य नगर मे तथा 11 हेक्टेयर भूमि नैनी के अन्तर्गत है।

7 10 यातायात एव परिवहन का स्वरूप .

रेलमार्ग, सड़क मार्ग, बस अड्डा के अन्तर्गत लगभग 1164 हेक्टेयर भूमि है जो कुल विकसित भूमि का 20 1 प्रतिशत है। लीडर रोड, जीरो रोड तथा सिविल लाइन मे नगर के तीन राजकीय परिवहन निगम के बस अड्डे स्थित है। प्राइवेट बसो के अड्डे रामबाग स्टेशन, लीडर रोड तथा कटरा मे है। लगभग 37 हेक्टेयर भूमि पर एक ट्रान्सपोर्ट नगर जी0टी0 रोड पर बनाया गया है (इलाहाबाद महानगर योजना 2001)।

वर्तमान समय मे स्थित कुछ प्रमुख मार्गो का नाम निम्न है जो यहा के यातायात स्वरूप को स्पष्ट करते है।

1 जी0टी0 रोड (चौफटका से खुसरो बाग तक)

2 जी0टी0 रोड (खुसरो बाग से कोठा पारचा चौराहे तक)

3 जी0टी0 रोड (कोठा पारचा चौराहे से वैरहना चौराहे तक)

4	जी0टी0 रोड	(दारागज बाजार)
5	नेताजी सुभाष मार्ग	(सूरजकुड से जी0टी0 रोड तक)
6	कमला नेहरू मार्ग	(कटरा बाजार)
7	चिन्तामणि घोष मार्ग	(कचहरी बस अड्डे से आनन्द भवन तक)
8	त्रिवेणी मार्ग	(कोठा पारचा चौराहे से सिमेट्री रोड तक)
9	शौकत अली मार्ग	(बलुआ घाट चौराहे से नूरूल्ला रोड तक)
10	नूरूल्ला रोड	(जी0टी0 रोड से गन्दा नाला तक)
11	तिलक रोड	(जी0टी0 रोड से बलुआ घाट चौराहे तक)
12	स्वामी विवेकानन्द मार्ग	(जानसेनगज चौराहे से साउथ मलाका अण्डर पास तक)
13	के0पी0 कक्कड मार्ग /जीरो रोड	(घटाघर से साहित्य सम्मेलन तक)
14	लीडर रोड	(जानसेनगज चौराहे से रेलवे स्टेशन तक)
15	डा0 काटजू रोड	(जी0टी0 रोड से रेलवे स्टेशन तक)
16	नवाब यूसुफ रोड	(पजाब नेशनल बैक से पावर हाउस चौराहे तक)
17	महात्मा गाधी मार्ग	(राम मनोहर लोहिया रोड चौराहे से कमला नेहरू मार्ग चौराहे तक)
18	म्योर रोड	(क्लाइव रोड चौराहे से स्टेनली रोड तक)
19	सरदार पटेल मार्ग	(नवाब यूसुफ रोड से दयानन्द मार्ग तक)
20	नैनी बाजार मार्ग	
21	झूसी बाजार मार्ग	(पुरानी जी0टी0 रोड)
22	फाफामऊ बाजार मार्ग	
23	कटरा कर्नलगज मार्ग	

इस प्रकार स्पष्ट है कि इलाहाबाद नगर का वर्तमान नगरीय भू–दृश्यो/स्वरूपो/भू–आकारो का विस्तार अत्यधिक विस्तृत हो गया है। वर्तमान समय मे जनसख्या मे भी नगर भारत के दस लाखी नगर मे सम्मिलित (2001 की जनगणना) हो

गया है। नगरीयकरण के वर्तमान समय मे इलाहाबाद नगर का विकास एव विस्तार तीव्रगति से चल रहा है। (मानचित्र 72)

73 नगर वृद्धि के अपकेन्द्र व अभिकेन्द्र बल

पिछले विवरण से स्पष्ट है कि नगर का इतिहास अकबर के समय से प्रारम्भ होता है। लेकिन नगर का वर्तमान विकास केवल 100 वर्षो मे ही हुआ है। 19 वी शदी के प्रारम्भ मे इलाहाबाद एक छोटा कस्बा था जिसके अतर्गत वर्तमान मुख्य नगर तथा कटरा , कर्नलगज और दारागज आते थे। मुट्ठीगज व कीडगज क्षेत्र अग्रेजो के शासन काल के प्रारम्भ मे विकसित हुए जिससे वहा सीधी व चौडी सडके थी। इस प्रकार मुख्य नगर यमुना के किनारे तक ही सीमित था। भारत के प्रथम स्वतत्रता सग्राम से अपकेन्द्र बल को प्रोत्साहन मिला और नगर का बाहर की ओर तीव्रता से विस्तार होने लगा। यूरोपियन को छोडकर वर्तमान सिविल लाइन्स क्षेत्र का अभ्युदय इलाहाबाद मे नगरीय वृद्धि के अपकेन्द्र बल को प्रदर्शित करता है। रेलवे लाइन के उत्तर मे नये नगर का विकास हुआ जिसमे ग्रिड प्रतिरूप सडके थी और अच्छे आवासीय बगले बनाये गये जिनके सटे खुले स्थान थे। चूकि उत्तर व पश्चिम मे विस्तार के लिए पर्याप्त भूखण्ड था इसलिए वहा कैन्टोनमेन्ट्स का विकास हुआ। नगर के केन्द्रीय भाग मे परिवर्तन लाने के लिए अभिकेन्द्र बल भी सक्रिय था जिसके कारण केन्द्रीकृत सेवाये यथा—व्यवसाय, परिवहन, प्रशासन और शैक्षणिक आवश्यकताओ के लिए केन्द्रीय स्थान की माग बढी तथा लम्बवत् व क्षैतिज भवनो का विकास हुआ।

20 वी शदी के प्रारम्भ मे नगर के धनवान लोग पुराने नगर के सघन जनसख्या वाले भागो से बाहरी घेरे की ओर स्थानान्तिरित होने लगे। विश्वविद्यालय और उच्च न्यायालय ने आकर्षण का कार्य किया और अपकेन्द्र बल के कारण जार्ज टाउन, लुकरगज, और न्यू कटरा जैसे सुनियोजित आवासीय भवनो वाले मुहल्ले अस्तित्व मे आये। 20 वी शदी के दूसरे दशक मे इम्प्रूवमेट ट्रस्ट बनाया गया जो नगर के विकास का कार्य प्रारम्भ किया। कई नई सडको की नीव डाली गई और जरूरतमद लोगो के आवास के लिए बाई का बाग क्षेत्र का विकास किया गया। नये क्षेत्रो मे सीधी व चौडी सडको का विकास किया गया तथा कई पार्क बनाये गये। भवनो के घनत्व के बारे मे किसी नियम व कानून के न होने के कारण सभी ब्लाको मे खूब मकान बनाये गये। नव विकसित क्षेत्रो मे स्थापित शैक्षणिक सस्थाओ के लिए खुले और अधिक भूमि की आवश्यकता पडने लगी जिससे कुछ सस्थाये

PRAYAG (ALLAHABAD)
ROADS
N
GANGA RIVER
RASULABAD
MEHDEORI
GOVINDPUR
Engineering College
NAYA PURWA
MUIRABAD
MUMFORDGANJ
NAYA KATRA
BAGHARA
ASHOK NAGAR
RAJAPUR
UNIVERSITY OF ALLAHABAD
KATRA
ALLEN GANJ
Nagvasuki Temple
Muir College
TAGORE TOWN
Nehru Park
ALLAHAPUR
High Court
CIVIL LINES
GANGA RIVER
GEORGE TOWN
DARAGANJ
ALOPI BAGH
NORTH MALAKA
LUCAR GANJ
KHULDABAD
FORT
RAJROOP PUR
MUTTIGANJ
KYD GANJ
OLD Jhunsi
KARELI
Nehru Ghat
SANGAM
KATGHAR
RIVER
Katghar Ghat
DARIYABAD
YAMUNA
ARAIL
GANGA RIVER
Central Jail
1
0
1
km

Fig 7 2

यथा विद्या मदिर स्कूल, मजीदिया इस्लामिया कालेज नगर के बाहरी भाग मे ले जाये गये। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद नव आवासीय क्षेत्रो मे सीधी व चौडी सडको, खुले वृहद पार्क, कीणागन और खुली भूमि के साथ भवनो का निर्माण किया गया। म्युनिसिपल सीमा के बाहर और भीतर मे कई ऐसे उपनगरीय गांव हैं जो नगरीय जीवन को आत्मसात करने के लिए तत्पर है। नगर के हृदय भाग मे व्यवसायिक क्षेत्र है जो स्थानीय जनता की दैनिक आवश्यकताओ को पूरा करते है। इस प्रकार अपकेन्द्र और अभिकेन्द्र दोनो बलो ने नगर के विकास मे योगदान किया है। पश्चिम मे जी0टी0 रोड के सहारे नगरीय निवास्य का पट्टीदार विस्तार हुआ है। इस प्रकार म्युनिसिपल सीमा का विस्तार गावो तक हो गया है।

7 4 <u>इलाहाबाद नगर की भौगोलिक या नगरीय पेटिया :</u>

नगर के सम्पूर्ण भूमि उपयोग का विश्लेषण करने पर एक तथ्य स्पष्ट होता है कि नगर के केन्द्र से छोर की तरफ लगभग सभी दिशाओ मे नगरीय जीवन की जटिलता और तीव्रता का निरन्तर सामान्य ह्रास होता जाता है। इसी आधार पर सम्पूर्ण नगरीय क्षेत्र को कई भौगोलिक पेटियो या नगरीय पेटियो मे बाटा जाता है। चूकि अन्य प्रदेशो की ही तरह इन पेटियो की भी स्पष्टत रेखांकित सीमाये सामान्यत नही होती। अत ऐसी पेटियो या प्रदेशो की सख्या एकदम निश्चित नही की जा सकती है। नगरीकरण और तत्सम्बद्ध विशेषताओ की सर्वाधिक तीव्रता नगर केन्द्र मे मिलती है तथा इससे बाहर की तरफ कम होती जाती है। अत वाह्य सीमाओ की तरफ धीरे–धीरे घटती हुयी नगरीय जीवन की आपेक्षिक जटिलताओ के आधार पर बनाये गये क्षेत्र को नगर की भौगोलिक पेटियो के रूप मे देखा जा सकता है। चूकि नगरीय विशेषताये ही इनके विभाजन, वर्गीकरण या सीमाकन के आधार है, अत इन्हे नगरीय पेटिया भी कह सकते हैं। इन विशेषताओ मे कुछ प्रमुख है– निर्मित क्षेत्र की मात्रा या प्रतिशत, मकानो एव बस्तियो के प्रकार तथा घनत्व, जनसख्या का घनत्व, भूमि उपयोग का सामान्य प्रतिरूप, बस्तियो एव जनसख्या के विकास या प्रसार का ऐतिहासिक क्रम और अवस्था इत्यादि।

आर0ई0 डीकिन्सन (1947) महोदय ने 'नगर और प्रदेश' नामक अपनी पुस्तक मे भौगोलिक या नगरीय पेटियो का वर्णन करते हुए नगर केन्द्र से बाहर की दिशा मे चार पेटियो का वर्णन किया है– (1) केन्द्रीय या आन्तरिक पेटी (2) मध्यवर्ती पेटी (3) वाह्य पेटी (4) वाह्य उपनगरीय पेटी या नगरीय उपान्त।

इलाहाबाद नगर की भौगोलिक पेटियो का विश्लेषण करते समय इन्ही पेटियो का अनुसरण किया गया है तथा पेटियो का विश्लेषण ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य मे किया गया है।

नगर के भौगोलिक क्षेत्र का विश्लेषण :

वर्तमान समय मे नगर का भौतिक विस्तार तो अत्यधिक हुआ है परन्तु नगर के विभिन्न भागो मे आधुनिक नगरीय निवास्य की आन्तरिक सरचना मे विविधता पाई जाती है। प्रशासनिक दृष्टि से नगर को 70 म्युनिसिपल वार्डो मे विभाजित किया गया है। नगर को तीन ओर से लगभग नदियो के घेरने के कारण नगर का किसी केन्द्र से समान रूप से चारो तरफ विस्तार नही हो पाया है। वर्तमान समय मे नैनी, फाफामऊ और झूसी का उपनगरीय रूप मे विस्तार पाया जाता है। नगर का वर्तमान विस्तार 82 18 वर्ग किमी0 क्षेत्र पर होने के कारण इसका अपना आतरिक भूगोल है। नगर का कोई आदर्श केन्द्र स्थल भाग नही है और न उसके चारो ओर उत्तरोत्तर पूर्ण उपक्षेत्र ही है। इसलिए नगर को भौगोलिक क्षेत्रो मे विभाजित कर उसके सास्कृतिक भू–दृश्य की व्याख्या की जा सकती है।

अपार्श्विक कारक :

पश्चिमी यूरोपिय नगरो मे आदर्श सकेन्द्रीय क्षेत्रो मे नगरो का विकास हुआ है लेकिन इलाहाबाद नगर मे इस प्रकार का लक्षण न पाये जाने के कारण इसे आदर्श सकेन्द्रीय क्षेत्रो मे विभाजित करना कठिन है। प्रथमत इस नगर का भटकैया (Straggling) विकास होने के कारण धरातलीय वर्णन करना कठिन है। इस नगर की सीमाये बहुत अधिक विस्तृत हो गयी हैं जिससे उनके भीतर के खाली भाग अपनी इच्छानुसार भरे गये है। अग्र विस्तार का इस नगर के विकास मे नगण्य भूमिका है। फलत विभिन्न असम्बद्ध क्षेत्रो के भवन निर्माण मे एक रूपता नही पायी जाती है। दूसरे नगर मे कई पुराने और अलग थलग क्षेत्र है जैसे कटरा–कर्नलगज जहा सकीर्ण व अनियमित गलिया तथा अति सघन भवन है। इस प्रकार मुख्य नगर मे अपना केन्द्र, आन्तरिक व वाह्य कवच मिलता है। तृतीय नगर का विकास चारो तरफ एक साथ नही हुआ है जैसे नगर के प्राचीन भाग के दक्षिण मे सटे भाग का विकास विगत वर्षो मे हुआ है, जबकि उत्तर के भाग का विकास एक शताब्दी पूर्व हुआ था। किसी क्षेत्र के विकास की तिथि का उसकी सरचना पर प्रभाव पडता है जिससे नगर को सकेन्द्रीय क्षेत्रो मे बाटने मे जटिलताये उत्पन्न होती हैं। चतुर्थ किसी क्षेत्र के अन्तर्गत समय तत्व उसकी समरूपता मे क्षीणता उत्पन्न करता है क्योकि इसके विभिन्न भाग विकास की

विभिन्न अवधियो मे विषमता की ओर अग्रसर होते हैं। जैसे–सिविल लाइन्स और न्यू कटरा विभिन्न पक्षो को प्रस्तुत करते है यद्यपि वे एक क्षेत्र के ही भाग हैं। इसका कारण नगर के ऐतिहासिक विकास की विशिष्ट दशाये अशत जिम्मेदार है जैसे सिविल लाइन्स का विकास यूरोप वासियो के लिए हुआ था जबकि शेष भागो का विकास भारतीयो के लिए किया गया था।

क्षेत्र (The Zones)

निम्नलिखित तथ्यो के आधार पर नगर के विभिन्न भागो को वृहद् सामान्य क्षेत्रो मे विभाजित किया जा सकता है –

(1) भवनो का प्रकार व घनत्व

(2) सडको की चौडाई व उनका विन्यास

(3) नगरीय भूमि उपयोग का सामान्य प्रतिरूप

(4) नगर केन्द्र के सन्दर्भ मे क्षेत्र की भौतिक स्थिति

इलाहाबाद के सन्दर्भ मे चतुर्थ कारक बहुत महत्वूपर्ण है क्योकि दारागज, कीडगज और कटरा–कर्नलगज जैसे क्षेत्र हैं जो बहुत पुराने हैं और पूर्ण रूपेण भवन निर्मित है तथा सकरी व अनियमित गलियो वाले हैं।

उक्त तथ्यो को ध्यान मे रखकर नगर को निम्नलिखित भौगोलिक क्षेत्रो मे विभाजित किया जा सकता है –

(1) आन्तरिक क्षेत्र

(2) मध्यवर्ती क्षेत्र

(3) वाह्य क्षेत्र

(4) उपनगरीय क्षेत्र

आन्तरिक क्षेत्र

यह क्षेत्र नगर की नाभि (क्रोड) है क्योकि यह वाणिज्यिक केन्द्र है जो सम्पूर्ण नगर के थोक व फुटकर विक्रय को नियत्रित करता है। इस क्षेत्र की पूर्वी सीमा को बलुआघाट व मोहताशिमगज सडक बनाती है। पूर्व रेलवे लाइन और लीडर रोड उसकी उत्तरी सीमा

निर्धारित करती है। इस क्षेत्र की दक्षिणी सीमा अतरसुइया नाला और आनन्द चरन बनर्जी रोड के किनारे है। इस प्रकार इस क्षेत्र मे कोई विशिष्ट सडक नही है और उत्तरी पश्चिमी वार्ड की ओर चला जाता है। इस क्षेत्र मे समदाबाद, उत्तरी अटाला, वैढन टोला, सी मुर्ग और बक्शी बाजार को सम्मिलित करते हुए और सुल्तानपुर भावा व रोशन खान बाग को छोडते हुए क्रमश दक्षिण पश्चिम व पश्चिम की ओर चला जाता है। इस प्रकार इसकी सीमा के0एन0 काटजू रोड सहित जी0टी0 रोड की दक्षिणी सीमा का अनुसरण करती है। कुछ दूरी तक के0एन0 काटजू रोड का अनुसरण करती हुई इसकी सीमा उत्तर मे लीडर रोड से मिल जाती है। इसके पश्चिम मे मास बाजार, मिनहाजपुर, सेन्ट जोन चर्च और रीवा कोठी छूट जाते है।

यद्यपि इस क्षेत्र मे प्राचीन लक्षण जैसे पातालपुरी मन्दिर व अक्षयवट तथा मध्यकालीन भवन यथा किला और खुसरूबाग नही सम्मिलित है फिर भी ये नगर के प्राचीनतम भाग है। यह क्षेत्र पूर्ण रूपेण भवनो से भर गया है और नगर का सबसे सघन भाग है। ऐतिहासिक जी0टी0 रोड आन्तरिक क्षेत्र के मध्य भाग से होकर जाती है और क्षेत्र को दो भागो मे विभाजित करती है। सडक विकास के कारण उत्तरी भाग की सडके अपेक्षाकृत चौडी व सीधी हो गई है। जोहन्सटनगज, हिवेट, जिरो व शिवचरन लाल रोड इसके उदाहरण हैं। यह क्षेत्र नगर के अन्य भागो से अच्छी सडको द्वारा तथा बाहरी भागो से रेल, सडक व यमुना द्वारा जुडा हुआ है। यह क्षेत्र इलाहाबाद जक्शन स्टेशन, सीटी स्टेशन और यमुना के अति निकट अवस्थित होने के कारण सम्पूर्ण नगर का मुख्य वाणिज्यिक केन्द्र बन गया है।

<u>मध्यवर्ती क्षेत्र</u>

इस क्षेत्र मे नगर के आन्तरिक व वाह्य क्षेत्र के मध्य के लक्षण पाये जाते है। आन्तरिक क्षेत्र की भाति यह पूर्ण रूपेण निर्मित है लेकिन इसमे अपेक्षाकृत अधिक चौडी और नियमित सडके पाई जाती है, यत्र–तत्र खुले स्थान भी देखने को मिलते हैं तथा इसमे कम सघनता मिलती है। इस क्षेत्र का विकास कम हुआ है। इसका कारण धरातलीय विकास के विशिष्ट लक्षण हो सकते हैं। अतरसुइया और अहियापुर के दक्षिण सटे भाग मे मध्यवर्ती क्षेत्र की उपस्थिति कठिनाई से ढूँढी जा सकती है क्योकि आतरिक क्षेत्र के दक्षिण वाले क्षेत्र का

धरातलीय विस्तार हुआ है। लेकिन उसके सास्कृतिक क्षेत्र और प्रकृति मे कोई एकाएक परिवर्तन नही दिखाई देता है। आतरिक क्षेत्र के उत्तर यह क्षेत्र स्पष्ट है क्योकि उत्तर रेलवे लाइन के बैरियर और आन्तरिक सुरक्षा हेतु अग्रेजो द्वारा पूर्वाधिपत्य के कारण नगर का स्वाभाविक विकास उत्तर की ओर नही हो पाया है। मध्यवर्ती क्षेत्र के पूर्वी भाग के अन्तर्गत मुट्ठीगज व दक्षिणी मलाका आते है। इस क्षेत्र के दक्षिणी और पश्चिमी भाग मे कल्यानी देवी तथा सराय खुलदाबाद, रोशन खान बाग, अटाला व अतरसुइया के दक्षिणी भाग सम्मिलित है। इस क्षेत्र के अन्तर्गत मिनहाजपुर मुहल्ला व अस्पताल द्वारा आवृत त्रिभुजाकार क्षेत्र भी आता है। इस क्षेत्र के विभिन्न भागो के विकास मे समय अन्तराल देखने को मिलता है। उदाहारणार्थ मुट्ठीगज मे सीधी और चौडी सडको का विकास 19वी सदी के प्रारम्भ मे हुआ जबकि कल्यानी देवी, रोशन खान बाग, मिनहाजपुर और दक्षिण मलाका मे ऐसी सडको का विकास 20वी सदी के द्वितीय चतुर्थांश काल मे हुआ। यह क्षेत्र मुख्यत आवासीय क्षेत्र है लेकिन इसमे थोक विक्रय, अन्न बाजार, भण्डार, लकडी, बॉस और पत्थर की दुकाने भी पाई जाती है। इस क्षेत्र के उत्तरी पश्चिमी खण्ड मे मोती लाल नेहरू, मनमोहनदास ऑख व डफरिन अस्पताल अवस्थित है। इस क्षेत्र मे खुलदाबाद बहुत बडा सब्जी का बाजार है तथा के0एन0 काटजू रोड पर मॉस बाजार है।

<u>वाह्य क्षेत्र</u>

नगर के बाहरी छोर पर इस क्षेत्र का विस्तार पाया जाा है। विगत 100 वर्षो मे इस क्षेत्र का विकास हुआ है जिसमे कुछ पुराने अनियोजित बसाव मिलते हैं। न्यू सिविल लाइन का खाका बनने के बाद 1960 के दशक मे इस क्षेत्र का विकास होना प्रारम्भ हुआ। सिविल लाइन्स व पुराने अनियोजित इनक्लेव्स को छोडकर शेष भाग 1900 से अस्तित्व मे आने लगे। यह नगर का सर्वाधिक स्पष्ट भाग है क्योकि इसका विस्तार नगर की वाह्य ' सीमा पर मिलता है। इस क्षेत्र का अधिकाश भाग उत्तर मे पाया जाता है लेकिन इसका असमान विस्तार बहुत ही चौकाने वाला है। यह नगर के आतरिक व मध्यवर्ती क्षेत्र को बलयी मेखला के रूप मे घेरे हुए नही है। भवनो के निर्माण के सदर्भ मे यह आन्तरिक क्षेत्र का प्रतिपक्षी है। इस क्षेत्र का आशिक निर्माण हुआ है। इस क्षेत्र मे सीधी व चौडी सडके तथा पार्क व खेल के मैदान के रूप मे कई खुले स्थल हैं। पुराने अनियोजित क्षेत्रो को
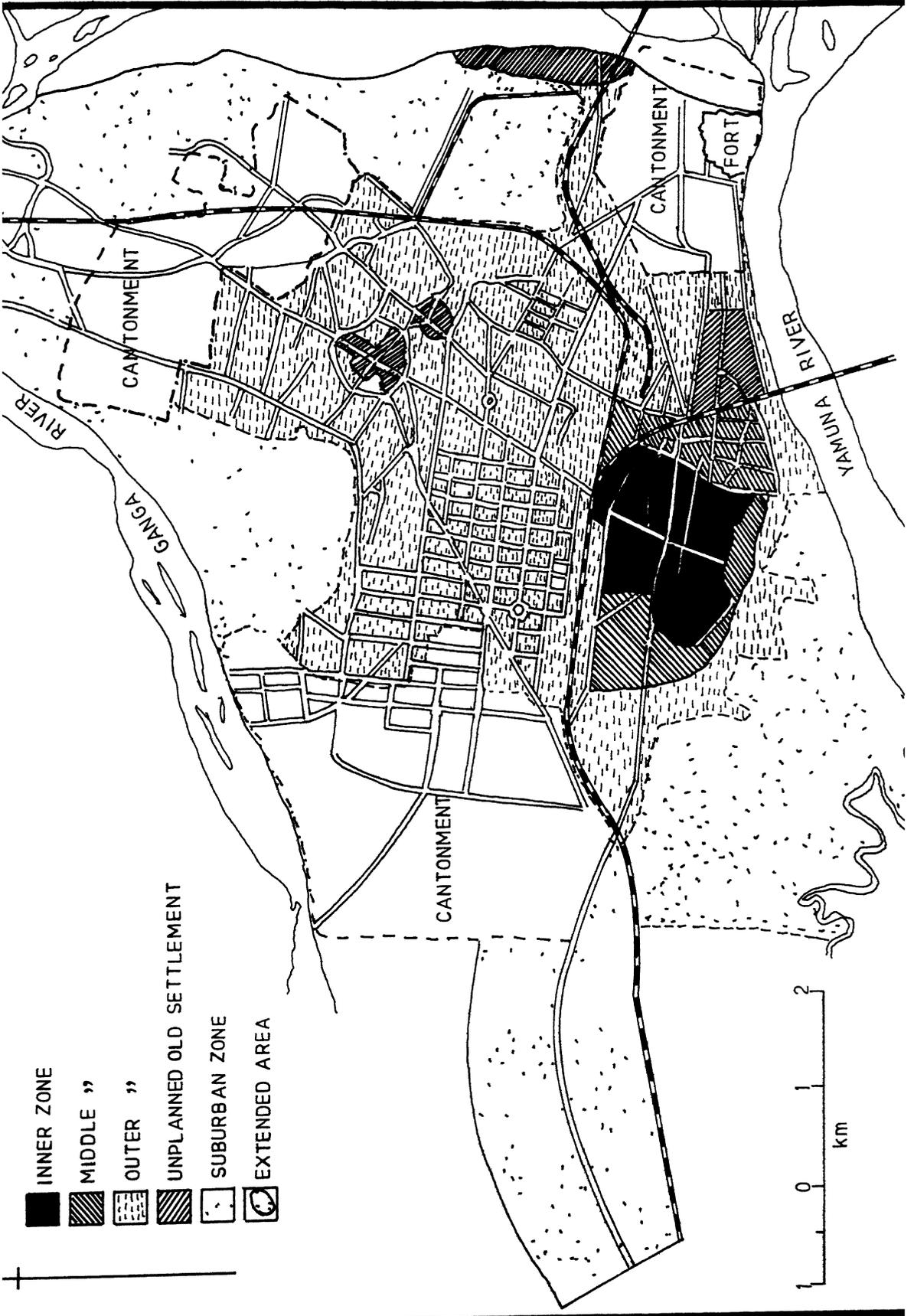
INNER ZONE
MIDDLE ,,
OUTER ,,
UNPLANNED OLD SETTLEMENT
SUBURBAN ZONE
EXTENDED AREA
GANGA RIVER
CANTONMENT
CANTONMENT
CANTONMENT
FORT
YAMUNA RIVER
1 0 1 2
km
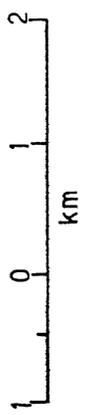
छोडकर प्रत्येक चीज पर नियोजन का लक्षण दिखाई देता है। यद्यपि एक स्थान से दूसरे स्थान के मकानो मे भिन्नता मिलती है लेकिन इस क्षेत्र मे सामान्यतया अच्छे आवास बने है। यहा के भूमि उपयोग मे विभिन्नता मिलती है और भूमि का उपयोग आवास, व्यवसाय, शिक्षा और प्रशासन सबधी विविध कार्यों के लिए किया गया है। यद्यपि यह क्षेत्र विस्तृत, विकसित व वृहद् भू–भाग आवृत किये हुए है फिर भी इसकी सरचना व प्रकार्यों मे समरूपता देखने को मिलती है। इस क्षेत्र को निम्नलिखित भागो मे विभाजित किया जा सकता है –

क – सिविल लाइन्स

ख – रेलवे कालोनी

ग – पुराने अनियोजित बसाव

घ – नव नियोजित इलाके

च – कैन्टोनमेन्ट्स

सिविल लाइन्स

यह मूलत नियोजित रूप से अग्रेजो के लिए बनाया गया था। वर्तमान समय मे यह सम्पन्न नगर वासियो का आवास हो गया है। यह पश्चिम मे रेलवे लाइन से लेकर उत्तर मे म्योर रोड तक तथा पश्चिम मे हेस्टिंग्स रोड से पूर्व मे कमला नेहरू रोड के मध्य फैला हुआ है। सीधी व चौडी सडके वर्गों और आयतो मे विभाजित करती है। कुछ सडको के दोनो किनारो पर वृक्ष लगाये गये हैं। इसको "ग्रिड प्लान" कहा जाता है। इसमे आवासीय बगले उत्तम किस्म के हैं और इनमे लान और पार्क के रूप मे खुले वृहद् स्थान पाये जाते है जिससे सिविल लाइन का स्वरूप पार्क जैसा प्रतीत होता है। उत्तम आवास के साथ–साथ इसमे उच्चकोटि की दुकाने भी है जो कैनिग और अलबर्ट रोड के जक्शन पर विकसित की गई है जिनमे कपडे, स्टेशनरी, दवाये, आभूषण, ग्रोसरी, फर्नीचर इत्यादि की दुकाने मुख्य हैं। इसमे उत्तम कोटि के स्टूडियो, होटल, रेस्टोरेन्ट और सिनेमाघर भी अवस्थित है।

इसमे कई सरकारी कार्यालय, सार्वजनिक कार्यालय, स्कूल, कालेज, बैंक , जीवन बीमा कम्पनी इत्यादि मिलते है। इसमे कई चर्च और अग्रेजी स्कूल हैं जो इस भाग

मे ब्रिटिश प्रभाव को परिलक्षित करते है। प्रिटिग प्रेस, बर्फ, बिजली की फैक्ट्री, मोटर वर्क्स इत्यादि इस इलाके को औद्योगिक स्वरूप प्रदान करते है। इस प्रकार सिविल लाइन्स कभी मूलत आवासीय था जो अब विभिन्न प्रकार्यों वाला इलाका बन गया है।

रेलवे कालोनी

इस कालोनी का आकार आयताकार है। इसकी लम्बाई लगभग 2 किमी0 तथा चौडाई लगभग 400मीटर है। इसके उत्तर मे नवाब यूसुफ रोड और दक्षिण मे लीडर रोड है। इसमे यार्ड्स, लोको, गुड्स शेड, रेलवे वर्कशाप, उत्तर रेलवे अस्पताल, डी0एस0 और अभियन्ताओ के कार्यालय अवस्थित है। अनेको रेल कर्मचारियो को इसमे आवासीय सुविधाये प्राप्त है। इसमे जल, प्रकाश व स्वास्थ्य की अपनी सुविधाये सुलभ है। इसकी जनसख्या 1951 मे 9553 थी जो 1991 मे बढकर 14799 हो गयी है। इस प्रकार रेलवे कालोनी क्षेत्र स्वय मे एक टाउन हो जाता है। रेलवे कालोनी सिविल लाइन्स व मुख्य नगर के बीच सास्कृतिक बैरियर का कार्य करती है।

पुराने अनियोजित बसाव

नगर के वाह्यं क्षेत्र का नियोजित विकास किया गया उसके बावजूद भी कई अनियोजित बसाव अस्तित्व मे रह गये। पुराना कटरा पहले एक छोटा गाव था जो बाद मे विकसित होकर बाजार हो गया।

कटरा बाजार मास्टर जहूरूल हसन और चिन्तामणि घोष सडको पर अवस्थित है। ये सडके पुराने बसाव को चार खण्डो मे विभाजित करती हैं। सभी ब्लाक पूर्ण रूपेण बना लिये गए है लेकिन उनके आवासीय गृह पुराने, गलिया सकरी और अनियमित है। पुराने कटरा का पूर्व की ओर बढा हुआ भाग कर्नलगज है और कई मामलो मे पुराने कटरा से मिलता जुलता है। पुराने कटरा और कर्नलगज के विकास मे मूल कारण विश्वविद्यालय और जनपद न्यायालय का होना है। नगर का पुराना उपनगरीय भाग दारागज गगा के किनारे ऊँचे टीले पर अवस्थित है। इसके अधिकाश भाग का जल निकास उत्तम है। इस रैखिक बसाव का कारण मुख्यत धर्म है जो लाखो हिन्दुओ को तीर्थराज की धार्मिक यात्रा और त्रिवेणी के पवित्र जल मे डुबकी लगाने के लिए आकृष्ट करता है। सगम के करीब होने

के कारण अधिकाश प्रयाग वाले या "पण्डे" दारागज मे बसते हैं। इनके घर पुराने है तथा पूर्णरूपेण इमारती इलाके है और सघनता अपनी चरम पर है। दारागज सडक के किनारे एक लम्बा बाजार है तथा जी0टी0 रोड के किनारे शापिग केन्द्र विकसित हुआ है। गगा पर पक्का घाट का न होना दुखद है जिसका कारण गगा की धारा का यहॉ तीव्र होना है। कीडगज अन्य अनियोजित मकानो वाला भाग है जो नगर से उच्च रेल तटबध द्वारा अलग होता है। त्रिवेणी और शकर लाल भार्गव सडको पर इलाके के मेले लगते है। आतरिक भागो मे पुराने जीर्ण मकान, सकरी व अनियमित गलिया पाई जाती है। कुछ विलम्ब से नेता नगर मे नियोजित आवासीय कालोनी बनाई गई है। कीडगज कुटीर उद्योग बेत, फर्नीचर, बॉस, दियासलाई, खिलौने इत्यादि का महत्वपूर्ण केन्द्र है। यहॉ उद्योग, निदेशालय उ0प्र0 का प्रशिक्षण व उत्पादन केन्द्र, बेत उद्योग, सहकारी समिति और इलाहाबाद कोआपरेटिव इण्डस्ट्रियल सोसाइटी लिमिटेड अवस्थित हैं।

नव नियोजित इलाके

ये 19वी सदी के पश्चात् नगर के वाह्य क्षेत्र मे विकसित हुए। 20वी सदी के प्रथम दशाब्द मे सबसे पहले लुकरगज व जार्जटाउन मे विकास प्रारम्भ हुआ। फोर्ट रोड के पार जार्जटाउन का बढा भाग टैगोर टाउन है। समीप मे ही एलेनगज और दरभगा कालोनी अवस्थित है जबकि पुराने कटरा के उत्तर मे न्यू कटरा और ममफोर्डगज विकसित हुए है। जी0टी0 रोड और उत्तर–पूर्व रेलवे द्वारा निर्मित कोण मे कुछ नये इलाके शीघ्र ही बने हैं। मुख्य नगर के दक्षिण का वाह्य क्षेत्र अपेक्षाकृत नवीन है और इसमे नगरीकरण शीघ्र ही हुआ है तथा लोग नया जीवन जीने लगे है। साउथ हाउसिग स्कीम पार्ट II, सुल्तानपुर भावा और शरणार्थी तथा औद्योगिक कालोनियो का सदर्भ पहले ही दिया जा चुका है।

वाह्य क्षेत्र मे भवनो का घनत्व न्यूनतम है। पार्क, खेल का मैदान, स्कूल व कालेज की उपस्थिति से वाह्य क्षेत्र मे खुलापन व स्वच्छता पाई जाती है।

कैन्टोनमेन्ट

इलाहाबाद मे अलग–अलग तीन कैन्टोनमेन्ट्स है जो लगभग 18 3 वर्ग किमी0 भूमि पर फैले हुए है। दक्षिण–पूर्व मे फोर्ट कैन्टोनमेन्ट 3 9 वर्ग किमी0, उत्तर मे पुराना

कैन्टोनमेन्ट 58 वर्ग किमी0 तथा उत्तर पश्चिम मे न्यू कैन्टोनमेन्ट 86 वर्ग किमी0 क्षेत्र पर फैला हुआ है। ये नगर के वाह्य भाग मे अवस्थित है। म्युनिसिपल क्षेत्र मे फन्नी (wedge) के रूप मे होने के कारण पुराना कैन्टोनमेन्ट उत्तरी उपनगरीय क्षेत्र के विकास मे बाधा उत्पन्न करता है। फोर्ट कैन्टोनमेन्ट की उत्पत्ति किला और किला मे बने सैन्य आयुधशाला के कारण हुआ है। वर्तमान समय मे बहुत कम ही सैन्यबल इलाहाबाद मे रहता है। सामान्य रूप मे कैन्टोनमेन्ट्स वृहद् क्षेत्र पर फैले हुए है जिसमे नगर का विस्तार, मिलिट्री फार्म, सैन्य बैरेक, मन्दिर और अन्य इमारते इसे पूर्ण रूपेण विभिन्न स्वरूप प्रदान करते हैं।

उपनगरीय क्षेत्र

नगर के बाहरी भाग पर उपनगरीय क्षेत्र का विस्तार पाया जाता है। 1956 के आस पास ये बडे और छोटे गाव थे जो नगर के निरन्तर प्रभाव के कारण भविष्य मे नगर क्षेत्र मे आत्मसात् कर लिये गये। इन क्षेत्रो मे नगरीय व ग्रामीण शक्तिया मिलती है। नगर के सटे कुछ क्षेत्र जैसे राजरूपपुर, बेली, छोटा बघाडा और दरियाबाद नगरीकरण द्वारा नगर के अभिन्न अग बन गये है। उपनगरीय क्षेत्र मे बडा बघाडा, सैदाबाद, चादपुर, सलोरी, गोविन्दपुर, रसूलाबाद, महदौरी आदि सम्मिलित है। यमुना के समीप दक्षिण पश्चिम मे उपनगरीय क्षेत्र का विस्तार दरियाबाद, मिनहाजपुर, तुलसीपुर, रसूलपुर और सदियापुर तक है। नगर के उपनगरीय क्षेत्र के विस्तार के कारण वर्तमान समय मे फाफामऊ, यमुनापार नैनी एव गगा पार झूँसी नगर विकास के प्रमुख अग बन गये हैं। नैनी इलाहाबाद का प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र है जहा नगर के 80 प्रतिशत उद्योग धन्धे लगे हुए हैं। इसी तरह झूँसी मे पत एव हरीश चन्द्र शोध सस्थान एव एम0आर0आई0 सस्था आदि का विकास हुआ है। इसी प्रकार फाफामऊ मे व्यावसायिक विकास तीव्रगति से हो रहा है। ये उपनगरीय क्षेत्र मुख्य नगर को नगरीय सुविधाये भी प्रदान करते हैं क्योकि इन केन्द्रो के बाद ग्रामीण क्षेत्र फैला हुआ है। उपनगरीय क्षेत्र की अधिकाश सक्रिय जनसख्या नगर मे नौकरी करती है तथा अपना व्यक्तिगत व्यवसाय करती हें। यह क्षेत्र हरी सब्जी, दुग्ध और दुग्ध उत्पाद तथा मौसमी फल जैसे – अमरूद नगर को प्रदान करता है। दक्षिण पश्चिम मे कई ईंट व चूना भट्ठे है जो नगर को ईंटे व चूना उपलब्ध कराते हैं। इस प्रकार उपनगरीय क्षेत्र दृष्टिकोण व प्रकार्य मे नगर के अन्य भागो से भिन्न है। यह आश्चर्य है कि यह क्षेत्र म्यूनिसिपल सीमा

के अन्तर्गत आता है लेकिन इसके निवासियो के लिये प्रकाश, पेयजल और आवागमन की उपयुक्त सुविधाये विकसित नही हो पायी है। वर्तमान समय मे सरकार द्वारा नगरीय टास्क फोर्स योजना के अन्तर्गत मुख्य और उपनगरीय क्षेत्र मे विभिन्न नागरिक सुविधाओ यथा – सडक, पेयजल, विद्युतीकरण, शिक्षा, सचार आदि का तीव्रगति से विकास किया जा रहा है (मानचित्र स० 7 3)।

7 5 इलाहाबाद नगर का प्रभाव प्रदेश

नगरो के समीप स्थित चारो ओर के क्षेत्र, जो नगरो के साथ सामाजिक आर्थिक दृष्टि से सम्बद्ध या अन्योन्याश्रित होते है, उनके प्रभाव प्रदेश का निर्धारण करते हैं। ये प्रदेश सकेन्द्रीय अथवा कार्यात्मक प्रदेश भी कहे जाते है। नगर के आस–पास के क्षेत्र नगरीय आवश्यकताओ जैसे – खाद्य पदार्थ, दूध, सब्जी, फल और कच्चे पदार्थों के साथ–साथ मानव शक्ति को प्रदान करते है, जो वाणिज्यिक एव औद्योगिक स्थापना मे सहायक होते है। दूसरी तरफ नगर एक आर्थिक महानगर (Economic Metropolis) भी होता है जो अपनी सेवाए अपने चतुर्दिक फैले क्षेत्र को प्रदान करता हैं। यह जिले का सास्कृतिक केन्द्र एव प्रशासनिक मुख्यालय होता है। नगर एक 'क्षेत्रीय राजधानी' (Regional Capital) इस दृष्टि से भी है कि यह अपने आस पास के क्षेत्र मे प्रमुख होता है तथा साथ ही मे बहुत से क्रियाकलापो और सेवाओ को नगर मे केन्द्रित किये है। इस प्रकार नगर एव उसके चतुर्दिक क्षेत्र के मध्य एक सास्कृतिक सह सम्बन्ध विकसित होता है। ये दोनो क्षेत्र आर्थिक और सामाजिक रूप मे आपस मे अन्तनिर्भर होते है। नगरो द्वारा नियन्त्रित या सगठित ऐसे 'प्रदेशो' के लिए कुछ और भी शब्दो का उपयोग किया गया है, जैसे– 'City Region', Urban Hinterland', Sphere of Influence', Catchment Area', Urban Field' , इत्यादि। (सिह उजागिर 1961)।

रोवर्ट ई0डी0 किन्सन (1947) और चौन्सी डी0 हैरिस (1941) ने 'City Region' शब्द का प्रयोग करना उपयुक्त समझा। एफ0एच0 डब्ल्यू ग्रीन (1950) ने अपने लेख मे ऐसे प्रभाव क्षेत्रो के लिए (Urban Hinterland) नगरीय पृष्ठ प्रदेश शब्द का प्रयोग किया है। अनेक विशिष्ट लेखको जैसे– ऐन्ड्री ऐलिक्स (1922), इयूजेन वान् क्लीफ (1941), स्टेनली डाग (1932), जी0 टेलर (1951), ने 'Umland' शब्द का प्रयोग किया है, जो एक जर्मन शब्द है और ऐसे क्षेत्र के लिए प्रयोग किया जाता है जो नगर के चतुर्दिक फैला हो और

नगर उसकी सेवा करता हो। ए0ई0 स्मेल्स (1947) ने 'Urban Field' शब्द को प्रयोग करना ज्यादा श्रेयस्कर समझा जो चुम्बक के खिचाव क्षेत्र की उपमा पर रखा गया है।

इस प्रकार अनेक विदेशी शब्दो का प्रयोग आग्ल भाषा मे किया गया है फिर भी मुझे 'Umland' शब्द 'Urban Field' या अनेक ऐसे शब्दो से ज्यादा प्रभावपूर्ण तथा उपयुक्त लगता है जो ऐसे क्षेत्रो को सास्कृतिक एव आर्थिक कियाओ द्वारा नगर को एक केन्द्र मानकर अन्तर्सम्बन्धित व अन्तर्निभर होकर जोडते है।

नगरो के प्रभाव प्रदेशो के बारे मे एक अत्यन्त महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि ये प्रदेश भिन्न–2 कार्यों के लिये अलग–अलग विस्तार रखते है। चूकि प्रत्येक कार्य या कार्यात्मक इकाई का क्षेत्र अलग–अलग होता है, अत किसी नगर मे कार्यों की जितनी सख्या है उतनी ही सख्या मे प्रभाव प्रदेश भी होते है। व्यक्तिगत कार्यो के प्रभाव प्रदेश ही वास्तविक अस्तित्व रखते है, नगरो के तथा कथित 'सामान्य सेवा प्रदेश' सभी कार्यों के सम्मिलित या मिले जुले प्रभावो के परिणाम के रूप मे देखे जाने के कारण सूक्ष्म सामान्यी कृत तथा कल्पित ही अधिक होते है। अत 'Umland' के रूप मे इस प्रकार के प्रदेशो, क्षेत्रो का सीमाकन (निर्धारण) या वर्णन किया जाता है, क्योकि इससे प्रदेशो का अधिक वस्तुनिष्ठ निर्धारण व्यावहारिक उपयोगिता के साथ होता है (सिह, ओ0पी0 1979)।

अत प्रस्तुत शोध मे जहा भी 'प्रभाव प्रदेश' शब्द का प्रयोग किया गया है उसका तात्पर्य 'Umland' से है।

प्रभाव प्रदेश की प्रकृति एव विस्तार :

नगरो के प्रभाव बढती हुई दूरी के साथ कम होते जाते है और इस प्रभाव की समाप्ति एकाएक और पूर्णत किसी निश्चित बिन्दु पर नही होती, बल्कि धीरे–धीरे और सक्रमणीय ढग से होती है। अत नगरो के प्रभाव प्रदेशो की सीमाये गणितीय शुद्धता से या किसी स्पष्ट रेखा द्वारा निश्चित नही किया जा सकता है, क्योकि नगर और उसके आस–पास के क्षेत्र का सम्बन्ध सचार की सुविधाओ के विकास के साथ–साथ परिवर्तित होता रहता है। वर्तमान समय मे यातायात के अत्याधुनिक साधनो–मोटर, ट्रक, बस सेवा द्वारा ग्रामीण क्षेत्र नगर के समीप आता जा रहा है वहा इन सेवाओ से प्रभाव प्रदेश का दूर तक विस्तार होता जा रहा है।

अधिसख्यक नगरीय जीवन की सुविधाए जैसे चलचित्र, स्कूल, कालेज, अस्पताल और

दूसरी नगर की केन्द्रित सेवाए ग्रामीण जनसख्या को नगर की ओर आकर्षित करती है। नगर मे हजारो लोग रोजगार के लिए ग्रामीण क्षेत्र से आते हैं। इस प्रकार नगर और उसके चतुर्दिक स्थित क्षेत्र के मध्य सम्बन्ध स्थैतिक नही बल्कि गत्यात्मक होता है।

इलाहाबाद एक महान धार्मिक केन्द्र है अत यह भारत के प्रत्येक क्षेत्र के लोगो का समागम (सगम) केन्द्र है। प्रत्येक वर्ष शीत ऋतु मे माघ के महीने मे त्रिवेणी सगम क्षेत्र पर बहुत अधिक सख्या मे लोगो की भीड एकत्रित होती हे। यदि प्रभाव प्रदेश के लिए धार्मिक अन्तर्सम्बन्ध को आधार बनाया जाय तो उस समय यह भारत के किसी भी बडे नगर मुम्बई, कलकत्ता, दिल्ली से भी अधिक क्षेत्र को ग्रहण करता है जब कि प्रभाव प्रदेश एक क्षेत्र मे सीमित होता है जिसका अधिकाश या विशिष्ट भाग नगरीय केन्द्र की सेवाओ से सम्बन्धित होता है। इस सीमा के अन्तर्गत प्रभाव प्रदेश की एक श्रृखला बनती है और क्षेत्र का नगर या शहर के अन्तर्सम्बन्ध की मात्रा के आधार पर श्रेणीबद्ध किया जाता है।

नगर और उसके प्रभाव प्रदेशो के सम्बन्धो का अध्ययन बहुत से पश्चिमी देशो के नगरीय भूगोलवेत्ताओ ने किया है।इनमे डीकिन्सन, डाग, ग्रीन, स्मेल्स इत्यादि का नाम प्रमुख है जिन्होने प्रभाव प्रदेश की सीमाओ को निश्चित करने का प्रयास किया (होस्टन, जे0एम0 1953)।

सर्वप्रथम 1930 मे डीकिन्सन महोदय ने इगलैण्ड के दो नगरो लीड्स तथा ब्रेडफोर्ड के मध्य प्रादेशिक सम्बन्धो का अध्ययन किया, जो इगलैण्ड के उत्तर पूर्व मे स्थित है और सयुक्त रूप से एक विशिष्ट केन्द्र की सेवा करते है (डीकिन्सन, आर0ई0 1947)।

अन्य दूसरे अध्ययन एस0डी0 डाग और एल0एस0 विल्सन द्वारा किया गया है जो मध्य मिशिगन (यू0एस0ए0) मे स्थित हावेल नगर के सास्कृतिक सम्बन्धो का इसके प्रभाव क्षेत्र के सन्दर्भ मे परिक्षण किया है (टेलर जी0 1951)। हैरिस ने यू0एस0ए0 मे उटाह राज्य की राजधानी साल्ट लेक नगर के प्रभाव प्रदेश का पूर्ण रूप से अध्ययन किया। इसके लिए नगर द्वारा क्रियान्वित 12 सेवाओ को आधार बनाया (टेलर, जी0 1951)। मि0 एफ0एच0 डब्ल्यू ग्रीन (1950) द्वारा इगलैण्ड और वेल्स मे 'अरबन हिन्टरलैण्ड' का तात्कालिक रूप मे बस सेवा के आधार पर विश्लेषण किया गया है।

सर्वप्रथम भारतीय उदाहरण प्रो0 आर0एल0 सिह (1955) द्वारा 'बनारस के प्रभाव प्रदेश' के विस्तृत विश्लेषण द्वारा दिया गया। इसके लिए इन्होने पाच सेवाओ का चयन

किया–सब्जी आपूर्ति, दूध आपूर्ति, अनाज और दूसरे कृषिगत उत्पाद, बस सेवा और समाचार पत्र सचरण।

प्रो0 लाल सिह (1956) ने आगरा नगर के प्रभाव प्रदेश का अध्ययन केवल 'बस सेवा' के आधार पर किया है। प्रो0 उजागिर सिह (1961) ने इलाहाबाद के 'प्रभाव प्रदेश' का विश्लेषण चार सेवाओ–सब्जी, दूध, खाद्यान्न आपूर्ति तथा बस सेवा के साथ–साथ दो अतिरिक्त सेवाओ स्वास्थ्य एव शिक्षा के आधार पर किया है। प्रो0 आर0एल द्विवेदी (1961) ने इलाहाबाद नगर के प्रभाव प्रदेश का निर्धारण करते समय सब्जी, दुग्ध, खाद्यान्न और बस सेवा के साथ–साथ दो अतिरिक्त सेवाओ शिक्षा और समाचार पत्र को आधार माना है।

इलाहाबाद के प्रभाव प्रदेश के निर्धारण मे शोधार्थी ने भी नगर की चार सेवाओ को मुख्य रूप से आधार माना है। इनमे सब्जी आपूर्ति, दूध आपूर्ति, बस सेवा तथा शिक्षा को सम्मिलित किया गया है।

सब्जी आपूर्ति पेटी या मेखला

इलाहाबाद नगर की सब्जी आपूर्ति का विश्लेषण करने के पूर्व यदि मानचित्र स0–74 पर दृष्टि दे तो इसके क्षेत्र की प्रकृति एव विस्तार का पता चलता है। मानचित्र से स्पष्ट है कि यहा सब्जी की आपूर्ति मुख्यत तीन क्षेत्रो से होती है– (1) गगा सुसर खदेरी दोआब पश्चिम मे, (2) गगा पार की विस्तृत भूमि उत्तर मे, (3) यमुना के दक्षिण नैनी क्षेत्र।

इलाहाबाद के सब्जी आपूर्ति प्रदेश के अन्तर्गत नदियो का सबसे महत्वपूर्ण योगदान है क्योकि एक तरफ जहा नदियो के बलुई तटीय क्षेत्र मे सब्जियो का उत्पादन होता है वही दूसरी तरफ सिचाई एव परिवहन की सुविधा भी प्राप्त होती है। आज भी इस गगा यमुना के बलुई विस्तृत क्षेत्र मे ऊँटो द्वारा सब्जियो को ढोया जाता है। मानचित्र सख्या– 74 मे आठ बडे और छोटे सब्जी के बाजार स्थित हैं। ये बाजार– (1) खुल्दाबाद (2) कटरा (3) कर्नलगज (4) हीवेट रोड रेलवे पुल के पास (5) लोक नाथ (6) चौक (7) गऊ घाट (8) दारागज हैं। इनके अतिरिक्त अनेक मुहल्लो मे भी छोटे बाजार केन्द्र है जो मुख्यत शाम को लगते है। इन सब्जी मण्डियो मे खुल्दाबाद तथा कटरा मे सब्जियो की आपूर्ति आस–पास के ग्रामीण क्षेत्रो से की जाती है, साथ ही मण्डी मे गगा पार क्षेत्र से भी सब्जी आती है। गऊ घाट तथा लोकनाथ की सब्जी मण्डी मे सब्जिया यमुना पार नैनी

PRAYAG (ALLAHABAD)
VEGETABLE SUPPLY ZONE
N
Boundary Zone
Vegetable Market
Traffic Flow
Vegetable Growing Centre
G A N G A R
YAMUNA R
SASURKHADERI N
2 0 2 4
km
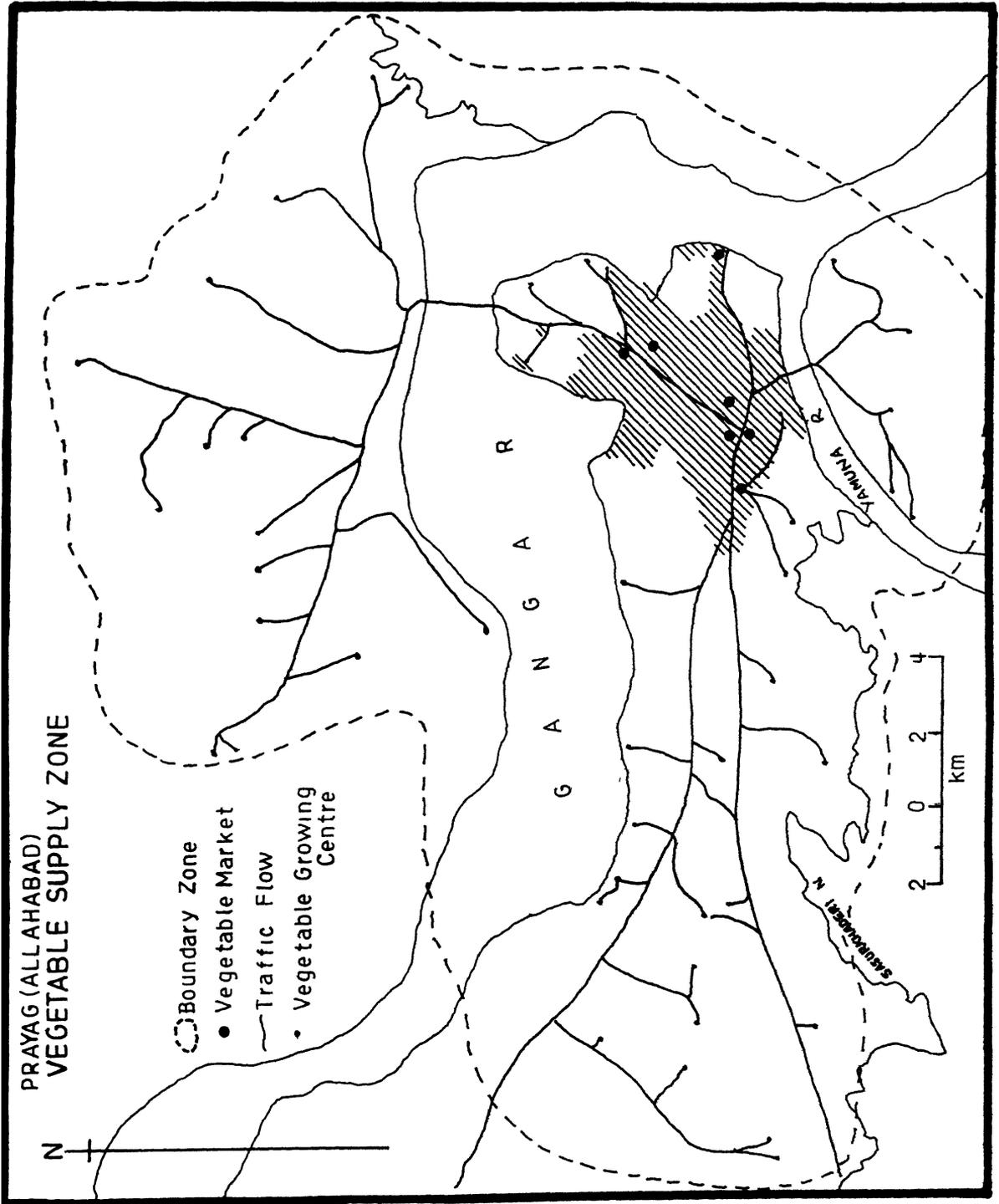
Fig 7.4

क्षेत्र से आती हैं। यदि मण्डी की विशालता के आधार पर विश्लेषण करे तो खुल्दाबाद की मण्डी प्रथम स्थान तथा कटरा द्वितीय स्थान रखती है। इन दोनो बाजारो की आपूर्ति क्षेत्र 12 Km दूर चायल तथा मनौरी तक है। इलाहाबाद के सब्जी आपूर्ति क्षेत्र के विकसित होने मे जी0टी0 रोड का यातायात के लिए और गगा–यमुना नदी के द्वारा प्रतिवर्ष जमा की गयी उपजाऊ मिट्टी का महत्वपूर्ण योगदान है। ट्रान्स यमुना सब्जी आपूर्ति मेखला छोटे क्षेत्र लगभग 31 वर्ग किमी0 को ग्रहण किये है। इस नगर की सम्पूर्ण सब्जी आपूर्ति क्षेत्र की औसत दूरी कटरा तथा खुल्दाबाद से 19 से 23 किमी0 के मध्य है।

अत निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि नदी के किनारे के क्षेत्र को छोडकर सब्जी आपूर्ति मेखला 250 वर्ग किमी0 क्षेत्र को ग्रहण किये है जहा से आशिक या पूर्ण रूप से सब्जी की आपूर्ति होती है। (मानचित्र 7 4)

दुग्ध आपूर्ति मेखला

वर्तमान समय मे इलाहाबाद नगर को पाच श्रोतो से दूध की आपूर्ति की जाती है– (1) इलाहाबाद सहकारी दुग्ध पूर्ति सघ, बाई का बाग (2) मिलीट्री डेयरी केन्द्र न्यू छावनी क्षेत्र (3) कृषि सस्थान डेयरी नैनी। इन तीन डेयरी के अतिरिक्त कुछ और डेयरिया है जो यहा के नगर निवासियो को दुग्ध की आपूर्ति करती है। इनमे मुख्य मदन की डेयरी शाहगज, कुन्जन की डेयरी दारागज, प0 मथुरा मिश्र की डेयरी बाई का बाग, सगम लाल की डेयरी नार्थ मलाका, नेशनल डेयरी कर्नलगज इत्यादि। इनके अतिरिक्त सैकडो ग्वाले ग्रामीण क्षेत्र से दुग्ध लाकर दरवाजे–दरवाजे जाकर दूध देते है। इसके साथ ही इलहाबाद नगर मे दूध आपूर्ति की एक विशेषता यह भी है कि यहा दूध देने वाले अपने पशु के साथ घर–घर ले जाकर सामने दूध निकाल कर आपूर्ति करते हैं। इलाहाबाद सहकारी दुग्ध पूर्ति सघ दूध और दूध से बन सामानो की पूर्ति करने वाला सबसे बडा श्रोत है। वर्तमान समय मे यह सघ 800 मन दूध प्रतिदिन आपूर्ति करता है। कृषि सस्थान डेयरी तथा मिलीट्री डेयरी लगभग 12 से 13 तथा 9 से 10 मन प्रतिदिन आपूर्ति करता है।[1]

इस नगर मे चौक (नवाबगज) तथा कटरा क्षेत्रो मे खोआ मण्डी स्थित है जहा आस–पास के गाव से व्यापक पैमाने पर खोआ इन मण्डियो मे लाया जाता है। यह व्यवसाय गाव के लोगो को दूध की अपेक्षा अधिक लाभदायक होता है। यहा दूध पाच

उत्पादन केन्द्रो द्वारा विभिन्न सहकारी दुग्ध सोसाइटी से जो आस–पास के गावो मे स्थित है, से इलाहाबाद सहकारी दुग्ध आपूर्ति सघ द्वारा दुग्ध इकट्ठा किया जाता है। इन केन्द्रो से मुख्यालय तक दूध सघ के मोटर यातायात द्वारा पहुचाया जाता है।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि पश्चिम मे दोआब क्षेत्र और नैनी के दक्षिण–पश्चिम मे स्थित क्षेत्र इलाहाबाद–रीवा रोड की ओर से इलाहाबाद सहकारी दूध अपूर्ति सघ को दूध की आपूर्ति कम की जाती है। फिर भी व्यक्तिगत आपूर्ति कर्त्ताओ द्वारा जसरा तथा बारा क्षेत्र से सघ को दुग्ध पूर्ति कराते है। दुग्ध के व्यापक उत्पादन की आपूर्ति साइकिल द्वारा व्यक्तिगत ग्वालो द्वारा नगर को आपूर्ति की जाती है जो जी0टी0 रोड, सराय अकील और इलाहाबाद–रीवा रोड का अनुसरण करते हैं। दूध की कुछ मात्रा रेलवे द्वारा फूलपुर क्षेत्र से व्यक्तियो द्वारा पहुचायी जाती है। इसके साथ ही दूध की कुछ मात्रा नगर के अन्दर मानव परिवहन द्वारा (अर्थात् बाल्टी या कन्टेनर मे लेकर) घर–घर जाकर आपूर्ति की जाती है। किन्तु ये आस–पास के ही व्यक्ति होते है। इनकी अपने घर से दूरी 12 से 16 किमी0 से अधिक नही होती है।

मानचित्र सख्या–75 पर प्रदिर्शित क्षेत्र को देखने से दुग्ध आपूर्ति मेखला के विस्तार क्षेत्र का पता चलाता है जहा से नगर को दूध की पूर्ति की जाती है। मानचित्र सख्या–75 से स्पष्ट है कि इस मेखला के पूर्वी भाग से इलाहाबाद सहकारी दूध आपूर्ति सघ को सबसे अधिक दूध की पूर्ति की जाती है। यह क्षेत्र गगा नदी से लगा हुआ पूर्व–पश्चिम विस्तृत है। यह क्षेत्र इसलिए दूध आपूर्ति मे अग्रणी है क्योकि इसका विस्तृत क्षेत्र वर्षा ऋृतु मे बाढ से ढक जाता है तथा शेष शुष्क समयो मे पशुचारण के लिए प्रयोग मे लाया जाता है। इलाहाबाद सहकरी दूध आपूर्ति सघ नगर की दूध आपूर्ति की स्थित को बेहतर बनाने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि दूध आपूर्ति मेखला के विस्तार को देखा जाय तो यह इलाहाबाद जिले के 1400 वर्ग किमी0 मे फैला हुआ है।(चित्र 75)

नगर के परिवहन प्रभाव प्रदेश व शैक्षिक प्रभाव प्रदेश का विश्लेषण क्रमश अध्याय 6 और 4 मे किया गया है। इसके अतिरिक्त धार्मिक परिप्रदेश का वर्णन अध्याय तीन मे किया गया है।

<u>इलाहाबाद नगर के प्रभाव प्रदेश की स्थिति एव विस्तार :</u>

इलाहाबाद का प्रभाव प्रदेश विस्तृत रूप मे बस सेवा क्षेत्र, सब्जी आपूर्ति क्षेत्र तथा

PRAYAG (ALLAHABAD)
MILK SUPPLY ZONE
Production Centre of the Milk Supply Union
Cooperative Milk Society
Milk Supplying Villages
Boundary of the Zone
Nawabganj
Therwal
Sahson
Jagatpur
Saidabad
Naini
Pandeora
Urua
GANGA R
YAMUNA R
TONS R
5
0
5
km
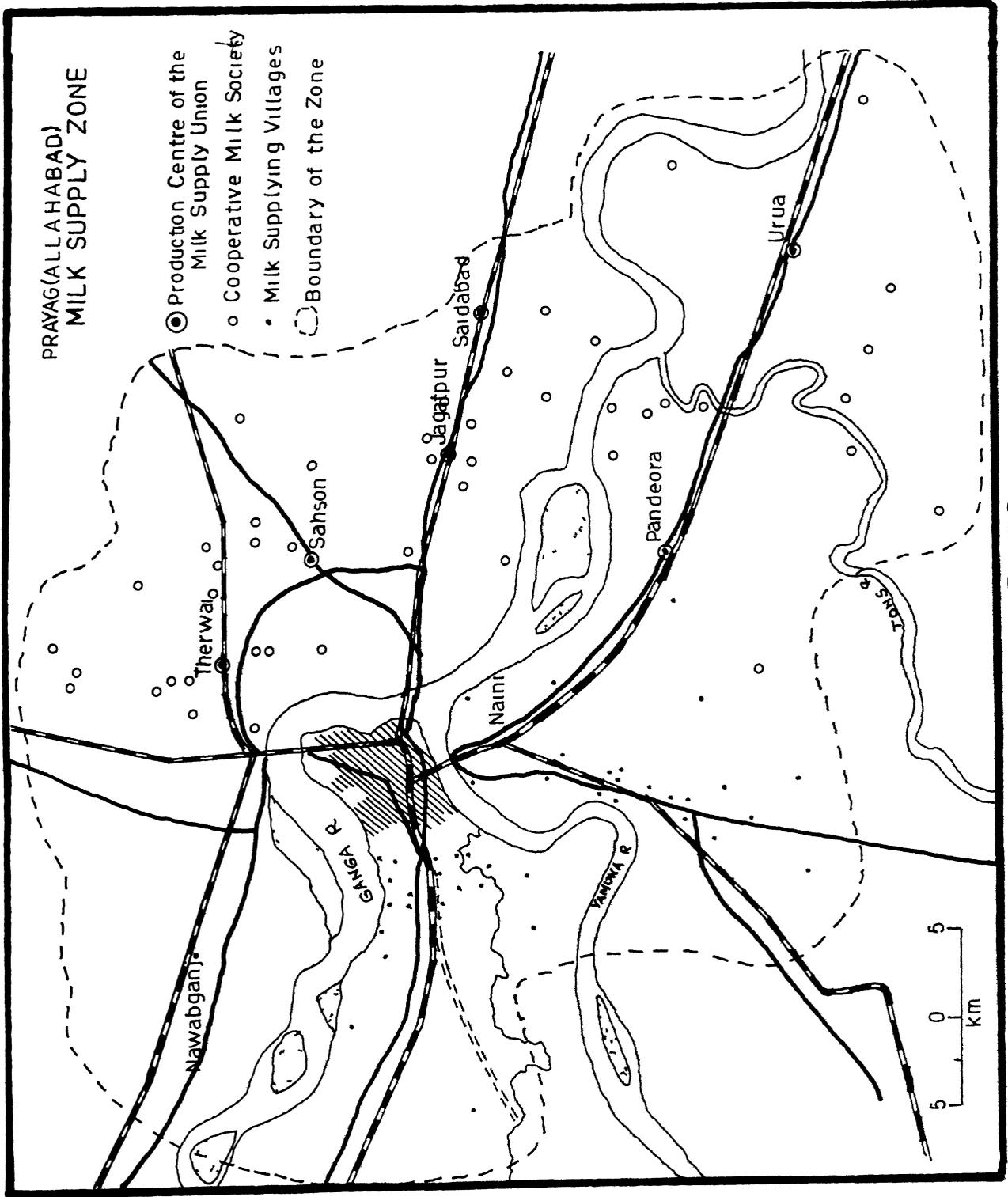
Fig 7.5

शैक्षणिक सेवा क्षेत्र के रूप मे फैला है। इसका विस्तार 24°35′ उत्तरी से 26°30′ उत्तरी अक्षाश तथा 80°45′ पूर्वी से 82°50′ पूर्वी देशान्तर के मध्य है। (विस्तृत चित्र स0 7 6)। यह 24200 (वर्ग किमी0) क्षेत्र पर फैला है (द्विवेदी आर0एल0 1961)।

यह इलाहाबाद के साथ प्रतापगढ जिले तक विस्तृत है। यह प्रभाव क्षेत्र सुल्तानपुर के मुसाफिरखाना तहसील, जौनपुर के मछलीशहर तहसील, मिर्जापुर के मिर्जापुर तहसील, बादा के मऊ और कर्वी तहसील, फत्तेहपुर के खागा तहसील और मध्य प्रदेश के रीवा जिले के तनोहर तहसील तक विस्तृत है। आकार मे यह प्रभाव प्रदेश मणिपुर (22146 वर्ग किमी0) से बडा और हिमाचल प्रदेश (28231 वर्ग किमी0) से छोटा है जबकि यह बनारस के (67782 वर्ग किमी0) प्रभाव प्रदेश के एक तिहाई से थोडा बडा है, और केरल (38940 वर्ग किमी0) के तीन चौथाई आकार से छोटा है। 1991 के सेन्सस के अनुसार इलाहाबाद नगर के प्रभाव प्रदेश मे 5 5 करोड जनसख्या स्थित है जिसका जनसख्या घनत्व 588 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी0 है।

निष्कर्ष रूप मे यह कहा जा सकता है कि 'नगर क्षेत्र या प्रभाव प्रदेश की एक निश्चित भौगोलिक इकाई नही बनाई जा सकती जो एक निश्चित सीमा से आबद्ध हो क्योकि सक्रमण मेखला भी पाई जाती है अत प्रशासनिक विभागो की सीमाओ के आधार पर इनका निर्धारण किया गया है जिसका केन्द्र से बाहर की ओर बढने पर सम्बन्ध कम होता जाता है' (डीकिन्सन आर0ई0 1947)। अत साख्यिकीय आकडो के आधार पर तात्कालिक रूप मे प्रभाव प्रदेश का निर्धारण प्रशासनिक सीमाओ को अनुकरण करते हुए किया गया है। इलाहाबाद नगर इस भौगोलिक क्षेत्र मे एक महानगर के रूप मे कार्य करता है जिसकी सीमाओ का ऊपर वर्णन किया गया है। अत स्पष्ट है कि इलाहाबाद एक प्रादेशिक केन्द्र के रूप मे विभिन्न प्रकार की सेवाओ यथा वाणिज्यिक, शैक्षणिक, परिवहन, स्वास्थ्य, खाद्यान्न, दूरसचार आदि को प्रदान करता है। एक वाक्य मे यह कहा जा सकता है कि नगर, प्रदेश के जीवन को सगठित रूप मे प्रस्तुत करता है।

ENVIRONS OF PRAYAG (Allahabad)
N
GHAGHARA R
GOMATI R
SAI R
GANGA R
ALLAHABAD
YAMUNA R
KEN R
TONS R
SON R
Vegetable Supply Zone
Milk " "
Bus Service Zone
Medical " "
Agricultural Product Supply Zone
Umland Boundary
State Boundary
District "
30
0
30
km
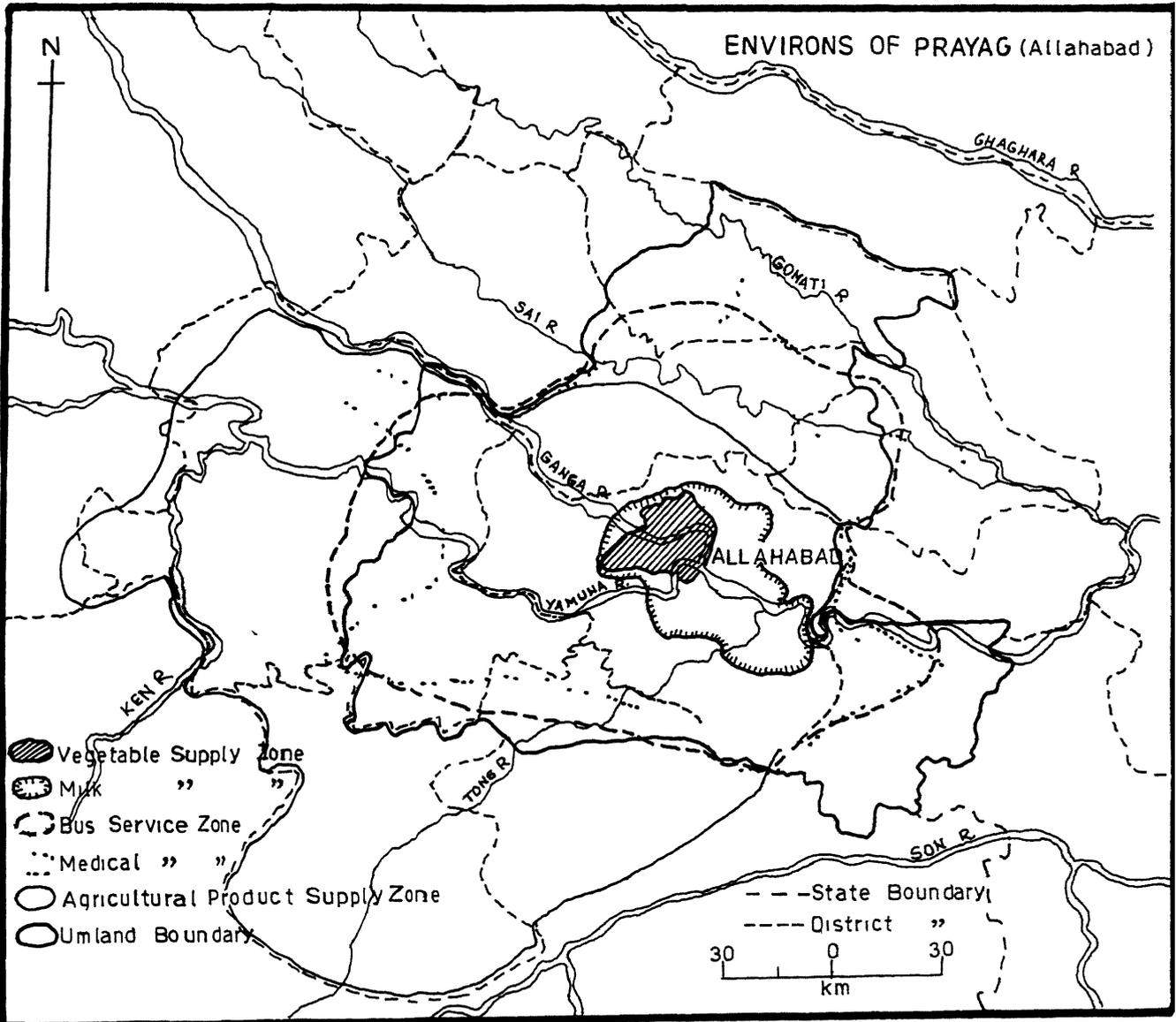
Fig 76

References

Allahabad (1962) The Journal of the Historical Societies, Part - I, Page - 7

Bacon, T (1837) "First Impressions and Studies from Nature in Hindustan" Vol - I, London, 1837, Page - 317

Conybreare, H C and Hewett, J P (1893) "Statistual Descriptive and Historical Account of N W P of India" Page - 162

Cunningham A (1950) "Ancient Geography of Indian"Page - 390, 389

Conybeare and Hewett (1890) "Archaeological Survey of India Vol - I, Page - 298

Census of India (1911) Vol XV, Part I, Report, Allahabad, Page - 24

Chauncy, D Harris (1941) Location of Salt-lake city, Economic Geog April 1941, Page - 212

Cleef, Eugene Van, (1941) Hinterland and Umland, Geo, Rev Vol - 31, Page - 308-11

Dwivedi, R L (1961) Allahabad, "A Study in Urban Geography, University of Allahabad, Page - 46-47

District Gazetteer (1986) Allahabad, U P Page - 232, 171

Dodge, Standley D (1932) and the Princeton Community Annals America Geog Sept 1932, Page - 175

Dickinson, R E (1947) "City Region and Regionalism London" Page - 204, 12, 18

Elliot, H M (1910) "The History of India as told by its own Historians", Page - 512

Fuhrer A (1891) "The Monumental Antiquities and Inscriptions in the N W P and Oudh", Archaeological Survey of India, Allahabad, Page - 127, 128

Hamilton, W (1890) "The East India Gazetteer" Page - 34

Houston, J M (1953) "A Social Geography of Europe" London, Page - 138

Harold M Mayer, (1954) "A Urban Geography", American Geography, Inventory and Prospect , Page - 143

Heler R (1823) "Narrative of a Journey through the upper Provinces of India ", Vol I, London, Page - 443

Kala, S C (1957) A B Patrika 7 Feb "Light on the History of Jhunsi"

Law B C (1932) "Geography of Early Buddism" London, Page - 36, 23, 35

Renner, G T (1951) and Associates, "Global Geo-. graphy" New Yark, Page - 408

Sharma, G R (1957-59) "The Exeavations at Kaushamby", Page - 9

Shashtri, R M (1944) "Ancient Prayag", Page - 75

Shashtri, R M (1946) "Full Light on the Real Sight of the Bhardwas Ashram", The Journal of the G N Jha Research Institute, Vol - III, Page - 448

Sachau, E C (1910) "Alb-eruni's India", Vol II London, Page - 170

Smailes A E (1962) "The Geography of Towns" London, Page - 7, 11, 84

Sıngh R L (1956) " Ballıa.A Study ın Urban Settlement" The Natıonal Geographıecal Journal of Indıa, Banaras, Vol - II, Part - 1, March, 1956, Page - 1

Srıvastav Shalıgram (1937) "Prayag Pradeep" P -272-73,216

Sıngh Ujagır (1961) "The Natıonal Geographıcal Journal of Indıa", Vol VII, Part 1, March, Page - 37

Smaıles, A E (1947) "The analysıs and Delımıtatıon of Urban Fıeld, Geography, Dec 1947, Page - 151

Sıngh, O P (1976) "Settlement Morphology and Spatıal Functıonal Organızatıon of Gaddıpur Vıllage (Jaunpur Dıstrıct)", Natıonal Geographer 11 (1) June 1976, Page - 64

Sıngh, O P (1979) "Urban Geography" Text Book, Page - 348, Page - 200-201

Tod, J (1873) "Annals and Antıquıtıes of Rajasthan Vo, I, Madras, 1873, Page - 36

Twınıng, T (1893) "Travels ın Indıa, a hundred years ago" London, Page - 157-62

Taylor G (1951) "Urban Geography" II edıtıon, New Yark, Page - 216, 217

इलाहाबाद महानगर योजना 2001 पृष्ठ– 22 से 26 तक।

अध्याय–8

प्रयाग और उसके परिप्रदेश के लिए सांस्कृतिक नियोजन

नगर आधुनिक सभ्यता एव सस्कृति के केन्द्र है। वर्तमान समय मे विकासशील देशो मे नगरीकरण अत्यन्त तीव्रगति से हो रहा है जिससे नगरो मे जनसख्या का केन्द्रीकरण बढता जा रहा है। बढी हुई नगरीय जनसख्या को सुव्यवस्थित नगरीय सुविधाए प्रदान करना आज के नगरो के लिए सबसे बडी समस्या बनती जा रही है। अत आवश्यक है कि नगर विकास एव विस्तार के साथ–साथ नगर नियोजन की योजनाओ को तीव्रगति से सचालित किया जाय जिससे नगर के जीवन को यथा सम्भव सुखी, स्वस्थ, सुन्दर एव सुविधा सम्पन्न बनाया जा सके।

प्रयाग एक नगर के साथ–साथ महत्वपूर्ण सास्कृतिक केन्द्र भी है। अत प्रयाग नगर का नियोजन करते समय यह ध्यान देना आवश्यक है कि प्रयाग की नगरीय सुविधाओ का नियोजन सास्कृतिक परिप्रेक्ष्य मे किया जाय जिससे कि यह नगर एक प्रमुख धार्मिक, पर्यटन एव सास्कृतिक केन्द्र के रूप मे विकसित हो सके।

प्रस्तुत अध्याय मे नगर की भौतिक सस्कृति– यथा अवस्थापनात्मक सुविधाओ–परिवहन, विद्युत, पेयजल, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य एव सफाई, सौन्दर्यीकरण, पर्यावरण, धर्मशाला, होटल आदि के नियोजन के साथ–साथ अभौतिक सस्कृति यथा–आचार–विचार, परम्परा, रीति–रिवाज आस्था, सहिष्णुता जैसे मानव मूल्यो के सास्कृतिक विरासत को सरक्षण के रूप मे विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

8 1 सास्कृतिक नियोजन की सकल्पना

भूगोल विषय के अन्तर्गत नियोजन की सकल्पना का सर्वाधिक उपयोग क्षेत्रीय विकास के नियोजन, नगरीय नियोजन, यातायात नियोजन आदि पक्षो पर किया गया है। यहा तक कि मनुष्य के सास्कृतिक कियाकलापो पर आधारित अनेक सास्कृतिक भूगोल की पुस्तको का प्रकाशन हुआ है तथा सस्कृति के भौतिक पक्षो के नियोजन का वर्णन प्रादेशिक नियोजन एव नगरीय भूगोल की पुस्तको मे प्राप्त होता है परन्तु अभौतिक सस्कृति जिसमे

मानवीय मूल्य सम्मिलित है, इनका नियोजन कैसे किया जाय जिससे एक स्वस्थ एव सुसस्कृत समाज का निर्माण हो, इस पर साहित्य का अभाव सा पाया जाता है। इन्ही तथ्यो के आलोक मे भूगोल विषय का चिन्तन फलक मानवीय पक्षो पर आधारित होता जा रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय भूगोल सघ 1992 के सम्मेलन मे एक सूत्र वाक्य रूप मे कहा गया कि– "**Geography ıs dıscovery of Places People**" वर्तमान समय की सबसे नवीन विचारधारा भूगोल मे व्यावहारिकतावाद (**Pragmatısm**) की है। व्यावहारिकतावाद वह दार्शनिक दृष्टिकोण है जो ज्ञान को, अनुभव को आलोकित करने तथा समस्यापरक परिस्थितियो के सुलझाने की कसौटी पर परखता है। इसमे ज्ञान प्राप्ति हेतु विशिष्ठ दशाओ को महत्वपूर्ण माना जाता है और उसी को विश्व की समझ विकसित करने का आधार मानते है। साथ ही, अमूर्त नियमो एव सामान्य सिद्धान्तो का उपयोग वैज्ञानिक अनुसधान हेतु दिशा निर्देशक के बतौर किया जाता है। व्यावहारिकतावाद की अनिवार्य शर्त है कि ज्ञान, ज्ञान के लिये न किया जाय बल्कि ज्ञान का उपयोग मानव की वास्तविक समस्याओ के निराकरण के लिए होना चाहिए। यह विचारधारा कार्योन्मुख अनुसधान पर बल देता है अर्थात् किसी लक्ष्य–जन समुदाय की तात्कालिक समस्याओ का निराकरण, परीक्षण, मूल्याकन एव प्रयोगात्मक विधि से करना इसका परम उद्देश्य है। इस विचारधारा की मान्यता है कि विश्व परिवर्तनोन्मुख है। अतएव सिद्धान्त एव नियम प्रासगिक एव लोचपूर्ण होते हैं। इनका उपयोग दिशा निर्देशक वैकल्पिक माध्यम के रूप मे होना चाहिये। दुर्बल प्रासगिक अवधारणाओ पर आधारित निगमनात्मक सिद्धान्तो का, मानव कार्यकलाप के प्रेक्षण एव अनुभव के आलोक मे परिष्कार एव प्रतिस्थापन होना चाहिये। ज्ञान का उपयोग भले–बुरे (मानव कल्याण की दृष्टि से) के मूल्याकन के परिप्रेक्ष्य मे, मानव कल्याण हेतु निर्धारण के लिये ही होना चाहिये (सिह, प्रो0 जगदीश 1992)।

भूगोल मे इस तरह के विचारो के आने का मूल कारण यह है कि विकास एव नियोजन के जितने भी सिद्धान्त प्रतिपादित किये गये उनसे मानवीय मूल्यो के उत्थान के बजाय ह्रास होता जा रहा है। समाज मे गरीबी, असमानता, भ्रष्टाचार, व्यभिचार, लोभ, आतकवाद, हिसा अत्यधिक बढता जा रहा है। अत नियोजन एव विकास की ऐसी प्रक्रियाओ को ढूढना होगा, विकसित करना होगा, प्रसारित करना होगा जिससे समाज मे मानवीय मूल्यो का उत्थान हो। इसके लिए आवश्यक है कि सम्पूर्ण भारतवर्ष मे विकासध्रुव

की सकल्पना की भाति वृहद् से लेकर लघुस्तर तक पदानुक्रम मे सास्कृतिक केन्द्रो का विकास किया जाय। प्रत्येक सास्कृतिक केन्द्र अपनी कार्यात्मकता के द्वारा एक दूसरे से जुडे हो। ऐसे सास्कृतिक केन्द्रो पर भारतीय सस्कृति मे निहित धार्मिक, आध्यात्मिक, सहिष्णुता, सार्वभौमिकता, ग्रहणशीलता, समन्वयवादिता आदि विचारो के प्रचार प्रसार के लिए वृहद् आश्रम बनाये जाये। इन केन्द्रो पर ऐसे परिवेश का विकास किया जाय जिससे मानव मे सदविचार आये। हमारी भारतीय सस्कृति अत्यन्त प्राचीन है। हमारे वेदो, पुराणो, गीता, रामायण इत्यादि मे आज के वैज्ञानिको द्वारा जिन सिद्धान्तो का परीक्षण किया जा रहा है उन सबका पहले से ही वर्णन है। जैसे वर्तमान समय मे पर्यावरण प्रदूषण की समस्या सबसे विकट है, इसके लिए हमारे धर्म ग्रन्थो मे पहले से ही 'एक वृक्ष दस पुत्र समान' की सकल्पना दी गयी है इसके साथ ही पीपल, बरगद आदि वृक्षो के काटने को निषिद्ध किया गया है जो पर्यावरण को सर्वाधिक शुद्ध रखते हैं। इसी प्रकार वर्तमान विश्व एक नयी एड्स की समस्या से ग्रसित होता जा रहा है। इसके लिए हमारे हिन्दू धर्म मे 'एक पत्नीव्रता' की बात कही गयी है। यदि इसका अनुपालन किया जाय तो समाज मे कभी भी एड्स नही फैल सकता है। इसी प्रकार अनेक विचारो, मान्यताओ, जीवन मूल्यो का वर्णन किया गया है। यदि इन सास्कृतिक केन्द्रो पर इन मानवीय मूल्यो के प्रचार–प्रसार का परिवेश बनाया जाय तो समाज मे फैली विसगतियो एव कुरीतियो को दूर किया जा सकता है। इन्ही तथ्यो को ध्यान मे रख कर भारत मे चार वृहद ऐसे केन्द्र देश के चारो कोनो पर बद्रीनाथ, रामेश्वरम, द्वारिका एव जगन्नाथपुरी के रूप मे स्थित हैं। ये भारत के आध्यात्मिक ज्ञान के केन्द्र हैं। सास्कृतिक नियोजन के लिए चाहिए कि भारत को सास्कृतिक प्रदेशो मे विभाजित किया जाय। इसके लिए धर्म, भाषा, सामाजिक वैशिष्ट्य या तौर–तरीके आदि को आधार माना जाय। भारत को चार वृहद स्तर के सास्कृतिक प्रदेशो मे विभाजन के पश्चात् उनके भीतर आने वाले क्षेत्रो जैसे उत्तर भारत के वृहद सास्कृतिक केन्द्र हरिद्वार, प्रयाग, वाराणसी, अयोध्या, बिहार मे मगध आदि को लघु स्तर के केन्द्र बनाये जाये। इसी प्रकार पदानुक्रम मे सास्कृतिक केन्द्रो का विकास पूरे भारतवर्ष के स्तर पर होना चाहिए। इन सांस्कृतिक केन्द्रो का प्रभाव प्रदेश बने जिनकी अपनी विशिष्ट विशेषता हो और अपनी विशिष्टता के कारण इनकी अलग पहचान हो। जैसा कि इन केन्द्रो पर इनके प्रभाव प्रदेश से आने वाले लोग यहा अपने धार्मिक क्रियाओ, अनुष्ठानो आदि को करते हैं। इसी प्रकार देश मे अनेक धर्मो

को मानने वाले लोग है। उन धर्मों से सम्बन्धित धार्मिक केन्द्रो का विकास हो। प्रत्येक धर्म मे मानवीय मूल्यो के उत्थान की ही बात कही गयी है। अत यदि दो विभिन्न धर्मों एव सस्कृतियो के केन्द्र आस–पास होगे तो उस प्रभाव क्षेत्र मे रहने वाले लोगो को यह समझने मे आसानी होगी कि सभी धर्मों का सार एक ही है।

इस प्रकार सस्कृति के अन्तर्गत आने वाले भौतिक एव अभौतिक तत्वो का सास्कृतिक केन्द्रो पर एक लक्ष्य बनाकर एक निश्चित समय मे नियोजन करना ही सास्कृतिक नियोजन की सकल्पना का मूल सार है, जिससे सास्कृतिक केन्द्रो का समन्वित विकास हो सके तथा नगर के सास्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण रखा जा सके।

8 2 धार्मिक तीर्थयात्रा केन्द्र के रूप मे प्रयाग का नियोजन .

प्रयाग वैदिक काल से ही भारतवर्ष का एक प्रमुख धार्मिक केन्द्र रहा है। अत प्रयाग पुण्यफल की प्राप्ति के लिए प्राचीन समय से ही धार्मिक तीर्थयात्रा का केन्द्र बिन्दु रहा है। तीर्थयात्रा हिन्दुओ की एक प्राचीन और निरन्तर धार्मिक क्रिया है। भारत के अनेक भागो मे फैले हुए तीर्थ केन्द्र करोडो तीर्थयात्रियों को दूर–दूर से आकर्षित करते रहते है। इस धार्मिक प्रकिया के दौरान लोगो का सचार देश के एक कोने से दूसरे कोने तक निरन्तर होता रहता है जिसके फलस्वरूप अनेक आर्थिक, सामाजिक, सास्कृतिक एव आध्यात्मिक प्रक्रियाए स्वत होती रहती है। भारत के तीर्थों मे अनेक तीर्थ ऐसे हैं, जिनका न कि भारत मे बल्कि विश्व मे प्रथम स्थान है, प्रयाग उनमे से एक है।

देश भर के तीर्थयात्रियो के आस्था के केन्द्र प्रयाग मे आज वर्तमान समय मे धर्म की आड मे तीर्थयात्रियो से विभिन्न धार्मिक क्रियाकलापो के नाम पर पण्डो द्वारा धन उगाही का कार्य व्यापक रूप मे किया जा रहा है। चूकि तीर्थयात्री धार्मिक आस्था के साथ इस केन्द्र पर आते हैं अत यदि उनसे समस्याओ के विषय मे पूछा जाय तो वे इस धर्म केन्द्र पर समस्याओ को नही बताना चाहते। तीर्थयात्रियो की प्रकृति धर्मभीरू होती है जो इन समस्याओ को पुण्यलाभ समझकर तीर्थयात्रा करते है। प्रयाग एक प्रमुख तीर्थ केन्द्र है अत यहा आने वाले तीर्थ यात्रियो एव इस तीर्थ केन्द्र को अत्यधिक विकसित करने के लिए निम्न सुझाव या नियोजन की आवश्यकता है –

1 तीर्थ केन्द्र प्रयाग पर इससे सम्बन्धित धार्मिक साहित्य का हिन्दी के साथ–साथ अन्य भाषाओ मे भी प्रकाशन होना चाहिए जिससे जन सामान्य को सुलभता से

प्राप्त हो सके। विशेष अध्ययन से धार्मिकता के साथ–साथ जनकल्याण की भावना को जागृत किया जा सकता है।

2 समस्त सास्कृतिक मूल्याकन को स्पष्ट कर राष्ट्रीय सास्कृतिक एकता को मजबूत किया जाना चाहिए।

3 प्रयाग मे जितने भी तीर्थयात्री आते है उनमे से सभी सगम मे स्नान अवश्य करते है अत गगा नदी को प्रदूषण से बचाने के लिए ठोस उपाय होने चाहिए क्योकि वर्तमान समय मे इलाहाबाद के समस्त नगरीय नाले गगा एव यमुना नदियो मे गिरते है जिससे गगा जल की शुद्धता प्रभावित हो रही है।

4 तीर्थ केन्द्र प्रयाग के ऐतिहासिक, धार्मिक स्वरूप के साथ–साथ इसके भौगोलिक आर्थिक तथा सामयिक स्वरूप का भी प्रतिपादन करना चाहिए।

5 तीर्थ केन्द्र प्रयाग के आस-पास प्रचलित परिक्रमाओ के पथ का निर्माण भौगोलिक ज्ञान की अभिवृद्धि के लिए आवश्यक है। इस सन्दर्भ मे परिक्रमा मार्गों मे पडने वाले उपतीर्थों का जीर्णोद्धार परम आवश्यक है। परिक्रमा मार्गों के विराम स्थलो पर विश्रामालयो तथा धर्मशालाओ का निर्माण किया जाये तथा उन स्थलो पर यात्रियो की सुविधा के लिए तीर्थ सेवाकेन्द्र की स्थापना की जाये।

6 पण्डे पुजारियो की तथाकथित मनमानी को कम करने के लिए किसी उपयुक्त आचार–सहिता का प्रतिदान किया जाना चाहिए। इन स्थलो पर धार्मिक लोगो के दिन प्रतिदिन धार्मिक आस्था के कम होने का कारण धर्मगुरूओ का उद्दण्डात्मक व्यवहार भी है।

7 कुम्भ मेले के समय विभिन्न अखाडो के साधुओ, सन्तो एव महात्माओ द्वारा अपनी सुख–सुविधा के लिए प्रशासन पर जिस तरह की मुसीबते पैदा की जाती है या मुख्य स्नानो पर इनके स्नान के लिए सामान्य तीर्थयात्रियो को जो परेशानिया उठानी पडती है या धर्मगुरूओ द्वारा आधुनिक भौतिक विलासिता के साधनो जैसे–मोबाइल, राजसी कारो, टेलीविजन, कम्प्यूटर आदि के उपयोग से सामान्य जन मे धर्म के प्रति आस्था कम होती जा रही है, क्योकि सामान्य जन इन्हे देव तुल्य समझती है, इनसे 'सादा जीवन उच्च विचार' की अपेक्षा करती है अत शोधार्थी का सुझाव है कि इन साधु–सतो को अपने मे देवत्व की भावना स्वरूप

को जागृत करना चाहिए और आदर्श सादा जीवन व्यतीत करने का अभ्यास करना चाहिए।

8 तीर्थ किसी व्यक्ति या समुदाय की पूजी नही होते हैं अत सम्पूर्ण मानव समुदाय को ध्यान मे रखकर इन स्थलो पर व्याप्त कुरीतियो का निवारण आवश्यक है।

9 वस्तुत प्रयाग आध्यात्मिकता के साथ–साथ बन्धुत्व एव राष्ट्र भावना को जागृत करने का प्रमुख केन्द्र रहा है। अत मेले के अतिरिक्त विभिन्न अवसरो पर यहा जनसामान्य मे सदाचार एव मानवीय मूल्यो से सम्बद्ध प्रवचनो का प्रबन्ध आवश्यक है जिससे सामाजिक एव सास्कृतिक कुरीतियो के निवारण के साथ–साथ चरित्र निर्माण द्वारा राष्ट्र एव मानव का विकास हो जिससे राष्ट्रीय एकता एव अखण्डता प्रतिबद्ध हो सके।

10 सरकारी तन्त्र को चढावे की देख रेख करके मात्र पण्डे–पुरोहितो के ऊपर आधारित न रहकर मदिरो एव तीर्थ स्थलो तथा तत्पार्श्ववर्ती तीर्थ क्षेत्रो की रक्षा तथा सरक्षण करना चाहिए।

11 प्रयाग के तीर्थ केन्द्रो के सम्पूर्ण विकास हेतु विद्यालय एव व्यायामशालाओ का सदविचार के केन्द्र के रूप मे सचालन किया जाना चाहिए जिससे समाज मे शिक्षा एव स्वास्थ्य का उन्नयन हो सके, मानव मे मानवीय गुणो का विकास हो सके। इससे इन तीर्थ केन्द्रो की समाज मे उपयोगिता सिद्ध हो सकेगी, जैसा कि प्राचीन काल मे किया जाता था।

12 प्रयाग के प्रमुख मन्दिरो पर सुरक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए जिससे इन केन्द्रो पर अराजकता फैलाने वाले लोगो (विशेषकर पाकेटमारो एव सामान चुराने वालो) को पकडकर उचित सजा दी जा सके।

13 प्रयाग मे अनवरत वर्ष भर तीर्थयात्री आते हैं और सगम तथा नगर मे स्थित तीर्थ केन्द्रो तथा पार्श्ववर्ती क्षेत्र के केन्द्रो का दर्शन करते हैं। अत प्रशासन एव महानगरपालिका को चाहिए कि सम्पूर्ण क्षेत्रो मे शौचालय की स्थायी एव उपयुक्त व्यवस्था करे जिससे तीर्थयात्रियो विशेषकर महिलाओ को परेशानियो का सामना न करना पडे। आज भी सगम क्षेत्र मे पुरूषो एव स्त्रियो को खुले मे ही शौच करनी पडती है।

इस प्रकार प्रयाग का धार्मिक तीर्थयात्रा के केन्द्र के रूप मे ऐसा विकास हो जिससे प्रयाग और उसका परिवेश सास्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक रूप मे समृद्ध हो सके और सास्कृतिक तथा मानवीय मूल्यो का प्रसार हो सके।

8 22(ii) श्रृग्वेरपुर धाम का नियोजन:

इलाहाबाद जनपद मुख्यालय से लखनऊ जाने वाले राजमार्ग पर लगभग 37 किमी0 की दूरी पर स्थित भगवतीपुर नामक स्थान से 3 किमी0 दक्षिण मे परमपावनी गगा के सुरम्य तट पर प्रकाशमान श्रृग्वेरपुर धाम अवस्थित है। रामायण मे वर्णन है कि इसी स्थान पर अखण्ड ब्रह्माण्ड नायक भगवान श्री राम ने भगवती वैदेही एव शेषावतार श्री लक्ष्मण जी तथा सुमतजी के साथ वनवास के समय रात्रि निवास, सन्ध्यावन्दन तथा केवट को चरणामृत प्रदान कर सुरसरि को पार किया था। तेजस्वी, वेदस महर्षि, श्रृगऋषि का आश्रम एव तपोभूमि होने के कारण यह स्थान श्रृग्वेरपुर धाम के नाम से जाना जाता है। श्रृग ऋषि ने राजा दशरथ के यहा सन्तान उत्पति के लिये पुत्रेष्टि यज्ञ कराया था। यह सभी सनातन धर्मावलम्बी हिन्दू समुदाय का परम सुरम्य उत्तम तीर्थ स्थल है।

यहा के प्रमुख दर्शनीय स्थल—गगा घाट, श्री शान्ता श्रृग ऋषि मन्दिर, श्री राम सन्ध्या मठ, श्री राम विश्राम धाम, श्री राम शैय्या, लक्ष्मण आसन, चरण—पादुका, सीताकुण्ड, गौरी शकर घाट, किला आदि हैं। हिन्दुओ के पवित्र तीर्थ स्थल श्रृग्वेरपुर धाम के सास्कृतिक नियोजन के लिए निम्न सुझाव प्रस्तुत किया गया है—

1 श्रृग्वेरपुर तीर्थ केन्द्र पर तीर्थ यात्रियो के रात्रि विश्राम के लिए आवासीय होटल या धर्मशाला का विकास नही किया गया है जिससे तीर्थ यात्रियो को इलाहाबाद से जाकर भ्रमण करना पडता है। अत यहा पर आवासीय सुविधा का विकास होना चाहिए।

2 यह रेलमार्ग इलाहाबाद—लखनऊ पर स्थित रामचौरा से 5 किमी0 एव इलाहाबाद—लखनऊ राजमार्ग से जुडा है। परन्तु आवागमन की उपयुक्त सुविधाओ का विकास नही हुआ है। अत आज भी तीर्थ यात्रियो को अपने व्यक्तिगत आवागमन के साधनो से जाना—आना पडता है। अत सरकारी तन्त्र को चाहिए कि इस तीर्थ केन्द्र को और अधिक विकसित करने के लिए इलाहाबाद से श्रृग्वरेपुर के लिए सरकारी बसो तथा अन्य वाहनो की उचित व्यवस्था करे।

3 श्रृग्वेरपुर धाम के दर्शनीय स्थलो का आधुनिकीकरण किया जाये। यहा के गगा घाट, आश्रम एव मन्दिरो का जीर्णोद्धार कर आधुनिक स्वरूप मे सुसज्जित किया जाय जिससे अधिक से अधिक तीर्थ यात्रियो को आकर्षित कर सके।

4 प्रयाग के साथ–साथ इस पवित्र धाम से सम्बन्धित साहित्य एव महत्व का प्रचार व प्रसार किया जाये जिससे अधिक से अधिक लोगो को इस पवित्र स्थल की जानकारी प्राप्त हो सके।

5 श्रृग्वेरपुर धाम को प्रयाग के उप सास्कृतिक केन्द्र के रूप मे विकसित किया जाना चाहिए जिससे इस केन्द्र के प्रभाव क्षेत्र मे आने वाले लोगो का सास्कृतिक विकास किया जा सके।

6 इस केन्द्र को धार्मिक तीर्थ के साथ–साथ पर्यटक स्थल के रूप मे भी विकसित किया जाये जैसे–गगाघाट पर गगा नदी मे नौकायन, आधुनिक सुविधाओ से युक्त पार्क, मनोरजन के साधन का विकास किया जाये जिससे इस सास्कृतिक केन्द्र के विकास मे स्थानीय लोगो की भूमिका बढे, उनको रोजगार मिले और उनका आर्थिक विकास भी हो सके।

8 3 प्रयाग का पर्यटन केन्द्र के रूप मे नियोजन :

प्रयाग एक धार्मिक तीर्थ यात्रा के केन्द्र के रूप मे प्राचीन समय से ही विकसित है जहा प्रतिदिन हजारो की सख्या मे और विशेष अवसरो पर लाखो की सख्या मे तीर्थयात्री आते है। अत प्रयाग मे पर्यटन उद्योग का भविष्य अत्यन्त उज्जवल है। आवश्यकता इस बात की है कि प्रयाग के तीर्थ स्थलो का आधुनिकीकरण करके उनको इस रूप मे विकसित किया जाये जिससे प्रयाग आने वाला तीर्थ यात्री या पर्यटक केवल सगम स्नान कर वापस न जाये बल्कि बरबस होकर अन्य तीर्थ स्थलो का भ्रमण करे।

यदि प्रयाग को एक पर्यटक स्थल के रूप मे विकसित किया जाय तो यह सम्पूर्ण क्षेत्र के लोगो के आर्थिक विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा। प्रयाग धार्मिक, सास्कृतिक, ऐतिहासिक स्थलो के साथ–साथ प्राकृतिक भौगोलिक सौन्दर्यता से युक्त है। अत यदि इन स्थलो का सौन्दर्यीकरण कर आधुनिक सुविधाओ से युक्त बनाया जाय तो प्रयाग का पर्यटन उद्योग अत्यधिक उन्नत अवस्था मे होगा। प्रयाग को पर्यटक केन्द्र के रूप मे नियोजन करने के सम्बन्ध मे निम्न सुझाव प्रस्तावित है–

1 प्रयाग गगा एव यमुना नदी की सीमा द्वारा आबद्ध है। इन नदियो के किनारे अनेक घाट जैसे सरस्वती घाट, मनकामेश्वर मन्दिर के पास यमुना के किनारे, किला के पास और अन्य ऐसे स्थलो पर स्थित घाटो का सौन्दर्यीकरण करके विकसित किया जा सकता है। इन घाटो पर नौकायन एव जल कीडा से सम्बन्धित साधनो का विकास किया जाय।

2 प्रयाग के तीर्थ केन्द्रो का आधुनिकीकरण किया जाय। इनके भवन को आकर्षक एव सुसज्जित बनाया जाय।

3 प्रयाग और उसके आस–पास स्थित पर्यटक स्थलो पर भ्रमण के लिए विभिन्न यातायात के साधनो का विकास आवश्यक है।

4 पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए सुसगठित तन्त्र के विकास करने की आवश्यकता है अर्थात् यात्रिक एजेन्सियो का विकास इसमे सर्वप्रमुख है। इसके लिए भारत सरकार ने सिविल लाइन, महात्मा गाधी मार्ग पर बस स्टेशन के पास क्षेत्रीय पर्यटन का कार्यालय स्थापित किया है। परन्तु यह पर्याप्त नही है। पर्यटन को बढावा देने के लिए सभी ऐसे स्थलो पर जहा बाहर से यात्री आते है जैसे सभी रेलवे स्टेशनो व बस स्टेशनो के पास यात्रिक एजेन्सिया खोली जाय तथा सभी एक दूसरे से जुडी हो।

5 पर्यटन की समूची सरचना होटलो और यात्रा अभिकर्ताओ पर केन्द्रित होती है। अत सुविधायुक्त सस्ते होटलो का विकास होना चाहिए जिसमे भारतीय सस्कृति से युक्त पारम्परिक सुस्वादु, भोजन की व्यवस्था रहे।

6 प्रयाग को पर्यटन केन्द्र के रूप मे विकसित करने के लिए यहा के हस्तशिल्प व कारीगरो पर आधारित उद्योगो का विकास होना चाहिए जिससे स्थानीय लोगो को रोजगार के साथ–साथ मुद्रा की प्राप्ति हो।

7 प्रयाग को तीव्रगामी एव सुविधाजनक यातायात से जोडा जाय।

8 ऐतिहासिक एव सास्कृतिक ज्ञान रखने वाले शिक्षित एव प्रशिक्षित गाइडो की व्यवस्था की जाये।

9 पर्यटन विश्राम गृहो एव सूचना केन्द्रो पर अनेक भाषाए जानने वाले व्यक्तियो की नियुक्ति की जानी चाहिए।

10 दर्शनीय स्थलो को साफ–सुथरा, स्वच्छ व आकर्षक बनाने का प्रयास करना चाहिए।

11 प्रयाग को आधुनिक परिप्रेक्ष्य मे पर्यटन केन्द्र के रूप मे विकसित करते समय साधना, श्रद्धा, आत्मशोधन तथा लोकहित जैसे उत्कृष्ट कार्यक्रमो पर ध्यान देना अपेक्षित है। तीर्थों की साम्प्रतिक दयनीय स्थिति को दूर करके सास्कृतिक पुर्नजागरण करना पर्यटन का उद्देश्य होना चाहिए।

12 पर्यटन स्थलो तक आसानी से पहुचने हेतु 'डायरेक्शन बोर्ड' लगाये जाये।

13 'कन्डक्टेड टूर' की सुविधा उपलब्ध करायी जाय ताकि पर्यटक स्थलो को कम समय एव कम खर्च मे देख सके।

14 सगम तक पहुचने के लिए नावो के रेट बोर्ड लगाये जाय तथा यह सुनिश्चित किया जाय कि किसी भी पर्यटक से निर्धारित दर से अधिक धन न लिया जाय।

15 माघ मेला, दशहरा तथा अन्य विशेष अवसरो पर 'लाइट एण्ड साउण्ड' कार्यक्रम चलाये जाय।

16 पर्यटन स्थलो पर पेयजल की व्यवस्था, प्रकाश व्यवस्था, वर्षा व धूप से बचने के लिये शेड, बैठने के बेच आदि की व्यवस्था की जानी चाहिए।

इस प्रकार प्रयाग को पर्यटन केन्द्र के रूप मे विकसित करने से प्रयाग का सुसस्कृत एव समन्वित विकास सम्भव होगा। प्रयाग मे रोजगार का विकास होगा। अवस्थापनात्मक सुविधाओ का विकास होगा और सम्पूर्ण प्रयाग नगर विकसित स्वरूप को प्राप्त करेगा।

8 31(1) बौद्ध तीर्थ स्थल–कौशाम्बी

कौशाम्बी एक अत्यन्त प्राचीन, धार्मिक, ऐतिहासिक एव व्यापारिक केन्द्र रहा है जिसका पाणिनी के सूत्रो और पातजलि के महाभाष्य मे उल्लेख मिलता है। कौशाम्बी राजा उद्यन की राजधानी थी। कौशाम्बी की विशेष प्रसिद्धि उद्यन के काल से प्रारम्भ होती है। इस समय यहा पर वत्स राज्य की राजधानी भी अवस्थित थी। यमुना के तट पर स्थित होने के कारण यहा पर वाणिज्य का महा–विकास हुआ यही कारण है कि लोग इसे 'वत्स पत्तन' कहते थे। बौद्ध काल मे कौशाम्बी की महत्ता धार्मिक क्षेत्र मे भी विशेष थी। यहीं पर गौतम बुद्ध ने अनेक व्याख्यान दिया था जिसके कारण इस नगर मे इनके बहुत अनुयायी हो गये

थे। बौद्ध ग्रंथों के अनुसार भगवान बुद्ध ने साधु जीवन का छठवां एवं पांचवाँ वर्ष इस स्थान पर व्यतीत किया था। मौर्यों के शासन काल में यह नगर राजनीतिक, धार्मिक तथा व्यापारिक केन्द्र था। इसकी महत्ता के कारण ही अशोक ने कौशाम्बी में स्तम्भों के ऊपर अपने लेखों को उत्कीर्ण किया था।

इस केन्द्र की प्राचीनता एवं ऐतिहासिकता वर्तमान में भी मौजूद है जिससे इस स्थान का पर्यटन में विशेष महत्व है। बौद्ध एवं जैन मतानुयायी यहां पर्यटक के रूप में बड़ी संख्या में आते रहते हैं। यहां पर पुरातात्विक अवशेष भी उपलब्ध हैं जिसके कारण विद्यार्थी एवं शोधकर्ता भी इस स्थान पर बराबर आते रहते हैं। तीसरी संख्या उन लोगों की है जो यहां पिकनिक की दृष्टि से आते हैं।

वर्तमान समय में सरकार कौशाम्बी को एक पर्यटक केन्द्र के रूप में विकसित करने का प्रयास कर रही है। कौशाम्बी की ऐतिहासिकता को देखते हुए इसे पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित करने के सम्बन्ध में निम्न सुझाव प्रस्तुत हैं:–

1. कौशाम्बी एक ऐतिहासिक स्थल है जहां से पुरातात्विक खुदाई के दौरान विभिन्न ऐतिहासिक कालों के अवशेष प्राप्त हुए हैं। इन अवशेषों का संग्रह इलाहाबाद के म्यूजियम या इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग में रखा है। मेरा सुझाव है कि कौशाम्बी में एक म्यूजियम बनाकर इन पुरातात्विक अवशेषों को वहीं रखा जाय जिससे वहां जाने वाले पर्यटकों को केवल खण्डहर या पत्थरों को देखकर सन्तोष न करना पड़े।
2. कौशाम्बी में बड़ी संख्या में विदेशी एवं स्वदेशी पर्यटक आते हैं अतः यात्रियों के ठहरने के लिंए सस्ते और सुविधायुक्त आवासों, होटलों, व धर्मशालाओं का विकास किया जाय।
3. बौद्ध एवं जैन धर्मावलम्बी यहां अधिक संख्या में अपने पवित्र स्थल का दर्शन करने के लिए आते हैं अतः उनको ऐतिहासिक जानकारी देने के लिए यहां कुशल एवं प्रशिक्षित इतिहासकार की गाईड के रूप में नियुक्ति होनी चाहिए जो यहां की ऐतिहासिकता को बता सकें।
4. आवागमन के उपयुक्त एवं तीव्रगामी साधनों से कौशाम्बी को जोड़ना होगा जिससे आवागमन सुविधाजनक हो सके।

5 कौशाम्बी यमुना नदी के किनारे एक सुरम्य प्राकृतिक छटा के साथ स्थित है अत यहा पर आधुनिक पार्कों की जो मनोरजन की दृष्टि से एव ऐतिहासिक जानकारियो से युक्त हो, की स्थापना की जानी चाहिए जिससे पर्यटको एव पिकनिक मनाने वाले लोगो को अधिक से अधिक आकर्षित कर सके।

वर्तमान समय मे कौशाम्बी स्वय जनपद बन गया है अत यहा के प्रशासनिक अधिकारियो को चाहिए कि इस पर्यटक केन्द्र पर अवस्थापनात्मक सुविधाओ का अधिक से अधिक विकास करे जिससे कौशाम्बी की जो ऐतिहासिक पहचान है वह अक्षुण्ण बनी रहे। कौशाम्बी के प्रमुख दर्शनीय स्थल घोषिताराम बिहार, राज प्रसाद स्थल, अशोक स्तम्भ है जो वर्तमान मे खण्डहर के रूप मे है। इसके साथ ही एक दिगम्बर जैन मन्दिर स्थित है। यह केन्द्र रेल सेवा से निकटतम (40 किमी0) भरवारी से एव वायुसेवा बमरौली (48 किमी0) के समीप है। इलाहाबाद से बस सेवा उ0प्र0 रा0प0 निगम द्वारा जुडा हुआ है। वर्तमान समय मे कौशाम्बी की ऐतिहासिकता को देखते हुए एक विकसित पर्यटन केन्द्र के रूप मे विकसित किया जाना आवश्यक है।

8.32(ii) मुस्लिम सास्कृतिक केन्द्र खुसरोबाग

प्रयाग एक हिन्दू तीर्थ केन्द्र होने के साथ–साथ मुस्लिम सास्कृतिक केन्द्र के रूप मे भी ख्याति प्राप्त रहा है। प्रयाग सन 1194 से 1800 ई0 तक मुगल शासन के अधीन था। अत मुगल सस्कृति का प्रभाव भारत के जिन नगरो मे सबसे अधिक हुआ उनमे प्रयाग भी एक केन्द्र था। मुगल शासक अकबर की ही देन है कि प्राचीन हिन्दू सस्कृति के पर्याय प्रयाग का नाम बदल कर इलाहाबाद रखा गया। इसके साथ ही प्रयाग मे अनेक ऐतिहासिक भवनो का निर्माण किया तथा अनेक मुहल्लो का नामकरण मुसलमानी आधार पर किया। इन ऐतिहासिक भवनो मे किला और खुसरोबाग सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। मुगल काल मे बसाये गये मुहल्लो का नाम–खुल्दाबाद (जहागीर का बसाया हुआ), शहराराबाग (जहागीर द्वारा), दारागज (दारा शिकोह द्वारा), अल्लापुर आदि है।

चौक से थोडी दूर पश्चिम ग्रैड ट्रक सडक एक पक्की सराय के भीतर से निकलकर आगे चली गई है. यह अत्यधिक लम्बी–चौडी है। इसी सराय का नाम 'खुल्दाबाद' है, जिसका क्षेत्रफल 17 बीघा (1500 वर्ग मीटर) है। इसमे चारो ओर मुसाफिरो के रहने के लिए कोठरिया बनी हुई है। चारो और चार दरवाजे है जिनमे से उत्तर वाला सबसे विशाल और

भव्य द्वार 'खुसरो बाग' का है। पूर्व और पश्चिम वाले फाटको के दोनो कोनो के चार–चार खभो पर दो दो गुबद्दार छतरिया बनी हुई है, जिनके पत्थर अब मरम्मत न होने के कारण गिर गये है। सराय से उत्तर मिला हुआ खुसरोबाग है। इसका क्षेत्रफल 64 एकड है। यह बाग चौकोर है, जिसकी ऊँची–ऊँची दीवारे पत्थर के बडे–बडे ढोके को जोड कर बनाई गई हैं।

खुसरोबाग मे खुसरो की कब्र है। खुसरो जहागीर का बेटा था, जो सन 1587 ई0 मे पैदा हुआ और सन 1622 मे बुरहानपुर मे कत्ल किया गया। इसके पश्चात् उसका शव यहा लाकर गाडा गया। यहा की दीवारो पर फारसी मे शेर लिखे हुए है जिनका उद्देश्य जीवन की नि सारता, वैराग्य, आदि के विषय मे वर्णन करना है। खुसरोबाग के सास्कृतिक नियोजन हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तावित है –

1 वर्तमान समय मे खुसरो बाग मुसलमानो का एक महत्वपूर्ण आस्था का केन्द्र है अत इस ऐतिहासिक/पुरातात्विक महत्व के स्थल को सरकार द्वारा पूर्णत सरक्षित कर देना चाहिए।

2 इसके साथ ही इसके जीर्णोद्धार की आवश्यकता है जिससे अतीत काल तक इसे सुरक्षित रखा जा सके।

3 खुसरोबाग के अन्तर्गत ऐतिहासिक मकबरे स्थित है। इस बाग का उपयोग खुले स्थल एव पार्क के रूप मे भी किया जाता है। इसमे फलो का बागीचा तथा वानस्पतिक नर्सरी भी है। अत इसका इस प्रकार से सौन्दर्यीकरण किया जाय कि यह एक पर्यटन केन्द्र के रूप मे विकसित हो सके।

4 खुसरो बाग की दीवारे एव स्तम्भो पर फारसी मे विविध उपदेश लिखे हुए है, जो समय के साथ–साथ समाप्त होते जा रहे हैं। अत आवश्यक है कि उनका हिन्दी अनुवाद कराकर सगमरमर के शिलापट्टो पर अकित कराये जाय।

5 इससे इस सास्कृतिक केन्द्र का विकास होगा और प्रयाग की पहचान हिन्दू तीर्थ केन्द्र के साथ–साथ मुस्लिम सास्कृतिक केन्द्र के रूप मे भी होगी।

8 4 अवस्थापनात्मक सुविधाओ का नियोजन :

किसी प्रदेश की अर्थव्यवस्था के विकास हेतु अनिवार्य एव आधारभूत पदार्थ, परिस्थितिया एव व्यवस्थाए अवस्थापनात्मक तत्व कहे जाते हैं। ग्रीनवाल्ड महोदय ने

अवस्थापनात्मक तत्वो को राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की नीव कहा है जिस पर आर्थिक क्रिया—कलाप यथा—कृषि, उद्योग तथा व्यापार आदि की स्थिति, उत्पादन एव उत्पादित पदार्थ का सचरण आदि निर्भर करता है। ग्रीनवाल्ड ने अवस्थापनात्मक तत्वो के अन्तर्गत मुख्यत परिवहन एव सचार तत्र, ऊर्जा सम्बन्धी सुविधाओ एव सार्वजनिक सेवाओ को सम्मिलित किया है तथा आर्थिक क्रियाकलाप को प्रभावित करने वाले अप्रत्यक्ष तत्वो, यथा जनसख्या का शैक्षणिक स्तर, सामाजिक आचार—व्यवहार, औद्योगिक दक्षता एव प्रशासनिक अनुभव को भी इसके अन्तर्गत सम्मिलित किया है।

किसी भी नगर के सुनियोजित एव सुव्यवस्थित विकास के लिए अवस्थापनात्मक तत्वो का नियोजन परम आवश्यक है। इन्ही तथ्यो को ध्यान मे रखते हुए प्रयाग नगर के निम्न अवस्थापनात्मक तत्वो के नियोजन का प्रयास किया गया है जिससे प्रयाग का समन्वित विकास हो सके।

9 4(1) परिवहन तन्त्र

यातायाता नियोजन का आधारभूत तत्व परिसचरण प्रणाली का रूपाकन है। यह रूपरेखा ऐसी होनी चाहिए जिससे लोगो को अपने कार्यस्थलो पर पहुचने मे अधिक से अधिक सुविधा हो। साथ मे कम से कम धन व्यय हो, कम से कम समय नष्ट हो और कम से कम खतरा हो। निकेल और रेकिन ने कहा है कि नगरीय क्रिया कलापो के विशेषीकरण से यह आवश्यक हो गया है कि वहा के सस्थानो और उसके सदस्यो मे परस्पर सचार होता रहे। इसके लिये यह आवश्यक है कि गन्तव्यता का ध्यान रखा जाए और गन्तव्यता स्थानिकता के विवेक पर आश्रित है अर्थात् विभिन्न उद्योगो और कार्यालयो की स्थापना ऐसे स्थान पर हो जहा उनसे सम्बन्धित व्यक्तियो को पहुचने मे अधिक सरलता हो (शर्मा, राजीव लोचन 1985)।

यातायात की दृष्टि से इलाहाबाद नगर की स्थिति विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। एक ओर यह दक्षिण के पठार मे स्थित नगरो से सम्बद्ध है तो दूसरी ओर उत्तर भारत के सभी नगरो से रेल व सडक मार्ग प्रणाली से भली भाति सम्बद्ध है। रीवा रोड, मिर्जापुर रोड, कानपुर रोड, वाराणसी रोड, कौशाम्बी रोड, प्रतापगढ—फैजाबाद रोड तथा रायबरेली—लखनऊ रोड नगर के क्षेत्रीय मार्ग है जो इलाहाबाद को रीवा, सतना, मिर्जापुर, कौशाम्बी, वाराणसी, कानपुर, रायबरेली, लखनऊ, प्रतापगढ तथा फैजाबाद नगरो से जोडते हैं। जी0टी0 रोड

(राष्ट्रीय राजमार्ग स0–2) नगर के मध्य से गुजरती है। इस सडक का कोई नियोजित बाई पास अभी तक नगर मे उपलब्ध नही है। उत्तर रेलवे का दिल्ली–कलकत्ता विद्युतीकरण तथा डबल लाइन मुख्य रेलमार्ग नगर को पूर्वी तथा उत्तर–पश्चिमी भारत से जोडता है। इसके अतिरिक्त पूर्वोत्तर रेलवे मार्ग नगर को वाराणसी तथा देश के पूर्वाचल से सम्बद्ध करता है। उत्तर रेलवे की अन्य शाखाओ द्वारा यह नगर बादा, झासी, मानिकपुर, मध्य प्रदेश के नगरो, रायबरेली, लखनऊ, वाराणसी, जौनपुर तथा फैजाबाद से सम्बद्ध है। इसके साथ ही वायु एव जलमार्ग की सुविधा से भी सम्बद्ध है। यहा की आन्तरिक यातायात प्रणाली विशेष उल्लेखनीय है। उत्तर तथा पूर्वोत्तर रेलमार्ग मुख्य नगर को पाच भागो मे , नैनी को तीन भागो मे तथा फाफामऊ को चार भागो मे विभाजित करते हैं जिससे नगर मे अनेक अण्डर पास तथा लेबल क्रासिग बन गये है तथा नगर का क्रमबद्ध विकास बाधित हो गया है। उत्तर, दक्षिण तथा पूर्व दिशाओ मे नदियो से घिरे होने के कारण उपनगरीय बस्तिया जैसे नैनी, झूसी तथा फाफामऊ का विकास हो गया है। उपनगरीय बस्तिया मुख्य नगर पर ही निर्भर है तथा गगा व यमुना नदियो पर बने सेतु इन बस्तियो को मुख्य नगर से जोडने के एक मात्र साधन है। यही नदी सेतु क्षेत्रीय यातायात (बाईपास ट्राफिक) के लिये भी एक मात्र मार्ग है। अत इन सेतुओ पर क्षेत्रीय तथा स्थनीय यातायाता एक साथ गुजरते हैं जिससे प्राय यातायात अवरोध की स्थिति बनी रहती है तथा दुर्घटनाये होती हैं। फाफामऊ तथा झूसी मे नये सेतुओ के बन जाने से इन स्थलो पर अवरोध की स्थिति काफी सुधर गयी है। परन्तु यमुना पुल की स्थिति अत्यन्त दयनीय है। आशा है कि निकट भविष्य मे नयी प्रस्तावित यमुना की सेतु (जिसका शिलान्यास हाल ही मे केन्द्रीय मानव ससाधन विकास मत्री डा0 मुरली मनोहर जोशी जी के कर कमलो द्वारा हुआ है) के बन जाने से इस दिशा मे काफी सुधार हो जायेगा।

सिविल लाइन्स नगर का एक विशाल क्षेत्र है जहा पूर्व से ही नियोजित मार्ग प्रणाली विकसित है। न्यून घनत्व पर भौतिक विकास होने के कारण यहा यातायात के लिए चौडी सडके है। परन्तु पुरूषोत्तम दास टउन मार्ग यहा की मार्ग प्रणाली को तिरछा (डायगनल) काटती हुई गुजरती है। इसके अतिरिक्त यह कानपुर–वाराणसी तथा कानपुर–फैजाबाद के बीच क्षेत्रीय यातायात का भी निर्देशित मार्ग है जिससे सिविल लाइन्स की पूर्व नियोजित मार्ग प्रणाली दोषयुक्त हो गई है। इसे दोषमुक्त करने हेतु प्राविधान

करना होगा। रेलवे लाइन के दक्षिण मे नगर का केन्द्रीय भाग (कोर) स्थित है जहा घनी आवासीय बस्तियो के साथ थोक व फुटकर व्यापारिक केन्द्र विकसित है। इस भाग की मार्ग प्रणाली वाणिज्यिक कियाओ के कारण याता¯यात के योग्य नही रह गई है। मार्गों पर अतिक्रमण हो जाने से यहा मार्गों की चौडाई और भी कम हो गई है। दो पहिया, तीन पहिया तथा हल्के चार पहिया वाहनो के साथ पद यात्रियो का मिश्रण हो जाने से यातायात विभ्रम (ट्राफिक कन्फ्यूजन) उत्पन्न होते है जिससे यातायात नियत्रण कठिन कार्य हो गया है।

यातायात नियोजन के लिए प्रस्तावित कार्ययोजना

यातायात की कठिनाइयो एव समस्याओ को देखते हुए महानगर योजना 2001 मे निम्न प्रस्ताव किये गये है –

(1) सड़क को चौडा करना –

वर्तमान महायोजना मे कुछ ऐसे मार्गों को चौडा करने के लिए प्रस्तावित किया गया था जो सघन निर्मित क्षेत्रो से गुजरते है तथा उनकी वर्तमान वास्तवित चौडाई प्रस्तावित चौडाई से बहुत कम है। इन मार्गों के किनारे सघन आवासीय बस्तियो के साथ–साथ वाणिज्यिक क्रियाये भी विकसित है। कुछ ऐसे भी मार्ग प्रस्तावित थे जो वर्तमान मे बन्द हो चुके है। अत जिन महायोजना मार्गों को सशोधित महायोजना मे प्रस्तावित रखना व्यावहारिक नही समझा गया है उनकी वर्तमान अधिकृत चौडाई को ही यथावत् बनाये रखने का प्रस्ताव किया गया है। ये मार्ग निम्न है –

कम स0	मार्ग का नाम	वर्तमान महायोजना मार्ग की चौडाई (मी0में)
1	कोलहन टोला–भारती भवन मार्ग	24
2	अतरसूइया मार्ग/जानसेन गज मार्ग का रिलीफ मार्ग	24
3	लीडर रोड/महात्मा गाधी मार्ग का लिक मार्ग	24
4	मोहत्सिमगज मार्ग	24
5	अशोक होटल के बगल से गुजरने वाला मार्ग	24
6	जीरो रोड का एक्सटेन्सन (सराय गढी मार्ग)	24
7	यमुना ब्रिज का पहुच मार्ग	30

सशोधित महायोजना मे वर्तमान मार्गों को चौडा करने का प्रस्ताव देते समय व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाया गया है। यह ध्यान मे रखा गया है कि इन मार्गों की प्रस्तावित चौडाई को कार्यान्वित करने मे इनके किनारे के अधिकृत निमार्णों को हानि न पहुचने पाये। अत मार्गों के किनारे अधिकृत भौतिक विकास को देखते हुये किसी मार्ग की चौडाई जहा जितनी सम्भव हो सकती है उतनी ही प्रस्तावित की गई है। प्रस्तावित चौडाई का कोटिक्रम निम्नवत् रखा गया है –

(1) 18 मीटर चौडा, (2) 24 मीटर चौडा, (3) 30 मीटर चौडा

(4) 45 मीटर चौडा (5) 60 मीटर चौडा महायोजना मार्ग।

वर्तमान मार्गों की प्रस्तावित चौडाई के अन्तर्गत सशोधित महायोजना मे कुल 674 51 हे0 भूमि प्रस्तावित की गई है जिसमे से 345 4 हेक्टेयर मुख्य नगर मे, 149 26 हे0 नैनी मे, 70 हे0 झूसी मे तथा 109 85 हे0 फाफामऊ मे प्रस्तावित है।

(2) <u>नये प्रस्तावित मार्ग</u>

सशोधित महायोजना मे कुल 421 95 हेक्टेयर भूमि नये प्रस्तावित मार्गों के अन्तर्गत प्रस्तावित है जिसमे से 145 20 हे0 मुख्य नगर मे, 160 हे0 क्षेत्र नैनी मे, 66 40 हे0 झूसी मे तथा 50 35 हे0 फाफामऊ मे प्रस्तावित किया गया है।

मुख्य नगर–

(क) ट्रासपोर्ट नगर तथा पी0ए0सी0 लाइन के उत्तर मे नये प्रस्तावित क्षेत्र के लिए 30 मीटर चौडा मार्ग प्रस्तावित किया गया है। इस मार्ग का सरेखन पूर्व–पश्चिम होगा। इस मार्ग को इसके उत्तर मे स्थित बाईपास से जोडने हेतु उत्तर दक्षिण सरेखन के दो 30 मीटर चौडे मार्ग प्रस्तावित किये गये हैं। दक्षिण मे इसे जी0टी0 रोड से जोडने हेतु ट्रान्सपोर्ट नगर से होते हुए एक 30 मीटर चौडा मार्ग एव दूसरा सुलेमसराय आवासीय कालोनी से होते हुए 18 मीटर चौडा मार्ग एव तीसरे मार्ग को कैन्टोनमेट के पश्चिम मे नेहरू पार्क के पहुच स्थल से सीधे 30 मीटर प्रस्तावित मार्ग से जोड दिया गया है।

(ख) जी0टी0 रोड के दक्षिण मे प्रस्तावित नगर क्षेत्र को जोडने के लिए एक 30 मीटर चौडा मार्ग जी0टी0 रोड से मण्डी समिति के पश्चिम तथा दक्षिण से होते हुए पूर्व की ओर जीप फ्लैश लाइट उद्योग के पूर्व मे वर्तमान लिक रोड के साथ मिलाते

हुए प्रस्तावित किया गया है। यह मार्ग रेलवे अण्डर पास होते हुए दक्षिण के क्षेत्र को सम्बद्ध करने मे उपयोगी सिद्ध होगा।

(ग) वर्तमान कौशाम्बी मार्ग पश्चिम की ओर 30 मीटर एव पूर्व की ओर 24 मी0 चौडा प्रस्तावित किया गया है।

(घ) कौशाम्बी मार्ग के दक्षिण मे एक 30 मी0 चौडा मार्ग प्रस्तावित है जो पूर्व मे नूरूल्ला रोड एव पश्चिम मे प्रस्तावित बाईपास से जा मिलेगा।

(ड) जी0टी0 रोड के दक्षिण मे प्रस्तावित क्षेत्र को भली भाति जोडने के लिये तीन नये मार्ग जिनकी चौडाई क्रमश 18 मी0, 24 मी0 एव 30 मी0 प्रस्तावित है।

(च) गोविन्दपुर आवास योजना की मुख्य नगर से जोडने हेतु कैन्ट होते हुए बघाडा मार्ग तक 18 मी0 चौडा तत्पश्चात् मोती लाल नेहरू मार्ग तक जोडने हेतु 24 मी0 चौडा मार्ग प्रस्तावित है।

(छ) मोती लाल नेहरू मार्ग से बघाडा मार्ग होते हुए गगा नदी के तट के साथ–साथ एक 30 मी0 चौडा मार्ग प्रस्तावित है जो दारागज के पूर्व से होते हुए पुराने जी0टी0 रोड से जा मिलेगा। इसके साथ ही यह मार्ग कुम्भ मेला क्षेत्र के साथ भी जोडा गया है, जो कुम्भ मेले के लिए भी उपयोगी होगा। (मानचित्र स0– 8 1)

<u>नैनी</u>

(क) यमुना ब्रिज से पी0डब्ल्यू0डी0 के प्रस्तावित 60 मीटर चौडे मार्ग तक रीवा रोड 45 मी0 चौडा प्रस्तावित है। तत्पश्चात् 60 मी0 चौडा प्रस्तावित किया गया है।

(ख) मिर्जापुर रोड एव नैनी मे पूर्व की ओर प्रस्तावित 60 मी0 चौडे मार्ग के मध्य मे पडने वाले क्षेत्र को जोडने के लिए एक 30 मी0 चौडा मार्ग प्रस्तावित है।

<u>झूँसी</u>

(क) वर्तमान छतनाग मार्ग मे आशिक सशोधन करते हुए इसे 30 मी0 चौडा करने का प्रस्ताव है।

(ख) प्रस्तावित जिला केन्द्र के पश्चिम से एक 30 मी0 चौडा मार्ग प्रस्तावित है जो झूसी की पुरानी आबादी के पूर्व से होते हुए छतनाग मार्ग से जा मिलेगा। यह मार्ग कुम्भ मेले के लिए उपयोगी होगा।

PRAYAG (ALLAHABAD)
REVISE PLAN OF ALLAHABAD
2001
N
PHAPHAMAU
GANGA RIVER
PRAYAG
ALLAHABAD
JHUNSI
YAMUNA RIVER
NAINI
To Kanpur
To Kanpur
Present Rroad
Proposed Road
BT
Bus Terminal
TT
Truck Terminal
Forestry
Social Forestry
Park
Cultural & Historica Centre
Flood Affected Area
km
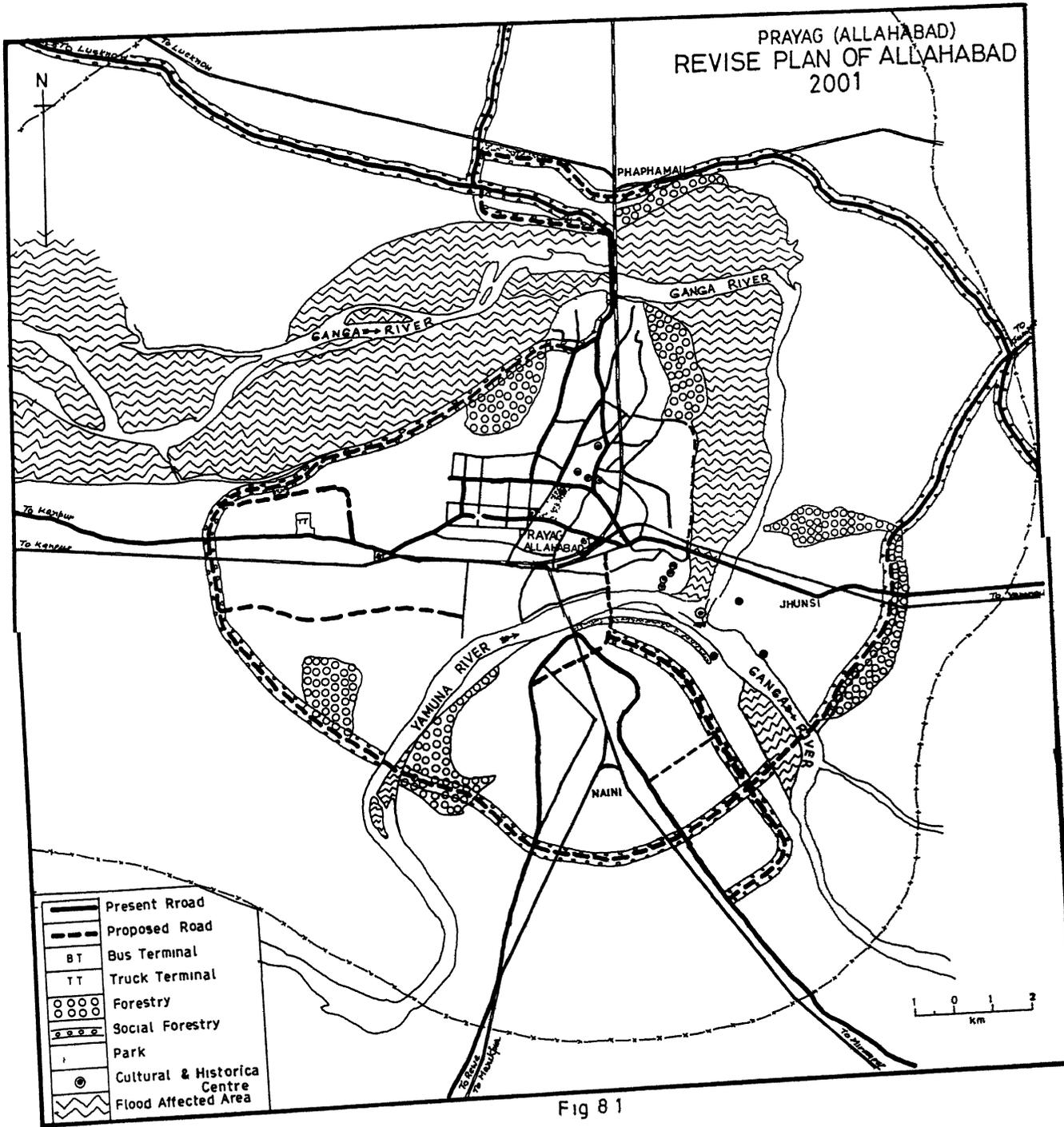
Fig 8 1

(ग) नयी जी0टी0 रोड के दक्षिण मे स्थिति क्षेत्र को जोडने के लिये पूर्व–पश्चिम सरेखन मे एक 30 मी0 चौडा मार्ग प्रस्तावित है जो पश्चिम मे गगा के कछार से आरम्भ होकर पूर्व मे प्रस्तावित बाईपास मे जा मिलेगा। यह कुम्भ मेले के समय उपयोगी होगा।

<u>फाफामऊ</u>

(क) उत्तर मे सहसो मार्ग को फैजाबाद रोड से मिलाने के लिये 60 मी0 चौडा बाईपास प्रस्तावित है। यह मार्ग उपनगर फाफामऊ के बीच से होकर गुजरने वाले भारी यातायात को लाने व ले जाने मे उपयोगी सिद्ध होगा।

(ख) दूसरा 45 मी0 चौडा मार्ग फाफामऊ के दक्षिण भाग मे प्रस्तावित किया गया है जो फैजाबाद–उन्नाव की ओर से नगर की ओर एव कानपुर की ओर से आने–जाने वाले भारी यातायात के लिये उपयोगी सिद्ध होगा। यह मार्ग इलाहाबाद–फैजाबाद मार्ग से आरम्भ होकर गगा पर बने सेतु से जोडा गया है। (देखिए मानचित्र स0 8 1)

(3) बाईपास मार्गो का विकास

(क) सशोधित महायोजना मे एक 45 मीटर चौडा बाईपास कानपुर रोड के उत्तर मे प्रस्तावित है जो कि ग्राम मुडेरा के समीप से प्रारम्भ होकर गगा नदी के तट के साथ–साथ कैन्टोनमेट क्षेत्र से होकर स्टेनली रोड मे मिलेगा। यह मार्ग कानपुर से फैजाबाद तथा जौनपुर की ओर आने जाने वाले यातायात के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

(ख) दूसरा 60 मीटर चौडा बाईपास कानपुर रोड के दक्षिण मे नगरीय क्षेत्र के बाहर से होकर यमुना नदी पार कर नैनी मे रीवा एव मिर्जापुर रोड को मिलाते हुए गगा नदी को पार कर झूसी मे वाराणसी मार्ग से मिलेगा। तत्पश्चात् उत्तर मे यह वर्तमान सहसो मार्ग से सम्बद्ध करेगा। इस बाईपास के बन जाने पर नगर के घने भाग से गुजरने वाले अनावश्यक यातायात से राहत मिलेगी। साथ ही साथ वाराणसी की ओर जाने वाला भारी यातायात इस बाईपास का प्रयोग करते हुए वाराणसी की ओर जा सकेगा।

(ग) तीसरा 60 मीटर चौडा बाईपास नैनी के पूर्वी भाग मे प्रस्तावित किया गया है जो

मिर्जापुर रोड को मिन्टोपार्क के पास स्थित सेतु से मिलायेगा। इस प्रकार नैनी क्षेत्र को भी भविष्य मे आने वाली भीषण यातायात समस्या से बचाया जा सकेगा।

30 मीटर चौडा एक मार्ग प्रयाग स्टेशन के उत्तर से प्रस्तावित है जो गगा नदी के कछार से होते हुए दारागज एव कुम्भ क्षेत्र को सम्बद्ध करेगा। इसके बनने से भूमि का एक काफी बडा भू भाग बाढ की चपेट से बचकर नगरीकरण के कार्यों मे उपयोगी सिद्ध होगा, साथ ही कुम्भ मेले के लिए भी उपयोगी होगा।

(घ) चौथा बाईपास मार्ग झूसी से वाराणसी रोड के उत्तर मे 60 मी0 चौडे प्रस्तावित बाईपास मार्ग तथा सहसो मार्ग के मिलन बिन्दु से प्रारम्भ होकर सहसो होते हुए फाफामऊ मे प्रस्तावित 60 मी0 चौडे मार्ग से सम्बद्ध होगा। इस वर्तमान मार्ग को उच्च स्तर प्रदान करते हुए 60 मी0 चौडा किया जाना प्रस्तावित है। इन मार्गों के कियान्वयन से नगर मे भविष्य मे आने वाली सघन यातायात की समस्या से एक लम्बे समय तक राहत मिलेगी।

(4) रेलमार्गो पर अधोमार्ग (अण्डर पास) तथा उपरिमार्ग (ओवर ब्रिज) का विकास :

(क) नैनी मे मिर्जापुर रेलमार्ग पर प्रस्तावित बस टर्मिनस के निकट।

(ख) नैनी मे ही मध्य रेलवे मार्ग (मानिकपुर रोड) पर प्रस्तावित ट्रक टर्मिनस के निकट।

(ग) फाफामऊ मे इलाहाबाद–फाफामऊ रेलमार्ग पर प्रस्तावित ट्रक टर्मिनस के निकट।

(घ) मुख्य नगर मे इलाहाबाद–कानपुर रेलमार्ग पर मुबारकपुर कोटवा ग्राम के निकट।

(ड) झूसी मे इलाहाबाद–वाराणसी रेल मार्ग पर प्रस्तावित बाईपास हेतु। निम्नलिखित अधोमार्ग (अण्डर पास) प्रस्तावित है –

1 नैनी मे इलाहाबाद–नैनी रेल मार्ग पर। इस अण्डर पास के माध्यम से मिन्टो पार्क के निकट यमुना पर प्रस्तावित नये पुल को रीवा रोड से जोडा जा सकेगा।

2 मुख्य नगर मे इन्जीनियरिंग कालेज के उत्तर मे स्थित वर्तमान अण्डर पास को चौडा करने को प्रस्तावित है।

(5) नदी सेतु

फाफामऊ तथा झूसी मे गगा पर तथा गऊघाट के निकट यमुना पर वर्तमान सेतुओ के अतिरिक्त गगा नदी पर एक तथा यमुना नदी पर दो सेतु प्रस्तावित है।

1 मिन्टो पार्क के पास नया पुल प्रस्तावित है। इसके कार्यान्वित हो जाने से मुख्य नगर एव नैनी क्षेत्र के स्थानीय यातायात हेतु पर्याप्त व्यवस्था हो जायेगी।

2 यमुना नदी के अपस्ट्रीम पर नैनी क्षेत्र मे ग्राम सैदपुर तथा ठाकुर का पुरा के निकट प्रस्तावित बाहरी बाईपास के लिए इस प्रस्ताव के कार्यान्वित होने से कानपुर, रीवा, मिर्जापुर, वाराणसी आदि नगरो के बीच आने जाने वाले 'थ्रू ट्रैफिक' से सम्पूर्ण इलाहाबाद नगर को मुक्ति मिलेगी।

(6) <u>बस टर्मिनस</u>

सशोधित महायोजना मे वर्तमान बस अड्डो के अतिरिक्त सात अन्य बस अड्डो का प्रस्ताव किया गया है जिसमे तीन मुख्य नगर मे, एक नैनी मे, 2 झूसी मे तथा एक फाफामऊ मे प्रस्तावित किये गये है। सधोधित महायोजना मे इसके लिए 65 46 हे0 क्षेत्र बस टर्मिनस हेतु प्रस्तावित किया गया है जिसमे से 13 60 हे0 मुख्य नगर मे, 9 92 हेक्टेयर नैनी मे, 35 76 हे0 झूसी मे तथा 6 18 हे0 फाफामऊ मे प्रस्तावित है। मुख्य नगर मे एक बस अड्डा कानपुर रोड पर चौफटका के पास प्रस्तावित है। यह बस अड्डा पश्चिम की ओर से आने जाने वाली बसो के लिये तथा वर्तमान मे स्टेशन रोड पर अव्यवस्थित खडे बसो एव टैम्पो की समस्या की पूर्ति करेगा। दूसरा बस अड्डा के0पी0 कालेज के समीप खाली पडे क्षेत्र पर प्रस्तावित है जो पूर्व की ओर बनारस से आने जाने वाली बसो के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। इसी प्रकार चिन्तामणि घोष मार्ग एव जवाहर लाल नेहरू रोड के चौराहे के उत्तर पश्चिम स्थिति भूमि पर प्रस्तावित है जो नगर के ट्रक, टेम्पो एव बस यातायात के लिए उपयोगी होगा।

(7) <u>ट्रक टर्मिनस</u>

ट्रक टर्मिनस हेतु मुख्य नगर मे कानपुर रोड पर 40 हेक्टेयर मे ट्रान्सपोर्ट नगर विकसित किया जा रहा है। इसके साथ ही दो ट्रक अड्डे नैनी मे जिसमे एक मिर्जापुर रोड एव एक रीवा रोड पर 43 हे0 भूमि मे प्रस्तावित है। एक–एक ट्रक अड्डा झूसी तथा फाफामऊ मे भी प्रस्तावित है।

(8) <u>रेल यातायात :</u>

महायोजना मे रेल यातायात हेतु कुल 593 हेक्टेयर भूमि प्रस्तावित है जिसमे से 356 हे0 मुख्य नगर मे, 95 हे0 नैनी मे, 98 हे0 झूसी मे तथा 44 हे0 फाफामऊ मे प्रस्तावित

है। उत्तर रेलवे का इलाहाबाद जक्शन स्टेशन ही नगर का प्रमुख रेल स्टेशन है। वर्ष 2001 तक सम्भावित नगर विस्तार को देखते हुये सूबेदारगज, नैनी, प्रयाग तथा राम बाग स्टेशनो पर टर्मिनल सुविधाये बढाकर मेल/एक्सप्रेस ट्रेनो को भी यहा रोके जाने का प्राविधान रेल विभाग द्वारा किया जाना चाहिये ताकि जक्शन स्टेशन पर अतिरिक्त भीड को कम किया जा सके।

(9) जल यातायात

प्राचीन काल मे कलकत्ता से इलाहाबाद तक गगा नदी यातायात का प्रमुख साधन थी। वर्तमान समय मे पुन इसका विकास किया जा रहा है। इसके लिए नैनी क्षेत्र मे गगा की डाउन स्ट्रीम पर टर्मिनल सुविधाओ को विकसित किया जा रहा है। (मानचित्र स० 8 1)

(10) वायु यातायात

कानपुर रोड पर स्थित बमरौली हवाई अड्डे से वायु यातायात की सुविधा दिल्ली, पटना तथा लखनऊ के लिये उपलब्ध है। इन सेवाओ को देश के अन्य नगरो तक बढाया जाना चाहिए।

वायु यातायात की सुविधा हेतु महायोजना मे दो हवाई अड्डो का प्रस्ताव है इसके लिए फाफामऊ मे सहसो मार्ग पर 260 हे0 तथा दूसरा नैनी मे रीवा रोड पर इरादतगज रेलवे स्टेशन के पूर्व मे 190 हे0 क्षेत्र प्रस्तावित किया गया है। यातायात नियोजन के लिए महानगर योजना मे प्रस्तावित आयोजनाओ के अतिरिक्त कुछ अन्य सुझाव भी प्रस्तावित है –

1 इलाहाबाद नगर के आन्तरिक भाग मे नगरीय बसो का सचालन होना चाहिए जिससे नगर मे एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने मे सुविधा हो। नगर महापालिका द्वारा परिवहन सुधार योजना के तहत कुछ सर्वेक्षण किये गये उनकी रिपोर्ट से स्पष्ट है कि इलाहाबाद मे रिक्शो का आवागमन साइकिलो से अधिक है। साथ ही नगर मे चालित कुल वाहनो मे रिक्शो का प्रतिशत 39 है। अत नगरीय बसो का सचालन आवश्यक है जिससे आवागमन त्वरित एव सस्ता हो।

2 इलाहाबाद नगर से लम्बे (गणेश माडल) टेम्पो बिल्कुल बन्द कर दिये जाय क्यो कि इनसे नगर मे अत्यधिक प्रदूषण फैलता है।

3 सडको के किनारे पद यात्रियो के लिए भी पथ बनाये जाय तथा प्रशासनिक तौर पर सडक का अतिक्रमण कर व्यवसाय करने वाले लोगो पर रोक लगायी जाय जिससे नगर मे आये दिन होने वाली सडक दुर्घटनाओ मे कमी हो सके। (इलाहाबाद सशोधित महायोजना 2001/एव शोधार्थी के स्वय विश्लेषण के आधार पर उपर्युक्त नियोजन सम्बन्धी प्रस्ताव किया गया है)

8 4(ii) धर्मशाला/होटल/तीर्थयात्री आवास के लिए नियोजन

होटल, परिवहन तथा यात्रिक एजेन्सिया इन तीनो का जाल (नेटवर्क) किसी पर्यटक केन्द्र/तीर्थ केन्द्र को विकसित करने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। प्रयाग की सस्कृति मे अतिथि/तीर्थयात्रियो की सेवा की भावना प्राचीन समय से ही पायी जाती है। यहा के निवासी तीर्थयात्रियो को देवता तुल्य समझकर आस्था और भावना से उनकी सेवा करते थे। यही सस्कृति आधुनिक भौतिकता के परिवेश मे 'पेइग गेस्ट' के रूप मे विकसित होती जा रही है। प्रयाग मे वर्ष के प्रतिदिन तीर्थ यात्रियो/पर्यटको का आना जाना लगा रहता है। इसके साथ ही वार्षिक माघ मेले तथा अर्ध कुम्भ एव पूर्ण कुम्भ के अवसर पर यह विश्व का सबसे बडा नगर बन जाता है अत प्रयाग मे इन यात्रियो के ठहरने का उपयुक्त प्रबन्ध आवश्यक हो जाता है।

वर्तमान समय मे प्रयाग मे 10 धर्मशालाये तथा 50 के लगभग होटल है। इनमे प्रमुख धर्मशाले निम्न है–

1 सेठ सेवाश्रम छुन्नू लाल सिद्धायाना, काटजू रोड
2 जैन धर्मशाला, जीरो रोड
3 हिन्दू धर्मशाला, खोया मण्डी
4 श्री गोकुल दासतेजवाल धर्मशाला, गऊघाट
5 श्री मारगडी धर्मशाला, 30 सम्मेलन मार्ग
6 श्री पुरूषोत्तम दास अग्रवाल धर्मशाला, जीरो रोड
7 चमेली देवी धर्मशाला, हीवेट रोड
8 सिन्धी धर्मशाला, दारागज (जोशी, ई0बी0 1986)

प्रमुख होटल, उच्चवर्गीय– पर्यटक आवास गृह, एम0जी0 मार्ग, प्रेसीडेन्सी सरोजनी

नायडू मार्ग, यात्रिक होटल सरदार पटेल मार्ग, इलाहाबाद रीजेन्सी ताशकन्द रोड, सम्राट सिविल लाइन। मध्यम वर्गीय– होटल वशिष्ठ जानसेनगज, मिलन लीडर रोड, कोहिनूर नरूल्ला रोड, अनुराग शिवचरन रोड, पिनारो न्याय मार्ग, रायल सिविल लाइन इत्यादि है (होटल डायरेक्टरी, इलाहाबाद के आधार पर)। धर्मशाला/होटल/तीर्थयात्री आवास क़े नियोजन के लिए निम्न सुझाव प्रस्तावित हैं–

1 प्रयाग के अधिकाश होटल/धर्मशाले सिविल लाइन्स क्षेत्र मे स्थित है जबकि तीर्थयात्री/पर्यटक सगम क्षेत्र दारागज क्षेत्र की ओर रूकना चाहते है अत किले के पास स्थिति कैन्टोनमेट की खाली भूमि पर कुछ सस्ते एव व्यवस्थित होटल/धर्मशालो की स्थापना होनी चाहिए।

2 तीर्थ यात्रियो/पर्यटको के लिए सरकारी तन्त्र द्वारा सस्ते एव भारतीय सस्कृति से युक्त धर्मशालाओ का निर्माण होना चाहिए क्योकि यहा आने वाले यात्रियो मे मध्यमवर्ग की सख्या अधिक होती है जो यात्रिक या सम्राट या सरकार द्वारा स्थापित पर्यटक आवास केन्द्रो मे रूकना नही पसन्द करते हैं क्योकि इनके लिए महगा होता है।

3 वस्तुत विदेशी पर्यटक या तीर्थयात्री प्रयाग मे सादगी एव शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए आते हैं। परन्तु हमारे उच्च स्तरीय होटल विदेशो की नकल करने मे अपना गौरव समझते है जिसके परिणामस्वरूप उन विलासी वस्तुओ यथा पाप म्यूजिक, कैबरे, या ताइवान, हागकाग, थाईलैण्ड की तरह की विलासिता आदि को प्रदान करने का प्रयास करते है जो पर्यटको को दुष्प्रभावित करती है। अत यहा के उच्च स्तरीय होटलो को चाहिए कि भारतीयता से युक्त अच्छे पकवानो, मिष्ठानो व लोक सस्कृतियो का विकास करे जिससे विदेशो मे भारत की सुसस्कृति का प्रसार हो सके।

4 यहा के होटलो मे प्रयाग के तीर्थ केन्द्रो एव पर्यटक केन्द्रो से सम्बन्धित साहित्य उपलब्ध हो तथा आकर्षक तस्वीरे लगी हो जो तीर्थयात्रियो/पर्यटको को उन स्थलो पर जाने को विवश करे।

5 तीथ यात्रियो एव पर्यटको की सख्या को देखते हुए यहा और अधिक होटलो/धर्मशालाओ की आवश्यकता है।

8 4(iii) विद्युत :–

नगर की विद्युत आपूर्ति नैनी मे रीवा रोड पर स्थित मुख्य विद्युत स्टेशन से होती है। नगर मे विद्युत वितरण के लिए 33 के0वी0 के 10 सब स्टेशन तथा 11 के0वी0 के 6 सब स्टेशन है। नगर मे कुल विद्युत आपूर्ति सयोजनो की सख्या लगभग 71000 है। इसके अतिरिक्त नगर मे सूरजकुड के पास एक बिजलीघर भी है। नगर की भावी आवश्यकताओ को देखते हुये वर्तमान के अतिरिक्त मुख्य नगर मे 33 के0वी0 के दो सब स्टेशन, नैनी मे 132 के०ी० का एक सब स्टेशन, झूसी मे 33 के०वी० का एक सब स्टेशन एव फाफामऊ मे 33 के०वी० का एक सब स्टेशन प्रस्तावित किया गया है।सशोधित महायोजना मे विद्युत गृह के अन्तर्गत कुल 60–35 हे0 क्षेत्र प्रस्तावित किया गया है जिसमे 18 हे0 मुख्य नगर मे, 32 20 हे0 नैनी मे, 6 हे0 झूसी मे तथा 4 15 हे0 फाफामऊ मे प्रस्तावित किया गया है (इलाहाबाद सशोधित महायोजना 2001)। प्रयाग मे विद्युत के विकास के लिए कुछ अन्य सुझाव निम्न है–

1 नगर मे ऊर्जा के गैर–परम्परागत स्रोतो का विकास किया जाये जिससे वर्तमान विद्युत व्यवस्था पर पडने वाले बोझ को कम किया जा सके। इसके लिए सौर्य ऊर्जा एव सुलभ ऊर्जा का विकास जरूरी है। इससे स्ट्रीट लाइटो से रात मे प्रकाश प्राप्त होगा।

2 नगर मे प्रतिदिन हजारो टन कूडा कचरा निकलता है। अत यदि कूडे कचरे पर आधारित ऊर्जा सयन्त्र का विकास किया जाये तो पर्यावरण प्रदूषण की समस्या भी दूर होगी और कचरे का उपयोग भी होगा (मानचित्र स० 8 1)।

8 4(iv) पेयजल का नियोजन

पेयजल नगरीय जीवन की अत्यन्त महत्वपूर्ण आवश्यकता है। नगर मे पेयजल पूर्ति हेतु 58 ट्यूवेल तथा 8 भूतल टैंक है। वर्तमान पेयजल पूर्ति 230 लीटर प्रति व्यक्ति प्रतिदिन की दर से की जाती है। इस समय नगर मे लगभग 47000 जलपूर्ति सयोजन (कनेक्शन) है। सशोधित महायोजना मे जलकल के अन्तर्गत कुल 24 हेक्टेयर भूमि मुख्य नगर मे प्रस्तावित की गई है (सशोधित महायोजना इलाहाबाद 2001)। पेयजल के नियोजन के सम्बन्ध मे निम्न सुझाव प्रस्तुत है–

1 वर्तमान मे नगर मे पेयजल का विस्तार तीव्र गति से किया जा रहा है परन्तु शुद्ध पेयजल की आपूर्ति आज भी समस्या का बिन्दु है। इसके लिए आवश्यक है कि सीवेज या नालियो के किनारे से गुजरने वाले पाइप लाइनो की मरम्मत और सुरक्षा की जाये। टकियो की सफाई सप्ताह मे एक बार जरूर की जाये।

2 नगर मे इण्डियन मार्का हैण्ड पाइपो को अधिक से अधिक स्थानो पर लगाया जाय।

3 मुख्य नगर के बहुत से क्षेत्रो मे पेयजल का विस्तार नही हो पाया है। ऐसे उपान्त और उपनगरीय क्षेत्रो मे इसका विस्तार किया जाये।

4 नगर को सौभाग्य है कि नदी के किनारे स्थित है अत नदी जल को शुद्ध करके पेयजल की आपूर्ति की जा सकती है जिससे जिन क्षेत्रो मे कम पेयजल उपलब्ध होता हो वहा उसकी आपूर्ति सुनिश्चित की जा सके।

8.5 सामाजिक सुविधाओ के लिए नियोजन :

नगर मे स्वच्छ पर्यावरण, स्वस्थ जीवन तथा सुसस्कृत समाज की स्थापना हेतु कुछ सुविधाओ की अत्यन्त आवश्यकता होती है जिनमे शिक्षा तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाये प्रमुख है। पूर्व की महायोजना मे इन सुविधाओ हेतु पर्याप्त प्राविधान किये गये थे जिनमे से अधिकाश को कार्याविन्त नही किया जा सका, जिसके फलस्वरूप वर्तमान सुविधाओ पर जनसख्या का दबाव बढता चला गया। आज ये सुविधाये नगर मे अपर्याप्त है। नये–नये आवासीय क्षेत्रो का विकास हो जाने से इन सुविधाओ का वितरण पूर्व की अपेक्षा अधिक असमान हो गया है। सशोधित महायोजना मे नगर की आवश्यकता के अनुसार इनको समुचित वितरण करके प्रस्तावित किया गया है। सशोधित महायोजना मे इन सुविधाओ हेतु कुल 571 24 हेक्टेयर का क्षेत्र प्रस्तावित किया गया जो कुल प्रस्तावित क्षेत्र का 2 63 प्रतिशत है। मुख्य नगर मे इनके लिए 387 32 हेक्टेयर, नैनी मे 119 49 हेक्टेयर, झूसी मे 55 हेक्टेयर तथा फाफामऊ मे 9 50 हेक्टेयर क्षेत्र प्रस्तावित है (इलाहाबाद सशोधित महायोजना 2001)।

8 5(1) शिक्षा :

नगर मे इस समय 173 प्राइमरी स्कूल, 28 जूनियर हाईस्कूल, 55 हायर सेकेन्ड्री / इण्टर कालेज तथा 13 डिग्री कालेज है जो क्रमश 3760, 23220, 11820 तथा

50,000 जनसख्या प्रति विद्यालय की दर से नगर की 650,000 जनसख्या के लिए उपलब्ध है। इन विद्यालयो मे उपलब्ध क्षेत्रफल मानक से कम है। सशोधित महायोजना मे इसका प्राविधान करते समय (4000–5000) जनसख्या प्रति प्राथमिक विद्यालय तथा (20,000–25,000) जनसख्या प्रति इण्टर कालेज का मानक अपनाया गया है। अत वर्ष 2001 तक की 10 लाख जनसख्या के लिए वर्तमान विद्यालयो सहित 342 प्राथमिक विद्यालयो तथा 60 इण्टर कालेजो की आवश्यकता है।

नगर मे प्रस्तावित एव स्थित डिग्री कालेजो की स्थिति इस प्रकार है –

सारिणी सख्या–81

प्रस्तावित डिग्री कालेज वर्ष 2001 तक

महायोजना क्षेत्र	वर्तमान सख्या	अतिरिक्त आवश्यकता	कुल प्रस्तावित
मुख्य नगर	13	2	15
नैनी	–	2	2
झूसी	–	1	1
फाफामऊ	–	1	1
योग	**13**	**6**	**19**

स्रोत – इलाहाबाद महायोजना 2001

वर्तमान मे निर्धारित महायोजना की समय सीमा समाप्त हो गयी परन्तु महायोजना क्षेत्र मे प्रस्तावित कुल 19 कालेजो के सापेक्ष दिसम्बर 2001 तक 15 कालेज ही सचालित है। इनमे झूसी मे प्रस्तावित कालेज सचालित नही हो सका, नैनी मे दो प्रस्तावित थे परन्तु एक ही सचालित है। इसी तरह नगर मे 15 प्रस्तावित है लेकिन 13 ही सचालित है। इस प्रकार वर्तमान समय मे भी असन्तुलन है।

महायोजना मे किसी अतिरिक्त विश्वविद्यालय या तकनीकी या मेडिकल कालेज की स्थापना का प्रस्ताव नही है बल्कि पूर्व मे स्थापित सस्थाओ के विस्तार के लिए अतिरिक्त

भूमि का प्रस्ताव है।

महायोजना की कमिया तथा नियोजन के लिए अन्य सुझाव निम्न है –

शिक्षा का आशय व्यक्ति की बौद्धिक सम्भावनाओ को उजागर करना तथा विकसित करना है। इस तरह शिक्षा के लिए नियोजन का आशय है कि ऐसा वातावरण तैयार किया जाये कि मस्तिष्क, प्रतिभा का पता लगाया जा सके। लेकिन इस महायोजना मे इस प्रकार का कोई उद्देश्य नही है। इसमे तो केवल 5 से 10 वर्ष की आयु वाले बच्चो एव बच्चियो की गणना स्कूल जाने के लिए की गई है ताकि वे अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा स्कीम के अन्तर्गत शिक्षा ग्रहण कर सके। शैक्षणिक सस्थाओ के बीच की दूरी कितनी होनी चाहिए इसको बताने का प्रयास नही किया गया है साथ ही एक विद्यालय मे कितनी छात्र सख्या व शिक्षको की सख्या होनी चाहिए, कितने और किस प्रकार के विद्यालय होने चाहिए इसका महायोजना मे उल्लेख नही है। महायोजना मे प्रस्तावित नियोजन के अतिरिक्त सुझाव निम्न है –

1 नगर मे वर्तमान कार्यरत प्राथमिक विद्यालयो के अतिरिक्त प्राथमिक विद्यालयो की स्थापना की जाये तथा इनमे शिक्षा की मानकता तथा गुणवत्ता को विकसित किया जाये जिससे पब्लिक स्कूलो मे भेजने की प्रवृत्ति कम हो। पब्लिक स्कूलो मे बच्चो पर मानसिक बोझ तथा माता–पिता पर आर्थिक बोझ अत्यधिक दी जाती है।

2 नगर मे छात्रो की सख्या एव बेरोजगारी को देखते हुए रोजगार परक शिक्षा के लिए अधिक सख्या मे तकनीकी विद्यालयो की स्थापना की जाय जिससे स्वरोजगार प्रारम्भ कर सके।

3 प्रयाग भारत का एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक केन्द्र है जहा विद्यालयी पढाई के साथ प्रशासनिक तैयारी के लिए छात्र दूर क्षेत्रो से आते है। अत इनकी आवासीय समस्या को देखते हुए नगर के खाली स्थानो पर अधिक से अधिक छात्रावासो का निर्माण होना चाहिए।

8.5(ii) स्वास्थ्य एव सफाई

प्रयाग मे 11 सामान्य चिकित्सालय, 8 चिकित्सालय, पुलिस, पी0ए0सी0 तथा सेना के, 5 विशिष्ट चिकित्सालय, 2 मेडिकल केयर यूनिट तथा 24 डिस्पेन्सरीज हैं। इसके

अतिरिक्त नगर मे 2 मेडिकल कालेज है जिनमे एक ऐलोपैथिक तथा दूसरा यूनानी चिकित्सा के लिए है। इन चिकित्सालयो मे 3000 शैय्याओ की सख्या है जो प्रति शैय्या 218 व्यक्तियो के लिए उपलब्ध है। सशोधित महायोजना मे स्वास्थ्य सेवाओ के असमान वितरण को दूर करने के लिए 6 नये चिकित्सालयो का प्रस्ताव किया गया है। इनमे 2 मुख्य नगर मे, 2 नैनी मे, एक–एक झूसी तथा फाफामऊ मे प्रस्तावित हैं (इलाहाबाद सशोधित महायोजना 2001)।

महानगर योजना मे नगर के लोगो के स्वास्थ्य व चिकित्सकीय सुविधाओ को महत्व नही दिया गया है। स्वास्थ्य सेवाये–शिक्षा, व्यावसायिक आरोग्यता, भोज्य पदार्थों का नियत्रण, मातृ व शिशु कल्याण, जल व जल निकास, महामारियो की रोकथाम इत्यादि प्रदान करती है। ये सभी समस्याए मानव कल्याण से सीधे सबन्धित है और इनका ठीक से खोज की जानी चाहिए। प्रयाग नगर की स्वास्थ्य रक्षा की दशाये अत्यधिक असतोष जनक हैं। इसलिए जन सुविधाये, कूडापात्र, उगलदान, शौचालय इत्यादि पर्याप्त सख्या मे प्रदान किये जाने चाहिये तथा उनका ठीक से रख रखाव करना चाहिये। इन आवश्यक सुविधाओ को रखने के लिए वितरण व स्थान की खोज की जानी चाहिए तथा विभिन्न इलाको की आवश्यकतानुसार इनकी व्यवस्था की जानी चाहिए। लोगो मे जागरूकता पैदा करनी चाहिए कि स्वच्छता के लिए कूडे को कूडे पात्र मे ही डाले।

इलाहाबाद महानगरपालिका के द्वारा नगर की स्वच्छता के लिए समय–समय पर डी0डी0टी0 छिडकाव, मच्छर मारने वाली दवाओ का छिडकाव आदि की व्यवस्था होनी चाहिए।

8 6 नगर आकार के लिए नियोजन .

नगर को सुन्दर और स्वास्थ्यवर्धक बनाये रखने के लिये नगर के अन्य तत्वो जैसे मनोरजन एव खुले स्थानो/पार्कों का विकास, हरित मेखला का विकास, पर्यावरण को शुद्ध रखने सम्बन्धी विकास, किये जाय। इन तत्वो का विकास होने पर ही नगर का समन्वित एव सुनियोजित विकास सम्भव होगा।

8 6(1) मनोरजन एव खुले स्थल

नगर महायोजना 2001 मे मनोरजन तथा अन्य खुले स्थल हेतु 2531 48 हेक्टेयर भूमि प्रस्तावित की गई है जो कुल प्रस्तावित क्षेत्र का 11 67 प्रतिशत है। मनोरजन के

अन्तर्गत पार्क तथा अन्य खुले स्थल हेतु कुल 262 96 हेक्टेयर भूमि प्रस्तावित की गई है जिसमे से 96 96 हे0 मुख्य नगर मे, 124 हे0 नैनी मे, 5 हे0 क्षेत्र झूसी मे तथा 37 हे0 क्षेत्र फाफामऊ मे प्रस्तावित किया गया है। डिस्ट्रिक्ट पार्क हेतु कुल 370 44 हे0 तथा क्षेत्रीय पार्क के अन्तर्गत 695 हे0 भूमि प्रस्तावित है। कुम्भ मेला के अन्तर्गत कुल 921 08 हे0 क्षेत्र प्रस्तावित किया गया है।

स्टेडियम हेतु झूसी मे जी0टी0 रोड एव सहसो रोड के तिराहे पर 9 हे0 भूमि प्रस्तावित की गई है।

वर्तमान समय मे प्रयाग नगर का दुर्भाग्य है कि महायोजनाओ मे प्रस्तावित सुझाव कियान्वित नही किये जा सके है। पार्क के प्रतीक के रूप मे यहा मुख्य चार पार्क है— पहला नेहरू पार्क और दूसरा अल्फ्रेड पार्क, तीसरा मिन्टो पार्क तथा चौथा हाथी पार्क है। नेहरू पार्क शहर से अत्यधिक दूर स्थित है। साथ ही इसका दरवाजा तो अत्यन्त भव्य है लेकिन भीतर का पूर्ण विकास नही हुआ है। नगर के अन्दर अल्फ्रेउ पार्क नगर के पार्क क्षेत्र का 50 प्रतिशत घेरता है। महायोजना मे जिन क्षेत्रो को मनोरजन एव खुले स्थल के रूप मे प्रस्तावित किया गया है उनमे से अधिकाश वर्षा ऋतु मे बाढग्रस्त रहते हैं या कृषि क्षेत्र के लिए अनुपयोगी है। नगर के सघन क्षेत्रो मे जनाधिक्य और खुले स्थानो के अभाव तथा पर्यावरण प्रदूषण से मृत्युदर अधिक रहती है। मनोरजन एव खुले स्थलो के विकास के लिए कम खर्च से युक्त कुछ सुझाव प्रस्तुत है—

1 प्रत्येक आवासीय क्षेत्र मे छोटे बच्चो के लिए विशेष खेल का मैदान होना चाहिए तथा उसमे झूला—झूलने, फिसलने, जलाशय मे नाव इत्यादि की व्यवस्था होनी चाहिए।

2 दस हजार जनसख्या वाले भाग के समीप दो—दो एकड के दो पार्क बच्चो के लिए होने चाहिए।

3 इसी प्रकार प्रत्येक आवासीय क्षेत्र मे आराम हेतु वाटिका होनी चाहिए ताकि वृद्ध जन आराम कर सके और स्वच्छ हवा का सेवन कर सके।

4 यहा कुछ विद्यालयो मे ही बडे क्रीडागन हैं। अत सभी प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयो मे क्रीडागन की व्यवस्था होनी चाहिए।

5 प्रत्येक 10 हजार की जनसख्या पर एक पुस्तकालय एव वाचनालय होना चाहिए जिससे मनोरजन एव बौद्धिक विकास हो सके।

6 नगर के सघन मकानो के समीप कई खुले स्थान है जिन्हे पार्क व कीडागन के लिए सुरक्षित रखना चाहिए। इन क्षेत्रो मे और अधिक भवन निर्माण को रोकना चाहिए।

7 नगर के सघन क्षेत्र गढी की सराय, बैढन टोला, अहियापुर और मुट्ठीगज ऐसे मुहल्ले है जिनमे प्रत्येक मे 5 एकड का कम से कम एक पार्क होना चाहिए। चौक से म्यूनिसिपल बाजार को हटाकर अत्यन्त सुविधाजनक स्थान पर ले जाना चाहिए ताकि व्यस्ततम क्षेत्र को खुला स्थान प्रदान किया जा सके।

8 6(ii) नदी, जल प्रदूषण तथा पर्यावरण

गगा तथा यमुना नदिया प्रयाग नगर को उत्तर, दक्षिण तथा पूर्व दिशाओ मे घेरते हुए सगम का निर्माण करती हैं। यमुना नदी प्रयाग के एक बडे क्षेत्र मे पेय जल पूर्ति का साधन है तथा इसमे स्नान करने की सदियो पुरानी परम्परा रही है। इसी प्रकार गगा भी आदि काल से भारत की आस्था, श्रद्धा व पूजा की नदी रही है। किन्तु नगर का भौतिक विस्तार तथा आर्थिक क्रियाओ मे वृद्धि के कारण प्रयाग की ये नदिया केवल पेय जल पूर्ति का स्रोत ही नही वरन् नगर की गन्दगी ले जाने वाली स्रोत भी बन गई हैं। नदी जल प्रदूषण के स्रोत निम्नलिखित है—

1 नगर के 13 गन्दे नाले एव अनेक नालिया जो गगा एव यमुना नदियो मे गिरती हैं।

2 कूडा करकट जो निवासी नदी के किनारे तथा कभी नदियो मे ही फेकते हैं।

3 उद्योग से निकला रसायन व दूषित जल।

4 नदी मे फेके गये मरे पशु तथा मनुष्यो के बिना जले व अध जले शव।

5 कुम्भ के समय प्रतिवर्ष कल्पवासियो एव प्रशासन द्वारा छोडा गया हजारो टन कचरा।

6 नदी के किनारे त्यागा गया मल—मूत्र।

प्रदूषण निवारण के लिए कार्यकय या नियोजन

औद्योगिक व व्यावसायिक विकास के कारण नदी जल प्रदूषण की समस्या ने गम्भीर रूप धारण कर लिया है। प्रयाग एक ऐसा नगर है जहा की नदिया औद्योगिक

प्रदूषण से नही अपितु घरेलू अवशेष से बहुत ज्यादा प्रदूषित हो गई हैं। वैज्ञानिक शोधो के रिपोर्ट मे बताया गया है कि आस्था की प्रतीक गगा यमुना का जल न तो पीने योग्य है और न ही नहाने योग्य। नगर के आस–पास गगा जल मे प्रति लीटर 2 02 मिलीग्राम क्रोमियम की मात्रा पायी जाती है जो कैसर जैसी घातक विमारी पैदा करने के लिए पर्याप्त है।

समस्या की गम्भीरता को समझकर भारत सरकार ने फरवरी 1985 मे केन्द्रीय गगा प्राधिकरण की स्थापना की। इस योजना के अन्तर्गत इस समय नदी मे मिल रहे गन्दे पानी को साफ करने के लिए दूसरे स्थानो पर ले जाकर उसे मूल्यवान ऊर्जा स्रोतो मे बदलने का प्रस्ताव है। गन्दे पानी को साफ करके उसे मछली पालन के तालाबो व अन्य जलचरो के जलाशयो, सिचाई व 'बायो–इलेक्ट्रीसिटी' के उत्पादन मे प्रयोग किया जा सकता है। केन्द्रीय गगा प्राधिकरण द्वारा यमुना नदी के किनारे बलुआघाट से सगम किला तक समुचित विकास की एक अन्य महत्वपूर्ण विकास योजना आरम्भ की गयी है। नदी जल प्रदूषण समस्या के निवारण हेतु केन्द्रीय गगा प्राधिकरण द्वारा नगर मे निम्नलिखित कार्यक्रम चलाये गये है–

1 गऊघाट पम्पिग स्टेशन का कार्य पूरा होने को है। इससे इलाहाबाद का 16 करोड लीटर अनुपचारित मल जल नैनी डाडी सीवेज फार्म की ओर मोड दिया जायेगा।

2 दारागज के पम्पिग स्टेशन का कार्य पूरा हो जाने से नाले द्वारा गगा मे सीधा प्रवाहित होने वाला अनुपचारित जल गगा मे नही गिरेगा।

3 चाचार नाला पम्पिग स्टेशन के कार्य पूर्ण हो जाने के बाद इलाहाबाद का 27 प्रतिशत प्रदूषित जल सीधा गगा मे प्रवाहित होना बद हो जायेगा।

4 घाघर नाले की दिशा परिवर्तन होने से 16 करोड लीटर अनुपचारित मल जल के यमुना मे सीधे प्रवाहित न होने मे मदद मिलेगी।

5 एक करोड की लागत पर दारागज और अल्लापुर सीवर व्यवस्था और पम्पिग स्टेशन का कार्य पूर्ण हो चुका है। इसके साथ ही पम्पिग स्टेशन के पास स्लूइस (Sluice) गेट बक्शी बाध बनाया जा रहा है जिससे बाढ के समय ही केवल पम्पिग स्टेशन का प्रयोग हो।

6 8 करोड रूपये की लागत पर नैनी सीवेज उपचार सयत्र का शीघ्र प्रारम्भ होने वाला है। यह मल–जल से उर्वरक और बायोगैस से बिजली उत्पन्न करेगा।

7 विश्व बैक की सहायता से दारागज मे एक विद्युत शवदाह गृह बनाया जा चुका है। गगा कार्ययोजना के अन्तर्गत एक दूसरा "विद्युत शवदाह गृह" शकर घाट के पास प्रस्तावित है।

इन योजनाओ के साथ एक अन्य सुझाव यह है कि नगर मे विशेषकर नदी से लगे हुए नगरीय बस्तियो मे अधिक से अधिक सामुदायिक शौचालयो का निर्माण हो जिससे तटवर्ती क्षेत्र स्वच्छ रह सके।

पर्यावरण

जनसख्या वृद्धि, मोटर चालित वाहनो के अत्यधिक प्रयोग, मार्गो की सकीर्णता/भीड–भाड तथा वाणिज्यिक कियाकलापो मे विस्तार के फलस्वरूप नगर का पर्यावरण अत्यधिक प्रदूषित होता जा रहा है। महायोजना मे नगरीय पर्यावरण को स्वच्छ रखने हेतु निम्न प्राविधान किये गये है–

1 प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगो को नगर के बाहर नैनी क्षेत्र मे प्रस्तावित किया गया है।

2 क्षेत्रीय पार्क, डिस्ट्रिक्ट पार्क एव एव अन्य खुले स्थलो के रूप मे 1328 40 हेक्टेयर क्षेत्र नगर के विभिन्न भागो मे प्रस्तावित है जिसका कियान्वयन वर्तमान समय तक बहुत कम हुआ है।

महायोजना मे सघन व्यावसायिक क्षेत्र मे होने वाले मुख्य प्रदूषण के निस्तारण के लिए कोई सुझाव या प्रस्ताव नही किये गये हैं। अत इन मुख्य प्रदूषण के केन्द्रो के लिए निम्न सुझाव है।

दुकानो, बाजारो व व्यवसाय केन्द्रो के लिए पुनर्माडल बनाने की आवश्यकता है। जैसा कि दुकानो का प्रतिरूप पुराना है। सडको व पटरियो पर सकुलता है, व्यावसायिक सुविधाओ का अभाव है, साथ ही शाम के समय जनरेटर आदि चलने पर इन सघन व्यावसायिक क्षेत्रो मे खडा होना मुश्किल हो जाता है।

अत इनके लिए सुझाव है कि एक पथ गलिया बनाकर, पीछे दुकाने बनाकर, सडक व पटरियो को चौडा करके, गाडियो के उतारने व लादने के लिए अलग स्थान की व्यवस्था करके कम किया जा सकता है। इसके साथ ही मुख्य मार्ग से हटकर सुनियोजित क्षेत्र मे शापिग केन्द्र बनाने चाहिए। ऐसी दशा मे माल के प्राप्त

करने व भेजने तथा गाडियो की पार्किंग मे सुविधा होती है।

8 6(iii) हरित–मेखला का नियोजन

नगर एव नगरीय जीवन के स्वस्थ एव सम्यक् विकास के लिए नगर का हरा–भरा रहना आवश्यक है। वर्तमान समय मे भयकर गति से बढते प्रदूषण, आवासीय क्षेत्रो के विस्तार व नगरीय अवस्थापनात्मक सुविधाओ के विस्तार के पश्चात् नगरीय भूमि का अधिकाश भाग नगरीय कार्यो के उपयोग मे लग जाता है। ऐसी स्थिति मे आवश्यक है कि नगर मे हरित मेखला का विकास जाय।

प्रयाग नगर के लिए सशोधित महायोजना 2001 मे वनीकरण के लिए गगा–यमुना नदी के जलभराव क्षेत्रो मे 593 40 हेक्टेयर भूमि प्रस्तावित है तथा हरित मेखला के लिए 622 19 हेक्टेयर भूमि प्रस्तावित है (सशोधित महायोजना 2001)। वर्तमान समय मे सरकारी प्रयासो द्वारा तथा विभिन्न योजनाओ द्वारा नगर मे हरित मेखला का विस्तार किया गया है लेकिन यह पर्याप्त नही है। हरित मेखला के नियोजना के लिए निम्न सुझाव प्रस्तावित है–

(मानचित्र स० 8 1)

1 नगर मे सडको की पटरियो पर वृक्षा रोपण द्वारा हरित मेखला का विकास किया जाय। नगर के कुछ क्षेत्रो मे विशेषकर सिविल लाइन क्षेत्र, जी0टी0 रोड, व लोक सेवा आयोग रोड पर हरित मेखला का विकास हुआ है परन्तु अभी भी अधिकाश क्षेत्रो मे हरित मेखला का विकास नही हो पाया है।

2 प्रयाग के अध्ययन सस्थानो एव छात्रावासो मे हरित मेखला का विकास किया जाना चाहिए। नगर मे माध्यमिक से लेकर विश्वविद्यालय स्तर के सस्थानो मे अभी भी अत्यधिक भूमि खाली है अत ऐसे स्थानो पर वृक्षारोपण से इन अध्ययन केन्द्रो का वातावरण तो शुद्ध रहेगा ही नगर का पर्यावरण भी शुद्ध होगा।

3 मलिन बस्तियो मे वृक्षारोपण किया जाना चाहिए। यहा की कुछ मलिन बस्तियो जैसे– कीटगज, यमुना बैक, राजाबारा का हाता, मुट्ठीगज, सुन्दरगज, अलोपीबाग, सोबतिया बाग के चमरौटी एव धरकार बस्ती मे हरित मेखला का विकास होना आवश्यक है जिससे इन बस्तियो मे स्वच्छता का विकास हो सके।

4 नगरीय वृक्षारोपण मे ऐसे वृक्षो का विकास किया जाय जो पर्यावरण को अधिक

शुद्ध रखते है, जैसे— कदम, सागौन, पीपल, पाकड, बरगद, गूलर, कोशियाग्लूका, अमलतास, अशोक, यूकिलिप्टस आदि।

5 नगर मे रिक्त स्थानो पर पार्को का विकास किया जाय तथा उनमे हरित मेखला का विकास किया जाय।

6 गगा—यमुना नदी के तटवर्ती क्षेत्रो मे सघन वृक्षा रोपण किया जाय जिससे मिट्टी कटान की समस्या को दूर करने के साथ क्षेत्र को हरा—भरा बनाया जा सके। इस परिप्रेक्ष्य मे मीरापुर, राजापुर, धूमनगज, सलोरी, बेनी सराय, बलुआ घाट, धोबी घाट व शकर घाट पर कुछ वृक्षा रोपण किया गया है परन्तु पर्याप्त नही है। बक्शी बाध तथा बेनी बाध एव गगा नदी के मध्य स्थित कछार क्षेत्र जो गोविन्दपुर से दारागज, सगम क्षेत्र तक विस्तृत है, यहा वृक्षारोपण किया जा सकता है।

7 इसके साथ ही यदि गोविन्दपुर एव दारागज को जोडता हुआ एक और बाध बनाया जाय तो इस कछार क्षेत्र मे नगरीय विकास के साथ—साथ सरक्षित बडे पार्को का विकास हो सकता है जिससे अल्लापुर, दारागज, सलोरी, बघाडा आदि क्षेत्रो के लोगो को निकट मे सुव्यवस्थित पार्क प्राप्त हो सके।

8 हरित मेखला के विकास मे सबसे महत्वपूर्ण तथ्य है सुरक्षा एव सुव्यवस्था। नगर के अधिकाश क्षेत्रो मे सडक की पटरियो के किनारे वृक्षारोपण तो अत्यधिक हुआ है, परन्तु उचित रख रखाव एव समय—समय पर पानी नही मिलने से ये हरे पौधे वृक्ष बनने के पूर्व ही सूख जाते है। सुरक्षित न होने से पशुओ द्वारा भी वृक्षो को हानि होती है।

9 वृक्षा रोपण ईट के थालो एव लोहे के जालियो से युक्त कर किया जाना चाहिए जिससे कम से कम नुकसान हो।

10 समय—समय पर वृक्षारोपण के लिए जनजागरण होना चाहिए।

8.6(iv) सास्कृतिक विरासत का सरक्षण :

प्रयाग के पुरातात्विक, ऐतिहासिक तथा सास्कृतिक स्थलो मे कुछ को पुरातत्व द्वारा सरक्षित घोषित किया गया है। यहा कुछ ऐसे भी स्थल हैं जो धार्मिक एव सास्कृतिक महत्व के कारण राष्ट्रीय धरोहर के रूप मे महत्वपूर्ण है। इन्ही स्थलो के माध्यम से नगर मे आने वाले पर्यटको/तीर्थयात्रियो को यहा की सास्कृतिक/ऐतिहासिक महिमा तथा प्राचीनता

की झलक मिलती है।

भारतीय पुरातत्व विभाग द्वारा प्रयाग के कुछ स्थलो को सरक्षित किया गया है उनमे– खुसरोबाग के अन्दर के मकबरे एव गेट तथा चारो तरफ की दीवारे, चन्द्रशेखर आजाद पार्क मे महारानी विक्टोरिया का स्मारक, किले के अन्दर स्थित अशोक स्तम्भ तथा अभिलेख प्रस्तर स्तम्भ एव जनाना महल, कीटगज स्थित सीमेट्री (गोरा कब्रिस्तान), झूसी माइन्ड स्थित हर्षगुप्त एव समुद्र गुप्त का किला के अवशेष प्रमुख है।

प्रयाग के अन्य धार्मिक एव सास्कृतिक विरासत के स्थलो मे पातालपुरी मन्दिर, लेटे हनुमान मन्दिर (सगम), शकर विमान मण्डपम, अलोपी देवी, आनन्द भवन, स्वराज भवन, भरद्वाज आश्रम, पत्थर गिरजा, झूसी में समुद्रगुप्त एव हर्षगुप्ता का किला, शिवकुटी, नागवासुकि आदि प्रमुख है।

वर्तमान नगरीय विकास के कारण इन पुरातत्व एव ऐतिहासिक महत्व के भवनो की महिमा एव गरिमा पर प्रतिकूल प्रभाव पड रहा है। नगरीय विकास के कारण कुछ सास्कृतिक भवनो के चारो ओर विकास का वातावरण अतिक्रमण एव निम्न श्रेणी के भवनो के निर्माण से प्रभावित हो रहा है जिसके फलस्वरूप धीरे–धीरे ऐतिहासिक भवनो का वाह्य स्वरूप विकृत रूप धारण कर रहा है। अत आवश्यक हो जाता है कि पुरातात्विक एव सास्कृतिक धरोहर एव भवनो की सुरक्षा एव सरक्षण को सुनिश्चित किया जाय। इसके लिए निम्न सुझाव प्रस्तुत है–

1 महत्वपूर्ण पुरातात्विक/सास्कृतिक स्थलो व भवनो के सरक्षण हेतु व्यापक अध्ययन करने की आवश्यकता है तथा विशेषज्ञो द्वारा सुझाये गये प्रस्तावो को क्रियान्वित किया जाय।

2 इन महत्वपूर्ण स्थलो के आस पास से परिवहन के अड्डो को हटाया जाय। जैसे खुसरोबाग के आस पास बसो का अड्डा बन गया है जिसके कारण प्रदूषण की समस्या बनी रहती है।

3 ऐसे महत्वपूर्ण स्थलो के चारो ओर हरित–मेखला को विकसित किया जाना चाहिए जिससे वाह्य प्रदूषण से बचाया जा सके।

4 इन महत्वपूर्ण स्थलो के आस–पास आवासीय एव व्यावसायिक कार्य–कलापो के अन्तर्गत अतिक्रमण को रोका जाना चाहिए। इसके साथ ही ऊँची–2 इमारतो का

निर्माण नही होना चाहिए क्योकि इससे अवशेष रूप मे स्थित ये स्थल ढक दिये जाते है।

5 इन महत्वपूर्ण स्थलो की दीवारो को मजबूत निर्माण एव सदैव मरम्मत होते रहना चाहिए।

6 हनुमान मन्दिर (सगम) ऐसे महत्वपूर्ण भवन की गगा जल के बाढ से सुरक्षा के लिए स्थायी उपाय होना चाहिए।

इसके साथ ही ऐसे महत्पूर्ण स्थल जिनको देखने के लिए जनमानस मे जिज्ञासा रहती है। जैसे– अक्षयवट, किला आदि को उचित प्रशासनिक व्यवस्था के साथ प्रतिदिन कुछ समय के लिए अवश्य खोला जाना चाहिए। सरक्षण एव व्यवस्था के नाम पर इसे बन्द करके रखना उचित नही है (नियोजन सम्बन्धी प्रस्तुत सशोधित नगर महायोजना 2001, इलाहाबाद एव शोधार्थी के व्यक्तिगत विश्लेषण के आधार पर है।)

निष्कर्ष :

प्रयाग नगर का विकास केवल विकसित नगरीय केन्द्र या आधुनिक पर्यटन केन्द्र के अनुरूप न कर इसमे धार्मिक, सास्कृतिक, आत्मिक तत्वो का समावेश किया जाना समीचीन है, ताकि वर्तमान कुरीतियो के लिये स्थान न रह पाये। इसे मनोरजन केन्द्र न बनने दिया जाय तथा चरित्र निर्माण मे सहायक केन्द्रो के रूप मे इनको अगीकार किया जाय। तीर्थयात्रा को पर्यटन और तीर्थों को केवल पर्यटन स्थल के रूप मे देखने पर प्राचीन आदर्श, मूल्य, दर्शन एव सस्कृति मे विकार उत्पन्न होने लगता है। तीर्थयात्रा से लौकिक एव पारलौकिक फल–प्राप्ति हेतु श्रद्धा, सयम और विश्वास की अनिवार्य आवश्यकता है। तीर्थ यात्रा की विसगतियो को दूर कर लोगो को उत्साहित किया, जाय ताकि जनसमुदाय नये क्षेत्रो की स्थिति एव सस्कृति को देख एव समझ सके तथा मातृभूमि को "स्वर्गादपि गरीयसी" मान सके। तीर्थ स्थलो मे सुधार तथा सुसस्कार के प्रसार से श्रेष्ठ धर्म एव सस्कृति का पुनर्जागरण होगा, प्रत्येक व्यक्ति तदनुरूप आचरण करेगा और भारतीय जनसकुल विकास पथ पर अग्रसर होगे।

References

1 जोशी, ई0बी0 (1986) उत्तर प्रदेश जिला गजेटियर इलाहाबाद पृष्ठ स0 275

2 इलाहाबाद सशोधित महायोजना (2001) सम्भागीय नियोजन खण्ड इलाहाबाद नगर एव ग्राम नियोजन विभाग

3 होटल डायरेक्टरी इलाहाबाद उ0प्र0 (2001) क्षेत्रीय पर्यटन कार्यालय इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित

4 सिह, प्रो0 जगदीश (1992) भौगोलिक चिन्तन के मूलाधार, ज्ञानोदय प्रकाशन गोरखपुर पृष्ठ स0 218–219

5 शर्मा, राजीव लोचन (1985) प्रादेशिक एव नगरीय नियोजन पृष्ठ स0 192

Bibliography

Adam, G F (1913) Report on the Pilgrim Route Govt Press, Allahabad

Ahamed, Enayat (1971) The Ganga a study in river geography Geographer (Aligarh) 18-39-89

Abul Fazl Ain-i-Akbari, Translated into English by H S Jarrett, Vol II Calcutta, 1949

Austin Miller, A (1950) Climatology, London,

Bacon, T (1837) First Impressions and Studies from Nature in Hindustan, Vol I, London,

Bhardwaj, Surinder Mohan(1973) Hindu Places of pilgrimage in India A study in Cultural Geography Thomson Press, Delhi

Bonazzali, Giorgio(1977) Prayaga and its Kumbha Mela Purana (Varanasi) 19 (1) 81-179

Blanford, H F (1889) Climates and Weather of India, London,

Caine, W S (1891) Picturesque India, London

Chhibber, H L (1945) Physical Basis of geography of India Nand Kishore and Bros, Banaras

Caplan, Anita (1982) Pilgrims and Priests as links between a Sacred Center and the Hindu Cultural Region Prayag's Magh Mela Pilgrimage Unpub Ph D Diss in Geography,

	Unıversıty of Mıchıgon
Chattopadhyaya, Kretreschandra (1937)	Relıgıous Suıcıde at Prayag, Journal of the U P Hıstorıcal Socıety 10 65-79
Clarke, J J (1948)	An Introductıon to Plannıng, Londons
Conybeare, H C and Hewett, J P (1884)	Statıstıcal, Descrıptıve and Hıstorıcal Account of N W Provınces of Indıa, Vol VIII, Allahabad, Dıstrıct Allahabad
Cunnıngham, A (1871)	The Ancıent Geography of Indıa Part I, London
Davıda, T W Rhys, (1903)	Buddhıst Indıa, London
Davıs, Kıngsley, (1957)	The Populatıon of Indıa and Pakıstan, Prınceton, New Jersey
Dıckınson, R E (1956)	Cıty Regıon and Regıonalısm, London,
" " (1966)	Cıty and Regıon
Dwıvedı, R L (1961)	Allahabad, A Study ın Urban Geogra-phy Unıversıty of Allhabad
Darıan, Steven G (1978)	The Ganges ın Myth and Hıstory Unıver -sıty of Hawaıı press, Honolulu
Dubey, D P (1990)	A Study ın the Hıstorıcal and Cultural Personalıty of Prayaga Thesıs, A I H C and Archaeology B H U
Dıcken, S N and Pıtts, F R (1970)	Introductıon to Cultural Geography A Study of Man and Hıs Envıronment, Gınn and company, Toronto

Eliade, Mircea (1986) Encyclopadia of Religion 14 Vols, Macmillan Pulb Co New York

Elliot, J (1904) "Discussion of the Anemo-graphic observations Recorded in Allahabad from Sept 1989 to Aug 1904" Memoirs of the Indian Meteorological Deptt , Vol X, VIII, Part - III

Fogarty, M P (1948) Town and Country Planning, London,

Fuhrer, A (1891) "The Monumental Antiquities and Inscriptions in the N W P and Oudh", Archaeological Survey of India, Allhabad

Green, F H W (1950) "Urban Hinter Lands in England and Wales" Geographical Journal, Vol 116

Gopal, Lallan Ji and Dubey, D P (1990) Pilgrimage Studies Text and Context,the Society of Pilgrimage studies, Allahabad

Ghosh, N N (1945) Sanctity of Present Bharadwaj Ashrm, A B Patrika, Sept 12

Haward, E (1946) Garden Citites of Tomorrow, (New Edition) London

Hamiltan, W (1928) The East India Gazetteer,Vol I, London,

Houston, J M (1953) A Social Geography of Europe, London

Irwın, John (1983) The Ancıent Pıllar-cult at Prayaga (Allahabad) Its Pre-Asokan Orıgıns Journal of the Royal Asıatıc socıety London

Jefferson, M (1931) "The Dıstrıbutıon of worlds 'Cıty Folk", Geographıcal Revıew, Vol XXI

Jordon, T G and Rowntree, L (1976) The Human Mosaıc A thematıc Introductıon to Cultural Geography, San Francısco

Kala, S C (1947) "Lıght on the Hıstory of Jhusı" A B Patrıka, 7-2-57

Katju, K N (1945) "Where was Bharadwaj Ashram", the A B Patrıka, August 19 1945

Kantawala, S G (1967) Prayagamahatmya, a Study, Purana (Varanası)

Krıshnan, M S (1949) Geology of Indıa and Burma (Madras)

Law, B C (1939) Geographıcal Essays, Vol I London

(1932) Geography of Early Buddhısm, London,

Lınton, Relf (1945) The Cultural Background of Personalıty New York

Malınovaskı, B (1931) Encyclopaedıa of the Socıal Scıences Vol 4

(1944) A Scıentıfic Theory of Culture and other Essays, Chapel Hıll (N C)

Mittal, C P (1945) "Why Bharadwaj Ashram Shifted" Amrita Bazar Patrika, Sept 12, 1945

Mumford, L (1961) The City in History, London,

(1968) The Culture of Cities, New York,

Monkhouse, F J and Wilkinson, H R (1952) Maps and Diagrams London,

Mahabharata (Mbh) 19 Vols- Sukthankar it, al Bhandarkar Oriental Research Institute, poona, 1933-59

Matsya Purana (MP) Ed Nandalal Mora Gurumandal Granthamala No XIII, Gopal Printing Works, Calcutta, 1954

Naradiya Purana (NP) 1923 Venkatesvara Steem Press, Bombay

Nehru, J L (1961) The Discovery of India Jawaharlal Nehru Memorial Fund, New Delhi, 1972, reprint

Pandey, B N (1955) Allahabad Retrospect and Prospect The Municipal Press Allhabad

Pathak, Satya Prakash (1987) Historical Geographical Study of Holy Sites of Uttar Pradesh, India Unpub Ph D Diss in geography, B.H U , Varanasi

Pavitrananda, Swami (1956) Pilgrimage and fairs. their bearing on Indian life, Ramakrishna Mission,

Calcutta

Renner, G T and Associates (1951) — Global Geography, New Yark

Russell, W H (1860) — My Diary in India, Vol I, London

Roy, Dilip Kumar and Indra Dei (1955) — Kumbha India's Ageless Festivals Bhartiya Vidya Bhavan, Bombay

Rinschede, Gisbert and Angelika Sievers (1987) — The Pilgrimage Phenomenon in Socio-geographic Research, N G J I (Varanasi) 33 (3) Sept

Rai Subash (1993) — Kumbha Mela History and Religion, Astronomy and Cosmobiology Varanasi, Ganga Kaven Pub

Sachau, E C (1910) — Albaruni's India, Vol II London,

Saran, B (1954) — "Geomorphology of the Sangam Region" The Journal of the U P Historical Society vol II (New series) Part II Lucknow

Subramaniam, V (1979) — Cultural Integration in India (A Socio-Historical Analysis,) Asish Publishing House New Delhi.

Sauer, C O (1927) — Recent Developments in Cultural Geography in E C Hays (ed) Recent Developments in Social Sciences Philadelphia

Sıngh, L (1956) "The umland of Agra" The N G J I (Varanası) 5, vol II Part II Sept

Sıngh, R L (1955) Banaras- A Study ın Urban Geography, Nand Kıshore and Bros, Varanası,

Sıngh, U (1956) "Geographıcal Zones of Alld " The N G J I Varanası 5, Vol II Part I

Smaıles, A E (1947) "Analysıs of Delımıtatıon of Urban Fıelds" Geography, No 155, Vol XXX II,

Srıvastava, J P (1925) Report of Cıvıc Survey, Allahabad, Inprovement Trust, Allahabad,

Srıvastva, S R (1937) Prayag Pradeep, Hındustanı Academy, Allhabad

Spencer, J E and Thomas, W L (1978) Introducıng Cultural Geography IInd Edıtıon, John wıley and Sons New Yark

Sıngh, R L and Sıngh Rana P B (1987) Trends ın the Geography of Pılgrımages Homage to Davıd E Sopher N G S of Indıa, Varanası, Res Pub

(1991) Envıronmental Experıence and Value of Place

(1992) The Roots of Indıan Geography Search and Research Natıonal Geographıcal Socıety of Indıa, B H U Varanası

Taylor, G (1951) Urban Geography, London

(1951)	Geography ın the Twentıeth Centrury, London
Twınıng, T (1893)	Travels ın Indıa A Hundred years Ago, London
Tylor, E B (1989)	Prımıtıve Culture, New Yark
Turner, Vıctoraw (1979)	Process, Performance and pılgrı mage Concept Pub , New Delhı
Verma, R I (1966)	Faırs and Festıvals ın Uttar Pradesh, Census of Indıa Vol XV- Uttar Pradesh Part V II-B, Manager of Pub, Govt of Indıa, Delhı
Wagner, P L and Mıkesell, M W (1962)	Readıngs ın Cultural Geography chıcago
Prayag or Allahabad	A Hand Book, the Modern Revıew office
Calcutta, 1910	
दीक्षित, डा0 श्रीकान्त एव त्रिपाठी डा0 रामदेव (2001)	सास्कृतिक भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर
सिन्हा हरेन्द्र प्रताप (1953)	भारत को प्रयाग की देन, स्टैन्डर्ड प्रेस, इलाहाबाद
जोशी ई0बी0 (1986)	उत्तर प्रदेश जिला गजेटियर, जनपद इलाहाबाद, भाषा विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रकाशित
साख्यिकीय डायरी (2001)	उत्तर प्रदेश, अर्थ एव सख्या प्रभाग, राज्य नियोजन सस्थान, उत्तर प्रदेश, लखनऊ
सिह ओम प्रकाश(1979)	नगरीय भूगोल, तारा पब्लिकेशन्स, वाराणसी

परिशिष्ट– क

1 आपका नाम क्या है?

2 आपकी आयु क्या है? लिग पु0 स्त्री0

3 आपकी जाति क्या है? सवर्ण/पिछडी जाति/अनु जा0/जन जा0

4 आपका धर्म क्या है?

5 आपका निवास स्थान स्थायी कहा है?

अ ग्राम

ब जिला

स प्रदेश

6 आपका निवास स्थान मेला क्षेत्र/प्रयाग से कितनी दूर है? कि0मी0

7 प्रयाग मेला क्षेत्र तक आने मे आपका कितना धन व्यय (खर्च) हुआ? रूपये।

8 आप अपने साथ कितना धन लाये है? रूपये।

9 क्या प्रयाग मे मेला क्षेत्र के अतिरिक्त आपके ठहरने की कोई व्यवस्था है? आपका कोई परिचित/सम्बन्धी/पन्डा महराज/तीर्थ पुरोहित है।

हॉ/नही।

10 यदि हॉ, तो आप मेला क्षेत्र मे ही क्यो निवास कर रहे है?

अ कल्पवास करने हेतु।

ब गगा के पास रहकर नित्य स्नान की सुविधा का लाभ पाने हेतु।

स शहर की भीड से अलग/दैनिक दिनचर्या से हटकर शान्त और मनोरम तीर्थ के तट पर रहने की कामना से।

11 मेला क्षेत्र मे आपके ठहरने की व्यवस्था कौन करता है?

अ आप स्वय।

ब पडा महराज/तीर्थ पुरोहित।

स. जिला/नगर प्रशासन।

द. अन्य।

12. क्या इस सुविधा हेतु आपको कोई शुल्क भी देना पड़ता है, अथवा यह सुविधा निःशुल्क है?

    अ. हाँ/नहीं।

    ब. यदि हाँ तो कितना शुल्क लगता है?

        क. रूपये प्रतिदिन।

        ख. रूपये प्रतिमाह।

        ग. रूपये, सम्पूर्ण मेला अवधि हेतु।

13. आप यह शुल्क किसे देते हैं?

    अ. जिला/नगर प्रशासन को।

    ब. पंडा महराज/तीर्थ पुरोहित जी को।

14. मेला क्षेत्र में आपको निम्नलिखित कौन सी सुविधायें प्राप्त हैं?

    अ. विद्युत : सशुल्क/निःशुल्क यदि सशुल्क तो कितना रूप्ये।

    ब. राशन कार्ड : सशुल्क/निःशुल्क। यदि सशुंल्क तो कितना शुल्क देय है।

    स. भोजन सामग्री/ईधन :

15. क्या आप हर वर्ष माघ में प्रयाग आते हैं तथा कल्पवास करते हैं?

    हाँ/नहीं

    यदि नहीं तो क्या विशेष पर्वो (यथा मकर संक्रान्ति/अमावस्या/बसंत पंचमी/शिवरात्रि/कुंभ अथवा अर्धकुंभ) पर ही प्रयाग आते हैं?

16. क्या आपके परिवार का हर सदस्य माघ में प्रयाग आता है?

    हाँ/नहीं

17. आप माघ में प्रयाग क्यों आते हैं?

    अ. धार्मिक भावना के कारण।

    ब. श्राद्ध करने/पिण्डदान करने।

    स. मात्र गंगा स्नान का लाभ लेने।

    द. क्योंकि आपके पुरखे भी माघ में यहां आते रहे हैं?

    ध. मोक्ष प्राप्ति/स्वर्ग प्राप्ति/पुण्य प्राप्ति हेतु।

18 प्रयाग की महिमा के बारे मे क्या आप कुछ जानते है?

हॉ / नही

यदि हॉ तो क्या–

1

2

19 क्या मेला क्षेत्र के प्रशासनिक अधिकारीगण / स्वय सेवी सस्थाये समयानुसार आपकी सुरक्षा / सहायता करती है?

20 मेला क्षेत्र के प्रशासनिक अधिकारियो / स्वय सेवी सस्थाओ से आपकी क्या अपेक्षाये है? तथा इसको अच्छा बनाने हेतु आप क्या सुझाव देगे?

1

2

अन्वेषक की टिप्पणी

परिशिष्ट– ख

कम स०	स्थान	d (दूरी)	$d-\bar{d}$	$(d-\bar{d})^2$
1	कौशाम्बी	58	–45	2025
2	श्रृग्वेरपुर	35	–68	4624
3	कडा	66	–37	1369
4	गढवा	55	–48	2304
5	चित्रकुट	130	+27	729
6	बिठूर	222	+119	14161
7	अयोध्या	167	+64	4096
8	मैहर	180	+77	5929
9	विध्याचल	93	–10	100
10	वाराणसी	135	+32	1024
11	सारनाथ	145	+42	1764
12	लखनऊ	213	+110	12100
13	अरैल	11	–92	8464
14	झूसी	9	–94	8836
15	लाक्षागृह	45	–58	3364
16.	कानपुर	200	–97	9409
17	भीटा	24	–79	6241
18	खैरागढ	62	–41	1681
		1850		**$\Sigma d^2 = 88220$**

$$\bar{d} = \frac{1850}{18} = 103$$

$$\text{Standard distance} = \sqrt{\frac{\Sigma(d-\bar{d})^2}{N}}$$

$$= \sqrt{\frac{88220}{18}}$$

$$= \sqrt{4901\ 11}$$

$$= 70 \text{ KM}$$